ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५१ म अंक ०१ जून २०१८ (वर्ष ११ मास १२६ अंक २५१)

ऐ अंकमे अछि:-

४. नन्दविलास राय- लघुकथा संग्रह- मरजादक भोज

५. रामविलास राय- लघुकथा संग्रह- दूधबेचनी

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

रामविलास साहुजीक दूधबेचनी लघुकथा संग्रह

'गामक गाछी' लघुकथामे बुधुआक दादा कालेसरक गछकट्टीमे दबि क'मरि गेलाक प्रसंग पुरना गेल छलै, नवका पंच सभकेँ बुझले नै, आकि बुझल रहलोपर ओकर महत्त नै खड़िया क'बुझल रहै। से जखन मुखियाजे ऐ गपक चर्चा कथाक क्लाइमेक्समे करै छथि तँ सभ महत्त बुझै छथि जे कोना बोन कलम-गाछी बनल।

'कमतियाक कामत'क खिस्सा आ कमतियाक घरकेँ हबेली कहैपर मदीना दादीक विरोधपर कमतिया हबेली शब्दावलीक जन्म ऐ कथाक शीर्षक उचिते बनल।

'घुमि गाम चलू'कथाकेँ कनी आर चुस्त करबाक खगता छल, कथा सोइरी घरसँ शुरू होइए मुदा अंत कपचा गेल लगैए।

'बिपैत'मे बिपैतक संग (बिपैत छोड़ि आर के?) नीक बनल अछि।अछि।

'झंझैटक जड़ि सिनुरिया आमक गाछ' भिन-भिनौजपर लिखल कथा छी।

'जारैन'मे नव चीजक विरोधक संग लेखक ठाढ़ बुझाइ छथि, कारण महिलाकेँ धुँआसँ होइबला कष्टकेँ ओ वाद-विवादमे नै अनलनि।

'जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर विसए'पढ़ि लेखक अंधविश्वासक पक्षमे ठाढ़ बुझाइ छथि। आइ काल्हि टी.वी. पर भुतहा आ अंधविश्वास आधारित सीरियलक पक्षमे यएह सफाइ शुरुहेमे देल जाइत अछि जे ई मात्र मनोरंजन लेल बनल अछि आ एकर उद्देश्य अंधविश्वासकेँ बढ़ाबा देब नै अछि। से ईहो कथा मनोरंजने उद्देश्यसँ पढ़ू।

'कौल्हुक सुच्चा करु तेल'हमरा हिसाबे ऐ लघुकथा संग्रहक सर्वश्रेष्ठ लघुकथा अछि। कोना लोक अपन कुटीर उद्योग पूँजीवादक फेरमे खतम केलक, ई कथा तकरे विस्तार अछि आ आशाक संग खतम होइए।

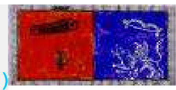
'दूधबेचनी'ऐ लघुकथा संग्रहक टाइटल कथा छी।बकलेलसँ बेटीक बियाह। पतिक मृत्यु आ पत्नी द्वारा असगरे बाल-बच्चाकेँ पोसब जिनगीक लक्ष्य। मुदा फेर मोहभंग आ फेर समाजक लेल किछु करबाक इच्छा संग कथाक समाप्ति।

'गोदानक गाए घुमि घर आएल'अंधविश्वासपर चोट अछि। से 'जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर विसए'क विपरीत।

'असिरवाद'यत्रा वृत्तांत सन अछि, आ 'हम'शैलीक रचना अछि। आ कारण आधारित संयोग आकि भविष्यवाणी ऐमे दू बेर भेल। एक कोसीक नाह आ दोसर घुरती काल बसक दुर्घटना।

'ई केकर दोख'मे कथानक आगू बढ़ैए मुदा सभ हीस नीकसँ नै फौदाइए। रूपनक कथा आकि कारीक? रूपनक कथा भँसियाइत अछि तँ कारीक कथा संगनीक जकाँ मिज्झर नै भ'पबैए।

कथा-संग्रह मुदा जीति गेल अछि। कारण अची एकर शब्दावली आ फकड़ा सभक सफलता। जँ एकर अनुवाद कएल जाए तँ भ'सकैए जे 'कौल्हुक सुच्चा करु तेल'क अलाबे आन कथा सभ सामान्य बुझा पड़ए, मुदा मूल मैथिलीमे ई संग्रह जीतल अछि। गामक समाजक समस्याक वर्णन जे नग्रक लोककेँ छोट आ पुरान बुझा सकैए, गामक लोक लेल पैघ आ समकालीन अछि; आ राम विलास साहुजीक शब्दावली ऐ वर्णनक संग न्याय केने अछि।



विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ २०१८ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

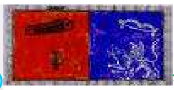
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015



१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

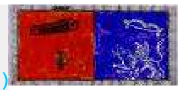
Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017



Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. गद्य

१.मृणाल आशुतोष- लघुकथा- छुटकी २.प्रणव कुमार झा- लघुकथा- चक्रफाँस

१

मृणाल आशुतोष

लघुकथा

छुटकी

बड़ दिनक बाद आय सब दोस्तक संग फुटबॉल खेलबाक परगराम बनल। विकास अपन संघी सबक साथ फुटबाल खेल रहल छल। अचानकसँ अपन नाऊ सुनि ओ इम्हर उमहर देख लागल। ओकर पड़ोसी विनय दौड़ल ओकरा लग दौड़ैत पहुँचल।

"विकास, रौ विकास!"

"की भेलौ रौ! किछ बजबें..."

"ओ तोहर भतीजी..."

"की भेलय हमर छुटकीकेँ? बाज न रौ, की भेल हमर छुटकीकेँ?"

"ओ! ओ स्कूटीसँ एक्सीडेंट क' गेलौ। गाम परक लोग सब ओकरा झाजी नर्सिंग होम ल' गेल खिन हन।"

"अरे बाप रौ बाप। ई की भ' गेलै। यौ लाल भैया कनि अपन बाइकक चाभी दीअ। हमर बाइक गामेपर धाएल अछि।

भागैत विकास हस्पताल पहुँचल तँ भैया गेट पर ठार छलैथ।

शायद ओकरे प्रतीक्षा करैत छलाह।

विकासक देखैत भैया भोकाइर पारि क' कानअ लगला,"रौ विकास, आब हम नय बचबौ।दखी न, छुटकीकेँ की भ' गेलेय।"

"भैया,आब हम आबि गेलिये हन न। सब नीक भ' जेतै। अहाँ बस भगवान पर भरोसा राखु। कत छै छुटकी?"

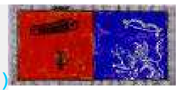
""आई! आईसीयू में अछि!"

"अरौ बाप! कोन मंज़िल पर?"

"दोसर मंज़िल पर।"

भागि क' विकास आईसीयू पहुँचला तँ ओतअ माँ, बाबुजी आ भौजी के प्राण सूखैत छल।

मन तँ भेल कि पूछि जे ई एक्सीडेंट कोना भेल! मुदा मन मसोसि रहि गेल बेचारा विकास। बहुत कोशिश केलक मुदा तामसपर नियंत्रण बेसी देर तक नय राखि सकल आ मन के सब भड़ास बाहर आबि गेल।



"मना करैत छलौं न अहाँ सब क कि अखन स्कूटी नय देल जाऊ। तँ नय हमर गुड़िया रानी अखनेसँ स्कूटी चलेताह। तेरहो बरख ओकर भेलय हन कि। अब मन में शांति आबि गेल न!...

"माँ, अहाँ की कहैत छलियै! ज़माना आगाँ बढ़ी गेलय हन। नर्सिनियाँ के बेटा चौदहहे बरिखमे मोटरसाइकिल चलबैत अछि। कर्नल साहेबक बेटा तँ कारो चला लैत अछि। आबि और दिअ स्कूटी!"

"हमरा माफ क दीअ, बच्चा। हम आन्हर भ' गेल छलिए। बच्चा सभकेँ चलबैत देख, हमरो मन भ' गेल कि अपनो बच्चा चलाबै। पूत आ धीमे अन्तर किछ अछि आबि की। देख न, तोहर बात नय मानेय क सज़ा हम सब भुगैत रहल छी।

""अहूँक कतेक समझेलूँ कि माँ बाबुजीकेँ मनाबु जे अखन अपन छुटकीक उमर नय भेलय हन स्कूटी चलाबै बला।अखन तँ ओकर पायरौ न चुमहैत अछि। सभक दिन दुर्घटनाक समाचार आबैत रहैत अछि।"

.....

"भउजी, आ अहाँ कि कहनै छलियै? याइद अछि कि नय। हम जलय छी अपन छुटकीसँ। हम जलय अछि किया कि बाबुजी हमरा कॉलेजमे मोटरसाइकिल नय देने छलाह। जेकरा हम अपन जानसँ बेसी मानैत अछि, ओकरासँ जलब हम!"

"हमरा सबसँ बहुत नम्भर गलती भ गेलय। चुपो भ' जाऊ न आब। छुटकी हमर सभक क्यो नय अछि की? अहाँ, आब हमरा सभक जान लेब की?

"हाँ, जान ल' लेब। अगर हमर छुटकीकेँ किछ भ' गेल तँ ककरो नय छोड़ब। याइद राखब ई बात।"

अचानक सँ आईसीयू क दरबज्जा खुलल। सभक धकधक्की बैढ़ गेल। विकास तेज़ीसँ आगाँ बढ़ल। "आब अहाँ क बच्ची खतरासँ बाहर अछि।" डागदर क शबद सुनि हक़सँ सभ गोटाक प्राणमे प्राण आइल।

मृणाल आशुतोष

एरौत (समस्तीपुर)

२

प्रणव कुमार झा

लघुकथा

चक्रफाँस

दीपक बीसीए क के पूना के एकटा कंपनी में डाटा प्रोसेसर के पद पर काज करय छलाह । बीसीए कयलाक क बाद इ नौकड़ी हुनका कोनो अनेरहे भेंट गेल होय एहन बात नै छल, मुदा हुनकर लगन, प्रतिभा आ भाग्य बले हुनका ई नौकड़ीभेंट गेल छल अन्यथा हुनके कै टा संगी सभ एम्हरे-आम्हरे कय रहल छलाह। ओना जौं लंगोटिया दोस सब के बात करी त ओ सब हिनका स बढियै पोजिसन पर पहुंच गेल छलाह। रूपेश इलेक्ट्रोनिक इंजिनियरिंग क के इन्फ़ोसिस में छलाह त नंदन मैकेनिकल इंजिनियरिंग क के रिलायंस में । आषीश सेहो सरकारी बैंक में क्लर्क भ गेल छल । तखन इ छल जे दीपको ठीक-ठाक पोजिशन पकैड़ नेने छलाह । एही बीच में देशऽक युवा वर्ग सब में राष्ट्रभक्ति के नया हरबिर्रो उठि गेल छल। इलेक्ट्रोनिक मिडिया से ल के सोशल मिडिया तक में विविध प्रकार के उत्तेजक फ़ोटो, विडियो आ लिंक साझा करय जाय लागल छल । कालेजऽक कैंटीन से ल क आफ़िसऽक कैंटीन तक बस एतबे बहस। सेना की कय रहल अछि पाकिस्तान की कय रहल अछि, अमुक ग्रुप के छात्र सब देशद्रोही थिकाह, अमुक क्षेत्र के लोक सब देशद्रोहि थिकाह, बस यैह सभ चर्चा। दीपक सन भावुक लोक के कखनो काल ई अतिश्योक्ति देख मोन आरिज भऽ जाय छल त कखनो के ओ भावुक भऽ अपने आपे के कोसऽ लागै छहाल। इंटर पास करय के बाद दीपक एनडीए के परीक्षा में बैसल छलाह। पहिल प्रयास में त नै भेलैन ,मुदा दोसर प्रयास में ओ लिखित परीक्षा पास कऽ गेल छलाह। मुदा जखन एसएसबी के लेल भोपाल गेल छलाह त ओत घोर निराशा हाथ लगलैन। गांव आ दरिभंगा में पढल लड़का, नै अंग्रेजी बाजय में फ़र्राटेदार आ नै हिन्दी बाजय में ओ दृढता आ आत्मविश्वास! लिखित परीक्षा आ रिज्निंग राउंड तक त ठीके रहलैन मुदा जखन स्टोरी राईटिंग आ ग्रुप डिस्कसन राउंड आयल त हिनकर हाथ-पैर फ़ुलय लगलैन। अस्तु, ओ अगिला राउंड में नै पहुंच सकल छलाह।

अहिना एक बेर बिहार मे प्राथमिक-माध्यमिक शिक्षक के भर्ती निकलल । हिनको कै टा संगी आ गौंआ सब फ़ोर्म भरलक। ओ सब हिनको उकसैलक जे तोहुं भैर लैह हौ मीता, भ गेलह त बुजह जे आरामऽक नौकडी भ जेत अपन प्रदेश में । बाबू सेहो सैह राग अलापै छलखिन्ह। बाबू बाजल छलखिन्ह जे जतेक पाई ओत दै छौ लगभग ततेक पाई त एत्तौ भेटिए जेतौ। दीपक उत्तर में बजने छलाह जे बाबू से त ठीक अछि मुदा एत्त हमरा आगा तेजी स उन्नति भेटत ओतय से बात नै ने रहतै यौ। ऐ पर बाबू बजलाह जे देखह ओतय जत्तेक खर्च छ गाम-घर मे ओकर अपेक्षा खर्च कत्तेक कम हेत सेहो ने सोचह। तैं एकबेर ट्राई करऽ मे कोनो हर्ज नै। एहि प्रकारऽक घमर्थन के बीच दीपक के मोन मे एकबैगे एकटा सोच जगलैन। ओ सोचय लगलाह जे जौं हमरा मास्टरी में भ जाय त हमरा लेल इ एकटा अवसर हेतै अपना गाम-घर दिस के बच्चा के पढाबय-लिखाबय के । यदि हम अपन प्राप्त ग्यान आ अनुभव के उपयोग क के मेहनत से किछु धिया-पुता के पढाबय के प्रयास करब त निश्चिते प्राथमिक-माध्यमिक स्तर पर किछु बच्चा में ओ ग्यान आ आत्मविश्वास भैर सकै छी जैसे ओ आगा दुनिया में स्पर्धा क सकै। फ़ेर बाबूओ ठीके कहै छथिन जे भ सकै अछि जे वापस गामऽक रस्ता धेने हमर करियर ओ मोकाम हासिल नै क सकै जे पूना में रहि क अगिला १०-१५ साल में हम प्राप्त क सकै छि मुदा गाम-घर में ओइ अनुसार खर्चो कम हेतै आ अपन क्षेत्र में रहय के आनन्द सेहो त भेटतै । यैह सब सोचि क दीपक अप्लाई क देलाह। भगवती के इक्षा एहेन भेलैन जे दीपक ओई परीक्षा में सेलेक्ट भऽ गेलाह आ हुनका ट्रेनिंग के लेल सरकारी पत्र प्राप्त भेलैन ।

आब ऐ विषय पर लंगोटिया सब में ह्वाट्सएप ग्रुप में घमर्थन शुरू भेल । नंदन बजलाह जे बड्ड निक मिता जाउ जिब लिय अपन जिनगी... .क लिय मजा । ऐ पर रूपेश बाजल छल जे एहेन कोन बडका नौकड़ी लागल छैन, से हमरा लेखे त ऐ मे ज्वाईन केने कैरियर ग्रोथ पर ब्रेक लागि जेतैन । दीपक संग दैत बजलाह जे हमरो येह चिन्ता अछि। उत्तर में नंदन फ़ेर बजलाह जे "यौ भाई ई कियेक नै बुझै छि जे कतबो अछि त अछि त ई सरकारिए नौकडी की ने । ऐ मे सेलरी से बेसी उपरी कमाई देखल जाई अछि। आब देखियौ ने आशीष भाई के छैन त क्लर्के के नौकड़ी ने यौ मुदा हुनका हमरा- अहां से बेसी तिलक भेटलैन अछि से किछु देखिए के भेटलैन अछि कि ने! औ दीपक मीता अहौक जैम क तिलक भेंटत, ज्वाई करू मास्टरी ।"

"हमरा तिलक-दहेज के कोनो लोभ नै अछि मुदा आशीष एहन कोन कमाई करै छथि बैंक में !" दीपक बजलाह।

ऐ पर आशीष दार्शनिक के मुद्रा मे बजलाह जे बैंक लोक सभ के बकरी कीनय से ल के बकरी फ़ार्म खोलय तक के आ इंजिनियरिंग में नां लिखबय से ल के इंजिनियरिंग कालेज खोलय तक के लेल लोन दैत अछि। आ ऐ सभ प्रकारऽक लोन में बैंक अधिकारी-कर्मचारी सभ के 'कट' फ़िक्स रहै अछि। अहिना अहौं के टिप दऽ दैत छी जे स्कूल में मिड डे मीळ से ल के भवन के रख-रखाव आ साईकिल वितरण से ल के स्कोलर्शिप वितरण तक में 'कट' के जोगार रहै अछि आ बेसी हाथ-पर मारी त वोटर कार्ड से ल के राशन कार्ड आ स्वच्छ भारत से ल के इंदिरा आवास तक में 'कट' भेटय के गुंजाइस रहै अछि। आ मास्टरी संग त अहां साईड बिजनेसो क सकै छी। एलआईसी एजेंट बनि जाउ, या लोन एजेंट या कोनो आन धंधा क लिय। बीच-बीच में स्कूल जाय हाजरी बना लिय आ हावा-पाईन लय आबु।

इ सब सुनि क दीपक व्यथित भाव स बजलाह जे हम ऐ प्रोफ़ेशन में इ सब गोरख-धंधा करय लेल नै जाय चाहै छी । हमर उद्देश्य अछि अपन क्षेत्र क बच्चा सब के नीक शिक्षा भेटै तय में हमर योगदान हो। तैं हम बस अपन आर्थिक भविष्य आ करियर ग्रोथ ल क आशंकित छी।

"तखन अहां बूडि छी" एहि बेर नंदन टोकलक । यौ भाय लोक एकटा काज छोड़ि क दोसर धरै अछि अपन प्रगति के लेल दू टा पाई बेसी कामाबी ताहि लेल आ कि अनेरहे ... ...

बीच में बात कटैत दीपक द्रिढता से बजलाह जे नंदन भाय, अहां जे व्हट्सएप से लय के फ़ेसबुक तक पर भरि दिन राष्ट्रभक्ति के राग अलापैत रहै छी से खाली अनका ज्ञान ठेलय लेल आ कि किछु अपनो अमल में लाबय लेल आ कि बस अपन कुंठा मिटब के लेल!

नंदन के समर्थन करैत रूपेश बजलाह जे दीपक भाय अहां अनेरे भावुक भ रहल छी। वास्तव में ई देशभक्ति, राष्ट्रवाद, ईमानदारी आदि शब्द नेता सभ के गरियाब लेल, कि समर्थन लेल आ कि अपन कुंठा मेटाब लेल, हवाबाजी लेल, दोसरा के परतार लेल प्रयुक्त होई अछि, मुदा वास्तविकता के धरातल पर अहां

कोना क के अर्थ (धन) कमाबी यैह सबसं पैघ सोच होय अछि। अहांके समाज में इज्जत ऐ ल के नै भेंटत जे अहां कतेक शुद्ध आ समाजवादी आचरण रखै छी बल्कि ऐ से भेंटत जे अहां धन संचय करय में कतेक काबिल छी (चाहे ओकरा लेल जे तरीका अपनाबी)। आ देखु अहाँ जे दुविधा में छी ओकर कारण करियर ग्रोथे त अछि ।

ऐ घमर्थन के बीच दीपक के मोन के दुविधा मेटा गेल छल ओ उत्तर दैत बजलाह "भ सकै अछि जे लोक हमरा बताहे क के बुझि लैथ मुदा आब हम इ नौकड़ी ज्वाईन करब आ ओहि उद्देश्य लेल करब जे हमर मोन में अछि। रहल बात अर्थोपार्जन के त किछु आर तरीका सेहो अपनायब जेना विद्यालय के बाद के समय में ट्युशन, छोट-मोट सोफ़्टवेयर/वेबसाईट/प्रोजेक्ट/डाटा-एन्ट्री वर्क आदि के कार्य करय के प्रयत्न सेहो रहत। जौं भगवति कऽ आशिर्वाद बनल रहलै त जिनगी ठीके-ठाक कटि जेतै ।"

दीपक के पोस्टिंग अपने जिला के एकटा आन प्रखंड के एकटा माध्यमिक विद्यालय में भ गेल छल । दीपक ओतबे उत्साह आ आशा के संग विद्यालय ज्वाईन केलाह जतेक उत्साह आ आशा सं कोनो सासु अपन नबकी कनिया के दुरागमन काल में परिछण करै छथि। मुदा किछुए दिन में दीपक के विद्यालय में पसरल अव्यवस्था के भान भ गेल। विद्यालय में अनुपस्थिति के मामिला में मास्टर आ विद्यार्थी में जेना कोनो अघोषित शर्त लागल होय! माने पचास प्रतिशत सं बेसी नै मास्टर के उपस्थिति रहै आ नै विद्यार्थी के । विद्यालय भवन के हाल सेहो तेहने सन भेल छल जेना कोनो स्त्री के, जिनकर वर बहुत दिन से बाहर कमाय लेल गेल होइथ आ सासुर में केयौ मानऽ बला नै होइन । शौचालय के नाम पर २ टा शौचालय टूटल-फ़ाटल गन्हाइत जैमे नाक नै देल जा सकै अछि आ दू टा मास्टर सब लेल कनि ठीक-ठाक अवस्था में जै में ताला मारल रहै छल । कियेकि आधा मास्टर सदिखन अनुपस्थिते रहै छलाह तैं किछु क्लास या त खालिए रहै छल अथवा दू टा तीन टा क्लास के एक्के संगे बैसा देल जाय छल । ई अव्यवस्था देख दीपक के मोन खिसिया गेलैन। ओ एकरा विषय में बिईओ साहेब के विस्तार पूर्वक लिखलाह आ हुनका से ऐ विषय में उचित कार्यवाही कर के निवेदन केलथिन्ह। किछु दिन बाद बिईओ साहब एलाह आ विद्यालय के निरिक्षण केलखिन। पूरा काल हेडमास्टर, किरानी आ लगुआ-भगुआ मास्टर सब हुनका घेरने रहलैन आ विद्यालय के अव्यवस्था के झांप के पूर्ण प्रयास केलाह ।

आब दीपक उम्मीद करै छलाह जे प्रखंड से किछु कार्यवाही हैतैक। मुदा एहन त किछु नै भेल परंच एक दिन मुखिया आ सरपंच पहुंचलाह स्कूल पर। पंहुचैत देरी दीपक के पुछारि भेलैन। दीपक आबि क हुनका सब के प्रणाम-पाती केलखिन्ह। मुदा प्रणाम के उत्तर देने बिना हुनका पर प्रश्न दागल गेल जे यौ दीपक बाबू! अहां एतय नौकड़ी करय लेल एलहु अछि कि राजनीति करै लेल? जं राजनीति करै के अछि त खुलि क बाजू आ नै त एम्हर-आम्हर के बात सब नै कैल करू । चुपचाप विद्यालय में आउ, समय बिताबु आ आराम से दरमाहा लेल करू बस।

"आ जौं दरमाहा कम बुझना जाय त टोली बना के सरकार के आगा धरना-प्रदर्शन करू" किरानी बाबू बीच में बात लोकैत व्यंगात्मक लहजा में बजलाह ।

दीपक उत्तर में कुछु नहीं बजलाह। हुनकर मोन बड़ड कुंठित आ व्यथित भ गेल छल ।

दीपक के मलिन मुंह देख के एक दिन मंडल सर पुछलखिन जे हौ दीपक, एना कियेक मोन मलिन केने छहक? सिनेहऽक छांह भेटने दीपक के मोन द्रवित भ गेल। ओ बजलाह जे सर, हम अपन करियर आ महानगरऽक जीनगी छोड़ि क इ नौकड़ी पकड़ने छलहुँ ई सोचि क जे अप्पन गाम-घर के धिया पुता सब के निक शिक्षा देबय में अपन योगदान करब। मुदा एत ओकरा लेल जे माहौल भेंट के चाहि से त अछिए नै, उल्टे धमकी भेटै अछि।

ऐ पर मंडल सर बजलाह "हौ कि करबह, इ समाजे एहने अछि। ई हेडमास्टर, किरानी, मुखिया, चपरासी, इ सभ एहि समाज के छैथ कि ने हो, कोनो लंदन से त आयल नै छैथ! तोरा कि लगै छ: जे इ जतेक गोरख-धंधा होय अछि से कि मुखिया-सरपंच के बुझल नै रहै छै। हौ, ऐ सब में ओकर सब के हिस्सा राखल रहै छै।"

मुदा सर ऐ विद्यालय में बच्चा त ग्रामीणे के ने पढै अछि, तखन लोक सब एहन चोर मुखिया-सरपंच के कियेक चुनै छथि! "हौ ई एकटा जटिल सिस्टम चक्र अछि जै में सबहक भागिदारी के तीली देखबह।" मंडल सर प्रतिउत्तर में बजलाह। "देख, ऐ विद्यालय में समाज के किछु एहनो सक्षम वर्ग के बुतरू सब के नामांकन भेल अछि जिनकर बुतरू सब वास्तव में कोनो पब्लिक स्कूल में पढि रहल अछि। मुदा सरकारी योजना के लाभ लेब हेतु ओ सब नामांकन एतहु करौने छथि। विद्यालय प्रशासन से हुनका ई लाभ भेटै छैन जे बिना विद्यालय एनहि हुनकर सब के हाजरी बनि जाय अछि आ सरकारी योजना सब के लाभ भेट जाय अछि। ताहि एवज में ओ सभ एहन चोर मुखिया-सरपंच के चुनै छथि। "

"मुदा एना करै के बजाय यदि ओ सक्षम लोक सब एत्तहि निक पढाई के लेल जे दवाब बनेथिन त कदाचित एत्तहु निक पढाई भेंट सकै छैन जै से ओ सभ पब्लिक स्कूल के महरग फ़ीस के चक्कर से सेहो बांचि सकै छैथ!" दीपक बजलाह।

मंडल सर एकटा गहिर सांस छोडैत बजलाह "हँ। मुदा ऐ मे हुनका सब के एकटा भांगट ई बुझना जाय छैन जे फ़ंडऽक कमी सँ सरकारी विद्यालय में ओ इंफ्रास्ट्रक्चर आ सुविधा नै अछि जेकर दरकार अछि आ दोसर जे कदाचित इ मनोविचारधारा सेहो काज करै अछि जे तखन त हुनकर बच्चा संगे आनो (आर्थिक अक्षम) लोक सब के बच्चा सब सेहो आगु बढि जायत जे कदाचित इ वर्ग के पसंद नै छैन ।"

मुदा एहनो लोक सब के त समाज में कमी नै जिनका सब के सरकारी विद्यालय में निक शिक्षा भेंटय से लाभ होउ। से सब किये नै एहन मुखिया-सरपंच सब के विरोध करै छैथ? दीपक पुछलाह।

"नाना प्रकार के दबाव, जागरूकता के कमी, रोटी-पानि में ओझरायल रहै के कारणे आ भ्रामक प्रचारतंत्र एकर कारण अछि" मंडल सर बजलाह ।

ऐ प्रकारे किछुए मास में दीपक के ओय कुचक्रव्युह के जानकारी भ गेलैन जै में शिक्षा व्यवस्था(सिस्टम) ओझरायल छल । मुदा ऐ चक्रव्युह के तोडी कोना से कोनो मार्ग नै भेंटय छल। कोनो आर सक्षम लोक के सहायता के उम्मिदो लगेता त मार्ग रोकय लेल कैएक टा जयद्रथ ठाढ भेल छल। छुट्टी में जखन ओ गाम गेलाह त अपन मोनऽक व्यथा बाबा के सुनेलखिन्ह। बाबा कहलखिन्ह जे बौआ जखन उखैर मे मुंह दैये देलह त मुंसर सँ किये घबराय छह। तों त बस अपन कर्तव्य करह, बाँकि विधाता पर छोड़ि दहक। मोन लगाक धिया-पुता के पढाबह लिखाबह। एहन त नै अछि जे तों किछु अजगुत देख रहल छह। हमरा पीढि सँल के तोरा पीढि तक लोक सीमिते साधन में ने पढलक अछि है।

दीपक के बाबा के बात जंचि गेल । बस फ़ेर की ओ एम्हर-आम्हर के कुव्यवस्था के देखनाय छोडि क बच्चा सब के पढबै पर ध्यान देबय लगलाह। एक्स्ट्रा क्लास सेहो लेबय लगलाह। जल्दिए ओ छात्र सब आ किछु गार्जियन के बीच लोकप्रिय भ गेलाह। एम्हर ओ १५ अगस्त के अवसर पर छात्र सब के बीच छोट-मोट प्रतियोगिता के आयोजन के योजना बना रहल छलाह आ ओम्हर करमनेढ स्टाफ़ सब में खुसुर-फ़ुसुर चालु भ गेल छल। फ़ेर एकदिन दीपक जखन अपन योजना ल के हेडमास्टर लग पहुंचलाह त हेडमास्टर बात कटैत बजलिह जे पहिने इ कहु जे कि अहां विद्यालय के बाद ट्यूशन करै छी? जी हँ।-दीपक उत्तर में बजलाह। त की अहांक नियमावली नै बुझल अछि?-हेडमास्ट्र बजलिह।

जी बुझल अछि मुदा हम ई विद्यालय समय के बाद करै छी आ ऐ से विद्यालय में हमर शिक्षण पर कोनो प्रभाव नै पड़ै अछि, विद्यालय में सबसँ बेसी क्लास हम लै छी ई विद्यालय के बच्चा-बचा जनै अछि। आ आन आन शिक्षक सभ त नै जानि कतेक तरहक व्यवसाय करै छैथ आ ओहो विद्यालय के समय में, आधा टाईम गैबे रहै छैथ। - दीपक आवेश में एक्कै सुर में बाजि गेलैथ।

"अहां बेसी काबिल बनै छि की? लोक की करै अछि से देखनाहर अहां के? अप्पन काज करू, हमरा की करय के चाही से जुनि बताउ। बेसी उड़ब त लिखित में ग्यापन पकड़ा देल जायत अहां के ।" —— हेडमास्टर साहिबा झिड़की दैत बजलिह।

दीपक उखरल मोन सं ओतय से घुरलाह। हुनका हेडमास्टरो के गोरखधंधा बुझल छल। ओकर वर ठेकेदार अछि, आ विद्यालय के अधिकांश कार्य/आपूर्ति के ठेका ओकरे भेंटै अछि। मुखिया-नेता सब से सेहो संबंध। आ जे लोक समाजऽक लेल किछु काज करय चाहै अछि तेकरा ज्ञान देबय चललिह अछि!

अगिला दिन किरानी हिनका हाथ में एकटा आर्डर थम्हा देलैन जेकर अनुसार हिनका प्रखंड के कोनो योजना के कार्यान्वयन के लेल सर्वेक्षण के कार्य में लगा देल गेल छल। मतलब जे हिनका विद्यालय में छात्र के पढाबै के कार्य से हटाब के नया षडयंत्र रचि देल गेल छल। दीपक हाथ में आर्डर नेने ई नव-संघर्ष के विषय में सोचय लगलाह।

आब त इ समये बता सकै अछि जे दीपक व्यवस्था(सिस्टम) के ऐ चक्रफ़ांस सँबचि क निकैल पाबै छैथ की नै?

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

बयानक संदर्भमे मैथिली गजल

हरेक भाषा साहित्यिक हरेक विधासँ संबंधित बयान अबैत रहैत छै आ ई स्वाभाविक छै। बयान दूनू तरहँक मने सकारात्मक ओ नकारात्मक रहैत छै। मैथिली गजल लेल सेहो समय- समयपर बयान अबैत रहलैक अछि। जँ छोट-मोट बयानकेँ छोड़ि देल जाए तँ मैथिली गजलमे मुख्यतः तीन-चारि टा बयान अछि जे कि अपना समयमे मैथिली गजलकेँ आन्दोलित केलक। पहिल प्रो. आनंद मिश्रजीक बयान, दोसर रमानंद झा रमणजीक बयान, तेसर रामदेव झाजीक बयान आ चारिम मायानंद मिश्रजीक बयान, हम एहिठाम चारू गोटाक बयान राखब आ ओकर विश्लेषण करब एहि विश्लेषणसँ पहिने कहि दी जे ई सभ बयान ओहन-ओहन रचना वा पोथीपर आधारित अछि जे कि प्रकाशित भेल। बहुत रास एहन शाइर जे कि प्रकाशनमे रुचि ने छलनि वा जिनका संपादक कात कऽ दै छलखिन (जेना विजयनाथ झा ओ योगानंद हीराजीक गजलकेँ संपादक सायास नै छापै छलखिन तिनकर सभहँक गजलकेँ एहि बयान देबा कालमे धेआन नै राखल गेल अछि)। ईहो बात धेआनमे राखब जरूरी जे ई बयान सभ मधुपजी, कविवर सीताराम झाजीक वा पं.जीवन झाजीक गजलकेँ बिना व्याकरणपर नपने देल गेल अछि। जँ ई सभ बयान देबासँ पहिने मधुपजी, कविवर सीताराम झाजीक, पं.जीवन झाजीक, विजयनाथ झाजी वा योगानंद हीराजीक गजलकेँ व्याकरणक हिसाबें देखने रहितथि तँ संभवतः हिनक बयान सभ किछु अलग रहैत। तँइ एहि बयान सभकेँ समग्र तँ नै मानल जा सकैए मुदा ओहि अधिकांश गजलक प्रतिनिधित्व तँ करिते अछि जे ओहि कालखंडमे अधिकांश गजलकार द्वारा लिखल गेल। एहि बयान सभहँक विश्लेषणकेँ हम ओहि कालखंडसँ जोड़ि कऽ देखि रहल छी जाहिकालमे ई बयान देल गेल रहै। वस्तुतः इएह सही तरीका छै कोनो तथ्यकेँ जनबाक लेल। तँ देखी बयान आ ओकर विश्लेषण ------

1) प्रो. आनंद मिश्रजीक हिसाबें मैथिलीमे गजल संभव नहि (संदर्भ- 2015 मे मोहन यादवजीक गजल संग्रह "जे गेल नहि बिसरल"मे उदयचंद्र झा विनोदजीक भूमिका। संभवतः ई बयान 1980-85 बीचक अछि)---एहि बयानक मूल रूप हमरा लग नै अछि। तँइ एहि बयानकेँ दू रूपमे लऽ रहल छी। पहिल तँ जे देने छी मने "मैथिलीमे गजल संभव नै"। ई बयान निश्चित रूपें ओहि समयक जे गजलकार सभ सक्रिय छलाह जेना सुधांशु शेखर चौधरी, गोपेश, मायानंद मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, केदार नाथ लाभ, कलानंद भट्ट, सियाराम झा सरस, महेन्द्र, छात्रानंद सिंह झा, तारानंद वियोगी, राम चैतन्य धीरज, केदार कानन, रमेश, विभूति आनंद आदिक गजल सभकेँ देखि कऽ देल गेल अछि। जँ हिनकर सभहँक गजल देखल जाए तँ प्रो. आनंद

मिश्रजीक उक्ति सौ प्रतिशत सच अछि। कनियों झूठ नै। मानि लिअ जँ प्रो. जी एहन नै कहने हेथिन तैयो ई सच अछि ओहि समयक सक्रिय गजलकार सभहँक गजल देखि कियो ई बात कहि सकैत छल। गजल लेल बहर आ काफिया अनिवार्य छै (बहरमे किछु छूटक संगे)। मुदा ओहि समयक सक्रिय कोनो गजलकार (ओहिमेसँ एखनो किछु सक्रिय छथि) बहर आ काफियाक पालन नै केने छथि। हिनकर सभहँक कथन छनि जे भाव मुख्य हो मुदा जँ भावे मुख्य मानल जाए तखन कोनो रचनाकेँ गजल कहबाक बेगरते किए? ओकरा कविते किए ने कहल जाए? आखिर कोनो एहन तत्व तँ हेतै जे कविता आ गजलक बीच अंतर आनैत हेतै। कोनो गजलकेँ नीक वा खराप हेबासँ पहिने ओकरा "गजल" होबए पड़ैत छै आ कोनो रचनाकेँ गजल हेबा लेल ओहिमे बहर ओ काफिया अनिवार्य छै। जँ बहर ओ काफिया नै छै तखन ओ गजले नै भेल भने ओकरा नीक वा खराप गीत या कविता कहू से मंजूर मुदा बिना बहर ओ काफियाक गजल नै हएत (रदीफ कोनो गजलमे भैयो सकैए आ नहियो भऽ सकैए मुदा जाहि गजलमे रदीफ लेल जाएत ताहिमे अंत धरि पालन हएत)।

एक दू गोटेसँ चर्चा केलापर पता चलल जे प्रो. आनंदजी ई मानै छलाह जे मैथिलीमे हुस्न-इश्क नै भऽ सकै छै तँइ मैथिलीमे गजल संभव नै। जँ एहन बात तँ हम प्रो. साहेबसँ असहमत छी कारण हमरा लग विद्यापति छथि जे कि पूरा उर्दू शाइरीसँ बेसी आ पहिने प्रेमपर बात केलाह। किछु विद्वान ई कहि सकै छथि जे विद्यापतिक प्रेम पारलौकिक छल मुदा तखन ई प्रश्न उठै छै जे फेर उर्दू शाइरीक प्रेम पारलौकिक किए नै भऽ सकैए?

जे किछु हो मुदा प्रो. आनंदजीक बयान ओहि समयक गजलकार सभ लेल एकटा चुनौती छल जकरा लेबामे और गलत साबित करबामे ओहि समयक गजलकार सभ असफल भऽ गेलाह। जहाँ धरि एहि बयानक प्रभाव छै हमरा नै बुझाइए जे एहि बयानक कोनो बेसी असरि पड़लै कारण ओहि समयक कथित गजलकार सभ अपन "गलत गजल"मे मग्न छलाह आ प्रो. आनंद मिश्रजी अपन सहविचारक संग प्रोफेसरे टा बनल रहलाह। दूनू पक्षमेसँ किनको ई जनबाक चिन्ता नै रहलनि जे आखिर गजलक असल पक्ष की छै।

2) रमानंद झा रमणजीक हिसाबें वर्तमान गीत गजल मंचीय अर्थलाभक औजार थिक (मिथिला मिहिर फरवरी 1983 ई हमरा लोकवेद आ लालकिलामे सियाराम झा सरसजीक लेखमे उल्लेखित भेटल)-

जँ ओहि समयक सक्रिय गजलकारक गजल देखब तँ पता चलत जे ओ सभ गजलकेँ गेबाक एकटा उपक्रम मानि लेने छलाह। हुनका सभकेँ बुझाइत छलनि (वा छनि) जे गायिकी गजल लेल अनिवार्य छै। जँ गायिकी गजल लेल अनिवार्य रहितै तँ उर्दू गजलमे गालिब आ फिराक गोरखपुरीसँ बेसी महान सुदर्शन फाकिर रहितथि। मुदा से नै भेलै कारण गायिकी गजल लेल अनिवार्य नै। हँ जँ गजलक सभ शर्त पूरा करैत गजलमे गायिकी छै तँ सोनमे सुगंध बला बात भेलै। ओहि समयक गजल सभ गायिकी लऽ कऽ कते मोहग्रस्त छलाह तकर दृष्टांत हमरा विभूति आनंदजीक गजल संग्रह (उठा रहल घोघ तिमिर)मे हुनके भूमिका आ तारानंद वियोगीजीक गजल संग्रह (युद्धक साक्ष्य) केर नव संस्करणक नव भूमिकासँ भेटल। विभूति आनंदजी ओहि भूमिकामे लिखै छथि जे "एगो महत्वपूर्ण प्रसंग............। तत्क्षण किछुकेँ स्वरो देलथिन।" उम्हर वियोगीजी अपन संग्रहक नव संस्करणक नव भूमिकामे लिखै छथि जे "तखन मोन पड़ै छथि जवाहर

झा..........जे हमर छांदस प्रयोग सभहँक संगीत शास्त्रीय व्याख्या करथि।" ई अलग बात जे वियोगीजीक गजलमे कोनो छांदस प्रयोग नै अछि। शास्त्रीय संगीत केर बंदिश तँ कोनो रचनाक पाँति भऽ सकै छै। एहि दूक अतिरिक्त आन गजलकार सभ सेहो गजलकेँ गायिकीसँ अनिवार्यतः जोड़ि देने छथि जाहि कारणसँ ओहि समयक गजल सभ गजल कम आ गीत बेसी लागै छै। अधिकांशतः साहित्यकार ई बुझै छथि जे मंचपर गाबि देलासँ जनता बेसी थपड़ी पीटत आ बहुत संदर्भमे ई बात सच छै। मुदा ओहि समयक गजल लिखनाहर सभ मंचपर हिट हेबाक चक्करमे कथित गजलकेँ गीतक भासमे गाबए लगलाह जाहिमेसँ किछु लोकप्रिय सेहो भेल (जनता द्वारा गीत मानि आ सुनबामे चूँकि ओ गीतेक भास छलै तँइ) जेना सियाराम झा सरसजीक "एक मिसिया जे मुस्किया देलियै," आ एहने सन आर। खास कऽ जे कथित साहित्यकार गीत आ गजल दूनू लिखै छलाह तिनकामे ई गायिकी बला बेमारी बहुत अछि। कलानंद भट्ट गजले लिखै छलाह तँइ हुनक गजलमे एकटा स्थायित्व भेटत ओना ई बात अलग जे भट्टजीक गजलमे सेहो बहर नै छनि आ बहुत ठाम काफिया गलत छनि।तात्कालीन कथित गजलकार सभ गजलकेँ मंच छेकबाक हथियार बना लेला जाहि कारणे ओहि समयक गजलमे कथ्यक गंभीरता छैहे नै। एक बात स्पष्ट कऽ दी खाली लाल झंडा, पसेना, अमीर-गरीब लीखि देलासँ गजल की कोनो रचनामे गंभीरता नै अबै छै। जँ एहि वास्तविकताक भीतर घुसि कऽ देखल जाए तँ रमणजीक बयान बहुत हद धरि सही अछि आ सटीक अछि। रमणजीक एहि बयानक असरि भेल आ गीत सन गजल लिखए बला सभ छिलमिला गेलाह। सरसजी अपन लेखमे एहि बयानकेँ गैर जिम्मेदारी बला बयान मानै छथि (लोकवेद आ लालकिलामे सियाराम झा सरसजीक लेख) मुदा हम रमणजीक एहि बयानकेँ गजलक दृष्टिएँ पूर्ण जिम्मेदारी बला बयान मानै छी। जँ ओहि समयक तात्कालीन गजलकार सभ एहि बयानपर मंथन करितथि तँ आजुक मैथिली गजलक परिदृश्य बहुत निखरल आ विस्तृत नजरि अबैत।

पुरने गजलकार नै बल्कि एखनुक गजलकार सेहो (अनचिन्हार आखरसँ संबंधित किछु गजलकार सेहो) मंच छेकबाक लेल गजलमे गायिकीकेँ अनिवार्य करए चाहै छथि। जखन कि सच बात तँ ई छै जे मंचपर गजल हिट होइत छै मुदा मंच लेल गजलक प्रयोग असफल भऽ जाइत छै से कतेको उर्दू मोशायरामे श्रोताक तौरपर भाग लऽ कऽ हम देखि चुकल छी। उर्दूक प्रसिद्ध शाइर हसरत मोहानीक गजल "चुपके चुपके रात दिन" 1910-1930 मे लिखाएल छै मुदा एहि गजलकेँ गुलाम अली भेटलै 1982मे। तेनाहिते गालिब केर गजल लिखेलै 1820क बाद मुदा ओकर गायिकी रूपमे लोकप्रियता भेटलै जगजीत सिंह द्वारा गेलाक बाद (जगजीतजीसँ पहिने सेहो गाएल जाइत छलै मुदा हम लोकप्रियताक बात कऽ रहल छी)। गायिकी रूपमे हरेक आधुनिक हसरत मोहानीक नसीबमे गुलाम अली आ हरेक आधुनिक गालिब केर नसीबमे जगजीत सिंह लिखाएल रहै छै मुदा आजुक शाइर अपने गेबा लेल आ मंच छेकबा लेल तते उताहुल रहै छथि जे ओ गजलक मूल तत्वकेँ बिसरि जाइ छथि। हमर ई अनुभव अछि जे गजल लेल बहरकेँ अनुपयोगी कहए बला लोक गजलकेँ गेबाक चक्करमे रहै छथि। अन्यथा किछु प्रयासक बाद बहरक निर्वाह केनाइ एकदम आसान होइत छै।

3) रामदेव झाजी मानै छथि जे "साम्प्रतिक गजल रचनाक क्षेत्रमे सुधांशु शेखर चौधरी, गोपेश, मायानंद मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर,केदार नाथ लाभ, कलानंद भट्ट, सरस, महेन्द्र, छात्रानंद, वियोगी, धीरज,केदार कानन, रमेश,अनिल इत्यादि नाम देखल जाइत अछि। हिनका लोकनिक गजलमेसँ किछुमे अवश्ये गजलत्व अछि। परंतु अधिकांशकेँ गजल शैलीमे रचल गीत मात्र कहल जाए तँ अनुपयुक्त नहि। (संदर्भ "मैथिलीमे गजल" डा. रामदेव झा, रचना जून 1984मे प्रकाशित)"--

रामदेव जीक मत रमणजीक मतक विस्तारित रूप अछि। रमणजी मंचपर गजलक प्रवृतिपर बात केने छथि मुदा रामदेवजी गीत सन गजलकेँ सेहो देखार केने छथि जे अधिकांशतः गजलकार गजल नै गीत सन गजल लिखै छथि। रामदेव झाजी स्पष्ट स्वरमे ओहि समयक बहुत रास कथित क्रांतिकारी गजलकार सभहँक गजलकेँ खारिज करै छथि जे कि ओहि समयक हिसाबसँ बड़का विस्फोट छल। ई आलेख ततेक प्रभावकारी भेल जे ओ समयक बिना व्याकरण बला गजलकार सभ छिलमिला गेलाह आ एहि आलेखक विरोधमे विभिन्न वक्तव्य सभ देबए लगलाह। उदाहरण लेल सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश ओ देवशंकर नवीनजीक संपादनमे प्रकाशित साझी गजल संकलन "लोकवेद आ लालकिला" (वर्ष 1990) केर कतिपय लेख सभ देखल जा सकैए जाहिमे रामदेव झाजी ओ हुनक स्थापनाकेँ जमि कऽ आरोपित कएल गेल अछि। ओही संकलनमे देवशंकर नवीन अपन आलेख "मैथिली गजलःस्वरूप आ संभावना"मे लिखै छथि जे "...........पुनः डा. रामदेव झाक आलेख आएल। एहि निबन्ध मे दू टा बात अनर्गल ई भेल जे गजलक पंक्ति लेल छंद जकाँ मात्रा निर्धारित करए लगलाह आ किछु एहेन व्यक्तिक नाम मैथिली गजल मे जोड़ि देलनि जे कहियो गजल नै लिखलनि"

आन लेख सभमे एहने बात सभ आन आन तरीकासँ कहल गेल अछि। रामदेव झाजीक आलेखक बाद एहन आलेख नै आएल जाहिमे गजलकेँ व्याकरण दृष्टिसँ देखल गेल हो कारण ताहि समयक गजलपर कथित क्रांतिकारी गजलकार सभहँक कब्जा भऽ गेल छल।

4) मायानंद जी अपन पोथी "अवान्तर" केर भूमिकाक (ई पोथी 1988मे मैथिली चेतना परिषद्, सहरसा द्वारा प्रकाशित भेल)। पृष्ठ 6 पर मायानंदजी लिखै छथि "अवान्तरक आरम्भ अछि गीतलसँ। गीतं लातीति गीतलम्ऽ अर्थात गीत कें आनऽ बला भेल गीतल। किन्तु गीतल परम्परागत गीत नहि थिक, एहिमे एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अछि। गीतल गजल केर सब बंधन (सर्त) कें स्वीकार नहि करैत अछि। कइयो नहि सकैत अछि। भाषाक अपन-अपन विशेषता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपें निर्मित होइत अछि। हमर उद्येश्य अछि मिश्रणसँ एकटा नवीन प्रयोग। तैं गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक, गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीति तत्वक प्रधानता अभीष्ट, तैं गीतल।"

उपरका उद्घोषणामे अहाँ सभ देखि सकै छिऐ जे कतेक दोखाह स्थापना अछि। प्रयोग हएब नीक गप्प मुदा अपन कमजोरीकेँ भाषाक कमजोरी बना देब कतहुँसँ उचित नै आ हमरा जनैत मायानंद जीक ई बड़का अपराध छनि। जँ ओ अपन कमजोरीकेँ आँकैत गीतल केर आरम्भ करतथि तँ कोनो बेजाए गप्प नै मुदा मायाजी पाठककेँ भ्रमित करबाक प्रयास केलाह जे कि तात्काल सफल सेहो भेल।

हम अपन पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास"मे बहुत रास एहन मैथिली कहबी केर उदाहरण देने छियै जकर दूनू पाँतिमे वर्णवृत मने बहर छै। जाहि भाषाक कहबी धरि बहरमे हो ओहि भाषामे गजल लिखब-

कहब सभसँ आसान छै। मुदा हम जेना कि ओही पोथीमे लिखने छी जे माया बाबू लग मैथिल माटि-पानिक परंपराक कोनो जानकारी ने रहनि ओ बस शब्द सजेबाक फेरमे अपन मजबूरीकँ भाषाक मजबूरी बना देलाह। माया बाबूक एहि बयानक घोर विरोध भेल सरसजी आ हुनक टीम द्वारा मुदा अफसोच जे सरसजी वा हुनक टीम मायाजीक एहि बयानकँ गलत करबा लेल कोनो सार्थक डेग नै उठा सकल। माया बाबू जाहि फार्मेटक गजल लिखै छलाह तही फार्मेटमे सरसजी आ हुनक टीम लिखै छलाह। मने दूनू टीम बिना बहरक बहर गजल लिखै छल आ एखनो लिखा रहल। मायानंद मिश्र बनाम सियाराम झा "सरस" बला लड़ाइ गजलक लेल नै ई विशुद्ध रूपें नाम आ सत्ताक लड़ाइ छल। वर्तमान मैथिलीमे "बीहनि कथा" आ "लघुकथा" केर लड़ाइ सन छल ई।

वर्तमान समयमे एहि बयान सभहँक सार्थकता

प्रो.आनंद मिश्रजी आ मायानंद मिश्रजीक बयानक एखन कोनो सार्थकता नै अछि। दूनू गोटाक बयान मैथिली गजलक असल धाराकँ छोड़ि कऽ देल गेल छल। मैथिली गजलक असल धारा पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा, काशीकांत मिश्र "मधुप" विजयनाथ झा, योगानंद हीरा, जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" आदिकँ छुबैत आगू बढ़ल अछि। मुदा हिनकर सभहँक गजलकँ तात्कालीन संपादक ओ आलोचक द्वारा बारल गेल। जँ हिनकर सभहँक गजलक ओहि समयमे व्याकरणक हिसाबसँ व्याख्या भेल रहैत तँ मैथिली गजलक नकली धाराकँ आगू बढ़बाक मौका नै भेटल रहितै आ मैथिली गजल गन्हेबासँ बचि गेल रहैत। मुदा दुनियाँक कोनो काज बाँचल नै रहै छै से आब मैथिली गजल आलोचनाक छूटल काज सभ भऽ रहल अछि।
डा. रमानंद झा "रमण" ओ डा. रामदेव झाजीक बयानक एखनो सार्थकता अछि कारण ई दूनू बयान गजलक बाहरी पक्षपर छलै। एहन नै छै जे गजल गायिकीसँ मोहग्रस्त पहिनुके गजलकार छलाह। किछु एखुनको गजलकार एहि मोहमे बान्हल छथि आ आगूक किछु गजलकार सेहो बान्हल रहता। तँइ ई दूनू गोटाल बयान भविष्योमे सार्थक रहत।

(नोट---- गजलक वा अन्य विधाक संदर्भमे हम किनको नीक विचारकँ अपना सकै छी। मुदा गलत विचारकँ सदिखन हम आलोचना करैत रहब। एहि आलेखमे जिनकर मतक समर्थन कएल गेल अछि जरूरी नै जे हुनकर सभ मतसँ हम सहमत होइ आ हुनकर गलतो विचारकँ नुकबैत रही। काल्हि भेने फेर कियो गजलक असल पक्षक विपरीत जेता हुनकर हम आलोचना करबे करब। कोनो विधामे प्रयोग खराप नै मुदा अपन कमजोरीकँ विधा वा भाषाक कमजोरी बना देबए बला हमर शिकार होइत रहता।)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- लघुकथा- इज्जत उतैर गेल १.२. जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु - उपन्यासक आरम्भ २.दुर्गानन्द मण्डल- लघुकथा- बोझ

१

१.१.

जगदीश प्रसाद मण्डल

लघुकथा

इज्जत उतैर गेल

डायरियाक इलाज करा तीन दिनक पछाइत जीवनलाल घुमल तँ सभसँ पहिने बाड़ीक करैलाक मचान लग पहुँच अनधुन गरियबैत बाजल-

“यएह सार छी जे पेटमे तेहेन कऽ उघरा-भाँड़ केलक जे तीन हजार रूपैओ खर्च करौलक आ जानो लइपर बीर्त छल।”

जीवनलालक गारि-फज्झैत सुनि मचानपर चतड़ल लत्ती आ लटकल करैला लगले किछु बाजल नहि, एकबेर जीवनलाल दिस आँखि उठा कऽ ताकि अपना दिस देखए लगल। मनमे उठलै- दुनियाँक यएह रीति अछि, कियो अपना सिर अजश लिअ थोड़े चाहैए। अजश नइ लिअ चाहैए सेहो नीके छी, मुदा जखन अजश होइबला किरदानी नइ करब तखन ने, आ जँ किरदानी करब अजशबला आ तखन जे कहबै हमरा अजश किए कियो दइए, सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। दुनियेँटा मे एहेन रीति अछि तेतबे नइ ने अछि। दुनियाँ तँ भेल मर्त्यलोक। जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। से खाली मनुखे आकि जीबे-जन्तुटा नहि, पाथरक जे पहाड़ अछि ओकरो गति तहिना छइ। ई तँ भेल मर्त्यलोकक बात मुदा देवोलोकक गति की ऐसँ नीक थोड़े अछि। जे भगवान सभकेँ जन्मेबो करै छैथ आ मारबो करै छैथ, ओहो कि अपना सिर कहियो अजश लइ छैथ। जन्मैकाल पुरुख-नारीक दोख लगा अपने छिटैक जाइ छैथ, तँ मरैकाल मरनिहारक कर्तव्यकेँ आगूमे रखि अपने निर्दोष भऽ जाइ छैथ..!

जीवनलालक बेतुकार गारि सुनि करैलालालक मनमे ओते दुख नइ भेलै जेते दुखपूर्ण गारि-सभ सुनलक। तेकर कारण भेल जे करैलालालक जे विचरण-विचारी-बुधि छल ओ ओकरा बुझा कऽ कहलकै जे ‘बौआ, तूँ प्रकृति प्रदत्त सृष्टि छह, तँए तोरा एहेन-एहेन बात-कथापर नजरिये ने देबा चाही। तूँ कि कोनो दूटा हाथ-दूटा पैरबला मनुख छह जे लगले टिनही बरतन जकाँ गरम हेबह आ लगले ठण्ढा। तोरा हृदयमे धैर्य छह, तँए धीर रखि विचार करह। लोके जकाँ कि तोहू भऽ जेबह जे लगले माए-बापकेँ गरियेबो करैए आ कनियाँ ठेँस-ठाँस लगने जँ खसै-पड़ैए तँ चिचिया-चिचिया बापे-माएकेँ शोर पाड़ैए जे बाप रौ बाप, माए गइ माए मुइलौंजान बँचा..!

ओना, करैलालाल अपन मनकेँ थीर करए चाहै छल, गारिक कारणपर विचारए चाहै छल। मुदा भोरे-भोर जे जीवनलालक मुहेँ बेतुकार गारि सुनलक तइसँ मनमे कनी खाँच-खरोंच उठिते रहै, जइसँ जइ ढंगक विचार

केलासँ मन पूर्ण शान्त होइतै से नइ भऽ पबै छेलइ। करैलालालक मनमे उठलै जे जीवनलाल जे एते गरियौलक ओ आवेशमे आबि गरियौलक। सहीमे हम गारि सुनैबला किरदानी कहाँ केने छी। गारियोक तँ एक सीमा छइ। जँ गारि सुनैबला किरदानी रहल तखन जँ कियो गारि पढ़लक तँ ओ उचितो भेल। मुदा जँ ओहन किरदानी नइ रहल आ तखन जँ कियो गरियौलक तँ ओ या तँ बलउमकी भेल वा नादानी, मुदा बिनु किछु बुझने-सुझने कियो गरिया देलक तँ ओ गारि महत्-हीन भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...।

लगले फेर करैलालालक मनमे उठलै जे ई तँ अपना मने ने बुझै छी, मुदा मनुख भऽ कऽ जे जीवनलाल गरियौलक से एहेन होइ! जँ गाम-समाजमे एना हुअ लगल जे केकरो कियो बिनु दोखे गरियौत तखन तँ समाजमे अराजक स्थिति बनियेँ जाएत किने। जखने समाजमे अराजक स्थिति बनत तखने केकरो चीन-पहचीन थोड़े रहत। नीको अधला बनि जाएत आ अधलो नीक बनि जाएत..!

करैलालालकेँ अपन शील-गुण मन पड़लै। मन पड़िते विचार उठलै जे कहू जइ मनुखक जीवन रक्षा-ले आहारक संग फलहार बनल छी, वएह जखन मान-मानि नहि देत, तखन आन-आन पशु-पक्षी थोड़े मानि देत। ओहुना पशु-पक्षी कम बुधिक आँट-पेटक जीव-जन्तु छीहे। जखन बुधिक यार मनुख अपनाकेँ बुधियार मानितो बुधिहीन काज करत, तखन ओकरा के बुझौत? जे एतबो बुझैले तैयार नहि अछि जे करैलालाल आयुर्वेदक ओ स्तम्भ छी जे जीवन दाताक संग जीवन भोक्तो छी! मुदा से ओकरा के बुझौत।

फेर करैलालालक मनमे उठलै जे एहेन अतिचार हमरे संग लोकक छै आकि आनो-आनो संग छइ। ओना, जहिना हमरा संग किछु लोकक दुरभवना अछि तहिना किछु लोकक सद्भावना नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहअ। हमरा संग केना नइ कहल जाएत। मुदा हमर बात सुनत के..?

अपन बात सुननिहारकेँ जखन करैलालाल नजैर खिरा देखलक तँ बुझि पड़लै जे एकटा सजमनियेँ सिंहटा एहेन अछि जेकरा केकरो संग अड़ैक शक्ति छइ। से नइ तँ अपन बात सजमैन सिंहकेँ जरूर कहबै। कहबो किए ने करबै, सभकेँ अपन-अपन स्वजातियो आ सहमेलियो तँ अछिए। किछु छी तैयो सजमैन सिंह स्वजातीए भेल किने। ओना, देहा-देही सजमैन सिंहक संग सम्बन्ध नहियेँ अछि मुदा कहियो काल एहेन तँ भइये जाइए किने जे जखन हमहूँ तडुआ बनि आकि भुजुआ बनि थारीमे परोसल जाइ छी आ ओहो[1] तडुआ आकि भुजुआ बनि थारीमे रहैए तखन एकठाम जरूर होइते छी, भलेँ अपन-अपन गुण-धर्मे किए ने दुनू गोरेक बीच दूरी बनले रहैत हुअए। आकि आन-आन जे अछि, ओकरा बीच अपनामे सम्बन्ध बेसी किए ने हुअए। किएक तँ देखते छी जे जहिना अल्लूलाल अछि आकि भँट्टालाल,लगले कहत जे हम अपना पैरपर ठाढ़ छी, दुनियाँमे नहियोँ कियो संग देत तैयो अपन अस्तित्व बना रहबे करब, मुदा लगले कोबी देवीक संग तँ लगले दोसरातिक संग मिलि अपने अधा-छिधा भऽ जाइए। ओना, एहेन चालि कनी-मनी सजमैन सिंहकेँ सेहो छै मुदा तैयो ओ अल्लूलाल आ भँट्टालालसँ अलग पहचानक तँ अछिए। तहूमे सभसँ पैघ गुण सजमैन सिंहमे ई अछि जे ओ केकरो परवाह नइ करैए। असगरो दुनियाँमे अपन अस्तित्व बना कऽ अछिए। कोनो मरे-मसल्ला भेल आकि नूने-तेल भेल, संग रहलै तँ बड़बढ़ियाँ आ नइ रहलै सेहो बड़बढ़ियाँ। देखते छिऐ जे ओहुना लोक बिनु नूनोक उसैन कऽ पेट भरि खाइते अछि। पेटेटा नइ भरैए अपन गुण-शीलसँ जीवन रक्षा सेहो करिते अछि। से नइ तँ सजमैन सिंहकेँ अपन सभ बात कहबै। जे ओ कहत तइ अनुकूल अपन

जिनगी चलाएब। जखन धरतीपर जन्म नेने छी तखन गारि-फज्झैत सुनि जीवन बिताएब से नीक नहि। आकि हेहरा फुलक गाछ जकाँ आड़ि-धूर केतौ फुला जाएब सेहो केहेन हएत..!

जेठ मासक समय। टहटहौआ रौद, केतेको डोह-डाबर आ इनारक संग पोखैर-झाँखैर इत्यादि सुखि गेल। माटिपर पसरल सजमैन सिंहक लत्ती, सभ किछु बरदास केने जहिना अपन मुँह उठा फूल-फड़सँ लदल मस्त अछि तहिना दोसराक मदैत करैले सेहो सीना तनने अछिए...।

सजमैन सिंह लग पहुँच करैलालाल बाजल-

"भैया, मुसीबतमे पड़ि गेल छी! भोरे-भोर जीवनलाल मुहेँ-काने तेते ने गरियौलक जे मन ग्लानिसँ गलि रहल अछि।ओना, तखनो जीवनलालकेँ मुहेँपर जवाब दऽ सकै छेलिऐ मुदा वेचारा बड़ मेहनतसँ सेवा केने अछि तही रोचे किछु ने कहलिऐ।"

करैलालालक बात सुनि सजमैन सिंह बाजल-

"से तँ नीक केलह बौआ, किए तँ तामस-पीतमे केते गोरेक मन तेना बदैल जाइ छै जे उचित-अनुचितक समुचित विचार नइ कऽ पबैए।"

सजमैन सिंहक विचारकेँ अपन विचारमे मिलैत देख करैलालालकेँ अपन भरोस जगलै- भने केलौं, जे केलौं से नीके केलौं। यएह ने भेल गहींरपन आ उत्थरपनक बीच अन्तर-विचार। जे गहराइमे पैस गहन अध्ययन करैत गहींर विचार रखि गहींरपन वृत्तिकरैए। तहिना उत्थरोपनक ने अपन लक्षण-करम अछिए...। अपन विचारकेँ सार्वजनिक[2] करैत करैलालाल बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ दुआरे हम मुँह बन्न केने रहलौं जे बिनु सजमैन भाइक विचारे औगता कऽ किछु बाजब नीक नहि।"

अपन मन सम बढ़ैत देख सजमैन सिंहक मन प्रेमसँ ओलैड़ गेलैन। जहिना वाणीमे मधुरता आबए लगलैन तहिना अपन गुणपन सेहो जगलैन। सजमैन सिंह बाजल-

"बौआ करैलालाल! तूँ ते जीवनदानी रहितो तीतपनमे तीतल छह, मुदा हम तँ से नइ छी। ने तोरा जकाँ तीतगण छी आ ने कदीमा जकाँ मीठगणे छी। भाय जखन धरतीपर जन्म नेने छी तखन ओहन गुण किए ने अपनामे भरि लेब जे अपन कोनो गुणे-सुआद ने रहत बल्कि ओ सोलहन्नी बेवहार बनि विहार करत! जइसँ सबहक रक्षाक संग अपनो रक्षा हएत!"

सजमैन सिंहक विचार सुनि करैलालालक मन सेहो पकसँ पकियाए लगल।[3] पकियाइते करैलालाल बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ सन गुणमानकेँ जखन सार्वजनिक रूपसँ बेइज्जती भऽ रहल अछि। तखन हम तँ सहजे सभ दिन बच्चे जकाँ रहलौं। कहियो सार्वजनिक रूपे मानि नहि पेलौं। माने सभ दिन भोज-काजसँ बर्जिते रहलौं।"

करैलालालकेँ तोषसँ तृप्ति करैत सजमैन सिंह बाजल-

"बौआ! दुनियाँ कनियैँटा अछि जे एते तबाह होइ छह। जहिना पानिसँ भरल अछि तहिना ने माटियोसँ भरल अछि। कोन कहाँ समनदर सबहक नाओं सुनै छह किने। तँए, केतेक उपछबह। छोड़ह ऐ सभकेँ।

जखन कनफोरा ठनका लोक बरदास करिते अछि तखन ई गारि तँ किछु भेल? जखन ठनकोकेँ माथपर हाथ रखि भगाइये दइए तैठाम ई तँ साधारण गारि छी!"

सजमैन सिंहक विचारक धारमे करैलालाल सेहो धँसि गेल। से धँसल डुमैले नहि, हेलैले...। हेलैत करैलालाल बाजल-

"भैया, तूँ कहुना भेलह ते गुरु-गोसाँइये तूल ने भेलह। तोहर बात काटब ते नरकोमे बास हएत? जे कहबह से आँखि मुनि कऽ मानियोँ लेबह आ करबो करब।"

करैलालालक पिघलैत हृदयकेँ देख आकक पात सदृश हृदयमे[4] सटैत सजमैन सिंह बाजल-

"तोरा मनमे जे एते दुखक काँट गड़ल छौ, से पहिने नीक जकाँ बुझा दे, तखन ओकर उचित उपायक बाट देखा देबौ।"

अपन दुखक ताप जहिना दोसराकेँ कहला पछाइत कमए लगै छै तहिना करैलालालक सेहो कमल। दुख कमिते करैलालाल बाजल-

"भैया, चारिम दिन जीवना पाँचटा जुएलहा करैला मचानपर सँ तोड़ि घरवालीकेँ कहलक जे एकरा नीक जकाँ भरूआ बनाएब। ओ भगवतीकेहेन ते समस्तीपुरक लौँगिया मिरचाइकसिनेही! जानसँ ऊपर मिरचाइक बुकनीक संग आन-आन केतेको रंगक मसल्ला पेटमे भरि देलक। अपन सभ गुणशील मेटा गेल आ अंग्रेजिया जकाँ मसल्ला सुआदक शासक बनि गेल! जी-जान उपैछ जीवना सहए खेलक। खेला तीनियेँ घन्टाक पछाइत पेटमे वायु गोँगिऐ लगलै। एतबो होश नइ केलक जे जीवनी लोक जे छैथ ओ बेल खाइसँ पहिने अपन सभ कुछ सहिआरि लइ छैथ, से बेहूदा केलक नहि। आ जखन डॉक्टरक भाँजमे डाँरक ढौआ ढील भेलै तखन हमरेपर सभ तामस झाड़ैए!"

करैलालालक दुखो आ दुखक दवाइयोक गन्ध वाणीसँ निकलल। सजमैन सिंह अपन सिंहासन सजबैत बाजल-

"बौआ करैलालाल, हिम्मत पूत पहाड़ तोड़ैए!"

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत करैलालाल बाजल-

"हँ से तँ तोड़िते अछि। दिल्लियोमे देखलिऐ आ हिमालय पहाड़मे सेहो देखलिऐ।"

करैलालालक बात सुनि सजमैन सिंह विचारलैन जे दिल्लीक चर्चा करब ते एकर नजैर पहाड़क पाथरपर नहि टिक दिलबलाक दिलक लड्डूपर चल औतइ। तँए नीक हएत जे हिमालयक बात कहिऐ जे हृदयमे गड़बो करतै आ चुभ-चुभ चुभबो करतै। सजमैन सिंह बाजल-

"बौआ करैला, हिम्मतेक बलपर कियो हिमालयपर चढ़बो करैए आ अपन जिनगीक बाट चलैले ओकरा तोड़ि-तोड़ि रस्तो गढ़ैए। हाथीकेँ नइ देखै छहक जे जीवमे सभसँ पैघ अछि। मुदा ओहो जखन रस्ता चलैत रहैए ते गाम-घरक अवारा कुत्ता सभ भुकैए की नहि?"

सजमैन सिंहक विचारक धारमे करैलालाल हेल रहल छल। तैबीच हाथीपर कुत्ताकेँ भूकब सुनि डुमकी मारि करैलालाल बाजल-

"हँ से भुकबे करैए! भुकबेटा नहि करैए बल्कि पाछू-पाछू अपना सीमा भरि दौड़बो करैए।"

विचारक धारमे बहैत करैलालालकेँ बाँहि पकैड़ सजमैन सिंह बाजल-

“बौआ, तूँ कि कोनो बुधि-अकीलबला लोक छह जे झूठ-फूसक पाछू वौआइत रहबह। राम-राम करैत अपन धाम बना दिन-राति भजन-कीर्तन करह। जइसँ जिनगीक धार पवित्र पानिसँ लबालब भरि जेतह, जइसँ मनमे कहियो छोट-छीन बातक खोंच-खरोंच उठबे ने करतह।”

सजमैन सिंहक विचार सुनि करैलालाल बाजल-

“भाय साहैब, अपने जे कहब तेकरा हम सिरोमणि बना सिरमौर केने रहब।”

सजमैन सिंह अपन जिनगीक सादपनक गुणपन मनमे रखि बाजल-

“बौआ, अपन कुल-वंशकेँ चीन्हिह। आ ओकर रक्षा केना हेतह तइमे लागल रहअ।”

सजमैन सिंहक विचार करैलालालक मनक घरमे नइ अँटि सकल। तँए, बिच्चेमे बाजल-

“नीक नाहाँति कनी बुझा कऽ कहियौ, भाय साहैब।”

भूखलकेँ एक टूक रोटी देबकेँ लोक धर्म बुझैए, तहिना एकटा नीक विचार दइबला लोककेँ विचारवान बुझिते अछि ने। तहिना एकटा गुण देनिहारकेँ सेहो गुणवान बुझिते अछि, तहिना कियो अपन शील-सोभाव देने अपनाकेँ शीलवान, स्वाभिमान सेहो बुझिते अछि। आ तहिना केकरो जिनगीक दिशा देखौने सेहो तँ जीवनदाता दृष्टिवान भेबे कएल किने। अपना दृष्टिवान बुझि सजमैन सिंह करैलालालकेँ दृष्टिगोचर करैत बाजल-

“बौआ करैलालाल! बीआसँ लत्ती-गाछ होइत फूलैत-फड़ैत जहिना बुढ़ भऽ कऽ सुखि जाइ छह, तहिना ने जिनगियो अछि। बीज रूपमे जहिना अंकुरित भऽ फूलैत-फड़ैत अन्त तकक जे जीवन भेलह सएह भेलह तोहर कर्मभूमि। अही बीचमे ने नीको करबह आ अधलो करबह। नीकक पाछू जखन दौड़बह तखन संघर्ष हेबे करतह।”

बिच्चेमे करैलालाल बाजल-

“हँ, से तँ हेबे करत।”

करैलालालकेँ विचार सूहकारिते सजमैन सिंह बजला-

“बस-बस, आइ एतबे रहए दहक। ने तूँ केतौ पड़ाएल जाइ छह आ ने हम केतौ जाइ छी। तखन तँ दुनूक बीच जे भैयारी सभ दिनसँ आबि रहल अछि ओकरा निमाहैत चलह।”

q

शब्द संख्या : 1905, तिथि : 30 मार्च 2018

---

[1]सजमैन सिंह

[2]विचारकेँ सार्वजनिक करबक अर्थ भेल- अपनासँ आगू बढ़ि दोसरक संग विचारक सामंजस करब।

[3]पकियाएब भेल पाकल करैला सदृश बनब। जइमे तीतपन कमि जाइए

[4]छातीक दुख मेटबैले, आकक पातकेँ आगिमे ताव लगा छातीमे साटौल जाइए

१.२

जगदीश प्रसाद मण्डल

पंगु

उपन्यासक आरम्भ

1.

मध्य मिथिलाक सीतापुर गाममे हरिचरणक जन्म भेल। जहिना आन-आनक जन्म गुलाम देशमे माने अंगरेजी शासित देशमे होइत आबि रहल छल तहिना हरिचरणक पूर्वजोक जन्म होइत आबि रहल छल आ हरिचरणोक जन्म भेल। ओना, गुलामो देश भौगोलिक दृष्टिमे एक्के रंग नइ होइए, ओइ बीच नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो माटि-पानिक गुण रहिते अछि, जइसँ नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो उर्वर शक्ति रहने नीक-अधला दुनूक पैदाइस होइते अछि।

सीतापुर गाम ने राजस्थान सन अछि जैठाम झाड़ीनुमा गाछ-बिरीछ छोड़ि खाली छीपगरे-सरगर गाछ बिरीछ हएत आ ने साइबेरिया सन ठंढ मुल्क जकाँ अछिजैठाम काई-लिचेन सदृश बौना गाछ-बिरीछ छोड़ि दोसर कोनो छीपगर-सरगर गाछे नइ हएत। सीतापुर ओहन मुल्क अछि जैठाम छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघो गाछ-बिरीछ सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि। ऐठामक माटि-पानि मीठ-सँ-मीठगर फलो पैदा करैए आ सुकाठ-सँ-सुकाठ लकड़ियो दइते अछि। जे कि घरक साज-सज्जासँ लऽ कऽ गामक शोभा सेहो बढ़ौने अछि। तहिना भूमि सेहो ने दू रंगक होइए। एकटा भेल सुभूमि आ दोसर भेल कुभूमि। सुभूमिक माने भेल जीवित भूमि आ कुभूमिक माने भेल मरुभूमि। जेकरा रेगिस्तान सेहो कहै छिऐ। दुनूक अपन-अपन गुण-धर्म सेहो अछिए। ओना, गुणो आ धर्मो अविभक्त वस्तु छी मुदा ओहो जगह पेब अपन रूप बदैलते अछि।

जहिना मिथिलाक उत्तरवरिया सीमा पर्वत श्रृंखलासँ भरल अछि जैबीच हिमालय पर्वत सन पर्वतो अछि आ कैलाश सन भूमि सेहो अछिए, तैबीच मानसरोवर सन सरोवरो नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। तहिना दच्छिनी सीमाक नदीक समूहक बीच गंगा सन पवित्र नदी सेहो अछि। जैबीच सुलतानगंज,सिमरिया घाट सन अनेको पवित्र घाट- सेहो अछिए।

सीतापुर गामक सिमान सेहो मिथिलेक सीमाक बीच ने अपन सिमान निर्धारित केने अछि। जहिना गामक नाओं 'सीतापुर' अछि तहिना गामक भौगोलिक बुनाबट सेहो अछिए। जइमे सैंकड़ो रंगक फूल-फलसँ लऽ कऽ सैंकड़ो किस्मक अन्नो-अन्नक आ तरकारियोक उपजा-बारी होइते अछि।

ओना, मिथिलांचलमे अनेको धार सेहो बहिते अछि जेकर पानि पवित्र-सँ-पवित्र आ अपवित्र-सँ-अपवित्र सेहो अछिए। ओना, दुनूक पहुँच गंगामे होइते अछि,जइसँ दुनू एकबट्ट होइत पवित्र बनि संगे-संग बहैत गंगासागरमे पहुँच समुद्रमे विलीन भइये जाइए।

हजार बीघा जमीनक ऑंट-पेटबला गाम सीतापुरमे जहिना सभ रंगक भूमि अछि ऊँचगर-सँ-निचगर धरि, तहिना ओइ भूमिक उपज सेहो सभ रंगक अछिए। ओना, सालो भरि बहैबला धार, जेकरा चलन्त धार कहै छिऐ ओ सीतापुरमे एकोटा नहि अछि।तँए कि सीतापुर धार रहित गाम अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सीतापुरमे दूटा धार अछिए। जइमे उत्थर रहने एकटा धार मात्र बरसाते भरि बहैए, जेकरा चौमसिया धार गौंआसँ लऽ कऽ अनगौंआँ तक कहै छैथ। गौंआँ ऐ दुआरे कहै छथिन जे गाममे रहने अपना-अपना ऑंखिये देखबो करै छैथ आ ओइसँ जे हानि-लाभ अछि सेहो भोगिते आबि रहल छैथ। आ अनगौंआँ ऐ दुआरे कहै छथिन जे आनो-आनो गाम देने होइत ओ धार बनलो अछिए आ बहितो अछिए। मुदा दोसर जे धार अछि ओ बरहमसिया चलन्त धार तँ नहि छी, मुदा गहींरगर रहने अखाढ़-सँ-अगहन तक बहैत अछि। तँए ओकरा छह-मसुआ धार सभ कहै छैथ। जहिना खेत-पथार अखाढ़मे अन्नसँ आच्छादित होइए आ अगहनमे उसरन भऽ जाइए तहिना ओ धार पहाड़ी पानिसँ लऽ कऽ धरतीक पानिक बीच अपन धार बना बहिते अछि। वर्फसँ बनल पानि जहिना पवित्र होइए, माने ओइमे सुन्नरताक चमक रहै छै, तेकर विपरीत बर्खाक पानिक बहाब होइए, जे मेघसँ बरिस पाथरक स्थानसँ लऽ कऽ माटिक स्थानकेँ धोइ-पखारि बहैए, जइसँ ओकर रंग मटमैल रहैत अछि। मटमैल एक रूप भेल आ गन्दगीसँ भरल गन्दपन दोसर रूप भेल। मटमैल रहनौं बिना गंदपन रहने गन्दा दोसर रूप भेल। खाएर जे भेल जेतए भेल से भेलतेतए भेल। मुदा सीतापुरक बीच जे धार अछि ओ माटि-पाथरक धोन पानिक अछि, तँए ओकरा गन्दा नहियेँ कहल जा सकैए। गेन्दा फूल जकाँ ओकरो ऑंखिमे चमक छइहे। जइमे बहाउ धारक अतिरिक्त अनेको रंगक जलस्रोत सेहो अछिए।

मिथिलांचलक बीचक गाम ने सीतापुर छी तँए गामक अनेको विशेषता अखनो सीतापुरमे चलिए रहल अछि। गामो तँ गाम होइते अछि।मुदा ओहूमे ने नकोर, सकोर आ कुकोरक गुण सेहो होइए। ओना, तीनू गुणसँ सम्पन्न गाम सभ सेहो अछि आ फुट-फुट गुणबला गाम सेहो अछिए। तइमे आन-आनसँ भिन्न सीतापुर गाम अछि। जहिना हजार बीघा रकवाबला जमीन छै तहिना अठारह गण्डा पोखैर सेहो छै तहूमे जाइठबला। जहिना अठारह गण्डा जाठिबला पोखैर सीतापुरमे अछि, तहिना दूटा नमहर पनिझाउबला आ दर्जनो छोट-छोट पनिझाउबला पोखैर सेहो अछिए, मुदा ओ सभ जाइठ रहित अछि। ओनातहूमे दुनू नमहरका जे अछि ओकरा लोक दैंतक खुनल पोखैर कहैए आ बाँकी छोट-छोट जे रंग-रंगक अछि तेकरा सभकेँ चभच्चा, कोचाढ़िसँ लऽ कऽ डोह-डाबर कहैए। भाय!भूमि तँ भूमि छी किने, तहूमे सीतापुर गामक, जे कि मिथिलाक मध्य बसल गाम अछि। ऐठामक भूमिक तँ ई गुण ऐछे जे कुइयाँ-इनारक रूपमे जहिना पतालसँ पानि अनैए तहिना खेत-पथारसँ लऽ कऽ अकास धरिक पानिकेँ सेहो संचित करिते अछि। साए-साए बीघाक दूटा चौरी सेहो अछि। जइमे छह-सात मास तक पानिक जमाव रहैए। जइसँ अन्न, फूल, फल उपैजतो अछि आ ओकर रक्षा सेहो होइत अछि। अन्न-फूल आ फल तँ धरतीक ऊपर होइए। ओहन धरतीपर, जइमे पानि आबि किछु दिन पहुनाइ करैत या तँ अकासमे उड़ि कऽ चलि जाइए वा रसे-रसे पताल दिस सटैक कऽ चलि जाइए वा ऊपरसँ टघैर-टघैर ओही नीचला खेतमे- मानेचौरीमे चलि जाइए। ओना, अकाससँ धरतीपर उतैर वएह पानि उड़ि-उड़ि अकासो दिस बढ़ैए आ पतालो दिस ससरैत समुद्रसँ सेहो गड़ाजोड़ी करिते अछि। खाएर जे अपना

मन फुरै छै से अपन करैए, अनेरे सीतापुरबलाकेँ एतेक हिसाब लइक कोन काज अछि। हमरा सभकेँ ओतबे से ने मतलब अछि जे नीक-नीक माछ उपजए, नीक-नीक सौरखी,करहरआबर्री[1] उपजए, तैसंग गाए-महींसकेँ नहाइ-पीबैले आखेत पटबैले पानि भेटए। बस भऽ गेल जरूरतक पुरती..! लोककेँ अनेरे कोन खगता छै जे धरतीए जकाँ पानियोँक ऊपरमे ओछाइन ओछा कऽ सुतबो करत आ बैस-बैस कऽ ताशो भाँजत। कोन खगता छै जे पचीसीक घर बना पचीसियो खेलत आकि कोजगरा-दिवालीक उत्सवे मनौत। तइले तँ धरती अछिए।

सभ किछु रहितो सीतापुर गामकेँ दुश्मनक डर नइ होइ छै, सेहो बात नहियेँ अछि। कोसी-कमलाक बीचबला गामकेँ तँ एते डर छइहे किने जे जँ कहीं कूदि-फानि कऽ कोसीए आकि कमले चलि औत आ गामक माटिकेँ काटि अपन घर बना गामक बासकेँ उपटा देत, ई डर तँ बनले अछि। तहिना मौसमोक डर तँ बनले अछि किने जे उग्र रूप छोड़ि ओहन मरियले रूप बना लिअए जइसँ अकाले पड़ि जाए, जँ से भेल तखन तँ गाछ-बिरीछक संग माछो-कौछ आ गाइयो-महींस ने पियासे परान तियागए लगत। मुदा तैयो हमरा सभकेँ एतेक आत्मबल तँ अछिए जे ज्ञानबलक संग कर्मबलसँ सेहो हम सभ अपन-अपन आत्मबलक रक्षा करिते छी। तँए, आन-आन गामक अपेक्षा हम सभ अपनाकेँ सबल बुझि निर्भय छीहे। निर्भीक बनि अपन गामक रूप-रंगकेँ सजौनहि छी। सजेनौं किए ने रहब? जइ पानिक गति सभदिना अछि ओ जँ खिसिया कऽ रूसबो करत तँ एक साल रूसत, चाहेदू साल आकि तीन साल रूसत सएह ने, मुदा हमसभ तँ बारह सालक रूसलकेँ बौसैक लूरि रखने छी। ओहिना नहि ने गामक नाओं सीतापुर अछि..!

हजार बीघाक सिमानमे बान्हल सीतापुर गाममे जहिना ऊपर-निच्चाँ खेत बनल अछि, जेकरा लोक उपरारि भीठसँ लऽ कऽ मध्यम नीचरस आ चौरी कहैए,तहिना अनेको रंगक माटियो अछि जे नीकसँ नीकआ अधलासँ अधलाअछि। माने अधिक उर्वर शक्तिबला माटिसँ लऽ कऽ कमसँ कम उर्वर शक्तिबलामाटि सेहो अछिए। पचीसोसँ ऊपर रंगक माटि गाममे अछि, जेना-
खरिआए, मटियार, उस्सर, बलुआही, चिक्कैन, धुसरी, दोरस, तेरस, गाबीसइत्यादि...।

ओना, उपज माटियोक हिसाबसँ होइए आ जमीनक ऊपर-निच्चाँ आकारक हिसाबसँ सेहो होइते अछि। जइसँ धान, गहुम, मरूआ, मकइ, खेसारी, मौसरी,राहैर, केराउ, बदाम, तीसी, सेरसो इत्यादि पचासो रंगक जजाति उपजैत अछि। तैसंग खैहन, दलिहन, तेलहनक अनेको रंगक जिनिसक उपज सेहो होइत अछि। तेतबे नहि, रंग-रंगक तीमन-तरकारी जेना- अल्लू, कोबी, बैगन, टमाटर, झिमनी, रामझिमनी, सजमैन, कदीमा, घेराइत्यादि सेहो उपैजते अछि। रंग-बिरंगक मात्र अन्ने-तरकारी नहि, पचासोसँ ऊपर रंगक फलो आ फूलोक उपज सेहो होइत अछि। आम-जामुन, लताम-लीची, सरीफा, आँता, बेल, धात्री इत्यादि वृक्षनुमा गाछक संग झाड़ीनुमा गाछक फल सेहो उपैजते अछि, जेना- नेबो, दारीम इत्यादि। जहिना नमगर-छरगर फलक वृक्ष अछि तहिना बौना किस्मक फलक गाछ सेहो अछि जेना- सरीफा, अनरनेबा इत्यादि-इत्यादि। तेतबे नहि, अन्न-तीमन-तरकारीक संग अनेको किस्मक साग-पातक उपज सेहो होइत अछि, जेना- गेनहारी, ठढ़िया,पटुआ, घौका, लफ इत्यादि।संग-संग लत्तीनुमा तरकारीक अलाबे जहिना गाछनुमा तरकारीक उपज होइए तहिना फूलोक अछि। चम्पा, शिवलिंग, करबीर, अड़हुल इत्यादि जहिना वृक्षनुमा गाछक फूल होइए, तहिना जूही, चमेली, बेली इत्यादि झाड़ीनुमा गाछक होइए आ तहिना लत्तीनुमाक सेहो अनेको फूल फुलाइते अछि...।

मोटा-मोटी यएह कहि सकै छी जे सीतापुरमे जहिना पचासो रंगक अन्न, पचासो रंगक फल, पचासो रंगक तीमन-तरकारीक संग पचासो रंगक फूलोक उपज होइत अछि।

अन्न, फल, फूल, साग-पात आ तीमने-तरकारी जकाँ सैंकड़ो किस्मक माछ सेहो पोखैर-चौरी आ डबरा-कोचाढ़िमे होइत अछि। जहिना रंग-रंगक अन्न तहिना रंग-रंगक माछो होइए। तहूमे सुअदगर-सँ-सुअदगर माछ, जेना- रोहु, भाकुर, गैंची इत्यादि होइए तहिना मध्यम स्वादक- बुआरीआभुन्ना माछ सेहो होइते अछि। जहिना तीमन-तरकारी आकि फल-फूल रंग-बिरंगक आकारक होइत अछि तहिना माछो अनेक रंगक आ अनेक आकारक होइत अछि। रोहु, बुआरी, भुन्ना आ भाकुर नमहर आकारक माछ होइत अछि तहिना नैन, सौरा इत्यादि मध्यम आकारक माछ सेहो होइते अछि। आ छोट आकारमे कोतरी, इचना, मारा, डेढ़बा, पोठी इत्यादि अनेक माछ अछि। तैसंग माटि-पानिक बीच बसैबला काँकोर, डोका, घोंघी इत्यादि सेहो होइते अछि।

गाए, महींस, बकरी, भेड़ा, घोड़ा, हाथी, गदहाइत्यादि अनेको रंगक जानवर सेहो होइत अछि। ओना, जानवरो-जानवरमे गुणो आ उपयोगोक दृष्टिसँ अन्तर सेहो होइए। मुदा पालतू जानवर तँ छीहे। अन्ने-फलआतरकारीए जकाँ किछु जानवर खाइयोबला होइते अछि। तैसंग दुधारूओ आ सवारियोबला नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जहिना एक दिस बकरीक दूधो होइए आ दोसर दिस ओकर मौसु सेहो खाएल जाइत अछि। ओना, आरो जानवर सबहक मौसु खाएल जाइए, मुदा किछु एहेन जे दुधारूएरूपमे अछि, जेना-गाए-महींस इत्यादि। तहिना किछु एहनो अछि जे सवारियेक उपयोगमे अबैए, जेना- घोड़ा, हाथी...। ओना,घोड़ाकेँ मनुखक सवारीक संग चीजो-वौस उघैक काजमे आनले जाइए। तहिना गदहो अछिए, जे मनुखक सवारीमे तँ कम-सम्म उपयोग होइएमुदावस्तु-जातक लेल बेसी होइए। तहिना गाइयोक अछि, मादा पक्ष जहिना दूधक काजमे अबैए तहिना नर पक्षसँ हरक संग गाड़ियो जोतैक काजमे लगौले जाइए। तैसंग कुत्ता-बिलाइ सेहो अछिजेकर उपयोग ऐछो आ नहियोँ अछि।

जहिना अनेको रंगक घरैया जानवर अछि, माने पोसै-पालैबला जानवरतहिना अनेको रंगक बोनैया जानवर सेहो अछिए। ओना, सीतापुर गाममे हाथी,बाघ, सिंह, भालु सदृश जानवरक बसै-जोकर वन तँ नइ अछिमुदा बोन-झाड़ ऐछे नहि, सेहो केना कहल जाएत। भलेँ ओहन वन नइ हुअए जइमे हाथी, सिंह अपना अधिकारे, अपन पूर्ण स्वतंत्रताकसंगसिंहभूमिक बोन जकाँ आकि असामक बोन जकाँ नइ बसि सकए, मुदा तँए कि ओइ बोनैयाकेँ पालल-पोसल नइ जाइए सेहो बात नहियेँ अछि। हँ!एकरा ऐ रूपमे देख सकै छी जे जहिना हाथी बोनोमे बास करैबला अछि, तहिना गृहवासूओ छीहे। तहिना हरीनक सेहो अछि। ओना, जहिना पालतू गाए अछि तहिना बोनैया गाए सेहो अछि मुदा ओइ गाएकेँ 'नील गाए'क नाओंसँ जानल जाइए। नीलो गाइक संख्या कम अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। आन गाममे जेते हुअए वा नइ हुअए, मुदा सीतापुर गाममे नील गाइक संख्या पोसैबला गाएसँ बेसीए अछि। जँ नइ अछि तँ गामक हजार बीघाक खेतक उपजा केना खा जाइए? जँ ओकरो पकैड़ कऽ दुधारू गाए बनौल जाए तँ अनेरे ने गाममे दूधक बाढ़ि भदवरिया पानिक बाढ़ि जकाँ दूधेसँ भरि जाएत। मुदा केते लोक खेबे करत, तहूमे आबसीतापुरक लोककेँ तेतेक ने मोबाइल, टी.भी, कम्प्यूटर-सभ भऽ गेल अछि जे दुहै-औंटैक छुट्टी छइ। आब तँ बजारेक रेडीमेड दूधक पैकेट आनि आसानीसँ अपन काज चला लइए। एक दिस आँखि मोबाइलपर देने रहैए आ दोसर दिस अन्दाजेसँ बर्तनमे उझैल तीनकेँ तेरह करैए आकि तेरहकेँ तीन करैएआकि की करैए से तँ ओ जानए, मुदा एना नइ

करैए सेहो केना नइ कहल जाएत। किए लोक अनका-ले भोरे-भोर झूठ बाजत। खाएर जे अछि से गाममे अछि, गामक बात भेल। अपन गामक कुचिष्टा करब पातकिये लोकक काज भेल। हम ओहन छी नहि, तँए खाली सपनौतीए कहलौं, देखनौती आकि करनौती बनि नहि कहलौं।

सीतापुर गाममे जहिना घरबास अछि तहिना बनबासो अछिए। बनो तँ वन छी, जेकर माने भेल अधिक संख्याक समूह। जहिना वृन्दावन वृन्द लोकक वन छी, जइमे कृष्ण लीला केलैन तहिना रामो जइ बनमे चौदह बरख बितौलैन, जेकरा तत्काल रामवन कहि सकै छी, सेहो तहिना अछिए। गाछ-बिरीछक वन सेहो होइए। जइमे फलो-फूल लगैएआसुगन्धित वृक्ष रहने सुगन्धक उपयोगमे सेहो अबैएआइमारती वृक्षसँ घरक साज-सज्जा सेहो बनौले जाइए। तहिना ओहन वृक्षक वन सेहो अछिए जे मीठ-सँ-मीठगर फल दइए। गाछे-बिरीछ जकाँ घरोक वन होइए, किएक तँ ओहो समूह रूपमे रहैए आ ओइमे रहैबला मनुखोक वन तँ कहले जा सकैए। खाएर जे अछि कि नहि अछि मुदाफलदार वृक्षक वन तँ परियाप्त अछिए। एक बेर चतुराबाबू चतुरानन मिश्रजेभारत सरकारक पूर्व कृषि मंत्री रहैथ,पोलैंड गेला। पौलैंडमे फलक अनेको किस्मक उपज होइए, पोलैंडक सुप्रीमक संग जखन बैसला आ देशक बड़प्पनक बात उठल तँ पोलैंडक सुप्रीमक विचारक ऊपरमे अपन विचार लदैत चतुराबाबू बजला-

'हमरा देशक कनौसियो-बरबैर अहाँक देशमे फलक उत्पादन नइ अछि!'

चतुराबाबूक बात सुनि पौलैंडक सुप्रीम अपन नजैर उठौलैन। उठल नजैर देख चतुराबाबू बजला-

'ओनानहि फरिछाएत। एक फलक एक किस्मक नाओं अहाँ बाजू आ एकटाक नाओं हमहूँ बाजब। अनेरे ने अन्तो-अन्त फरिछा जाएत।'

पौलैंडक सुप्रीम राजी भेला। गिनती शुरू भेल। पहिने ओ अपन एकटा फलक नाओं बजला। तैपर चतुराबाबू कहलखिन-

'आम।'

फेर ओ दोसर बजला।पुन: चतुराबाबू कहलखिन-

'आम।'

अहिना जखन सात-आठ बेर 'आम' कहलखिन। लगातार आमे-आम सुनि पोलैंडक सुप्रीम चौंकैत पुछलखिन-

'अहाँ खाली आमे-आम कहै छिऐ, दोसर-तेसर कहाँ कहै छिऐ?'

तैपर चतुराबाबू मुस्की दैत जवाब देलखिन-

'हमरा ऐठाम गाछोक रंग-रूप, फलोक रंग-रूप आ सुआदो-गुणक हिसाबे आमक एतेक किस्म अछि। तैसंग आमे जकाँ आन-आन जामवन्तो फलक वन अछि।'

हजार बीघाक सीतापुरमे चारि आकारक भूमि अछि। पहिल आकारक जे ऊँचरस भूमि अछि, ओकरा उत्तम कोटि भूमि मानल जाइए। ऊँचरस भूमि प्राय: बासक उपयोगमे अछि, तँए ओकरा बासभूमि सेहो कहै छिऐ। ओना, केतेको गाममे बालुक ढेरसँ टीलानुमा ऊँचगर भूमि सेहो अछि, मजबुरिये ओइठामक लोक ओहूपर घर बनैबते छैथ मुदा ओ घटिया[2] माटिक भूमिक बास भेल, से सीतापुरमे नहि अछि। सीतापुरक अधिकांश

बासभूमि करिया माटिक अछि, तँए ओ नागभूमि सेहो कहाइत अछि। दोसर आकारक जे भूमि अछि ओ आकारक हिसाबसँ तँ बासे भूमि जकाँ अछिमुदा ओकर उपयोग ओना घरो बनबैमे भइये सकैएमुदा से नहि, ओइमे लोक गाछी-कलम लगबैक संग अन्न, तीमन, तरकारी लगबै छैथ। जेकरा चौमासो कहै छिऐ आ भीठ सेहो कहल जाइत अछि। तेसर अछि नीचरस भूमि, माने गहींर जमीनजेकरा धनहरो कहै छिऐ आ गोरहा सेहो कहै छिऐ। गोरहामे बरसातक समय पानिक बास भऽ जाइए जइ कारणे ओइमे तीमन-तरकारी आकि गाछ-बिरीछ लोक नइ लगबै छैथ। ओइमे खाली पनिसहू अन्न जेना- धान होइए। ओना, बारह मासक सालमे मात्र तीनिए-चारि मास ओइमे पानि बसैक सम्भावना रहै छै, बाँकी समय ओहो सुखले रहैए। ओहूमे आन-आन अन्नो आ तीमनो-तरकारीक खेती होइते अछि। चारिम आकारक भूमि ओहन अछि जइमे बारहो मास पानिक बास रहैए। ओना, आन गाम जकाँ सीतापुरमे एहेन भूमि नहि अछि, मुदा छह मास पानिक बासबला भूमि नहि अछि सेहो तँ अछिए। खाएर जे अछि जेहेन अछि से अछिए, मुदा आठ साए परिवारक घरो आ भोजनो तँ ओही हजार बीघासँ प्राप्त होइत रहल अछि। ओना, किछु गोरे बाहरसँ अन्न खरीद कऽ सेहो अनै छैथ, तँ किछु गोरे बहरबैयाक हाथे बेचबो तँ करिते छैथ। तँए दुनूक जोड़-घटाव भेने बराबर भेल।

सीतापुर मिथिलांचलक अदौक गाम छी, नवघरिया वस्ती नहि। ओना, कोसी-कमला धारक भीरमे नवघरक वस्तियो अछिए, मुदा ओहो नवघरिया गाम तँ नहियेँ भेल। ओना मनुखक पीढ़ी बदलने बुझिमे तेहेन आबिए सकैए। मुदा छी ओहो मिथिलांचलक प्राचीने गाम, जे कोसी-कमला धारक कटनियासँ कटि गेल आ धारकेँ घुसकने पुन: गाम बसि गेल। तँए, कोसी-कमलाक कटिनियाँ दुआरे गामक इतिहास हेरा जाएतसेहो तँ उचित नहियेँ भेल। भलेँ ओकरा 'नवघरिया गाम' नहि कहि 'पुनर्वास गाम' कहि सकै छिऐ। मुदा तहूमे एकटा बाधा उपस्थित भइये गेल अछि। ओ ई जे गामक नाउए बदैल दोसर-तेसर नाओं रखि देल गेल अछि। खास कऽ नवटोलक नाओंसँ कएटा नवटोल गामे भऽ भऽ गेल अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से अछि तेतए अछि। मुदा सीतापुर अदौक गाम छी, जेकर रूप अखनो ओहिना झलैक रहल अछि। से दुनू दृष्टिये, घरक रंग-रूपक दृष्टिये सेहो आ मनुखक दृष्टिये सेहो। घरक दृष्टिये सीतापुरमे जहिना अदौमे गामक घर-दुआर घास-पात आ खरही-बाँससँ बनैत छल तहिना अखनो ओगरबाह-रखबारक संग गरीबक घर अछिए। अखनो ओहने घर बनैए, जइमे बरसातो आ शीतलहरियोमे लोक बास करिते छैथ। तँए कि गाममे पक्का मकानक दू-मंजिला, तीन मंजिला घर नहि अछि सेहो अछिए। सभ तरहक सुख सुविधा- पानि-बिजलीक संग हवा-ले पंखा, भोजन बनबैले गैस चुल्हि वा बिजली चुल्हिसँ सम्पन्न अछि। मुदा तँए कि सीतापुरमे लकड़ीक जारैन वा गोबरक गोरहा-गोइठा आकि गाछक-पातसँ भानस नइ होइए,सेहो होइते अछि। तहिना बिजली पंखाक जगह ताड़क पातक पंखा, डोमौआ बिअनि नइ अछि, सेहो अछिए। तेतबे नहि, बिजलीक इजोतक जगह लालटेन, लेम्प,डिबियाक उपयोग सेहो होइते अछि। तहिना पानिक इनार-पोखैर सेहो अछिए। भलेँ गाममे टंकी आ चापाकल सेहो अछि, मुदा सौंसे गाममे नहि। खण्डित गाममे जरूर अछि। जइसँ कखनो बिजलीसँ तँ कखनो गैस चुल्हिसँ गाम खण्डित होइते अछि। ओना, आरो-आरो बहुत एहेन चीज अछि जइसँ गामकेँ खण्डित रूपमे देखल जा सकैएजेना- शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि-इत्यादि, मुदा अखन से सभ नहिअखन मात्र एतबे।

एक दिस जहिना दू-तल्ला, तीन-तल्ला नमगर-चौड़गर पक्का मकान अछि तहिना दोसर दिस छोट-छोट एक-तल्ला मकानक संग भीतघर, टटघर सेहो अछिए। समुद्रे जकाँ ने गामो होइए। समुद्रमे जहिना नमहर-

नमहर माछ-कौछु होइए तहिना ने नमहर-नमहर गोहि, नकार, सोंसक संग आनो-आन जल-जानवर सभ सेहो रहिते अछि, जे मनुखोकेँ खाइत अछि।

हजार बीघा जमीनबला सीतापुर गाममे आठ साए परिवारक बास अछि। आठो साए परिवारक बीच पाँच हजार लोक छैथ। माने सीतापुरक आवादी पाँच हजार अछि। ओना, आठो साए परिवारमे ने एके-रंगक[3] लोक अछि आ ने एके रंग खेत-पथार अछि। ओना, लूरि-बुइधिक हिसाबसँ सेहो अन्तर अछिए, मुदा से अखन नहि। अखन खाली जनसंख्या आ सम्पैतक[4] हिसाबसँ जे भेद अछि मात्र तेतबे।

सीतापुरमे जहिना अदौमे संयुक्त परिवार छल तहिना अखनो अछि मुदा से अछि मात्र पाँचेटा परिवारमे। ओना, ई कहब जे सभ दिनसँ पाँचेटा ओहन परिवार रहल से बात नहि अछि। पहिलुका हिसाबसँ ओइमे कमियो आएल आ बढ़ोत्तरियो भेल, जे अखन दस-बारह परिवारपर आबि अँटकल अछि। ओना, ओहू परिवारमे सभ तरहेँ एकरूपता नहियेँ अछि, किछु-किछु जहिना समता अछि तहिना विषमता सेहो अछिए, मुदा किछु अछि संयुक्त परिवार तँ अछिए।

सीतापुरमे पाँचटा ओहन संयुक्त परिवार अछि जइ परिवारमे गामक तीस प्रतिशत जमीन अछि। ओना, ओहू तीस प्रतिशत खेत-पथारमे पाँचो परिवारकेँ एकेरंग नहियेँ अछि, कम-बेस अछिए। सभ तरहेँ ओ पाँचो परिवार भरि गाममे नीक मानल जाइत अछि। जहिना घर-दुआर तहिना बास-अगवास आ तहिना गाछी-कलम, बाड़ी-फुलबाड़ीक संग अन्न-तीमन, फल-फलहरी उपजक हिसाबसँ सेहो बेसियो अछि आ नीको अछि। बाँसक बीट जकाँ ओ परिवार सघन अछिए। सघनो केना ने रहत, आमक गाछ जकाँ बाँस थोड़े होइए जे सदिकाल असगरे रहए चाहत। आम-कटहर इत्यादिक गाछ एकपुरखिया होइए, तेकर कारणो अछि जे ओ माटिपर एकटा रहितो जेना-जेना निच्चासँ ऊपर जाइए, तेना-तेना डारि फुटैत सघन होइत मेघ डम्बर जकाँ चतैर जाइए, जइसँ दोसराक चतरब बाधित भऽ जाइ छइ। तैसंग नमहर भेने ओकर माटिक निच्चाँमे सिरो तेहेन भऽ जाइ छै जे दोसराक वृद्धिकेँ रोकि दइए। मुदा बाँस से नहि अछि, ओ तँ केरा-खरही जकाँ जहिना निच्चामे माटिपर रहैए तहिना अपना ऊपर चतरल पातकेँ सेहो ऊपर उठबैत जाइए, जइसँ ऐगला पीढ़ीकेँ अपन वृद्धिमे बाधा नइ भेने ओहो बढ़िते अछि। दोसर कारण ईहो अछि जे आम-कटहर ओहन नपुंसक सन्यासी जकाँ होइए जेकरा सन्तानोत्पत्तिक शक्ति रहितो ओकर रूपे बदैल जाइ छै। माने भेल जे आम-कटहरकेँ सन्तानोत्पत्तिक जे रस्ता छै तइमे पहिने फूल होइए, जेकरा बीच फड़ होइ छैआओइ फड़क बीच बीआ होइ छै, जइ बीआसँ गाछ होइए। तँए अपना शरीरमे, माने अपन गाछमे सन्तान उत्पत्तिक शक्ति रहितो शरीरसँ वंशक वृद्धि नइ कऽ पबैए। मुदा से अवगुण बाँसमे नहि अछि। ओना, केरे-खरही जकाँ बाँसोमे एहेन अवगुण अछिए जे फूल-फड़ होइतो ओकरा उत्पादित शक्ति नइ छइ। दोसर बात ईहो अछि जे जहिना आम-कटहरक औरुदा बेसी अछि तहिना बाँसोक छइ। जहिना बाँस साल भरिक पछाइत धिया-पुता जनमाबैए, माने कोंपर दइए, तहिना आमो-कटहर साल भरिमे तँ नहि, मुदा पान साल पुरैत-पुरैत ओकरोमे धिया-पुता जनमाबैक शक्ति आबिये जाइ छै, आबिये नइ जाइ छै, जनैमतो छइ। तैबीच एहेन अन्तरो तँ अछिए जे कौआ-मेना जकाँ बाँस अपन अण्डाकेँ सेबैत बच्चोक आँखि फोरिसंग छोड़ैए, मुदा आम-कटहरक बीच लोकक प्रवेश भेने, माने ओकर बीआकेँ रोपैक क्रिया भेने, बाँस जकाँ सम्बन्ध नहि रहैए। ओना, औरुदाक हिसाबसँ आमे-कटहर जकाँ बाँसोक औरुदा देखैमे नइ अबैए मुदा जैठाम आम-कटहरमे पाँच सालक पछातिये फूल-फड़ होइ छै तैठाम बाँस महान

साधक जकाँ भऽ जाइए, किएक तँ बाँसमे चालीस बर्खक पछाइत फूल-फड़ होइए। खाएर जे होइए, जेकरामे होइए से होइए तेकरामे होइए। अनेरे बाँस-गाछक हिसाबमे लोक किए पड़त जे ओइ चालीस बर्खक बाँसक फूल-फड़सँ आम-कटहर जकाँ गाछो होइ छै की नहि होइ छइ।

पाँचो संयुक्त परिवारमे जनसंख्यो आ ओकर गुणोमे अन्तर अछिए। जनसंख्याक हिसाबसँ जहिना दू परिवार सघन बोन जकाँ बुझि पड़ैए, माने पचाससँ ऊपर जनसंख्या दुनूक परिवारक रहने, तहिना जे शेष तीन परिवार अछि ओहो तीन रंग अछि। दू परिवार ओहन अछि, जेकरा समाजमे एकपुरखिया परिवार कहल जाइए, ओ पाँच पुस्तसँ एकठाम संयुक्त रूपमे रहितो पाँचे पुरुख आ पाँचेनारीक बीच बनल अछि। ओना, बेटाक बाढ़िमे घटबी भेने असगरुआ होइत गेल, जखन कि बेटीक बाढ़ि तँ भेबे कएल।जे अपन पिताक परिवार छोड़ि-छोड़ि सासुर बसैत गेली जइसँ संयुक्त परिवार पतराएले रहल।

गुणक हिसाबसँ सेहो पाँचो परिवारजनक बीच अन्तर अछिए। दू परिवारक लोक ओहन अछिजे किसानी जिनगीसँ जुड़ल रहल, जइसँ किसानी लूरि-बुधि तँ जरूर भेलै मुदा से खेत उपजबैक लूरि धरि सीमित रहि गेल। बाँकी तीन परिवारमे दू परिवारक हिसाब-किताब एकरंगाह रहने एकरंगाहे रहल, मुदा एक परिवारक वृद्धि अगिया-बताल जकाँ भऽ गेल अछि। अगिया-बताल ई जे जहिना शास्त्र-पुराणकेँ धँगनिहार सभ छैथ तहिना ज्ञान-विज्ञानकेँ सेहो धाँगैत आबि रहला अछि, तँए गामक सभ परिवारसँ देखबोमे आ चालियो-ढालिमे अन्तर बुझिपड़िते अछि। गामोक लोक सभ आ अड़ोसी-पड़ोसी, ओइ पाँचो परिवारकेँ अगुआएल बुझिये रहल छैन।

सीतापुर गामक दू साए परिवार ओहन अछि जेकरा बीच गामक पाँच साए बीघा जमीन अछि। ओना, ने सभ परिवारकेँ एके रंग जमीन छै आ ने परिवारे एकरंगक अछि। ओ दुनू साए परिवार किसान परिवारक रूपमे जानलो जाइए आ अपनो बुझैए। किछु परिवारकेँ पाँच बीघासँ दस बीघाक बीच जमीन छै जे जन-बोनिहारक हाथे अपन खेती करैए, बाँकी परिवारकेँ दस कट्ठासँ पाँच बीघाक बीच खेत छै जे बेर-बेगरतामे जनो-बोनिहारक उपयोग करैएआ अपनो हाथे खेती-बाड़ीक संग मालो-जाल पोसैए। शेष जे छह साए परिवार अछि ओकरा बीच मात्र दू-साए बीघा जमीन छइ। किछु परिवारकेँ अपन बासो भूमि नहि छै आ किछु परिवारकेँ बास भूमि छइहो तँ जोतसीम जमीन नइ छइ। तहिना किछुकेँ बास भूमिक संग दस कट्ठा-पाँच कट्ठा जोतो जमीन छइ। ओना, ओ सभ खेत-मजदूरक रूपमे जानल जाइए, जे गामोक किसानक खेतमे काज करैए आ मौका-कुमौका पूभर सेहो चलि जाइए। पूभरक माने भेल- आसाम, बंगाल। पूभर ओ सभ दू सिजिनमे जाइए। डेढ़ मास, दू मास ओतए रहैए आ ओमहरसँ कमा कऽ आनि परिवार चलबैए। अखन जे चर्च भऽ रहल अछि ओ देशक अजादीसँ पूर्वक, माने 1947 इस्वीसँ पहिने आ 1940 इस्वीक पछातिक। ओइ समैयक बोनिहार पंजाब नइ देखने छला।

जहिना रंग-रंगक जाति आन-आन गाममे अछि तहिना सीतापुरमे सेहो अछि। ओना, कोनो गाम एहेन नहियेँ अछि जइ गाममे सभ जाइतिक लोकक बास हुअए, आ ने कोनो गाम एहेन अछि जइमे खाली एक्के जाइतिक लोक बास करैत होथि। तँए जाइतिक आधारपर एक जाइतिक एक्कोटा गाम नहियेँ अछि। किछु जाति कोनो गाममे अछि आ कोनो गाममे नहियोँ अछि। खाएर जे जेतए अछि, मुदा सीतापुर गाममे पच्चीस-छब्बीस रंगक जाति अछि। जाइतिक हिसाब जेना सभ बुझिते छी जे उच्च जाति, मध्यम जाति आ निम्न जाइतिक रूपमे जाति सभ अछि, तइ हिसाबसँ सीतोपुरमे सभ जाति छथिए।

आने गाम जकाँ सीतापुरक लोक सेहो छैथ जे खेती-पथारीक संग आनो-आन वृत्ति करै छैथ। किछु नोकरिहारा छैथ, तँ किछु पुरहित-पुजेगरी सेहो छैथ आ अधिकांश जाति ओहन छैथ जे अपन जातीय वृत्तिकेँ अपनौने छैथ। जेना केशकट्टीक काज नौआ करै छैथ, कपड़ा धोइक काज धोबी करै छैथ, लकड़ीक काज बरही,लोहाक काज लोहार, बाँसक बरतन बनबैक काज डोम करै छैथआ माटिक बरतन बनबैक काज कुम्हार करै छैथ। इत्यादि-इत्यादि जातीय वृत्ति आने गाम जकाँ सीतापुरक लोक सेहो करिते आबि रहल छैथ।

आइसँ आठ साए बर्ख पूर्व सीतापुर गामक नामो-निशान नइ छल। शुरूमे माने आठ साए बर्ख पूर्व, मात्र दू गोरे अपन परिवारक संग सीतापुर गाम एला। एक-दोसरसँ दुनू अनठिया छला। गामक भूमि सोहनगर छेलैहे, तैसंग कटनियाँ धार-धुरसँ सेहो हटल रहबे करए। ओना, छोट-छोट दूटा धार तँ रहबे करइ। जइमे एकटा मरने जकाँ छलआ दोसर बहता छेलइ। ओही धारक महारपर दुनू परिवार अपन-अपन रहैक ठौर बनौलैन। दुनू परिवारकेँ एकठाम बसने चिन्हा-परिचय सेहो भेल। एक गोरे किछु विशेष होशियार छला आ दोसर परिवारक दोसर गोरे ओइ हिसाबे कम होशियार छल। जिनगी तँ दूनूक एकरंगाहे छेलैन। दुनू परिवार अपन-अपन जीविकोपार्जनक लेल किछु भूमिक उपयोग सेहो करए लगला।मोटा-मोटी हुनका सबहक जीविकाक साधन छेलैन साग-पातक संग छोट-छोट जानवरक मांस आ गाछक फल इत्यादि। पानि पीबैक साधन घरक आगूए-मे बहता धार छेलैहे। घास-फुसक घर बना दुनू परिवार रहए लगला। जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना दुनू परिवारसँ सेहो परिवार बढ़ल आ देखा-देखा आन-आन ठामसँ सेहो कएटा आरो परिवार आबि-आबि बसल। ताधैर गामक नामकरण सीतापुर नइ भेल छल। जखन एक-दोसर गामक परिचय भेल तखन आपसमे सबहक बीच सम्बन्धो बढ़ल। मोटा-मोटी जंगली जीवनसँ किसानी जीवन दिस उन्मुख भेल। गाममे लोक अबैत गेल आ अपन-अपन जीवनो-यापन आ रहैयो-सहैयोक ठौरक ओरियान करए लगल।

दरभंगा राजक द्वारा 1861 इस्वीक बाद राज्यक इलाकामे किछु विद्यालयक स्थापना भेल। एहेन विद्यालय करीब 26 टा बनल। ओही लाटमे एकटा विद्यालय सीतापुरमे सेहो बनल। जइमे किछु परिवारक धिया-पुताक प्रवेश लेलक। प्रवेश लेनिहारमे बेसी उच्च जाइतिक परिवारक धिया-पुता छल। तैसंग मध्यम श्रेणीक जाइतिक बच्चा सेहो प्रवेश केलक मुदा बहुत कम संख्यामे। मुदा निम्न जाइतिक, जेकरा हरिजन कहै छिऐहुनका सबहक धिया-पुताक प्रवेश स्कूलमे नहि भेल। ओना, शताब्दीक अन्त होइत-होइत विद्यालय टुटि गेल। जे भेल से भेल मुदा किछु परिवारमे विद्याक आगमन तँ भइये गेल। जइसँ धीरे-धीरे पढ़ै-लिखैमे वृद्धि भेबे कएल।

सीतापुर गामक आठ साए परिवारमे डेढ़ साए परिवार उच्च जाइतिक अछि। उच्च जाइतिक माने भेल-ब्राह्मण, राजपुत, कायस्थआभूमिहार। ओहू उच्च जातिमे कायस्थ नहियेँ छैथ, बाँकी तीन जातिमे राजपुतक संख्या सभसँ कमआभूमिहारक संख्या राजपुतसँ बेसी आ ब्राह्मणसँ कम अछि। तीनूमे सभसँ बेसी ब्राह्मण छैथ। शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे अनुपातक हिसाबे तीनू एकरंगाहे भेला मुदा संख्याक हिसाबसँ ब्राह्मण बेसी भेला।

मध्यम श्रेणीक जे जाति अछि ओकर संख्या, जातियोक हिसाबसँ आ जनसंख्योक हिसाबसँ बेसी अछि। जहिना उच्च जातिमे तीन जाति अछि, तहिना मध्यम जाइतिक संख्या करीब बीस अछि आ निम्न जाइतिक, माने- हरिजनक संख्या जहिना जाइतिक हिसाबसँ मात्र चारि अछि तहिना जनसंख्याक हिसाबसँ सेहो कम अछि। ओहूमे चारि जातिमे मुसहरक संख्या बेसी अछि बाँकी तीन जाइतिक संख्या कम अछि। ओहू

चारूमे आर्थिक दृष्टिये दू जाति दुसाध आ चमारक बीच अपन घर-घराड़ीक संग किछु जोतसीमो जमीन छै आ गाछियो-बिरछी छै मुदा दू जाइतिक बीच डोम आ मुसहरक बीच, अपन जमीन नइ छइ। शुरूमे जखन दुनू जाइतिक प्रवेश सीतापुरमे भेल छलतखन गामक आधासँ बेसी जमीन परतिये-परात छेलै, जेकर कियो ने मालिक छल, ओहीमे ओ सभ बसल। ओना, वृत्तिक हिसाबसँ डोम मुसहरसँ अगुआ गेल। किएक तँ डोम मवेशी पालनकें[5] अपन जातीय वृत्ति बनौलक, तैसंग बाँसक वस्तु-जात सेहो बनबए लगल, जेकर जरूरत लोककें छेलैहे, मुदा से मुसहरकेँ नहि भेल। ने जातीय वृत्तिक हिसाबसँ कोनो निसचित काज मुसहरकेँ भेल आ ने खेतीए भेल। ओना, छोट-छीन कारोबार- पशुपालनक जरूर भेलसे भेल बकरी पोसब। ओकरा सबहक सोल्होअना जीवन बोनिये-बुत्तापर रहल, जे अखनो अछिए।

आने गाम जकाँ सीतापुरक जमीनक अधिकार सम्बन्धी इतिहास सेहो अछि। ब्रिटिश राज[6] भारतमे जमीनक बन्दोवस्त 1793 इस्वीमे केलक। जइ प्रावधानक मुताबिक राजस्व[7] संग्राहककें[8] जमीनक मालिक बना देल गेल। अही तरहेँ जमीन्दारीक प्रथा शुरू भेल। ओना, तइसँ पहिनौं राज दरभंगाद्वारा जमीनक मालगुजारी ओसलल जाइ छल, तँए ओइ प्रावधानकेँ राज दरभंगा विरोध केलक। ओना, ई दीगर बात भेल जे मालगुजारीमे एकरूपता ने पहिनहि छल आ ने पछातिये रहल। उच्च जाइतिक ओहन जमीनक मालगुजारी कम छेलइ।जेहने जमीनक मालगुजारी मध्यम श्रेणीक जाइतिक लेल बेसी छल। तैसंग ईहो जे ब्राह्मण,राजपूत, कायस्थ आ मुसलमानकेँ विवाहदानी टेक्स नहि लगैत रहै, जे आन जातिकेँ लगैत रहइ। विवाहदानी टेक्सक माने भेल- लड़का-लड़कीक बिआहक टेक्स। जिनकर बेटीक बिआह हेतैन हुनका सबा रूपैआ आ जिनकर बेटाक बिआह हेतैन हुनका दसअना टेक्स दिअ पड़ैन।

आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो गामक आधारपर एक समाज बनल आबि रहल अछि, मुदा समाजक भीतर शुरूए-सँ बिखण्डनक रूप सेहो चलैत आबि रहल अछि। ओ बिखण्डनक रूप अछि- जाति-धर्मक बेवहार। ओना, जँ जातिकेँ मनुख जाति आ धर्मकेँ जिनगीक तृप्तिक हिसाबसँ देखल जाए तखन भेद-भावक कोनो बेवहारिक पक्ष नहि रहैत। मुदा से तँ अछि नहि, जाति-जाइतिक बीच निच्चाँ-ऊपर सीढ़ीनुमा खाँच बना देल गेल अछि, जइसँ एक-दोसरमे भेद अछि, ओ भेद सिर्फ वैचारिके क्षेत्रटा मे नहि अछि, बेवहारिक क्षेत्रमे सेहो अछिए। तहिना धर्मोक अछिए। रंग-रंगक देवी-देवताक सृजन कए जाइतिक बीच बँटवारा कऽ देल गेल अछि,जेकर परिणाम अछि जे एक-दोसरमे एतेक दूरी बनि गेल अछि जइसँ एक-दोसरमे जे समाजिक सरोकार हेबा चाही ओ मेटा गेल अछि। तेतबे नहि, मनुखे जकाँ देवी-देवतामे सेहो छूत-अछूतक बेवहार बनि गेल अछि। फलस्वरूप जाति-धर्मक प्रभाव समाजपर एतेक पड़ि गेल अछि जे ऊपर-सँ-निच्चाँ तक खाधि बनि गेल अछि। तेकर फलाफल एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैक खियालसँ अधिक काल गाम-गाममे झगड़ा-झंझट होइते रहैत अछि।

देश स्वतंत्र भेला पछातियो आ पहिनौं शासन क्रियाक ओहन रूप रहल जे सौंसे समाजक हिसाबसँ, माने समुच्चा गामक लेल ने कोनो योजना बनैए आ ने कोनो काज होइए। जइसँ समाजक किछु लोक सुविधा सम्पन्न छैथ, बाँकी सुविधा हीन। फलाफल गाम-गामक समाजमे विघटनक वातावरण बनैत रहल अछि। विघटनक वातावरण आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो अछिए। मुदा किछु अछितँए कि सीतापुरक समाजिक सम्बन्ध नइ अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। किछु मामलामे एकमुहरी सम्बन्ध अछिए। जँ केकरो घरमे

आगि लगै छैतँ सौंसे गामक लोक मिझबैले जाइते अछि। तैठाम जातीय छूआ-छूत, भेद-भाव मेटाएल रहैत अछि। मुदा लगले जखन गाममे कोनो समाजिक वा धार्मिक क्रिया-कलाप होइत अछि तखन ओ भेद-भाव नीक जकाँ जागि कऽ जगजिआर भऽ जाइए। तहिना बिआह-दान आ भोज-काजमे सेहो नीक जकाँ जातीय बन्धन जगले अछि। मुदा तँए कि कियो अपनाकेँ सीतापुरबला कहब छोड़ि देने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि।

देशक आने भाग जकाँ मिथिलांचलमे सेहो अंगरेजी शासनक विरूद्ध आन्दोलन चलिये रहल छल। आन्दोलनकर्तामे दू रंगक विचार नीक जकाँ उजागर भेल। एक पक्षक विचार छेलैन जे अंगरेजी शासककेँ देशसँ भगाएब। जे रंग-रंगक शोषणो करैए आ जनताक बीच जोर-जुल्म सेहो करैए। ओना, अंगरेजी शासक दू रूपक हथियारक प्रयोग करैत छल। एक तँ शासन सूत्र ओ सभ अपना हाथमे रखने छल, तैसंग देशक भीतर जे राजा-रजबार छला तिनका सभकेँ शोषणक हथकण्डा बनौने छल। हिनके सबहक माध्यमसँ अनेको तरहक शोषण करैत छल। अनेको तरहक शोषणमे प्रमुख छल आर्थिक शोषण। तँए आन्दोलनकारीक दोसर पक्ष जे छला ओ अंगरेजक संग देशी राजा-रजबार आ जमीन्दारक विरोधमे सेहो ठाढ़ भेला।

1935 इस्वीक लखनऊ अधिवेशन माने काँग्रेस अधिवेशनमे खुलि कऽ दू ग्रुपमे आन्दोलनकारी विभाजित भऽ गेला। गाँधीजी जे अखन तक आन्दोलकारीकेँ एक सूत्रमे बान्हि नेतृत्व करैत आबि रहल छला ओहो विभाजित भऽ दू ग्रुपमे बँटि गेल। दोसर ग्रुपक नेता सुभाष बाबू[9] भेला। अधिवेशनमे गाँधीजीक उम्मीदवार सीता रमैयाकेँ सुभाष बाबू हरा देलैन।जइसँ आन्दोलनकारीक बीच जबरदस भूचाल जकाँ भऽ गेल। तइसँ पहिने केतेको क्रान्तिकारी सभ फाँसियोपर चढ़ि गेल छलाआकालापानी सेहो पहुँच गेल छला।

किसानक देश भारत, ऐठामक मूल उत्पादनक साधन जमीन छेलैहे। पच्छिमी देश जकाँ कल-कारखाना नहियेँ छल। गनल-गुथल किछु कारखाना छल, बाँकी लोक खेतीपर आश्रित छला। खेतो राजा-रजबारक संगजमीन्दार, महंथानाक बीच घेराएल छल। अधिकांश लोक या तँ भूमिहीन छला वा किछु-किछु जमीन छलैन। ओना, जिनका जे जमीन छेलैनतेकर मालगुजारी जमीन्दारोक माध्यमसँ आ राज्योक माध्यमसँ ओसुलल जाइ छल। मालगुजारी ओसुलैक ओहन हथकण्डा अपनौने छल जे जँ दू-साल मालगुजारी समयपर नइ देलिऐतँजमीने नीलाम करा लेल जाइत छल, जमीनक रैयती अधिकार समाप्त कऽ देल जाइत छल। माने ओ जमीन आब अहाँक नहि रहल। ओना, समयपर मालगुजारी नइ दइक कारण गरीबी छेलै, जेकर आधारो प्राकृतिक छल। बाढ़ि-रौदीक चलैत फसल नइ उपजने रैयत मालगुजारी नइ दऽ पबै छला। तैसंग शासन-तंत्रक भाषा सेहो बेवधान उपस्थित करिते छल। किएक तँ शासनक भाषा अरबी-फारसी छल। ओना, पैघ-पैघ भूपति आ महंथानाकेँ मालगुजारी नइ लगैत रहैन, किनको ब्रह्मोत्तरक नाओंपर, किनको शिवोत्तर वा अन्य देवी-देवताक नाओंपर छूट छेलैन। मुदा निम्न आ मध्यम श्रेणीक किसान (रैयत) प्राकृतिक आफदसँ सेहो त्रस्त होइते रहै छला।

ओना, गामो-समाजमे ब्राह्मण, राजपुतआमुसलमानकेँ[10] जमीनक मालगुजारी नइ लगै छेलैन। जइसँ हुनका सबहक सम्पैत (जमीन-जयदाद)केँ कोनो राजा-दैव नहि छेलैन। तैसंग हुनका सभ लेल आरो सम्पैत एकत्रित करैक बाट सेहो खुजले छल। माने ई जे रैयतक नीलाम कएल जमीनकेँ ओ सभ किछु-किछु कीमत दए कीन लइ छला।

सर्वे-सेटलमेन्ट आ बंगाल टेनेंसी एक्टसँ पहिनेतकजमीनक अधिकारक कोनो मजगूत आधार नहियेँ छल। 1885 इस्वीमे बंगाल टेनेंसी एक्ट कानूनक प्रावधान भेल। 1896 इस्वीसँ लऽ कऽ 1903 इस्वी तक जमीनक सर्वे-सेटलमेन्ट भेल। सर्वे-सेटलमेन्टक ऑपरेशनक माध्यमसँ दरभंगा जिलामे सेहो सर्वे-कार्य आरम्भ भेल। जइमे दू पक्ष छल, सर्वे आ सेट्लमेन्ट। गाम-गाममे कैम्प लगा जमीनक बारेमे पुछल जाए लगल।

स्थायी बन्दोवस्त भेने एक दिस जमीनदारक जन्म भेल तँ दोसर दिस रैयतकेँ सेहो किछु कानूनी अधिकार भेटल। ओ भेटल ऐ रूपमे जे जे रैयत बारह बर्खसँ ऊपरसँ जइ जमीनकेँ जोति रहला अछिओ ओइ जमीनक मालिक भेल। मुदा से भेल छल केवल कानूनीए प्रावधानक बीच। जइमे अनेको खामी सेहो छेलइ। जइसँ जमीन रैयतक हाथ नहि आबि जमीन्दारे, भूपतिक बीच बनल रहल। रैयत अपन जमीनसँ बे-दखले रहला। जँ खेत जोतितो छला तँ भूधारीकेँ उपज बाँटि कऽ दिअ पड़ै छेलैन।

1935 इस्वीकपछाइत जन-आन्दोलनक बीच मोड़ आएल। बकास्त जमीन आन्दोलनक मुद्दा बनल। ओना, वैचारिक रूपमे शान्तिसँ सेहो आन्दोलन सफल भऽ सकै छल, जँ इमानदारीसँ क्रियान्वित कएल जाइत। मुदा से भेल नहि। हेबो केना करैत, आने क्षेत्र जकाँ ने मिथिलावासी सेहो महाभारत पढ़ै छैथ। तँए, सूई अग्रे ने दातव्य, सूत्र बुझले छेलैन। जएह चेहरा सार्वजनिक मंचपर आन्दोलनक मुद्दा बनबै छला, वएह चेहरा जमीनपर बन्दूक उठा गोलियो चलबै छला। जएह भोजैतनी सएह चटैतनी..! अही बीचमे मिथिलांचलक समाज जबरदस फँसान फँसि गेल।

1939 इस्वीक पछाइत अंगरेजक खिलाफ आन्दोलनक रूप उग्र भेल। रेलक पटरी उखाड़ि रेल बाधित कएल गेल, डाकघर जरौल गेल, टेलीफोनक तार तोड़ि संचारतंत्रकेँ बाधित कएल गेल। इत्यादि-इत्यादि। ओना, आन्दोलन मात्र अपने देशटा मे नइ चलै छल, दुनियाँक आनो-आनो देशक बीच लड़ाइ फँसि गेल रहइ। दुनियाँ दू भागमे बँटा गेल छल। दोसर विश्वयुद्ध अपन उग्र रूपमे फुटल। ओना, अपना देशमे जे पैघ-पैघ भूपति छलातइमेकिछुकेँ छोड़ि बाँकी सभ भूपति अंगरेजक संग खुलि कऽ देलैन। गाम-गाममे आन्दोलनकारी देश-प्रेमी सबहक घरक सम्पैत लूटल गेलैन, गाम-गाममे आगि लगौल गेल। दमन बिराट रूपमे चलए लगल...।

अंगरेजक संरक्षक ऐठामक भूपति सभ तँ छेलाहे जे जासूसी सेहो करैत रहैथ आ गोरा-पल्टनकेँ खाइ-पीबैक संग रहैक बेवस्था सेहो करिते छला। मुदा तैयो जन-जागरण एहेन प्रवल रूप पकैड़ लेलकजे 1942 इस्वी अबैत-अबैत आन्दोलन निर्णायक मोड़क करीब पहुँच गेल।

गाम-गाममे अंगरेजक खिलाफ जबरदस अबाज उठि चुकल छल। बकास्त जमीनक लड़ाइ सेहो शुरू भऽ गेल। गाम-गाममे जमीन्दार, भूपतिक खिलाफ लड़ाइ जोर पकड़लक। ओना, छोट आ मध्यम किसान सभ अपन-अपन रैयती अधिकार लेल उठि कऽ ठाढ़ भइये गेल छला मुदा जातीय जाल आ भूपति सबहक अख्तियार कएल रंग-रंगक लोभ-प्रलोभन बीचमे बाधा रहबे करए। मुदा तैयो रैयतक बीच एहेन उत्साह बनि गेल छल जे अपन अधिकारक लेल जान दइले तैयार भेला। ओना, एकरंग लड़ाइ सभ गाममे नहि चलल। जैठाम भूपति अपन चालबाजीसँ रैयतक बीच फूट पैदा करैत अपन अस्त्र-शस्त्रक[11] प्रयोग केलक, तैठामक रैयत कमजोर पड़ल, जइसँ लड़ाइ सफल नइ भेल। मुदा तँए कि सभ गाममे अहिना भेल, सेहो बात नहियेँ अछि। शानदार जीत रैयत हाँसिल केलैन।

आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो बकास्तक लड़ाइ जोर पकड़लक। तइमे आन गामसँ भिन्न रूपक लड़ाइ सीतापुरमे भेल। हँसेड़ा-हँसेड़ी आकि मारिये-पीट आकि केशे-मोकदमा आन गाम जकाँ नहि भेल। शान्तिपूर्ण ढंगसँ जहिना कोनो सरकारी आदेश लागू होइए, तहिना भेल। रैयत सभकेँ अपन रैयती अधिकार भेटने अस्सी प्रतिशतसँ अधिक जमीन मध्यम आ निम्न किसानक हाथमे आबि गेल। बाँकी बीस प्रतिशत जमीन, जे पाँचटा पैघ किसान छला, हुनका सबहक हाथमे रहलैन। ओना, ओहो सभ अपनो हाथे खेती करै छला आ छिट-फुट रूपमे बटाइ सेहो लगौने छला। जे बटाइ लगौने छला ओ जमीन सर्वेमे बटेदारक नामे नामित नहि भेल छल, तँए ओइ जमीनक वैधानिक अधिकार नहि भेटनेहुनके सबहक हाथमे रहलैन।

ओही सीतापुरमे देवचरण नामक एकटा रैयत सेहो छला। पाँच पुस्तसँ हुनका तीन बीघा जमीनक जोत रहलैन। ओना, चारिम पीढ़ीमे माने पिताक अमलदारीमे जे तीन बीघा जमीन छेलैन ओ नीलाम भऽ गेलैन। गामेक एक गोरे ओ नीलामी जमीन कीनलैन। मुदा समाजिक सम्बन्ध ओइ दुनू परिवारक बीच एहेन बनल रहलैन जे ने बटाइ रूपमे अधा-अधी उपज बाँटै छला आ ने सोल्होअना अपन बुझि खाइ छला। दुनूक बीच[12] आपसी विचारसँ, माने दुनू घर अबाद रहै तइ हिसाबसँ समझौता भेल छेलैन। जहिना एक दिस भूपतिक जमीनक कानूनी अधिकारक रक्षाकेँ धियानमे राखल गेल तहिना देवचरणक पूर्वजक उपार्जित सम्पैतसँ देवचरणक परिवारक भरण-पोषणकेँ सेहो धियानमे राखल गेलैन। जइसँ सालमे चौंथाइयोसँ कम उपज देवचरण भूपतिकेँ दैत रहथिन। समय बीतल। 1948 इस्वीमे ओइ भूपतिकेँ तीनू बेटाक बीच खेतो-पथारआधनो-सम्पैतक झगड़ा शुरू भेल। ओना, झगड़ाक कारण परिवारिक छेलैन, मुदा गामक लोक बुझै छलजे हुनकर जेठका बेटा जे अपन पत्नी-बाल-बच्चाक अछैत एकटा वेश्यासँ बिआह कऽ लेलकैन से। ओना, समाजिक रूपमे सेहो आ परिवारिक विचारधाराक रूपमे सेहो ओकर विरोध भेबे कएल। तैसंग छोटका दुनू भाँइयो आ जेठका भाइक पत्नियो आ बेटो सभ विरोध केनहि रहैन। जइसँ परिवारमे भिनौजीक वातावरण तैयार भेल। ओना,बीचमे जे गामो आ परोपट्टोक किछु लोक रहैथ ओ तीनू भाँइमे मेल-मिलान करैक भरि पोख परियास केलैन मुदा से सफल नइ भेल। परियासक क्रममे गाम-गामक महंथाना आ महंथक अनेको उदाहरण दैत रहलखिन मुदा एतेपर आबि कऽ परिवारक लोक गिरह दऽ देलकैन जे जँ अपना जातिमे दोसर बिआह केने रहितैथ तँ छोड़लो जा सकै छल, किएक तँ जैठाम अस्सी-अस्सी बर्खक बुढ़ सभ दोसर-तेसर बिआह करैए तैठाम ई साठि बर्खक बिआह कोनो अनसोहाँत नहियेँ भेल। मुदा कोन-कहाँ जातिसँ बिआह केलकतँए नइ छोड़बैन, परिवारसँ फराक कइये देबैन। जमीन-जत्था छैन्हे, अपन फूटमे घर बना रहौथ। सएह भेल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत एक संग केतेको रंगक हवा वायुमण्डलमे उठल जइसँ भूपति सबहक करेज डोलए लगल। खास कऽ पुरना दरभंगा जिलाक मधुबनी-सब्डिवीजन आ अखुनका मधुबनी-जिलाक सौभाग्य रहल जे केरलेआबंगाल जकाँ अहुठाम जमीनक लड़ाइ सघन रूपमे उठि चुकल छल। जमीनक जोत-कोरक प्रतिबन्ध माने जमीनपर 144 दफा लागब आम बात भऽ गेल। संग-संग कानूनक धज्जी सेहो उड़ौल गेल।मुदा से भेल दुनू दिससँ, भूपति दिससँ सेहो आ रैयत दिससँ सेहो। एक दिस भूपति सभ सरकारी तंत्रक संग मिलि 144 दफा लागल जमीनक फसल काटए लगला तँ दोसर दिस रैयतो सभ सरकारी कानूनकेँ अनदेख करैत फसल काटए लगल। दुनू दुनू दिस फसल हथियाबए लगला। तेतबे नहि, केतौ-केतौ थानामे जे फसल जमा भेल ओ थानेदार सभ हथियौलक। खाएर जे भेल, मुदा 1940 इस्वीक पछाइत

मिथिलांचलक किसानो-बोनिहार अजादीक लड़ाइमे अपन-अपन उपस्थिति जबरदस रूपमे दर्ज करौने छला। बामपंथी राजनीति एक प्रवल शक्तिक रूपमे सक्रिय छल।

1940 इस्वीक पछाइत खेती करैक काजमे कमी आएल। मुदा ओइ कमीकेँ ऐठामक किसान सहर्ष स्वीकार केलैन। पेट बान्हि-बान्हि लोक अजादीक लड़ाइमे अपन उपस्थिति दर्ज करौने रहला, आन्दोलनमे हाथ बटौने रहला, जहलक यात्रा करैत रहला। आइ धरि जे समाजिक संस्कारमे जहलकेँ नर्क आ पापीक स्थान बुझल जाइ छल, तइ संस्कारमे जबरदस धक्का लगल। जमात करए करामात..! गाम-गामक अधिकांश मुड़हन लोक जहल जाइत-अबैत रहला, जइसँ ओ नर्कसँ बदैल स्वर्ग भऽ गेल, जे पापीक स्थान छल ओ धर्मात्माक स्थान भेल।

तीनू भाँइ- सिंहेश्वर, गौरीनाथ आ शिवशंकरक बीच जे वेश्यासँ बिआहक विवाद उठलओ गामे नहि, परोपट्टाक महंथानो आ जमीन्दारोक शीलकेँ[13] हिला देलकैन। एक्के-दुइए दर्जनो महंथो आ जमीनदारो, जे अखन तक धर्मात्मा बनि धन-धरम पुजबै छला ओ सभ समाजक बीच देखार भऽ गेला। ओना, महंथानोक बीच जमीनक लड़ाइ उग्र रूपमे चलल। केते जमीनदारोसँ नमहर-नमहर महंथाना छेलैहे। लड़ाइ-लड़ाइ जकाँ भेल। लाठी उठल, केश-मोकदमा भेल, हँसेड़ा-हँसेड़ीमे खून सेहो भेल।

सिंहेश्वरक किरदानी वेश्याक संग बिआह करबसँ अस्सी बर्खक पिता- राम किशोरक मन टुटि गेलैन। टुटबे नहि केलैन, विक्षिप्त जकाँ अपन होश-हवास सेहो गमा चुकल छला। मुदा गौरीनाथो आ शिवशंकरो अपन-अपन परिवारकेँ असथिर करैत समाजिक सम्बन्धमे नव रूप देलैन। नव रूप ई देलैन जे तीन साए बीघा जमीन नीलामपर बन्दोवस्त जे करौने छला, ओ कोसिकन्हा जकाँ रेन्ट फिक्स करैत सबहक जमीन आपस करैक विचार तय कऽ लेलैन। डेढ़ साए रूपैआमे देवचरणकेँ सेहो अपन जमीन आपस लइले कहलखिन। ओना, देवचरण अपन पूर्वजक देल सम्पैत गमा चुकल रहैथ, मुदा ओकर जोत-कोर केने अपन परिवारक गाड़ीकेँ घीचैत आबि रहल छला। खेत जोतैले बरदक जरूरत होइ छइ। अपन समांगक संग जँ जोड़ भरि बरद भऽ गेलतँ किसानी जिनगीक एकटा मुख्य अंग भइये गेल, तँए देवचरण गाए सेहो पोसै छला। अपन बरद बेचैत रहला जे कीनैक खगता नइ भेलैन। ओना, जइ बरदसँ खेत जोतै छला ओ पुरनकन्ह भइये गेल छेलैन, मुदा जोड़ा भरि बच्छा-बरद सेहो भऽ गेल छेलैन। ओही बच्छा-बरदकेँ बेच देवचरण अपन पूर्वजक देल जमीन पुन: आपस लेलैन।

अजादीक तूफानी दौड़मे माने 1940 इस्वीमे हरिचरणक जन्म भेल। ओ, ओ समय छलजइमे केतेको परिवारक बच्चा अन्न बेतरे मरल, केतेको माए अपन शक्तिसँ निरोग बच्चाक जन्म नइ दऽ सकली।

हरिचरणक छठिहारमे, जखन समाजक दाय-माय एकठाम बैस भाग्य-रेखा लिखए लगली तँ सर्वसम्मैत निर्णय केलैन जे बच्चाकेँ औरुदा भेटौ, जीबैत रहत तँ एक लोढ़ी बोनियाँ कए कऽ समाजमे परिवारकेँ ठाढ़ करबे करत।

q

शब्द संख्या : 6478, तिथि : 11मई2018

[1]पुरनी गाछक कमल फूलक फल

[2]कमजोर, अधला

[3]जनसंख्याक हिसाबसँ

[4]खेत-पथार

[5]सुगर पोसबकेँ

[6]अंगरेज शासन

[7]भूमिक मालगुजारी

[8]असुलनिहारकेँ

[9]सुभाष चन्द्र बसु

[10]पैघ मुसलमान माने भूपतिकेँ

[11]अस्त्र-शस्त्रक माने भेल अपन बन्दूक-गोलीक संग कोर्ट-कचहरीमे कानूनी उलझन।

[12]भूपति (पैघ किसान) आ देवचरणक बीच

[13]चरित्रकेँ

२

दुर्गानन्द मण्डल

लघुकथा

बोझ

अशर्फी बाबाकेँ मात्र दू गोट सन्तान। एकटा बेटा आ एकटा बेटी। दुनू नैन्हियेटा सँ पढ़ै-लिखैमे बड़ तेजगर। छेटगर भेलाक बाद बेटीकेँ बिआहि अशर्फी बाबानिचेन भऽ गेला। किछु दिनक पछाइत बेटोकेँ बिआहि निचेन भेला। बेटा बी.कम केने छेलैन तँए दिल्लीमे एकटा नीक प्राइवेट फार्म नोकरी भऽ गेलइ। कनी दिन तँ बेटा जेना-तेना दिल्लीमे असगरे रहलै, बादमे ओ अपना घरवालीकेँ सेहो गामसँ दिल्ली लऽ गेल।

आब घरपर रहि गेला अशर्फी बाबा आ हुनकर घरवाली। भगवतीक कृपासँ घरवाली निरोग पड़ि लागल छेलैन जे खेती-पथारी नीक नहाँति कऽ लइ छल। बीस बीघा जथा रहबाक कारणे अशर्फी बाबाकेँ कथुक खगता नहि बुझना जाइ छेलैन। अन्न-पानिसँ साल भरिक बुतात निकालि फीस फाजिल भेलाक बाद बेच-बिकैन कऽ नीक पाइयो भऽजाइ छेलैन। नून-तेल-तीन-तरकारी लेल तँ धानेक पान तँ मोर सैंयाकेँ किए न पान। जीवन-यापन बड़ बढ़ियाँजकाँ चलै छेलैन। मुदा एते भेलाक बादो कहियो-काल जीवनबड़ा एकाकी बुझना जाइ छेलैन। किएक तँ घरमे ने तँ नाति-नातिन रहै छेलैन आ ने पोता-पोती। बेटियो-जमाए आ बेटो-पुतोहु अपन-अपन जिनगीमे मस्त रहै छल। केकरो माए-बापक सुधि लेबाक पलखैत कहाँ। बेटी-जमाए तँ दोगा-दोगी फोन-तौन कैयो लैन मुदा बेटा-पुतोहु सोल्हन्नी अपनेमे मस्त।

ऐबेर समय-साल नीक भेलाक कारणे खेरहीक फसिल नीक छल। तीन छोहेन सम्हैर कऽ तोड़लाक बाद अशर्फी बाबा ओकरा तैयार कऽ नीक दाम पाबि करीब दू मन घरबेद-ले रखि करीब पाँच बेरा बेच लेलैन। चारि हजार रूपैआक हिसाबसँ बीस हजार रूपैआ अशर्फी बाबाकेँ भेलैन।

मने-मन हिसाब बैसा पाँच हजार रूपैआ घर-बेद समय-कुसमय-ले रखि पनरह हजार रूपैआलऽ अशर्फी बाबा दिल्ली अपना बेटालग चलला।

दिल्ली पहुँच डेराकपतासँ बस लऽ बेटाक डेरापर पहुँच केबाड़केँ ढक-ढकौलैन। केबाड़ खेलैत एकटा बच्चा भीतरेसँ पुछलकैन-

“कौन है?”

ओ बच्चा अशर्फी बाबाकेँ नै चिन्हैन। पछाइत पुतोहु घरसँ निकैल, ससुरकेँ देख गोर लागि केबाड़क पट्टाकेँ भीतरे दिस खोलैत भीतर एबाक लेल कहलकैन। अशर्फी बाबा भीतर जा टेबुलपर राखल प्लाष्टिकक बोतलमे भरल पानि उठा बेसिनमे कुकुड़-आचमैन कऽ गमछासँ हाथ-मुँह पोछि कुर्सीपरबैसला। आगामे चाहक कप एबासँ पहिने कनियाँ अपन घरबलाकेँ फोन केलैन जे गामसँ बाबूजी एला हेन। पता नै किए? से ऑफिससँ सोझे डेरा चल आउ।

बेटा माथपर हाथ लैत किछु सोचैत बजला-

“अच्छा ठीक छइ।”

आ तखनसँ गुम-धुनमे पड़ि गेला। जे बाबू किए एला हेन। डेरा पहुँचला, परनामे-पाती केलाक बाद वातावरण एकदम शान्त भऽगेल। दुनूपरानी मने-मन सोचैथ एक तँ वित्तीय वर्ष भेलाक कारणे हाथ खाली-खाली। बेतनक कोनो थाह नहि। ऊपरसँ ऐ बेरक नोटबन्दीक मारि, बेटाक रिजल्ट एला बाद ओकर एडमीशनक समस्या। बेटीक सेहो ऐ स्कूलसँ बदैल दोसर स्कूलमे नाओ लिखाएब। कनियाँ सेहो नैहर जेती। किएक तँ बहिनक बिआह छैन। एहेन समयमे बाबूजी एला हेन। पता नहि की मंगता आ केते मंगता। ऐ बीचमे कोनो फौनो-तौन नहियेँ केने छेलिऐन, पता नहि की सोचैत हेता..?

अही उहापोहमे एक दिन आ एक राति बीत गेल। मुदा वातावरण बिल्कुल गमगीने छल। बापक सोच किछु और छल आ बेटा-पुतोहुक किछु आर। ओ सोचैत जे देखियो, केहेन समयमे बाबूजी कपारपर आबि बसि गेला। की करी आ की नहि करी, समस्या बनल छल। दुनू परानीकेँ किछु फुरबे ने करैन। अशर्फी बाबाक

वास्तविक ओजनसँ कइ गुणा ओजन गर हुनका दुनू पानीकेँ बुझना जाइन। दोसरे दिन जखन कोनो तरहक खास गप-सप्प नै भऽ सकल तँ अशर्फी बाबाकेँ होइन जे हमर बेटा-पुतोहु कोनो तकलीफमे अछि। ओम्हर दोसर दिन जखन गाम एबाक लेल अशर्फी बाबा कोनो चर्चेने केलैन तँ आरो भारी

समस्या भऽ गेल। आब तँ हुनकर बेटा-पुतोहु देवो-पित्तरकेँ कोसए लगलखिन।एक तँ हाथ खाली ऊपरसँ बाबूजी आबि बैसल छैथ। अशर्फी बाबाक ओजन तँ जेना बढ़ले जाइन।

थाकि-हारि तेसर दिन जलखैक उपरान्त अशर्फी बाबा गामेसँ आनल पनरहो हजार रूपैआ बेटाक हाथमे दैत बजला-

“बौआ, हे ई राखह। पनरह हजार छह। ऐबेर बड़ सुन्दर खेरही भेल छल। पाँच बोरा बेचलौं। दू मन घरो-वेद समय-कुसमय-ले रखलौं। पनरह हजार रूपैआ छह। तूँ अखनी दिक्कतदारीमे छह समयपर काज औतह।”

ई कहैत अशर्फी बाबा जे स्वयं बेटा-पुतोहु लेल बोझ बनल छला से बेटा-पुतोहुक बोझ उतारि गाम एबाक लेल विदा भऽ गेला। बेटा-पुतोहु तँ अबाक्..!

की ठीके एहेन जमाना चलि एलै जे अपन पाँच आदमी परिवारमे छठम आदमी बापक रूपमे बोझ बोझ छै, बोझ?

q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र- १.नमस्तस्यै- उपन्यासक आरम २.लघुकथा- क्रान्ति विसर्जन

१

रबीन्द्र नारायण मिश्र

नमस्तस्यै

उपन्यासक आरम्भ

१.

हमर पिताक नाम छलन्हि हरिकान्त। ओ अपना समयमे मिडिल पास रहथि। सौरो खेलाथि। घोड़ा चढ़थि। लगानी वसूलथि। खेती-बारी करथि। सभ तरहेँ हरल-भरल जिनगी छलनि। दू भाँइ छलाह। दूटा बहिन सेहो छलनि। बहिन सबहक बिआह यथासमय सम्पन्न

परिवारमे भए गेल तकर बाद लोकक अभाव खटकन्हि, तँ हमर बाबा, बाबूक बिआह करा देलखिन्ह। वयस कोनो बेसी नहि रहनि। मुदा ओहि समयमे बिआह हेतु वयसक कोनो प्रतिबन्ध नहि रहैक। नीक कुलशील देखि कय हुनकर बिआह भेलन्हि। सासुरमे खूब मान-दान होनि। घोड़ापर सजल-धजल जखन ओ सासुर पहुँचथि तँ गाम दलमलित भए जाइत छल।

साल भरिक पेसतरे हुनक द्विरागमन भए गेल। हमर माए ड्योढ़ीक पुतोहु छली। इलाकामे धाक छलन्हि। नौकर-चाकर लागल रहैत छल। कोनो दिन बितै किछु पता नहि चलैक। लोक जाहि सुखल कल्पना कए सकैत छल से सभ सदजहि सुलभ छल।

दुर्भाग्यवश ई समय बेसी दिन नहि रहल। एक दिन हमर बाबू साँझकए बाधसँ घर अबैत छलाह। रस्तामे कोनो विषधर गछारि लेलकन्हि आ कै हबक्का मारलक। देखिते-देखिते चितंग भए गेलाह। सौंसे परिपोट्टामे हाकरोस पड़ि गेल। जे उपचार सम्भव छलैक से सभ भेल। ओझा-गुनीसँ लए चटिबाह धरि सभ अपना तरहेँ प्रयास केलक मुदा देहसँ हुनकर प्राण जे निपत्ता भेल से घुरि नहि आएल। गहमा-गहमी चारूकात पसरि गेल।

गाम भरिमे उत्साहक माहैल। जकरे देखू मस्त भेल चलि रहल अछि। बंधाबा बाजि रहल छल। अवसर छल ड्योढ़ीमे देवनक ओहिठाम कन्याक जन्मक।

खुशीक बाते छलैक। दू पुस्तसँ ओहि परिवारमे कन्या भेले नहि छलैक। फेर एहि कन्याक तँ पिता किछुए दिन पूर्व गुजरि गेल रहैक। वोहि समय विधबा बनल हमर माए एकदम जवान छली। कोन साँप कटलकै जे हमर पिता टन दए रहि गेलाह। कोनो इलाजो नहि भए सकलैक। हमर माए मसोमात भए गेली।

बात एतबे नहि भेलैक। मसोमात तँ ओ भइए गेल संगहि गर्भवती रहए। ताहि बातकेँ जोर-शोरसँ प्रचारित कएल गेल जाहिसँ समाजक जानकारीमे बात आबि जाए। लोकक समाजक खिधांससँ बचबाक हेतु ई जरूरी छल।

ओहि समयमे हमर माएक वयस छलैक बीसम साल। बिआह भेला दू साल भेल रहैक। सुखी-सम्पन्न परिवारमे ओकर बिआह भेल रहैक। इलाका भरिमे ओहि परिवारक धाक रहैक। एहने धाक रहैक जे ओहि घरक आस-पास क्यो घोड़ापर नहि चढ़ि सकैत छल। जन-बोनिहार सभ बिना अढ़ौने दिन-राति खटैत रहैत छल। अन्न-पानि करमान लागल रहैत छल। एक

पाँतिसँ पचासोटा बखारीमे अन्न भरल रहैत छल। मुदा असमयमे हमर पिताक देहान्तक बाद सभ किछु बदलि गेल।

हमर पित्ती घर मालिक भेलाह। सैंकड़ो बीघा जमीन छलन्हि। मुदा हमर माएकेँ क्यो देखनाहर नहि। एक तँ ओकर लोक चलि गेलै, संग लागल जमीन-जत्था सभपर हमर पित्ती काबिज भए गेलाह। हमर माएकेँ मात्र खोड़िसमे किछु मोन अनाज भेटन्हि। एतेक जल्दीमे एना भए जाएत से उमीद ककरो नहि रहैक।

माएक हालत बेहाल छल। ऊपरसँ सन्तानक होनहारी सेहो छल। ने चिकरि सकैत छल, ने छाती पीट सकैत छल। जहाँ होश होइक की भावी सन्तानक पिन्तासँ आतुर भए जाए। की करए? ककरा कहैक अपन दुख।

मुदा सनतानक आगमनक सम्भावना जेठक दुपहरिआमे गाछक छाँह सदृश छल। वैहटा उमीद बाँचल रहि गेल रहैक। गाम-घर गामे-घर होइत छैक। क्यो ककरो मुँह नहि रोकि सकैत अछि। अपन-अपन सुरमे सभ मस्तंग रहैत अछि। स्त्रीगण सभकेँ तँ कोनो मसाला चाही। मिनटोमे बात गाम भरिमे पसरि जाएत। सैह भेल जखन हमर जन्मक समय आएल। सभ कहए लागल जे ई सन्तान अशुभ थिक। अभागल थिक। जन्मसँ पहिने अपन बापकेँ खा गेल..!

की भेलै, किएक भेलै, ओहिमे ओकर की दोख जे एहि पृथ्वीपर आएलो ने अछि। ओ तँ अपने अज्ञात भविष्य दिस बढ़ि रहल छल। कहि नहि जन्मक बाद ओकरा के देखत? माएक कनूनी हैसियत नाममात्रक छलैक वा किछु छलैहे नहि। बाप गुजरि गेल रहैक। धन-सम्पत्तिक बारिस के हैत से भावी सन्तानक लिंग तय करतैक। कानूनक निर्माता सभक स्त्रीवर्गक प्रति निष्ठूर दृष्टिक कारणेँ आधासँ अधिक जनसंख्या शक्तिहीन बना देल गेल छल। मुदा किएक? एकर उत्तर के देत? गुलाम समाजकेँ अपन हाथ-बाट तँ होइत नहि अछि। सैह अपनो देशमे होइक। भारतमे की कानून लागू होएत से ब्रिटिश संसद तय करैक।

२

रबीन्द्र नारयण मिश्र

लघुकथा

क्रान्ति विसर्जन

सौंसे गामक नवतुरिया सभ एकटा बैसार केलक। छोटका लोकक तथाकथित आक्रमकताक पुरजोर विरोध करबाक दृढ़ निश्चय कएल गेल।

नेमी बाबू गामक गामक नामी लोक छलाह। चारू बेटा एक-सँ-एक पदपर छलखिन। सभ कमासुत। वो बैसारमे बीचमे बमकि उठलाह-

"जतेक जे जुलुम भए रहल अछि ओहिमे बड़के लोकक हाथ अछि। छोटका लोकक ई साहस जे हमरा लोकनिक हरबाही छोड़ि दिए। खबासिनी सभ आँगन अएनाइ छोड़ि देलक। ई सभ छोटका लोकक करनामा नहि थिक अपितु एहि समस्त काजमे सुधीर बाबूक प्रगतिशील बिचारक पुत्र बेचनक हाथ थिक। छोटका लोक सभकेँ भाषण दए-दए सनका देलक अछि।

"जब तक भूखा इन्सान रहेगा, धरती पर तूफान रहेगा आदि-आदि नारा के सिखौलक?"

चारू कातसँ थपड़ी पड़ए लागल। तय भेल जे सुधीर बाबूकेँ उपराग देल जाए। संगे ईहो तय भेल जे गामक कोनो खबासकेँ आर्थिक सहायता नहिदेल जाए।

सभा विसर्जित भेल। सौंसे रस्ता लोक अर्र-बर्र बजैत चल जाइत रहल।

बेचन बेस फनैत छलाह। बैसारक एक-एक बात घरे बैसल पता लगा लेलाह। एमहर बैसार खतम भेल ओ ओमहर फेर नारा बुलन्द भेल-

"जब तक भूखा इन्सान रहेगा, धरतीपर तूफान रहेगा...।"

सौंसे गाम डोलि गेल। कारण ओहि स्वरमे पर्याप्त शक्तिक प्रस्फुटन भए रहल छलैक। चारू कातसँ एक्के बात जे'बड़का लोकसभकेँ रस्तापर आनेके है। जान रहे कि जाए।'

एहि जिनाइसँ मरबे नीक। एवम्-प्रकारेण गाम एकटा सिभिल नाफरबानीक दृश्य देखि रहल छल। एक दिस गामक धनीक, सशक्त लोक सभ दोसर दिस छोटका लोक सभ खाली देह, खाली पेट लेने बमकि रहल छल-

"...धरतीपर तूफान रहेगा।"

छोटका लोकमे आघात प्रतिघातक सरिपहुँ शक्ति नहि छल। जहिआसँ वो सभ अबाज बुलन्द केलक तहिआसँ कतेको घरमे डिबिया नहि बरल। कतेको राति कोराक बच्चा भुखले सूतल। मुदा तैओ ओ सभ कोनो बड़का लोक क खेत जोतए नहि गेल...।

ओहि दिन हाट लागल रहैक। दामोदर बाबू हाट करए जाइत छलाह। गामक सभसँ धनीक लोक दमोदर बाबू। हाटे-हाट तरकारी उठौना अबैत छल। मुदा जहिआसँ छोटका लोक सभ हड़तालपर चल गेल छल तहिआसँ अपने गमछामे तरकारी बान्हि कए दमोदर बाबू लबैत छलाह। तरकारी लए कए उठहि पर छलाह कि निरसनमा पर नजरि पड़लनि। मुदा टोकलकनि नहि। कए बेर बजौलखिन-

"निरसनमा..? निरसनमा..?"

मुदा ओ अन्ठिया कए चल जाइत रहल।

दामोदर बाबूकँ नहि रहि भेलनि। झटकि कए आगू बढ़ि ओकर गट्टा पकड़ि लेलखिन।

एतबेमे औ बाबू जतेक ओकर दियाद-वाद सभ छलैक सभ दमोदर बाबूकँ घेरि लेलक। दामोदर बाबू जेना-तेना जान लए कए भगलाह। रस्ता भरि प्रतिशोधक आगिसँ धधकैत रहलाह।

ओहि घटनाक दस दिन भए गेल छल। दामोदर बाबू इलाकाक नामी-गामी पहलवानकँ जमा कए लेने छलाह। बारह बजे रातिमे सभ पलहवान निरसनमाक घर घेरि लेलक ओ निरसनमाक घरसँ निकलैत देरी खाम्ही लगा बान्हि ओकरा मुँहमे गोइठा ठुसि देलक। निरसनमा निस्सहाय, ओतएसँ देखैत रहल। ओकर आँखिक सामने ओकर घरवाली चिकरैत रहल। मुदा निरसनमा हाथ-पैर पटकि कए रहि गेल। असगर वो १५टा दैत्यक सामना नहि कए सकल। भोर भेला पर ओकर घरवाली बीच आँगनमे बेहोस पड़ल रहैक। निरसनमा धारक कातमे बेहोश छल।

सौंसे गाममे हल्ला भए गेलैक। बेचन दौड़ल अएलाह। ओ गरजि उठलाह। मुदा जे हेबाक छल से भए गेल छल। छोटका लोक सभ एकट्ठा भए गेल। बेचन फेर नारा देलकै-

"धरती पर तूफान रहेगा..!"

अहि नाराक कोनो प्रतिकृया निरसनमा ओ ओकर घरवालीपर नहि पड़लैक। ओ दूनू गोटे ओहिना बेसुध ठामहि पड़ल छल।

गामक बुढ़ सभ ओहि घटनाक बारेमे सुनलक आ अनठिया देलक। गामक लेल ओ कोनो नव बात नहि छलैक। हँ,एतबा अवश्ये जे वर्तमान परिपेक्ष्यमे ई घटना एकटा दुस्साहस सन लगैत छल। मुदा एकर बाद फेर नारा कहिओ नहि सुनाइ पड़लैक।

'धरती पर तूफान रहेगा।' केर संकल्प जेना केतहुँ दहा गेलैक। ओहि घटनाक बाद छोटका लोक सबहक बैसारी भेल रहैक। सभसँ सीनीयर माइन्जन बमकि उठल छल नवतुरियापर। मालिक लोकनिक वो बेस चमचा छल। गरजि कए कहलक-

"तोरा लोकनिकेँ गिरगिटिआ नचैत छौ। एतेटा जिनगी ईहे मालिक लोकनिक संग बिता देलिऐक। कहिओ कोनो झगड़ा-दन नहि भेलैक। खबासिनी आँगन सभमे काज करैत रहलैक। कहिओ कोनो बातक सिकाइत नहि केलक। मुदा ई छौड़ा सभ अगिआ-बेताल बनल हैं!"

कोनो नवतुरियाकेँ साहस नहि भेलैक जे माइन्जनक विरोधमे किछु बाजए। सभ चुप्प भए एकदम गुम्मी लादि देलक। बैसार खतम भेलैक। गामक बड़का लोकमे हरिअरी अएलैक। सभ कियो दामोदर बाबूक प्रशंसा करैत छल। सरिपहुँ दामोदर बाबू बड़ नीक लोक छथि। आदि-आदि...।

आ फेर ओहि दिनसँ पनिभरनी सभ गिरहथक ओहिठाम काज केनाइ सेहो शुरू कए देलक। सौंसे गाममे फेर ओहिना चहल-पहल रहए लागल...।

पछबारि गाम बालीकेँ तीनटा बेटी छलैक। तीनू तीनटा मालिकक आँगनामे काज करैत छलैक। सभ सासुर बसि आएल छलैक। मुदा गरीबक की सासुर आ की नैहर? ककरो बास सासुरमे नहि भेलैक आ सभ कए बर्खसँ माए लग रहैक। कहि नहि कैटा धिया-पुता छलैक तीनू बहिनकेँ।

मुदा सबहक धिया-पुता गोर-नार। देखैमे सुन्नर तँ छलैहे। बेस तेजो सभ छलैक। पछबारि गाम बालीकेँ लोक चुटकी मारै जरूर मुदा ओकरा लेल धनि-सन। ओ अपनो तँ ओही रस्तासँ गेल छलि। पछबारि गाम बाली अपना समयमे सुन्दरि छलि। ओकरापर दामोदर

बाबूक नजरि गरि गेलनि। ओकर बिआह अपन खबाससँ करा देलनि। खबास शुरूएसँ नंगराइत छल।

एक दिन हल्ला भेलैक जे तेतरि तर केदनि सभ ओकरापर आक्रमण कए देलकै जाहिमे ओ गम्भीर रूपसँ घायल भए गेल। बादमे मास दिन जेना-तेना खेपि ओ स्वर्गवासी भए गेल। तहियेसँ पछबारि गाम बाली दामोदर बाबूक क्षत्रछायामे पोसाइत रहल। पछबारि गाम बालीकँ ओकर बादो कैटा धिया-पुता होइत रहलैक। मुदा कैक बेर गाममे गुल्लर उठलैक।

दामोदर बाबूकँ चला-चलती रहनि। के बाजत हुनकर विरोधमे।

पछबारि गाम बालीक तीनू बेटीकँ ई गप्प बूझल छलैक। ओ सभ अपन आचरणोमे एहि बातकँ पुष्टसँ स्पष्ट कए रहल छलि। दामोदर बाबूकँ तीनटा पुत्र छलखिन। आ तीनू फराक। तीनू बहिन तीनू मालिकक घरमे काज करए।

काज तँ जे से ओहुना ओकरा सभहक आएब-जाएब रहिते छैक। मुदा पछबारि गाम बाली असगरे ओहि टोलमे हो से गप्प नहि। एकटा खिस्सा सबहक नामक संगे जुड़ल छैक। ओना ई सभ ततेक सामान्य घटना भए गेल छलैक जे ककरो विशेष ध्यान ओमहर जेबाक प्रश्ने नहि छलैक।

ओहि दिन छोटका लोक सभमे बेस हल्ला भेलैक।

ओना सामान्यत: ओहि टोलमे हल्ला होइते रहैत छलैक। तँ ककरो ध्यान ओहि हल्लापर नहि जाइक। पुरवारि गामवाली उत्तरवरिया टोलक एकटा बड़का लोकछौड़ाक संगे कतहुँ रातिमे भागि गेल छलैक। ओना काना-फुसी तँ होइते रहैत छलैक। मुदा गप्प एतबा धरि बढ़ि गेल अछि, तकर अन्दाज ककरो नहि रहल होयतैक। भरि दिन टोलमे एही बातक चर्चा होइत रहलैक।

एवम्-प्रकारेण सौंसे गाम पुरनका लोकपर फेर सरकए लागल। मुदा बेचनक आत्मा एहि सभ गप्पसँ दुखी छल। ओकर मोनमे क्रान्तिक आगि सुनगि रहल छल। एम.ए. उतीर्ण छल अर्थशास्त्र लए कए। आर्थिक परिपेक्ष्यमे गरीब सबहक सामाजिक शोषण ओकरा बड़ पैघ जुलुम लगैत छलैक। मुदा वो लड़त ककरा लेल। क्यो ओकर गप्प सुनबाक हेतु तैयार नहि छलैक।

गरीब सभ दाना-दानाक मोहताज छल। ओकरा रोटी चाही से जेना हो। ने ओकरा हेतु कोनो सामाजिक मान्यताक कोनो महत्त्व छलैक आ ने नैतिकताक ओकरा छुति छलैक। मात्र रोटीटा चाही। मुदा बेचन बुझैत छलैक जे ओ सभ भूखक आवेशमे रोटीमे जहर मिला कए गिरि रहल अछि। समाजक नामी लोक सभ जे प्रतिष्ठाक पात्र मानल जाइत छथि, तिनके लोकनिक आचरण देखि वो क्षुब्ध छल।

मुदा कइये की सकैत छल? असगर वृहस्पतियो झूठ। जे शोषित वर्ग छलैक तकरा लेल धनि-सन। ओ सभ ओहीमे रमि गेल छल। मालिक सबहक नेकरम करबमे। दूटा रोटी खाएब ओ मालिकक हुकुम बजाएब। ई सभ एकटा सामान्य घटना भए गेल छल। ओकरा सभ हेतु ने देशक आजादी कोनो रंग अनने छल आ ने बेर-बेर होमए बला चुनाव सभ।

अलबत्ता जखन चुनाव होइत छलैक तँ लॉडस्पीकरक आवाजसँ ओ सभ एक बेर चौंक जरूर जाइत छल। छोटका लोकक नेता सभ माइन्जन लए कए घरे-घरे राति भरि घुमैक। सभकेँ पाँच-दसटा रूपैया दैक ओ सभकेँ नीकसँ सीखाबैक जे कतए मतक मोहर मारबाक छैक। साइकिल छाप, तराजू छाप, घोड़ा छाप आदि-आदि। एकटा रोचक प्रसंग होइत छलैक चुनाव ओकरा सभ लेल। मुदा कै बेर जाधरि छोटका लोक सभक लोक सभ मतदान खसबए जाइत छलैक ताधरि ओकर सबहक मत खसि पड़ल रहैत छलैक। ओ सभ मतदान केन्द्रपर जमा भीड़क तमासा देखि कए आपस भए जाइत छल। कोनो प्रतिकृया नहि।

स्त्रीगण सभ अपनामे गप्प करैत-

"गे दाइ, हमरा तँ बड़ डर लगै रहइ। कोना कए मोहर मारितिऐ। कहीं हाकिम पकड़ि लइत।"

किछु स्त्रीगण सभ अहिना गप्प-सप्प करैत छलैक कि पैट्रोलींग करैत पुलिसक जीप भीड़क कारणे ओतहि ठाढ़ भए गेलैक। सभ क्यो जान-बेजान भागल। बाह रे मतदाता! बेचन ई सभ देखि रहल छल। ओकर मोन कसमसा रहल छलैक। मुदा की करए। एहिना कहि नहि, कैक बेर चुनाव अएलैक, गेलैक। मुदा ओकरा सबहक लेल धनि-सन।

एवम्-प्रकारेण सौंसे गाम दू खण्डमे बँटल रहल। शोषक ओ शोषितक बीच एहन सौमनस्य देखि बेचन क्षुब्ध छलाह। ओ सोचलाह जे एक बेर फेर प्रयास कएल जाए।

रातिक ९ बाजल रहैक। ओ छोटका लोक सबहक घरे-घर घुमि कए अपन घर लोटि रहल छलाह। बड़का लोक ओ छोटका लोक सभक बीचमे नान्हिटा कलम छलैक। धराम-धराम। चारू दिसिसँ बेचनक कपारपर लाठी बरसए लागल।

“आब बोलो बड़ा चला है हीरो बनने। यह कालेज नहीं है। गाम है।”

पता नहि की की बजलै वो। आ परिणामत: बेचन धारासाही भए गेलाह। सौंसे गाममे हल्ला भए गेल। छोटका लोक सभ नि:सहाय भए ओहिना अपन-अपन मालिकक काजपर चलि गेल। बेचनक लाश ओहिना एसगर राति भरि पड़ल छलैक। भोर भेने दामोदर बाबू थानामे रपट लिखा अएलाह।

मामला रफादफा भए गेल। ओहि गामक क्रान्तिक स्वर सभ दिनक लेल गुम्म भए गेल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

गीत

छागर कटैत रहलै

कनैत कलपैत रहलै

भगवती प्रसन्न भ गेलीह

लोक सभ बुझैत रहलै.

परम्पराक मंचपर हत्याक खेल

बाघकेर बलि कहियो ने देल गेल

ढोल-पिपही बजैत रहलै

आ नटुआ नचैत रहलै

भगवती प्रसन्न भ' गेलीह

लोक सभ बुझैत रहलै.

सत्य आ अहिंसाक ग्यान मौन भेल

भरि गां तमाशा देखैछ ठाढ भेल

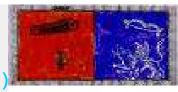
लिधुर जे बहैत रहलै

बखरा लगैत रहलै

भगवती प्रसन्न भ गेलीह

लोक सभ बुझैत रहलै.

कहलनि जे बुद्ध महावीर आबिक'



सुतलोमे सदिखन रहू जागिक'

हिंसा जे होइत रहलै

विपदा अनैत रहलै

भगवतीक आँखिकेर नोर

क्यो नहि देखैत रहलै.

माउसकें प्रसाद मानि लेल

हर्षमे विषाद सानि देल

धररती फटैत रहलै

गर्द आसमानमे भेलै

दुनियामे व्याप्त चीत्कार

मौत बनि अबैत रहलै.

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ. शिवकुमार प्रसाद

किछु कविता

प्राकथन

काँट आ फूल हमर जिनगीक सहोदर अछि।
उपेक्षा-अपेक्षा अछि सहचर
सत्य दिस आकर्षण
असत्यसँ विकर्षण

मनमे
सदैत बनल रहैत अछि।

विविध कला आ सौन्दर्य
हमर आकर्षण केर केन्द्र विन्दु अछि।
हम स्वीकार करैत छी।

मिथिला धाम

अपन गाछक छाहमे
अपन मिथिला धाममे
अपनहि माटिपर बैठल छी
अपन सिमरा गाममे।

मधुर लगए अछि अझुका रौद
पछबा बहै झिहिर झिहिर
लुक्खी मेना कचबचिया सभ
संगहि अछि आई गाममे।

पौरकी सेहो देखल आइ
बहुत दिनपर सीसो तर
काज करै छी कैव करै छी
स्वर्गसँ सुन्नर गाममे।
अपन मिथिला धाममे।

तँए किछु ने किछु लिखैत जाउ

लिखैत-लिखैत किछु लिखिये देबै
मैथिलीक उपकारी हेबै
तैं किछु-ने-किछु लिखैत जउ।

छपैत-छपैत छैपिये जेबै
एकदिन लेखक बनिए जेबै
मंच आर इनामो भेटत

तैं किछु-ने-किछु लिखते जाउ।

मौलिकता केकरा कहैत छी
किनकामे मौलिकता छनि
सभ कियो एक्के बात लिखै छथि
सबहक नीयत साफ देखाइत अछि
तैं किछु-ने-किछु लिखते जाउ।

नीर-क्षीर विवेक किनका छन्हि
लिखनिहारमे हंसत्व किनका छनि
पूर्जा-पूर्जी जोड़ि-तोड़ि कऽ
किछु-ने-किछु घँसैत जाउ
तैं किछु-ने-किछु लिखैत जाउ।q

निर्मलीक निर्मलतामे

निर्मलीक निर्मलतामे
मनक मलाल सभ मेटा रहल अछि

शिक्षाक ऐ महापंकमे
गामक जिनगी लेटा रहल अछि।

कैंचा-पैसा जोरि-जोरि कऽ
माए-बाप सभ पठा रहल अछि

कोचिंग, विद्यालय, कौलेजमे
एक-एक जन लुटा रहल अछि।
शिक्षाक एहि महापंक...।

के पठौतइ केकरा लग जा कऽ
नेना भुटका पढ़ि रहल अछि

नै सुधि बुधि ई केकरो छनि
अपने झंझट ओझराएल अछि।
शिक्षाक एहि महापंक...।

चटिया सभ चटिसारक लाथे
गुरुजी पायबटोरक बाटे
अपन-अपन भाँजमे सभकोइ
डरीर छुबए लेल अपसियाँत अछि।

शिक्षाक एहि महापंकमे
गामक जिनगी लेटा रहल अछि।
गामक जिगनी लेटा रहल अछि। q

बौआक उबटन

कजरौटी केर काजर संगे
बौआ केर उबटन बिला गेल।
सोइरी केर अशौचक संगे
मिथिलाक संस्कार हेरा गेल।
कजरौटी केर...।

नव युगक नव संस्कारमे
जॉनसन बेबीक पाउडर मिलि गेल
माइक स्तन छोड़ि कऽ नेना
बोतल संगे माए भुला गेल।
कजरौटी केर...।

सिनेहक डोरि तोड़ि कऽ ममता
सुन्दरता केर मोल बिका गेल

दाइ नौरिनक संग पाबि कऽ
नेना माइक नेह भुला गेल
कजरौटी केर...।

अपन आन सभ पाइपर बिक गेल
सम्बन्धक सभ आँच बुता गेल
धन लक्ष्मीक चकाचौंधमे
तन मन रागक रंग मेटा गेल
कजरौटी केर...।

सोहर जन्म बधैया संगे
मूड़न उपनैनक महत मेटा गेल
लकदक गाड़ी वस्त्राभूषण संग
बरूआ केर आचार्य भुला गेल
कजरौटी केर काजर संगे
बौआ केर उबटन बिला गेल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

डॉ. शिवकुमार प्रसाद

किछु अनुदित काव्य (मूल हिन्दी रजनी छाबड़ा)

(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of ‘PaighalteHimkhand’
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

मधुबन

बुन्न बुन्न
नेहक अमियसँ
जिनगीक घैल

भरै छै।

स्मृतिक
बसात आ
नेहक फुहारसँ
बनै छै
जिनगीक मधुबन।

बन्दगी

भावना कखनो
मरैत नहि छै
भाव जीवित अछि
तँ जिनगी अछि।

समयक आँचरमे सहेजल
छिन-छिन केर भाव
ईश्वरक अरधना छै।

उन्मुक्त

झरनाक कलकल
चिड़य केर चहकब
उन्मुक्त उड़ब
चानन सुवासित बसात
सौनक झींसी
यएह तँ अछि
अहाँक हँसबाक
चिन्हास।

मोती जड़ित घर केर
दुआर तँ खोलू

ओढ़ल मुस्कीकेँ
आबो तँ छोड़ू।

ई सेहन्ता

ई सेहन्ता अहाँकेँ हमर
घर ओ हँसैत सपना अछि
नीन हमर खुलए ने कहियो
जँ ई बात साँच अछि
नीन कखनो ने आबए।

खाली अप्पन

खुशीपर सदैत
जुगक पहरा रहै छै
दुखेटा मात्र अपन होइ छै
जौँ बहुत गहींर हो।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

प्रीतम कुमार निषाद
किछु कविता

गीतल मिथिला

उगना-विद्यापति महिमासँ
सरस सजाएल अछि मिथिला।
गीत गोसाओनिक चढ़ए चढ़ौना
सुरभि समाएल निज मिथिला।।
मैथिलपूत जँ छी संकल्पित
आऊ सजाऊ पुनर्निज मिथिला।
मिथिलांगन भू लोक न्योतैए
रहत कियए माऽए शिथिला-मिथिला।।
जेक्कर ऐतिहासिक यश पसरल

हजार बरिखसँ उमकैत मिथिला।
तेक्कर सन्तान मैथिलीश भाखए
तँए अछि हुचकैत-ठुनकैत मिथिला।।
कहैयऽ ई मिथिला... गहैयऽ ई मिथिला...
जुगक भार सदिखन सहैयऽ ई मिथिला...
कुडाहीकेँ डाहैँ, डहैयऽ ई मिथिला...
कतेक नारी करुणा- कहैयऽ ई मिथिला...
मनुक्ख वेदना संग- बहैयऽ ई मिथिला...
सिसकि नोरेँ-झोरेँ- दहैयऽ ई मिथिला...
तैयो दैत आशिष- रहैयऽ ई मिथिला...
पोखैर थान गाछी- छँहैयऽ ई मिथिला...
कोइलि कागा सुग्गा-चहैयऽ ई मिथिला...
नदी-खेत शीषो- लहैयऽ ई मिथिला...
प्रीतम आश गीतल- गवैयऽ महैयऽ ई मिथिला...।
¦

केकरो केकरो

माऽए केर मम्मत दूधक कर्जा
मोन रहैए केकरो-केकरो
मिथिला-महिमा भाषा बोली
मोन रहैए केकरो-केकरो
जनक जागवल्क्य कपिल कणादक
प्रतिभा जोहए केकरो-केकरो
सीता अहिल्या गार्गी मैत्रेयीक
अभिधा मोहए केकरो-केकरो
उगना महादेव विद्यापतिकेँ
कृपा मोहए केकरो-केकरो
भगवती कालीदास सुव्रतकेँ

विद्या जोहए केकरो-केकरो
भारती-भामती-लखिमारानीक
प्रज्ञा टोहए केकरो-केकरो
मण्डन-वाचस्पति-अयाची
पुरखा सोहए केकरो-केकरो
कॉमरेड भोगेन्द्र-चतुराननकेँ
सपना जोहए केकरो-केकरो
ताराकान्त-चुनचुन-बैजू सन
क्रान्ति सोहए केकरो-केकरो
ममहर-बपहर संगतुरियासँ
प्रेम रहैए केकरो-केकरो
नवतुर-मीताक मोनमे कुशल
क्षेम रहैए केकरो-केकरो
तहिना मनुक्खोक जनमडीहसँ
नेह रहैए केकरो-केकरो
ओहि माँटि केर भाव गेह संग
देह रहैए केकरो-केकरो
मिथिला-मैथिली खातिर सुच्चा
कर्म रहैए केकरो-केकरो
मैथिल श्रीमन यश कीर्त्ति केर
धर्म रहैए केकरो-केकरो

देसिल बयना सभजन मिट्ठाक
मर्म रहैए केकरो-केकरो
मैथिलीश बजैत प्रीतम संगे
शर्म रहैए केकरो-केकरो।
¦

जय गंगाजल

स्वर्गक सलिला शिवजटासँ आ,

भारत भू सहेजल गंगाजल..।

कहबथि भगीरथि गंगा जुग-जुग,

पुण्या स्नाता वैह गंगाजल..।।

हिमगिरि गंगोत्री वन उपवन,

सुखदा श्रोतस्विनी गंगाजल..।

जलचर-थलचर-खेचर जीवन,

केर पूत पयस्विनी गंगाजल..।

प्राणी केर अमृत धार बनल,

खाद्यान्नो उगावथि गंगाजल..।

आस्था केर आशा घट भरि-भरि,

आस्तिको जोगावथि गंगाजल।।

धर्मातुर नर-नारी भक्तन

केर पूजन साधन गंगाजल।।

पतितोद्धारिणी जगमातु बनल

वसुधांगन सुमिरन गंगाजल।।

युग सदी बितावैत ममत लूटा

आब हुचैक रहल अछि गंगाजल।।

युगपति केर सुविधा सनकी सँ

आब मँहैक रहल अछि गंगाजल।।

हर-हर गंगे शुभ जापन सँ

अछि गर्वित सदिखन गंगाजल।।

मुदा नमामि गंगेक नारासँ

भेल भ्रमित बेकल ई गंगाजल।।

आब गादि सँ उत्थर-बदतर भेल

तैं सभ करू निर्मल गंगाजल।।

गोहराबए प्रीतम भारतकेँ

देखू ने गन्हाएल गंगाजल।।

¦

दीप प्रज्ज्वलन

हे आगत श्री दीप जराबू
करू आशाक इजोत यौ...
अपने सबहक ज्ञानाशिष अछि
तिरलोकी युगश्रोत यौ...। हे आगत श्री...।

अहाँक प्रतिभा प्रेरणा सम्बल
सँ ई उत्सव मचलैए
तैँ शुभ दीप शिखा संग अपनेक
हाथक आँगुर उछलैए
तमस हरण हेतु घृतबाती
विचरै नभ खद्योत यौ...। हे आगत श्री...।

सृष्टि त्रिकाल प्रकृति गगनसँ
जग सुख आभा पसरैए...
ज्ञान धरम साधना सुकर्मण
उपदेश वाणी ससरैए
वैह पावन ज्ञानामृत जलसँ
लोक प्रीतम मन धोत यौ...। हे आगत श्री...।
¦

अहो अभिनन्दन

हे परमागत श्री श्रवणार्थी
सुनूँ श्रीवर मिथिला सन्तान।
अपनेक बहु प्रतिभा यश सुनलौं
तैं अर्पित अछि स्वागत गान।।

अहाँक स्वागत स्वरूप तान पुष्प अनूप..।
गीत माला सहित होइछ अभिनन्दन..।।

मिथिला मन्दिर भ्रमण लोक सेवा नमन..।
ज्ञान कुंकुम ललाटैँ करब चन्दन..।। गीतमाला सहित।।

कर्मदूत अहाँ.. कर्मवीर सबल..
शान्तिदूत जकाँ यशव्रती छी सफल।।2।।
स्वागतम् गान रूपैँ अहाँक वन्दन...।। गीतमाला सहित।।

नान्हियेटा सँ अहाँक तपस्या सबल
नवक्रान्ति संक्रान्ति नव कीर्ति नवल।2।
अहाँक प्रतिभा अटल देखि जीवन पटल..।2।
मुग्ध प्रीतम कहल- धन्य राष्ट्र नन्दन..। गीतमाला सहित।।
।

सीतार्चना

जगदम्ब श्री जानकी कृपाकरू...
मिथिलेश्वरी बनि जग छाएल छी...।।
अपनेहि केर आशिष अमृत लए...
हम नतमस्तक भऽ आएल छी...।।
जगदम्ब श्री जानकी कृपा करू..।।

जँ सुत सुर भक्तिकेँ स्वीकारब
लवकुश जकाँ ज्ञानक वीर बनब..।
मर्यादा पुरुषोत्तमकेँ लऽ छटा
सदिखन हम सीता राम जपब...।
एतबेहि शुभ आशाक पोटरी लऽ
हे माऽए थाकल-मन्हुआएल छी..
जगदम्ब श्री जानकी कृपा करू...।। 1।।

सिखबैत रहल पूर्वज-अग्रज
पिंजरा केर सुगनो सीखि रहल...।
सीता रामक रटना रटितेँ

दिन-राति हमर मोन लिखि रहल...।
रावणवध कारण तत्त्व अहाँ, श्रद्धा भक्तिक धुन लाएल छी
अपनेहि केर आशिष अमृत लए...।। 2।।

दियर लक्ष्मण कहै मातेश्वरी
भारतो-शत्रुघ्न श्री मातु कहल
कौशल्या-सुनयनाक मम्मत लऽ
बहु-बेटीक सभटा स्नेह सजल
वैदेही-विदेहक दुहिता सुनूँ- 2
सुत प्रीतम काव्य समाएल छी...
अपनेहि केर आशिष अमृत लए...।। 3।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

*सिद्धिरस्तु*

मरजादक भोज

नन्द विलास राय

पल्लवी
प्रकाशन

मरजादक भोज

नन्द विलास राय

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-55-1

दाम : ₹ 250/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

MARJADAK BHOJ
Collection of Short Stories by Sh. Nand Vilas Roy.

परम पूज्य पिता स्व. बच्चा राय एवम् पूज्यनीया माता
स्व. दुर्गादेवीक स्मृतिमे

अग्रज श्री नन्द कुमार राय
भातीज द्वय- वीरेन्द्र, धीरेन्द्र
पुत्री द्वय- किरण आ वन्दनाकेँ
ससिनेह

संगे
समस्त मैथिलीभाषीकेँ
सादर समर्पित

कथाक सत्तैर-

अप्पन बात

मिथिलांचलक मधुबनी जिलामे भपटियाही गामक एकटा किसान परिवारमे हमर जनम भेल। पिताजी स्व. बच्चा राय मेहनती आ स्वाभिमानी छला। तीन भाँइक भैयारीमे हम सभसँ छोट छी। माए-बाबू बेसी पढ़ल तँ नै रहैथ मुदा नाम-गाम लिखब-पढ़ब अबैत रहैन। हमरा पढ़बैमे माए-बाबूक संग भैयारी सबहक सेहो सहयोग रहल।

नरहिया हाई स्कूलसँ मैट्रिक केला पछाइत निर्मली कौलेज निर्मलीमे नाओं लिखेलौं। किछु दिन निर्मली बजारमे एकटा भाड़ाक कोठरीमे रहलौं पछाइत श्री रामजी प्रसाद मण्डलक घरमे रहए लगलौं। अपनो पढ़ी आ हुनको वालक सभकेँ पढ़ाबी। रामजी प्रसाद मण्डलजी निर्मली कौलेजमे पुस्तकालयाध्यक्ष पदपर नौकरी करै छला। जइसँ रंग-बिरंगक पोथीसँ लगलगाउ रहल। जइसँ छोट-छीन कविता हिन्दी भाषामे लिखए लागलौं। निर्मली कौलेजसँ बी.एस-सी केला पछाइत घोघरडीहा आइ.टी.आइ.सँ टर्नर ट्रेडमे प्रशिक्षण सेहो प्राप्त केलौं।

जखन इण्टरमे पढ़ैत रही तहिए बिआह भऽ गेल। दू बरख पछाइत दुरागमन भेल। पत्नी तरही (नेपाल)सँ आबि भपटियाहीमे रहए लगली। बी.एस-सी आ आइ.टी.आइ. केला पछाइत सरकारी नौकरी लेल प्रयास करए लगलौं। वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा परियोजना लौकहीमे अंशकालिन पर्यवेक्षक पदपर चयन भेल। मात्र

तीन सए टाका मानदेय भेटै छल। तीन सत्र ओ काज केलौं। आशा रहए जे सरकार हमरा सभकेँ नियमित कऽ देत अथवा दोसर कोनो विभागमे देत। मुदा से किछु ने भेल।

पर्यवेक्षक पदसँ हटला पछाइत संस्कृत उच्च विद्यालय धमौरामे विज्ञान शिक्षक पदपर काजरत् भेलौं। पाँच बरख धरि ओतए रहलौं। काज केलौं। विद्यालयकेँ प्रस्वीकृतिओ भेटल मुदा शिक्षक आ कर्मचारीकेँ वेतनक भुगतान नै भेल। थाकि-हारि हम सभ वर्ग संचालन बन्न कऽ देलौं। भुखे भजन न होइ गोपाला। आखिर केतेक दिन पेटमे जुन्ना बान्हि काज करितौं।

हमर ससुर महराज नेपालक सांसद भेला। हम हुनका लग नेपाल गेलौं। सोचने रही ओतै कोनो व्यवसाय-वेपार करब। कऽ तँ सकैत रही गामोमे मुदा पूजी नै रहने नेपाल गेलौं। ससुरपर आश समीचिन बुझाइत रहए। तीन बरख धरि नेपालमे रहलौं। सासुरमे बेसी दिन रहैबलाकेँ कोन-कोन अपमान सहए पड़ै छै से हमरो सहए पड़ल। मुदा रही लोभमे फँसल तँए नै गुदानिऐ। भेटल तँ किछु नै मुदा तीन बर्खक समए बेरबाद भऽ गेल। जेतेक दिन नेपालमे रहलौं ओतेक दिन हमरा जीवनक कारी अध्यायक रूपमे अखनो बुझना जाइत अछि।

नेपालसँ गाम एला पछाइत, गामे धेलौं। माए-बाबूजी वृद्ध सेहो भऽ जाइ गेल छेला। हिनका सभकेँ छोड़ि दिल्लीओ-पंजाव गेनाइ उचित नै बुझि पबी। तीन बरख पछाइत माए-बाबू एक्के सालक अन्तरालपर स्वर्गवास भऽ गेला। स्थिति आरो बिगड़ि गेल। कोनो अवलम्ब नै देख आने-आन जकाँ दिल्ली विदा भेलौं। दिल्लीओमे रहल नै पार लगल। किएक तँ जाइते बोखार पकैड़ लेलक। डेंगूक हवा बहि गेल रहै। डरे महिने दिन पछाइत गाम चलि एलौं। पत्नीक जेबरसँ आ किछु हथपैंच लऽ नरहिया बजारमे खादक दोकान खोललौं।

हलाँकि ओहो नै चलल कारण कम पूजीक चलैत जे समस्या अबै छै तही सभमे लटपटाइत बन्न भऽ गेल।

खेतीवारी सँ थोड़-थाड़ लाट गाममे रहने भऽ गेल रहए जहीपर धियान दऽ ओकरे पकैड़ अखनो चलि रहल छी।

छात्रे जीवनसँ राजनीतिसँ लगाउ रहल अछि। जय प्रकाश बाबूक आन्दोलनमे सेहो भाग नेने छी। जखन २००१ई.मे बिहारमे पंचायत चुनाव भेल तँ हमहूँ अपना पंचायत छजनासँ पंचायत समितिक सदस्य लेल ठाढ़ भेलौं। जीतलौं। पंचायत विकास कार्यमे पाँच बरख धरि अपसियाँत रहलौं।

पहिनहियेँ कहल अछि जे विद्यार्थीए जीवनसँ किछु-किछु लिखै-पढ़ैक रूचि रहए। से मुदा हिन्दीमे लिखैत रही आ लिखि-लिखि रखैत रही। कहियो प्रकाशन लेल प्रयास नै केलौं। फुलपरास उच्च विद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहमे कवि सम्मेलनक आयोजन भेल रहए। पहिल कविताक पाठ ओतइ केलौं।

१४ अप्रिल २००८ई.कैं रानीगढ़ी मेला, मझौरामे डॉक्टर अम्बेदकर जयन्तीक अवसरपर श्री जय प्रकाश मण्डल विचार गोष्ठीक आयोजन केने छला। ओही आयोजनमे उमेश मण्डलजी सँ परिचए भेल। विदेह ई पत्रिकाक सम्बन्धमे जनतब भेल। मैथिली रचना प्रकाशनक बाट देखते जेना जोश आबि गेल। तहिएसँ मैथिलीमे छी।

उमेश मण्डल जीक खबरिपर कबिलपुरक 'सगर राति दीप जरए' कथा गोष्ठीमे गेलौं। ओतए बहुतो कथाकारक अलाबे श्री गजेन्द्र ठाकुरसँ सेहो मिलन भेल। गप-सप्प भेल। प्रभावित तँ रहबे करी जे आरो प्रभावित भेलौं। वास्तवमे, आधुनिक मनुखक माने सभ्य मनुखक जे चालि-बेवहार हेबाक चाही से हुनकामे देखलौं। पहिल कथा गोष्ठी छल। पैघ-पैघ साहित्यकार सभ रहैथ। जहिना चन्द्रमाक

सामने भगजोगनी रहैत तनाहियेँ हम हुनका सबहक सोझहामे छेलौं। भोरहरबामे कथा पाठक समए भेटल। कथाक शीर्षक रहए- 'जे विद्वान से बेइमान।' समीक्षक लोकैन कथापर टिप्पणी नै कऽ शीर्षकपर अड़ि गेला। ओना किछु गोरे शिल्पक तँ किछु गोरे बनाबटि तँ किछु गोरे अकारपर सेहो किछु शब्द रखलखिन मुदा विषय-वस्तुपर सेहो नहि। बड़बढ़ियाँ, कथाक पाठक अवसरसँ जोश बढ़ल। आरो-आरो गोष्ठीमे जाए-आबए लगलौं।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी पोथी कबिलपुरमे लोकापर्ण भेल। एक प्रति हमरो भेटल। चौथा-पचमामे पढ़ै छेलौं तँ गणीतक कुंजी देख-देख हिसाब बनाबी। तेनाहियेँ आइ कथा लिखैमे गामक जिनगी बुझाइए। एकटा गुरुक काज दऽ रहल अछि।

1968-69 इस्वीक बात छी। मौसीक बिआहमे मामा गाम गेल रही। तहिया बरियाती बिआहक राति अबै छल, दोसर दिन रूकै छल आ तेसर दिन जलखै खा कऽ विदा होइत छल। मौसीक बिआहक विहान भनेक बात छी, बरियाती सभ जलखै खा कऽ आराम कए रहल छला। एक घन्टाक पछाइत सियालाल दास गबैया अपन गान-बजानक संग कार्यक्रम प्रस्तुत केलैन। हमहूँ जलखै खा नेने रही। पितियौत मामक दरबज्जापर गेलौं तँ दू गोरेकेँ केराक छाजाकेँ टोनियबैत देखलौं। हम ओतए ठाढ़ भऽ गेलौं। दुनू गोरे, जे केराक पात टोनिया रहल छला ओइमेसँ एक गोरे उठि कऽ चुन आनए उठि कऽ आँगन गेला। तैबीच हम हाँसू लऽ केराक पातकेँ टोनियाबए लगलौं। दोसर बेकती जे पात टोनिया रहल छला बजला-

"बौआ, पात छोट होइ छह। ऐ पातपर मरजादक भोज खाएल जाएत। तँए पात नमहर हेबाक चाही।"

पुछलयैन-

“पात किएक नमहर हेबाक चाही, मरजादक भोजमे एहेन कोन विशेषता छइ?”

तैपर ओ बजला-

“जखन साँझमे मरजाद भोज खेबहक ने तखन अपने बुझि जेबहक।”

साँझमे मरजाद भोज शुरू भेल। बर, बरक पिताजी, बरक मामा, बरक बहनोइ मिला कऽ सात गोरे मरबापर खेनाइ खाइले बैसला। बाँकी बरियाती आ सर-कुटुम सभ आँगनसँ लऽ कऽ दरबज्जा धरि बैसला। तैसंग, गौंआँ नोतहारी सभ सेहो खरिहाँनमे बैसला। हमहूँ अँगनेमे मरबाक निच्चामे बैसलौं। मरबापरसँ पात बाँटब शुरू भेल। पातक पाँछा एक गोरे डोलमे पानि लेने पातपर छिच्चा देबए लगल। तेकर पछाइत बासमती चाउरक भात, भातक पाछाँ राहैरक दालि आ डलना बाँटल गेल। डलना कोबी, अल्लु, कदीमा, केरा आ बदामक मिश्रीत तरकारी रहए। तेकर बाद तिलक चटनी, औराक अँचार, अल्लुक अँचार, कोबी, अल्लु, बैगन आ केराक तरूआक संग बड़ सेहो बाँटल गेल। बड़ तेबखा दालिक कचरीक आकारक बनल रहए। ई सभ विन्यास बँटलाक बाद एक गोरे पापड़ आ तेकर पाछाँ शुद्ध देशी घी बाँटए लगल। तरूआ, भुजुआ आ अँचारसँ पातपर कनिक्को जगह नइ बँचल। आब हमरा बुझबामे आएल जे केराक पात नमहर किएक टोनियबैले कहने रहैथ। घी पड़लाक बाद भोजन शुरू भेल। जखन दालि खेनाइ लोक बन्न केलक तखन बैगन-अदौरी बाँटल गेल, तेकर बाद बरी-झोरी चलल। बरी-झोरीक बाद दही-चीनी आ सकरौरी चलल। मरजादक भोजमे किछ नोनगर, किछ खटगर, किछ मीठगर आ किछ चहटगर विन्यास सभ रहए।

जहिना मरजादक भोजमे विभिन्न तरहक विन्यास खुऔल

जाइत अछि तेनाहियेे प्रस्तुत पोथीमे विभिन्न तरहक कथा परसबाक परियास केलौं हेन। तँए ऐ पोथीक नाओं 'मरजादक भोज' राखलौं। ई तँ अपनहि लोकैन निर्णय करब जे मरजादक भोजमे कोन विन्यास (कथा) केतेक चहटगर भेल आ मरजादक भोज बनल की नहि, भोजैत जशक भागी भेल की नहि ई तँ...।

पोथी लिखलाक बाद प्रकाशनक लेल आर्थिक समस्या उत्पन्न भेल। मुदा आभारी छिऐन श्री नारायण यादवजीक जे पोथीक प्रकाशनक हेतु किछु सहयोग केलैन। हुनका कोटि-कोटि साधुवाद।

पोथी प्रकाशनमे श्री नारायण बाबूक संगे 'उ' अक्षरसँ नाम शुरू होमएबला तीन बेकती आरो सहयोग केलैन। पहिल हमर पत्नी छैथ जेकर नाओं उषा छिऐन। ओना, हिनका कथा गोष्ठी आ कवि सम्मेलनमे हमर भाग लेब नै सोहाइ छैन, किएक तँ ऐ सभसँ हमर पत्नीक परिवारिक काज हर्जा होइ छैन तँए ओ हमरापर बिगड़लो रहै छैथ। मुदा पोथी प्रकाशनक लेल अपन रखलाहा कोशलियासँ एक हजार टाका देली। अत: हुनका बहुत-बहुत धैनवाद।

दौसर बेकती छैथ उमेश पासवानजी। ओ हमर बड़ सम्मान करै छैथ। ओना तँ छैथ ग्रामीण पुलिस मुदा मैथिलीक स्थापित कवि छैथ। फरवरी 2018 मे दिल्लीमे आयोजित युवा कवि महोत्सवमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल छेलैन। श्री उमेश पासवानजी सेहो पोथी प्रकाशनमे आर्थिक सहयोग कलैन। हुनका हार्दिक धैनवाद।

तेसर बेकती छैथ उमेश मण्डलजी। आइ जेतए हम ठाढ़ होबए लेल परियास कए रहलौं हेन तइमे सभसँ अहम भूमिका हिनके अछि। हम 'ए-प्लस बी होल-स्क्वाइर बराबर ए-स्क्वाइर प्लस-टू-ए-बी प्लस बी-स्क्वार' बला लोक रही। यानी हम विज्ञानक छात्र रहलौं। साहित्यसँ

हमरा दूर-दूर धरि सम्बन्ध नइ रहल अछि। मुदा उमेश मण्डलजीक संसर्गमे एलासँ आइ हम छोट-क्षीण आलेख, कथा आ कविता लिख रहल छी। प्रस्तुत पोथीक प्रकाशनमे ओ मात्र आर्थिके सहयोग नहि, अपितु मानसिक आ शारीरिक रूपसँ सेहो सहयोग केलैन। हुनका कोन शब्दसँ धैनवाद दिऐन ओ शब्द हमरा शब्द कोषमे नहि अछि।

श्री दुर्गानन्द मण्डल आ श्री राम विलास साहुजीकेँ सेहो धैनवाद दइ छिऐन किएक तँ ई दुनू बेकती पोथी पढ़ि शाब्दिक अशुद्धिकेँ दूर केलैन। तैसंग निर्मली महाविद्यालयक हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शिव कुमार प्रसाद आ सी.एम.बी. महाविद्यालय डेबढ़, घोघरडीहाक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र कुमार राय सेहो हमर मनोबलकेँ बढ़बैत रहला, दुनू विद्वतजनकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

जहियेसँ मैथिली लिखनाइ शुरू केलौं श्री गजेन्द्र ठाकुरजी मोबाइलपर मार्गदर्शन करैत रहला अछि। हमरा सभ लेल जहिना आशाक किरण छैथ तहिना आगूओ रहता से विश्वास हृदयमे जमि गेल अछि। श्री गजेन्द्रजीकेँ कोटि-कोटि साधुवाद।

साहित्य सम्राट श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, हिनक आर्शीवादसँ आइ हमरा एकटा छोट-क्षीण कथाकार आ कविक रूपमे पहचान भेटल, हुनका शत्-शत् नमन।

पल्लवी प्रकाशनक श्रीमती पुनम मण्डलकेँ हार्दिक धैनवादक संग उज्जवल भविष्यक कामना अछि। बरमहल प्रोत्साहित करएबला साहित्यकार श्री ओम प्रकाश झा एवम् शुभेक्षु श्री रामजी प्रसाद मण्डलजीक सेहो आभारी छी। हुनका लोकैनकेँ साधुवाद।

श्रीमती आशा देवी उर्फ बेबी, प्रो. उपेन्द्र नारायण राय- व्याख्याता गणित विभाग, महिला कॉलेज बेगूसराय, डॉ. योगानन्द झा- समालोचक, श्री शम्भुनाथ मिश्र, अध्यक्ष कोसी विकास समिति,

हटनी, श्री राजनन्दन लाल दास, सम्पादक कर्णामृत, श्री चन्द्र मोहन कर्ण सम्पादक देसिल वयना, श्री राजदेव मण्डल साहित्यकार, समाजसेवी श्री बिनोद कुमार साह, आपका दवाखाना- निर्मली, हिनका सबहक सिनेहकेँ सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि। आशा अछि जे हिनका लोकनिक सिनेह सदैत बनल रहत। अत: हिनका सभकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।

श्रुति प्रकाशनक श्रीमती नीतू कुमारी आ श्री नागेन्द्र कुमार झाजीक सभसँ बेसी आभारी छी जे हमर पहिल पोथी- 'सखारी-पेटारी' केर प्रकाशन केलैन। हिनक उपकार हम नहि बिसरब किएक तँ ओइ पोथीक प्रकाशनक पछाइत जे हमर मनोबल बढ़ल ओ केना बिसैर सकै छी। ऐ लेल दुनू बेकतीकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

-नन्द विलास राय

गाम-पोस्ट- भपटियाही,

भाया- नरहिया,

जिला- मधुबनी।

मोबाइल नम्बर- 9931909671

मदन अमर

रमणजी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर छैथ। हुनका एक बेटा आ एक बेटी छैन। बेटाक नाओं मदन आ बेटीक मीरा रखने छैथ। मीरा आ मदन इलाहेबादक एकटा कॉनवेन्टमे पढ़ैए। मदन स्टैन्डर्ड पाँच आ मीरा स्टैन्डर्ड चारिमे पढ़ैए।

रमणजीक सासुर मिथिलांचलक कोयलख गाममे अछि। रमणजीक ससुर महराज रमणजी सँ गर्मी छुट्टीमे आम खाइले कोयलख अबैले आग्रह केलखिन। रमणजी सपरिवार कोयलख एला।

नानी गाममे मीरा आ मदन दुइए-चारि दिनमे गामक धिया-पुता संग तेना ने मिलि गेल जेना पानिमे चीनी मिलैए। मदन नानी गामक धिया-पुता संगे कबड्डी आ हाथी-चुक्का खेल खेलाइत रहए। मदन तँ इलाहाबादमे बैडमिन्टन आ क्रिकेट देखैत रहए। करखनो-काल क्रिकेट खेलबो करए। ओकरा लेल कबड्डी आ हाथी-चुक्का खेल नव छेलै, मुदा ओकरा नीक लगैत रहइ।

नानी गाममे मदनकेँ अमर नामक एकटा बालकसँ दोस्ती भऽ गेल। एक दिन अमर मदनकेँ अपना अँगना लऽ गेल। अमरक घर फूसक रहए। ओकर बाबूजी दिल्लीमे दालि मीलमे काज करै छथिन। अमरक माए एकटा गाए पोसने छथिन। आइ-काल्हि गाए लगबो करै छैन। खेत-पथारक नाओंपर अमरकेँ बाधमे दस कट्ठा खेत, दू कट्ठा गाछी आ दू कट्ठा घराड़ी। अँगनामे दूटा घर। अमरक माए नीकहा-नीकहा आम मदनकेँ खाइले देलखिन। मदन अमरकेँ माएसँ बड्ड

प्रभावित भेल रहए।

मदनक नानाकेँ पक्काक घर। चारू भागसँ पोखरा-पाटन। ऊपरोमे चारि कोठरी। गामक लोक मदनक नानाक घरकेँ हबेली कहैत अछि। मदनक नाना गोकूलबाबू पुरान जमीन्दारक बेटा, तहूमे रिटारयर डिप्टी कलक्टर। गामक गरीब-गुरबा हुनका हाकिम मालिक कहैत छेलैन।

एक दिन मदन अपना संग अमरकेँ अपना नानीक घर लऽ जाइत छल। मैल-कुचैल कपड़ामे अमर। ऐसँ पहिने ओ कहियो हबेली नै गेल रहए। ओ धखाइते-धखाइत मदनक संगे हबेलीक सीढ़ीपर चढ़ल। आगू बढ़ल। देखते मदनक नानी मदनकेँ पुछलखिन-

“ई छौड़ा के छी। तोँ एकरा भीतर किए अनै छेँ?”

तैपर मदन बाजल-

“नानी ई अमर छी। हम एकरा संगे खेलाइ छी। एकरासँ हमरा दोस्ती भऽ गेल अछि।”

मदनक बात सुनि नानी मदनकेँ डँटैत कहलखिन-

“समूचा कोयलखमे तोरा यएह छौड़ा दोस्ती करैले भेटलौ। छोट लोकसँ दोस्ती करै छेँ!”

तैपर मदन बाजल-

“नानी ई छोट कहाँ अछि। ई तँ हमरे अतेटा अछि।”

“तोँ नै बुझलेँ। ई सभ छोट जाति छी। एकरा सभकेँ हम सभ अपना हबेलीक भीतर नै आबए दइ छिऐ।”

अमर दिस देखैत नानी फेर बजली-

“रे छौड़ा, केकर बेटा छीही?”

अमर बाजल-

"भोला चौपालक।"

"कह तँ खतबे जातिक छौड़ाकेँ हबेलीक भीतर अनै छेँ। हवेलियो छुआ जाइत। रे छौड़ा भोलबा बेटा, जो भाग एतएसँ।"

अमर ओतएसँ चलि देलक। मदन किछु बुझि नै पौलक। बकर-बकर नानीक मुँह दिस तकैत रहल। नानी ओकर हाथ पकैड़ हबेलीक भीतर लऽ गेली।

अमर अपना आँगन जा माएकेँ सभ गप कहलक। माए पुछलखिन-

"तूँ हबेली गेलही किए?"

तैपर अमर बाजल-

"माए, हमरा तँ मदन लऽ जाइत रहए। हम कहियो कहाँ हबेली दिस जाइ छी।"

माए- "बाउ रौ, उ सभ पैघ लोक छथिन। हम पनरह बर्खसँ कोयलखमे छी मुदा आइ धरि हबेलीक भीतर नै गेलौं। कहियो काल खेरही तोड़ए हाकिम मालिकक खेतमे जाइ छी तँ हेवलीक ओसारक निच्चेसँ खेरही राखि आ बोइन लऽ घुमि जाइ छी।"

अमर माएक बात नै बुझि सकल। पुछलक-

"पैघ लोक केकरा कहै छै?"

माए जवाब देलखिन-

"पैघ लोक माने बड़का आदमी। धनीक आदमी। पढ़ल-लिखल हाकिम-हुकूम।"

अमर- "हमहूँ पैघ लोक बनब।"

माए- "पढ़बीही तब ने पैघ लोक बनमेँ। देखै छीही ने जीतनीक मामा पढ़ि-लिख कऽ हाकिम बनलखिन। ओ अबै छथिन तँ हाकिमो

मालिक हुनका चाह-पान करबै छथिन। तहूँ मनसँ पढ़-लिख आ हाकिम बन।"

माएक बात सुनि अमर बाजल-

"तूँ तँ हमरा किताबो-कॉपी ने आनि दइ छीही। टीशनो ने धरा दइ छीही। कहैत रहै छीही गाए चरा आन।"

तैपर माए बजली-

"तूँ मोनसँ पढ़। तोरा किताप-कॉपी सभ आनि देबौ। गाइयो चरबए नै कहबो। टीशनो धरा देबौ।"

अमर बाजल- "हम मोनसँ पढ़ब आ हाकिम बनब।"

अमर पढ़ए लगल। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। मैट्रिक आ इण्टरमे अपना जिलामे पहिल स्थान लौलक। चटिया सभकेँ टीशन पढ़ा कऽ बी.ए. आनर्स फस्ट क्लाससँ पास भेल। जीतनीक मामा हरियरीबला बीडीओ साहैबसँ भेँट केलक। ओ कहलखिन-

"कोनो भी कम्पीटीशनक तैयारी लेल पटनामे बैसए परतह। तइले ढौआ चाही।"

ई सभ गप्प अमर अपना माए-बाबूसँ कहलक। अमरक बाबू दस कट्ठा जमीनमे सँ पाँच कट्ठा जमीन बेच देलक। अमर पटनामे रहि बी.पी.एस.सी.क तैयारी करए लगल। गाममे कुट्टी-चालि चलए लगलै, जे जमीन बेच कऽ सभटा बेरबाद करैए फल्लमा। मुदा तेकर परवाह नै केलक अमरक पिता।

पहिले खेपमे अमर सफल भऽ गेल, बी.डी.ओ.क पदपर चयन भऽ गेलइ।

प्रशिक्षणक बाद अमरक पदस्थापना निर्मली अनुमण्डलमे भेल। योगदानक दोसरे दिन हुनका चेम्बरमे हुनकर सहायक संचिका लऽ

कऽ आएल। बी.डी.ओ. साहैबकेँ ओ चेहरा जानल-पहचानल लगलैन। ओ गौर करि कऽ सहायक दिस ताकए लगलखिन। आ दिमागपर जोर देलखिन जे हिनका तँ केतौ देखने छिऐन। मुदा केतए से मोने ने पड़नि। सहायकसँ पुछलखिन-

"अहाँक नाओं की छी?"

सहायक जवाब देलखिन-

"मदन कुमार ठाकुर।"

मदन नाओं सुनिते बी.डी.ओ साहैबकेँ बचपनक सभटा बात मोन पड़ि गेलैन। हुनका भेलैन शाइत ओ वएह मदन छी जे हमरा हबेली लऽ जाइत छल, मुदा ओकर नानी हमरा डपैट कऽ भगा देने रहए। मुदा शंकाक समाधान दुआरे पुछलखिन-

"अहाँक मामा गाम केतए अछि?"

सहायक जवाब देलखिन- "जी, हमर मामा गाम कोयलख भेल। आ नाना स्व. गोकूल प्रसाद ठाकुर।"

आब तँ बी.डी.ओ साहैबकेँ कोनो शंके ने रहलैन। ओ सभ संचिका पढ़ि कऽ ओइपर दसखत करैत कहलखिन-

"साँझमे हमरा डेरापर आएब।"

तैपर सहायक मदन पुछलकैन- "सर, कोनो खास गप्प छै की?"

बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"अहाँ आएब तँ ओतए आम आ खास मालूम भऽ जाएत।"

सहायककेँ छातीक धड़कन बढ़ि गेलैन। ओ सोचए लगला की बात छिऐ। किएक साहैब डेरापर बजौलैन। कियो चुगली तँ ने कऽ देलक।

साँझमे मदन बी.डी.ओ साहैबक डेरापर पहुँचला। बी.डी.ओ.

साहैब हुनका बड़ प्रेमसँ भीतर लऽ गेलखिन। एकटा कुरसीपर अपना बैसला आ दोसरपर इशारा करैत मदनकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू गोटे कुरसीपर बैसला। बी.डी.ओ. साहैब पत्नीकेँ सोर पाड़ैत कहलखिन-

"चाह-जलखैक ओरियान करू। मदन एला हेन।"

मदनकेँ किछु बुझेबे ने करए। ओ बाजल-

"सर, कथी लऽ बजेलौं। की आदेश छइ।"

तैपर बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"सर नै अमर बाजू अमर। हम वएह अमर छी जेकरा संगे अहाँ मामा गाममे कबड्डी, हाथी चुक्का खेलैत रही। एक दिन अहाँ अपना नानीक हबेली लऽ जाइत रही तँ अहाँक नानी अहाँपर बिगड़ैत हमरो डँटने रहैथ। की अहाँकेँ ओ घटना मोन अछि?"

मदनकेँ ममहरक सभ गप मोन पड़ि गेल। ओ ठाढ़ भऽ कऽ हाथ जोड़ैत बाजल-

"सर, हमरा माफ कऽ दिअ। हम बड्ड लज्जित छी।"

तैपर बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"फेर सर! अमर बाजू। अमर।"

कहि बी.डी.ओ. साहैब ठाढ़ होइत पुन: बजला-

"आउ मदन, गला मिलू।"

कहि दुनू बाँहि फैला देलखिन। मदन झिझकैत अमरसँ गला मिलल। मदनक दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलै।

❑

शब्द संख्या : 1045

दिव्या

निर्मली टीशनक पाछू, रेलबे परिसरेमे गुरु-चेलाक खेल भऽ रहल छल। गुरू लूंगी आ झोलंगा जकाँ कुरता पहीरि हाथमे डमरू नेने छला। लगभग दस बर्खक बालक चेला छल। ओकर समुच्चा देह कपड़ासँ झाँपल छल। चारू दिससँ लोक ठाढ़ भऽ खेलक मजा लेबए लेल तैयार छल। गुरु डमरू बजा चेलासँ पुछलखिन-

"बोल चेला की हाल-चाल छौ?"

चेला जवाब देलक-

"गुरुजी, हमर हाल-चाल एकदम टनाटन अछि। अहाँ अपन कहू।"

गुरु कहलखिन-

"हमहूँ ठीक छी। अच्छा ई बता अखन तों छैं केतए।"

चेला बाजल-

"अखन हम बरही गाममे छी।"

गुरु-

"ई बरही गाम केतए छै?"

चेला-

"बरही गाम नेपाल अधिराज्यक सप्तरी जिलामे पड़ै छइ। राजविराजसँ लगधग तीन किलोमीटर दच्छिन। बरही गामसँ उत्तर पछिमी कोसी नहर छइ।"

गुरु-

“अच्छा ई बता ओतए की कऽ रहल छेँ।”

चेला-

“विदेह इन्टरनेट पत्रिकामे खबैर जुटाबक समदियाक काज करए लगलौं हेन। नेपालक दौरापर छी।”

गुरु-

“तँ बरही गाममे एहेन कोन घटना भेलै जे तों बरही गाममे छेँ।”

चेला-

“घटना अथवा दुघर्टना तँ नै भेलै मुदा एकटा नव चीज जरूर भेलइ।”

गुरु-

“कोन नव चीज भेलै हेन, कनी फरिछा कऽ बाज।”

चेला-

“बरही गाम सप्तरी जिलाक सदरमुकाम राजविराज बजारक लग रहितो मुख्य रूपसँ किसानक गाम छी। पश्चिमी कोसी नहरिसँ दच्छिन छइ। सिचाईक भरपुर साधन रहैक कारण गरमा धान आ अगहनी धानक उपज बड़ नीक होइ छइ।”

गुरु-

“कोन खेती गिरहस्तीक गप शुरू कऽ देलँह। नव बात जे भेलै से ने बाज।”

चेला-

“हम सभ गप फरिछा कऽ कहै छी। अहाँ धैर्यसँ सुनू। बरही गाममे रूपलाल नामक एकटा किसान छैथ। हुनका एकटा बेटा आ

एकटा बेटी छैन। बेटाक नाओं विवेक अछि। ओ विराटनगर अस्पतालमे पेथोलौजिष्ट छैथ। अपन प्राइवेट जाँच-घर सेहो रखने छैथ। रूपलालक बेटी दिव्या बी.ए. पास कऽ राजे-विराजमे बी.एड. कऽ रहली हेन।"

गुरु-

"कोन आहे-माहेक कथा पसारि देलँह से नै जानि। हम कहै छियौ नव बात बता।"

चेला-

"एतएसँ शुरू होइत अछि नव बात। अखन हम नव बात जे भेल तेकर पृष्ठभूमिमे चलि रहल छी। अहाँ कनी धैर्यसँ सुनियौ।"

गुरु-

"अच्छा बता। आब हम बीचमे नै टोकबौ।"

चेला-

"हँ तँ हम कहैत रही जे रूपलालक बेटी जेकर नाओं दिव्या छी, राजेविराजमे बी.एड. कऽ रहली हेन। साल भरि पहिने दिव्याक बिआहक बात-चीत ठील्ला गामक रामअवतारक बेटाक संग चलल। रामअवतारक बेटा अनिल भोपालमे इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कऽ रहल छला। दस लाख नेपाली टकामे बात पक्का भऽ गेल छल। दुनू दिससँ छेका-छुकी सेहो भऽ गेलइ। छह महिना पहिने अनिल इंजीनियरिंगक डिग्री लऽ भोपालसँ नेपाल आएल। दूर संचार विभागमे भैकेन्सी भेल। ओहो आवेदन देलक।

अनिलक पिताजी रामअवतार तेज आदमी अछि। ओ दौग-धूप केलक। चारि लाख टका घूस मांगलकै। रामअवतार दौगल बरही आएल। रूपलालकेँ कहलखिन- अहाँ जमाएकेँ नोकरी भऽ रहल

अछि। चारि लाख टका घूस लगै छइ। अहाँ दस लाख टका जे बिआहमे देब तइमे सँ चारि लाख टका अखन दऽ दिअ। बाँकी छह लाख टका बिआहसँ दस दिन पहिने दऽ देब। जमाएकेँ नोकरी भऽ जाएत तँ बेटी रानी भऽ कऽ रहत। रूपलाल विवेककेँ फोनपर सभ बात बतौलखिन। विवेक कहलकैन, ठीक छै, अहाँ रामअवतार बाबूकेँ विराटनगर भेज दियौ। हम चारि लाख टका दऽ देबैन। रामअवतार विराटनगर जा विवेकसँ चारि लाख टका आनि बेटाकेँ संग कऽ काठमाण्डू गेला। घूस दऽ बेटाकेँ नोकरी लगौलैन।

गुरु बजला-

“अच्छा, ई बता दिव्याक बिआह रामअवतारक बेटा अनिलसँ भऽ गेल ने।”

चेला-

“असलका गप तँ आब सुनाबै छी। कनी धियानसँ सुनियौ ने। आइसँ दस दिन पहिने रूपलाल अपना भातीजकेँ संग कऽ ठील्ला पहुँचला। रामअवतारकेँ बिआहक दिन पक्का करैले कहलखिन। ओ तीनटा दिनक प्रस्ताव रामअवतार लग रखलैन। आ कहलखिन अही तीनू दिनमे जे दिन अहाँकेँ सहुलियत हुअए से दिन तँइ करि लिअ। ढौआ जे बाँकी अछि ओ नगद लेब आकि चेक, सेहो कहि दिअ।”

रामअवतार कहलखिन-

“यौ रूपलाल बाबू, हमरा बेटाक भठियन गामबला पनरह लाख टका नगद, एकटा पल्शर मोटर साइकिल आ पाँच भरि सोन दऽ रहल अछि। अहाँक बेटीसँ हमरा बेटाक बिआहक गप पक्का अछि। अहाँ अनिलक नोकरी लेल आब चारि लाख टका देने छी। तँए अहाँसँ मात्र पनरह लाख टके टा लेब। गाड़ी आ सुन छोड़ि देब। जँ अहाँ पनरह लाख टकापर बिआह करैले तैयार छी, तँ फागुन दस गतेक दिन पक्का

भेल। हमरा नगद टका दी अथवा चेक दी, हम सभमे तैयार छी। अहांकेँ जइमे सुविधा हुअए से करब।”

तैपर रूपलाल बजला-

“अहाँसँ तँ हमरा दसे लाखपर बात भेल अछि। आब अहाँ मन नै बढ़ाउ। हम बँकियौता छह लाख टकाक चेक भातीज मार्फत भेज देब।”

रूपलालक गप सुनि रामअवतार तैशमे बजला-

“जँ हमरा बेटाक संग अहाँकेँ अपना बेटीक बिआह करबाक अछि तँ मोल-मोलाइ छोड़ू आ पनरह लाख टकामे बात पक्का करि तीन दिनक भीतर बाँकी एगारह लाख टका पहुँचाउ। नहि तँ कुटुमैती नै हएत। अहाँक चारि लाख टका हम अगिला महिनामे आपस कऽ देब।”

आब तँ रूपलाल झमा गेला। आँखिक आगू अन्हार पसरि गेलैन। किछु फुड़बे ने करनि।

गुरु फेर टोकलखिन-

“अँइ रौ चेला, ई रामअवतार तँ बड़ नीच आदमी बुझाइत अछि।”

चेला बाजल-

“आगू सुनियौ ने।”

गुरु-

“अच्छा कह, आगू की भेलइ।”

चेला कहए लगल-

“कनीकालक बाद रूपलाल अपनाकेँ सम्हारैत बजला, ठीक छै हम गाम जाइ छी। बेटासँ विचार करब। ओ जे कहत सएह करब।”

रूपलाल आपस गाम आबि गेला। मुँहक उदासी देख हुनकर पत्नी बुझि गेली जे शाइत दिन पक्का नै भेल। कोनो झंझट लगि गेल। दिव्या राजविराजसँ पढ़ि कऽ आपस नै आएल छेली। रूपलाल सभ बात पत्नीकेँ बतौलखिन। पत्नी कहलकैन, विवेकसँ फोनपर गप करू। तैपर रूपलाल बजला, अखन तँ ओ क्लिनिकपर हएत रातिमे निचेनसँ गप करब। रूपलाल दुनू परानी रातिमे खेबो ने केलैन।

रातिमे रूपलाल मोबाइलपर विवेकसँ गप करए लगला। गप करिते-करिते ओ कानए लगला। जखन ओ बेटासँ मोबाइलपर गप करै छला, तखन दिव्या अपना कोठरीमे पढ़ै छेली। कोनो गपक पता नै छेलैन। जखन पिताजीकेँ कानब सुनली तखिन कान पाथि कऽ सभ गप सुनए लगली। सभ गपक थाह लगि गेलैन जे पिताजी फोनपर किए कनै छैथ। दिव्याकेँ भरि राति नीन नै भेलइ। ओ भरि राति सोचिते रहली। रामअवतार केते नीच आ कमीना अछि। चारि लाख टका हमरे बाबूजी सँ लऽ घूस दऽ बेटाकेँ नोकरी दियौलक। आइ बेटा नोकरी करए लगलैन तँ मन बढ़ि गेलैन। पाँच लाख टका बेसी कऽ हमरा बाबूजी सँ मंगै छथिन। एहेन नीच आ लोभी मनुखक बेटासँ हम अपन बिआह किन्नौं ने करब, चाहे जिनगी भरि कुमारिये किए ने रहि जाइ।

गुरु फेर बजला-

“वाह! वाह! दिव्या बड़ नीक बात सोचलक।”

चेला बाजल-

“आगू सुनियौ ने।”

गुरु-

“अच्छा सुना।”

चेला कहए लगल-

“विवेक फोनपर पिताजीकेँ कहलकैन, बाबू अहाँ जुनि कानू। हमरा एकेटा बहिन अछि दिव्या। अहाँक पएरक कृपासँ हम चारि-पाँच हजार टका डेली कमाइ छी। की करबै रामअवतार बाबूकेँ लोभ भऽ गेलैन। हम पाँच लाख टका आरो देबइ। अहाँ शुक्र दिन रामअवतार बाबूकेँ बरही बजा लियौ। हम नगद एगारह लाख गिन देबइ। चारि लाख तँ देनेहियेँ छिऐन। शुक्र दिन साँझ धरि हमहूँ गाम पहुँच जाएब।”

शुक्र दिन साँझमे रामअवतार बरही पहुँचला। सोचने रहैथ जे नगद ढौआ देता तँ राजेविराज नेपाल बैंक लिमिटेडमे ड्राफ्ट बनबा लेब। नगद ढौआ लऽ जाइमे खतरा अछि। साँझमे विवेको गाम पहुँचला।

खेनाइमे रामअवतारकेँ खूब सुआगत भेलैन। तरूआ, भुजुआक अलाबे खस्सीक मासु सेहो रहए। मुदा दिव्या एकदम गुमशुम।

शनि दिन दस बजे रामअवतारकेँ पराठा आ अल्लुक भुजिया, हलुआ, सेबैक खीर आ रसगुल्लाक जलखै खुआएल गेल। जलखै करा एकटा कोठरीमे विवेक, रामअवतार आ रूपलाल बैसला। विवेक पुछलकैन-

“ढौआ केना लऽ जेबइ?”

तैपर रामअवतार कहलखिन-

“ढौआ दऽ दिअ आ अहाँ चलू राजविराज, नेपाल बैंकमे ड्राफ बनबा देब।”

तैपर विवेक बजला-

“आइ तँ शनि छी। छुट्टीक दिन छी। बैंक बन्न हएत।”

रामअवतार बजला-

“अच्छा अहाँ टका गिन कऽ दिअ। हम समधीकेँ संग कऽ ठील्ला चल जाएब। दू गोटे रहब तँ डर कम रहत।”

विवेक आलमारी खोलि रूपैआ निकालि गिन कऽ रामअवतारकेँ देबए लगला आकि हहाएल-फुहाएल दिव्या पहुँच कऽ बजली-

“रूकू भैया, रूकू। रूपैआ राखू। हम एहेन लोभी आ कमीना आदमीक बेटासँ अपन बिआह किन्नौं नै करब। चाहे जिनगी भरि कुमारि किएक ने रहि जाइ।”

दिव्याक गप सुनि, सभ कियो अवाक् भऽ गेल। विवेक आ रूपलाल समझाबैक परियास केलैन तँ दिव्या अपना हाथमे एकटा शीशी देखबैत कहलकैन-

“ऐ शीशीमे जहर छी। जँ अहाँ सभ जिद्द करब तँ हम जहर पीब लेब।”

रामअवतार बाबू दिस घुमि बजली-

“सुनू रामअवतार बाबू, अहाँ हमरा बाबूजीसँ चारि लाख टका लऽ गेल छी। जाबे धरि चारि लाख टका आपस नै करब अहाँ बरहीसँ आपस ठील्ला नै जा सकै छी।”

गुरु डमरू बजबैत नाचए लगला। थोड़े काल नाचि बजला-

“बड़ नीक बड़ सुन्नर। दिव्याकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।”

❑

शब्द संख्या : 1350

सभसँ बड़का भीआईपी गेष्ट

हम आँगनमे चाह पीबैत रही। तखने पत्नी आबि टोकली-

"यै, सुनै छिऐ?"

हम कहलयैन-

"हँ, कहू ने की कहै छी।"

पुछलैन-

"बम्बइ आम लऽ कऽ जीतू बौआ ओतए कहिया जेबइ?"

अकचकाइत हमरा मुँहसँ बहराएल-

"हँ। ठीके मोन पाड़लौं। परसू रबि दिन भोरुका बस पकैड़ लेब। बारहे बजे तक पटना पहुँच जाएब। बम्बइ आमो खूब पाकए लगल अछि। चारि आना आम गाछेमे पाकि कऽ खसि पड़ल। काल्हि केकरो बजा कऽ आम तोरा कऽ रखि लेब आ परसू छह-बजिया बस पकैड़ लेब।"

पत्नी कहलैन-

"दस-बीस गो गछपकुओ लऽ लेबइ।"

हँ-मे-हँ मिलबैत कहलयैन-

"हँ-हँ अबस्से लऽ लेबइ।"

हम आ जीतू दू भाँइ। हमर नाओं भोगेन्द्र आ हमर छोट भाए जीतेन्द्र। माए-बाबू हमरा भोगी आ जीतेन्द्रकेँ जीतू कहै छला। माए-बाबूक देखा-देखी आनो-आन लोक हमरा भोगी आ ओकरा जीतूए

कहैत अछि। हम गाममे रहि कऽ खेती-गिरहस्ती करै छी। खेती की करब। अपना तँ मात्र एक्के बीघा खेत अछि। दू बीघा खेत लालबाबूसँ मनकूतपर नेने छी। जीतू पटनामे पंजाब नेशनल बैंकमे पी.ओ अछि।

दोसर दिन हम एकटा गछचढ़ा लड़िकाकेँ बजा आम तोड़ेलौं। लगधग पाँच साए आम भेल। जइमे साए-सबा-साए पकले रहए। सभटा आम एकटा बोरामे लऽ मुँह बान्हि कऽ रखि लेलौं। एकटा झोरामे पचासटा गछपकू आम सेहो ओरिया कऽ रखि लेलौं।

अगिला दिन साइकिलपर आम लऽ नवटोली चौकपर गेलौं। चौकेपर एकटा चिन्हारए ऐठाम साइकिल रखि सतबजिया बसपर चढ़लौं। लगधग डेढ़ बजे दूपहरमे पटना पहुँचलौं। जीतू डेरेपर छल। हमरा देखते आबि कऽ गोर लगलक आ गामक समाचार पुछलक। हम असिरवाद दैत कहलिऐ-

“गामक सभ समाचार ठीके अछि। तों अपन समाचार कहह, सभ कियो नीके-ना छह किने?”

जीतू कहलक-

“अहाँक असिरवादसँ हम दुनू गोटे कुशल छी।”

हम कहलिऐ-

“भगवानक किरपा।”

जीतू बाजल-

“केकरो मोबाइलसँ फोन केने रहितिऐ तँ खाना बनल रहितए।”

हम कहलिऐ-

“केकरा मोबाइलसँ फोन करितौं।”

जीतू फेर बाजल-

“एमकी गाम जाएब तँ एकटा मोबाइल नेने आएब। मोबाइल

रहत तँ दुनू भाँइक बीच गप-सप्प होइत रहत। भौजियोसँ गप हाएत। अहाँ फ्रेश भऽ कऽ चाह पीबू। चाह पी कऽ जाबे स्नान करब ताबेमे खेनाइ बनि जाएत।"

हम बाथरूम जा फ्रेश भेलौं। फ्रेश भऽ ड्राइंग रूममे आबि बैसलौं। जीतूक कनियाँ एकटा प्लेटमे दालमोट आ छह-सात गोट बिस्कुट रखि हमरा गोर लगली। हम कहलयैन-

"नीके रहू।"

जीतू एक जग पानि आ एकटा गिलास नेने आएल आ कहलक-

"ताबे पानि पी कऽ चाह पीब लिअ।"

हम दालमोट आ बिस्कुट खाए लगलौं। पाँचे मिनटक पछाइत कनियाँ दू कप चाह दऽ गेली। हम दुनू भाँइ चाहो पीबी आ गाम-घरक गपो-सप्प करी।

करीब पनरह-बीस मिनटक पछाइत कनियाँ आबि कऽ बजली-

"भात-दालि बनि गेल अछि। जाबे भायजी स्नान करथिन, तरकारियो बनि जाएत।"

हम बजलौं-

"एते जल्दी केना बनि गेल।"

जीतू कहलक-

"भैया, गैसपर प्रेशर कुकरमे भात-दालि बनबैमे देरी नै लगै छइ। आब अहाँ जल्दी-जल्दी नहा लिअ।"

हम बाथरूममे जा कऽ स्नान कऽ कपड़ा बदैल ड्राइंगरूममे आबि कऽ बैसलौं। हमरा बसिते देरी जीतू एक जग पानि आ गिलास टेबुलपर रखि भीतर चलि गेल। कनियाँ एकटा थारीमे भात, कटोरीमे दालि आ एकटा प्लेटमे तरकारी आ दोसर प्लेटमे भुजिया, पापड़ दऽ

गेली। जीतू एकटा कटोरीमे घी नेने आएल। किछु घी भातमे ढारि बाँकी दालिमे ढारि बाजल-

“आब भोजन करू।”

हम भोजन करए लगलौं। जाबे धरि हम खेनाइ खेलौं जीतू हमरा लग ठाढ़ रहल। कनियाँ परसनपर परसन आबि कऽ दैत रहली। भोजन केला बाद हम हाथ-मुँह धोइ कुरसीपर बैसलौं।

जीतू लगमे आबि बाजल-

“आब अपने अराम करू।”

कहलिऐ-

“जा तहूँ, अराम करए।”

हम ओछाइनपर अराम करए लगलौं। हमरा पछिला सभ गप मोन पड़ि गेल। इण्टरमे पढ़ैत रही। जीतू सेहो अठमामे पढ़ैत रहए। जीतू पढ़ैमे चन्सगर रहए। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। हमर बिआह भऽ गेल रहए। बाबूजी हमरा बिआहेमे धुर-बहुर करा दुरागमनो करा देने रहैथ। मुदा हमर कनियाँ तैयो नैहरेमे रहै छेली। बाबूजी दिल्लीमे दालि मीलमे मोटियाक काज करै छला। हुनका ओतए बोखार लगि गेलैन। ठीकसँ इलाज नै करा सकला। तेकर नतीजा भेलैन जे बड़ कमजोर भऽ गेला। डाक्टर कहलकैन-

“कालाजार हो गया है।”

तरवन हमरे एकटा गौआँ बहादूर काका हुनका नेने निर्मली टीशनपर उतरला। ओइ समैमे सवारीक सुविधा नै छेलइ। हमर बाबूजी तेतेक कमजोर भऽ गेल छला जे पएरे गाम नै आबि सकला। तरवन बहादूर काका बाबू जीकेँ मोसाफिर खानामे बैसा अपने गाम आबि हमरा माएकेँ सभ बात कहलखिन। हम खेनाइ खा कऽ निर्मली

कौलेज जाइले साइकिल निकालने छेलौं। माए हमरा लग आबि कहलक-

"भोगी, केकरो टायरगाड़ी लऽ कऽ निर्मली टीशन चलि जा। गाड़ीपर बैसा कऽ बाबूकेँ आनए पड़तह। बाबूजी मोसाफिर खानामे छथुन। बड़ दुखित छथिन। चललो ने होइ छैन। कहाँदन कालाजार भऽ गेलैन। बहादूर बौआ दिल्लीसँ संगे नेने एलैन। वएह आबि कऽ कहि गेला हेन।"

हम साइकिल रखि मने-मन हियासए लगलौं जे केकर टायर गाड़ी लऽ जाइ। हमर नजरि बेचन काकापर गेल। हम बेचन काका ओइठाम विदा भेलौं। बेचन काका सोकबामे बैस कऽ बाँसक पातक कुट्टी कटै छला। हमरा देखते बजला-

"आबह-आबह भोगी। कहऽ की हाल-चाल छह। आइ कौलेज नै गेलह की?"

कहलयैन-

"काका हमर हाल-चाल नीक नै अछि। बाबूजी बड़ दुखित छैथ। कहाँदुन कालाजार भऽ गेलैन हेँ। चललो-फिरल नै होइ छैन। दिल्लीसँ आबि निर्मली टिशनपर बैसल छथिन। बहादूर काका संगे एला हेन। वएह अखन कहि गेला हेन।"

बेचन काका बजला-

"तँ टायरगाड़ी लऽ जेबहक बाबूकेँ आनैले?"

कहलयैन-

"हँ, काका। तँए एलौं हेन।"

कहलैन-

"ठीक छै कनी जलखै कऽ लइ छी। ताबे बरदो खाइ छइ।"

हम कहलयैन-

“हमहूँ गामपर सँ भेल अबै छी। अहाँ जलखै करि कऽ तैयार रहब।”

“ठीक छइ।” ओ बजला।

हम गामपर आबि माएकेँ कहलिऐ-

“बेचन काका जलखै करै छथिन। जलखै कऽ टायर जोति देथिन। किछु पाइ-कौड़ी छौ तँ दे। हएत तँ बाबूकेँ लऽ रामानन्द डाक्टरसँ देखा देबैन।”

माए घर गेली। घरसँ एकटा फुच्ची निकालि अनली। फुच्चीकेँ उनैट दस-टकही, पँच-टकही, दू-टकही, एक-टकही आ सभटा सिक्का सभ निकालि गिनलैन। सभटा मिला कऽ पाँच साए पचपन रूपैआ भेल। सभटा पाइ दैत माए कहली-

“बाबूकेँ डाक्टरसँ जँचा दबाइ कीनि लिहेँ।”

पाइ लऽ बेचन काका ओतए विदा भेलौं। बेचन काका टायरपर पुआर दऽ एकटा सतरंजी बिछा हमरे बाट तकैत रहैथ। हमरा देखते बजला-

“गाड़ीपर बैसह। जोइत दइ छिऐ।”

हम टायरपर बैसलौं। बेचन काका टायर जोइत विदा भऽ गेला। साढ़े बारह बजे हम सभ निर्मली टीशन पहुँचलौं। हम मोसाफिर खाना गेलौं। हमर बाबूजी मोसाफिर खानामे तौनी ओछा पड़ल छला। एकदम नरकंकाल जकाँ हुनकर शरीर भऽ गेल रहनि। हम लगमे जा टोकलयैन-

“बाबू, बाबू?”

ओ उठि कऽ बैसला आ बजला-

“के भोगी! गाड़ी अनलह की?”

बाबू जीक पएर छूबि गोर लागि कहलयैन-

“हँ बाबू। बेचन कक्काक टायर अनलिऐ हेन। अहाँ किछु पानि-तानि पीलिऐ किने?”

बाबूजी बजला-

“हँ। एक गिलास बदामक सतुआ पी कऽ एक कप चाह पीने रहिऐ।

“अच्छा उठू चलू टायरपर बैसू गऽ। डाक्टर रमानन्द बाबू लग चलै छी। हुनकासँ देखा दइ छी। तेकर पछाइत खेनाइ खाएब।” -हम कहलयैन।

बाबूजी बजला-

“मुदा हमरा लग ढौआ कहाँ छह। दू महिनासँ बैसले छेलौं। जेहो ढौआ छल, सभ दबाइमे खरच भऽ गेल।”

हम कहलयैन-

“अहाँ ढौआक चिन्ता जुनि करू। हमरा माए किछु ढौआ देलक हेन। ओइसँ ताबे इलाज करा दइ छी। डाक्टर साहैब की कहै छथि, तेकर बाद आगूक बात आगू सोचब।”

बाबू जीकेँ लऽ कऽ हम डाक्टर रामानन्द बाबूक क्लिनिकपर एलौं। जाँचि कऽ डाक्टर साहैब कहलखिन-

“हम दबाइ लिखि दइ छी। दबाइ लऽ कऽ हमरासँ देखा कऽ शुरू कऽ दियौ। मुदा हिनकर इलाज नीकसँ करबए पड़त। दरभंगा लऽ जा कऽ अस्पतालमे भर्ती करा दियौ।”

डाक्टर साहैबक फीस दऽ दबाइ कीनिलौं। किशन होटलमे खेनाइ खेलौं। खेनाइ खा तीनू गोटे टायरपर बैस विदा भेलौं। गोसाँइ

डुमैसँ पहिने गाम पहुँचलौं। माए बाबूक हालत देख बोम फाड़ि कऽ कानए लगली। माएकेँ कनैत देख जीतूओ कानए लगल। हमरो आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगल छल। बेचन काका हमरा सभकेँ चुप करबैत बजल छला-

“कनने, खीजनेसँ किछ ने होइ जेतह। पाँच-सात हजार टाकाक ओरियान कऽ दरभंगा लऽ जाहुन आ नीकसँ इलाज कराबहुन।”

पाँच कट्ठा खेत सात हजारमे भरना रखि चारिम दिन हम, माएकेँ संग कऽ बाबूकेँ लऽ दरभंगा गेलौं। बाबू जीकेँ दरभंगा अस्पतालमे भर्ती करेलौं। डाक्टर साहैबसँ पुछने रहिऐ-

“सर, बाबूजी केतेक दिनमे ठीक भऽ जेथिन।”

डाक्टर साहैब बजल रहथिन-

“रोगीकेँ रोग गरसि नेने अछि। लीवर सेहो ठीकसँ काज नै करै छइ। तँए किछु कहब मोसकिल।”

दरभंगा जाइसँ पहिने माए बेचन काका आ जीतूकेँ हमरा सासुर भेज हमरा कनियाँकेँ विदागरी करा अनने रहथिन। दिल्लीसँ एलाक मासे दिनक भीतर बाबूजी हमरा सभकेँ छोड़ि दुनियाँसँ चलि गेला। जीतू बाबू जीक पएरपर माथा पटैक-पटैक कनैत रहए।बेचन काका जीतूकेँ समझबैत कहने रहथिन-

“तोरा तँ बाप तुल जेठ भाए भोगी छेबे करथुन। चुप भऽ जा। भोगी तोरा सभ किछु करतऽ। पढ़ेतह-लिखेतह, बिआह-शादी करतऽ।”

जीतू हमर पएर पकैड़ कानए लगल रहए। हम जीतूकेँ भरि पाँजमे लऽ कनैत कहने रहिऐ-

“तों चिन्ता जुनि कर। हम तोहर जेठ भाय छियौ। तोहर सभ

जवाबदेही हमरापर दऽ बाबूजी चल गेला। हम अपन फर्ज पूरा करब।”

बाबू जीक मरला बाद हम पढ़ाइ छोड़ि खेती-गिरहस्ती करए लगलौं।

बाबू जीक सोगे माए जे सोगेली से ओहो छबे मासक भीतर हमरा सभकेँ छोड़ि बाबूएजी लग स्वर्ग चल गेली। जीतूक दुनू आँखि कनैत-कनैत फूलि गेल छल। ओ माइक पएरपर माथ पटैक-पटैक कानै छल। हमर कनियाँ जीतूकेँ सम्हारने छली। मरैसँ पहिने माए हमरा कहने छेली-

“बौआ भोगी, जीतूकेँ पढ़ा-लिखा कऽ हाकिम बनाबिहह।”

हम माएकेँ कहने छेलिऐ-

“माए चिन्ता जुनि कर। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा डीहो बेचए पड़त तँ बेच लेब।”

जीतू पढ़ैमे तँ चन्सगर रहबे करए। ओ मैट्रिकसँ लऽ कऽ एम.काँम. धरि फर्स्ट डिविजनसँ पास केलक। एम.काँम. केला बाद जीतू पटनामे रहि प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करए लगल। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा एक बीघा खेत बेचए पड़ल।

एम.काँम. केलाक बाद साले भरिक भीतर जीतू पंजाब नेशनल बैंकमे पी.ओ, पदपर बहाल भऽ गेल। जइ बैंकमे ओकरा नोकरी भेटल ओ पटने शहरमे अछि।

हाजीपुरक स्टेट बैंक मैनेजरक बेटी संग जीतूक बिआह भेल। जीतूक एकटा जेठका सार पी.एम.सी.एच.मे डाक्टर छथिन। ई सभ सोचैत-सोचैत हम नीन पड़ि गेलौं। नीन टुटल तँ सुनलिऐ, जीतू अपना कनियाँकेँ कहैत रहनि-

“भैया रबि दिनकेँ माछ-मासु नै खाइ छथिन। तीमन तरकारीमे की सभ आनए पड़त।”

कनियाँ बजली-

“अल्लू-पीऔज तँ अछिए। परोर, रामझुमनी, करैला आ सजमैन लऽ लेब।”

जीतू बाजल-

“अच्छा झोरा दऽ दिअ। हम जंक्सन जाइ छी ओम्हरेसँ तरकारी कीनने आएब। हँ, भैया सुति कऽ उठथिन तँ चाह बना कऽ दऽ देबैन।”

कनियाँ बजली-

“अहाँ कहबै तब हम भायजी केँ चाह बना कऽ दऽ एबैन। हमरा एतबो विवेक नै अछि की।”

जीतू बाजल-

“नै से नै। सएह कहलौं। ठीक छै हम जाइ छी।”

कनियाँ बजली-

“कनी सबेरे आएब। आन दिन जकाँ आठ राति नै बजा देबइ।”

“हमरो धियान रहतै जे भैया आएल छथिन।” - ई कहि जीतू झोरा लऽ कऽ चलि गेल।

जीतूकेँ गेलाक पनरह-बीस मिनटक पछाइत हम ओछाइनपर सँ उठि गेलौं बाथरूममे जा हाथ-मुँह धोइ कऽ कुरसीपर आबि बैसले रही आकि तखने कनियाँ एक गिलास पानि आ एक कप चाह दऽ गेली। चाह पीब हम कनियाँकेँ कहलयैन-

“हम टहैल अबै छी।”

कहि हम कपड़ा बदैल डेरासँ निकैल गेलौं। सात-सबा-सात बजे

आपस डेरापर एलौं। जीतूओ जंक्सनसँ आबि गेल रहए। ओ कनियाँकेँ कहैत रहए-

"एक लीटरबला सुधा दुधक पैकेट आ सेबैक दूटा पैकेट नेने आएल छी। चीनी सेहो नेने एलौं हेन। तरकारीमे परोर, रामझुमनी, करैला आ सजमैन अछि। सोल्हन्नी देसी-घी मे पुरी छानि दियौ। अल्लू-परोरक तरकारी आ रामझुमनीक भुजिया बना दियौ। सेबैक खीर सेहो बना दियौ।"

कनियाँ बजली-

"कनीए देशी घी घर-वेद रखने छी। जौं अखन खरच करि लेब तँ कोनो भी.आई.पी. गेस्ट औत तँ केतएसँ आनब।"

"कोन भी.आई.पी. गेस्ट?" - जीतू पुछलकैन।

"अहाँक बैंक मैनेजर आ हमर डाक्टर भैया।" - कनियाँ बजली।

"हमरा लेल सभसँ बड़का भी.आई.पी.गेस्ट हमर भैया छैथ, जे माए-बाबूक मुइला बादो हमरा पढ़ैमे कहियो ढौआक कमी नै हुअए देलैन। हमरा पढ़बै खातिर एक बीघा खेत बेच देलैन। हुनके कृपासँ आइ हम बैंकमे पी.ओ. छी।"

जीतूक बात सुनि हमर छाती सूप सन भऽ गेल।

❑

शब्द संख्या : 1881

अपन जाति

पंचायत चुनावक प्रचार-प्रसार जोर-सोरसँ भऽ रहल अछि। आइसँ आठम दिन मंगलकेँ मतदान हएत। उम्मेदवार सभ जन-सम्पर्क-अभियानमे लागल छैथ। पुरुखक कोन गप कही जे जनानियोँ सभ टीम बना-बना अँगने-अँगने जा-जा अपना उम्मेदवारकेँ जितबैले निहोरा कऽ रहली अछि। हमर पत्नी तँ बुझू चाह बनबैत-बनबैत फिरिशान भऽ गेली अछि। किएक तँ एकटा उम्मेदवार जाइ छैथ तँ दोसर उम्मेदवार अपना दल-बलक संग आबि जाइ छैथ। जखन दरबज्जापर कियो औता आ एक कप चाहोसँ आग्रह नै करबैन तँ दरबज्जाक प्रतिष्ठा रहत। भरि दिनमे पचासो कप चाह बनैत अछि। अपना दुआरिपर जे महींस अछि, ओ एक संझू भऽ गेल अछि आ दूधो दुइये डिब्बा लगैत अछि। तँए नेबो रखने छी आ नेबोएबला चाह चलबै छी।

गाममे जे चौक अछि- कदमपुरा चौक, ओकर रौनक बढ़ि गेल अछि। बढ़बो केना ने करत रामनगर आ छजना पंचायतक चौक तँ छीहे मुदा अखन परसा उत्तरीक उम्मेदवार सभ अपन दल-बलक संगे अही चौकपर होइत पंचायतक पुबरिया भागसँ पछबरिया भाग आ पछबरिया भागसँ पुबरिया भाग जाइ-अबै छैथ। पुबरिया भाग आ पछबरिया भागक दूरी कमतीमे पाँच किलोमीटर तँ हेबे करत। तँए ऐ चौकपर जलखै आ चाह-पान करबे ने करता। जलखै आ चाह-पानक दोकानदार सभ तँ बुझू उठि बैसल। भरि सालक कमैनी बुझू पनरहे-

बीस दिनमे भऽ जेतइ। पैछला पंचायत चुनावमे तँ दारूओक दोकान रहइ। दारूबला नेहाल भऽ गेल रहए। मुदा अप्रिल 2016 सँ नीतीशजी दारू बेचनाइ-पीनाइपर प्रतिबन्ध लगा देलखिन तँए एमकी दारू नै भेटै छइ। हँ, दारूक बदलामे कोल्ड ड्रिंक जरूर भेटै छइ। दारू बन्द भेलासँ उम्मेदवार सभकेँ बड़ फैदा भेलइ। किएक तँ आब भोँटर सभकेँ दारू नै पियाबए पड़ै छइ। दारूक बदलामे कोल्ड ड्रिंक पिअबै छथिन जइमे कम ढौआ खर्च होइ छैन।

केतेक गोरे तँ दुइये बजे चौकपर पहुँच जाइ छैथ। ओतए उम्मेदवार सभ ठंढाक संग जलखै आ चाह-पान करबै छथिन। अनकर गप की कही हम अपने कइयेक दिन गामपर रौतुका खेनाइ नइ खाइ छी। चौकेपर तीन बेर-चारि बेर जलखै आ चाह-पान खा लइ छी तखन भूख केना रहत जे रातिमे खेनाइ खाएब। अहाँ सभ कहबै तीन बेर-चारि बेर जलखै आ चाह-पान के करबै छैथ? तँ सुनू, एकटा उम्मेदवार भेल मुखियाक, दोसर सरपंचक, तेसर पंचायत समितिक सदस्यक, चारिम-पाँचम भेल वार्ड सदस्य आ वार्ड पंचक। जिला परिषदक उम्मेदवार सभ दिन नै भेटै छैथ, तँए ओ नहियेँ गीनू। बाँकी सभ उम्मेदवार जलखै आ चाह-पान लऽ आग्रह करै छथिन। आब अहीं कहू किनका मना करबैन। जिनके मना करबैन हुनके हेतैन जे नन्दजी हमरा भोँट नै देता। तँए जे जे आग्रह करै छैथ तिनकर-तिनकर जलखै-चाह-पान खाइ छिऐन। हँ, एकटा इमानदारी जरूर रखने छी जे एक पदक एकेटा उम्मेदवारक खाइ छिऐन, दोसर उम्मेदवारक नइ।

मतदानक पाँच दिन पहिलुका गप्प छी। चौकक चाहक दोकानपर बैरियाही गामक विनोद, आ पकड़िया गामक रूपचन्द भेँट भेला। अहिना भोँट-भाँटक गप-सप्प होमए लगल। हम विनोदसँ पुछलिऐ-

“की हौ विनोद भाय, की हाल-चाल छै भोँट-भाँटक? केकरा-केकरा भोँट देबहक?”

विनोद बजला-

“हौ भाय, आन पदक गप तँ नै कहबह मुदा सरपंचक लेल हम सभ निर्णए कऽ लेने छी।”

तैपर रूपचन्द पुछलकैन-

“की निर्णए कऽ नेने छहक?”

विनोद बजला-

“हौ रूपचन्द भाय, सरपंचक लेल चारिटा उम्मेदवार अछि। बैरियाही गामसँ जीतन कामत, रामनगरसँ झमेली चौपाल, पकड़ियासँ कपिल मण्डल आ ननपट्टीसँ मोहन भगत।”

हम कहलिऐ-

“हँ, यएह चारू उम्मेदवार रामनगर पंचायतसँ सरपंच पदक लेल ठाढ़ छैथ।”

विनोद बजला-

“देखियौ, झमेली चौपाल जे चुनाव लड़ै छैथ, सभ कियो हुनका झगरौआ झमेलिया कहै छैन। रामनगर पंचायतक कोन गप जे रामनगर गामोमे कियो हुनकासँ खुश नै छैथ। भरि दिन एक-दोसराक टीक-मे-टीक ओझरी लगबैत रहै छथिन। एहेन लोककेँ भोँट के देत। ओ जँ सरपंच भऽ जाएत तँ भरि दिन एक-दोसराकेँ झगड़ा लगौत।”

तैपर रूपचन्द बजला-

“से तँ ठीके कहै छहक। हम काल्हि भोरमे रामनगर गाम एकटा गाए तकैले गेल रही। तीन-चारि गोरेसँ गप भेल। सभ कहलक जे हम सभ झमेली चौपालकेँ भोँट नै देबइ। गौआँ छी तँ की भेल। तैपर हम

पुछबो केलिऐ जे बाँकी जे तीनटा उम्मेदवार बँचल तइमे के नीक अछि।"

विनोद बजला-

"बाँकी बँचल जीतन कामत, कपिल मण्डल आ मोहन भगत।"

विनोदक गप खतमो ने भेल छल कि बिच्चेमे रूपचन्द बजला-

"कपिल मण्डल तँ दस बर्ख पहिनहियोँ सरपंच भेल छला। हुनका तँ हम सभ पाँच बर्ख धरि देखनहियेँ छिऐन। एकोटा पंचैती हुनकासँ नै फरियेलैन। हुनका समैमे केतेको मामला थाना आ कोट-कचहरी पहुँचल।ओ तँ एकदम अक्षम सरपंच साबित भेला। एहेन लोक सरपंच भऽ कऽ की करत?"

विनोद बजला-

"से तँ ठीके कहै छहक। हमरे गाममे कपिल मण्डलक समैमे चारिटा मामला थाना पहुँचल छल।"

हम कहलिऐ-

"बाँकी बँचलह दूटा उम्मेदवार- बैरियाही गामसँ जीतन कामत आ ननपट्टी गामसँ मोहनभगत। मोहन भगत अखनो सरपंच छथिन।"

विनोद बजला-

"हँ, मोहनजी अखन निवर्तमान सरपंच छैथ। जीतन कामत जे हमर गौआँ छी, ओकरा तँ हम रग-रग जनै छिऐ। एक नम्बरक दलाल, उचक्का आ बेइमान अछि। केतेक गोरेसँ इन्दिरा अवासक नाओंपर पाइ लेलक आ काज नै भेल। जँ पाइ देनिहार पाइ आपस मंगलक तँ कहि देलक पाइ कोनो हम रखलिअ, पाइ तँ हम हाकिमकेँ देलिअ, तखन आपस केतएसँ करब। तैपर जँ कियो कहलक, तँ हाकिमे सँ मांगि कऽ आनि दिअ। तँ जवाब देलक, हौ कुत्ता खेलहा चाम आ

हाकिम खेलहा दाम केतौ आपस होइ छै, जे तोहर आपस हेतह। दलाली आ बेइमानी कऽ फटफटिया मेन्टेन करैत अछि। केहेन-केहेन जमीनबलाकेँ मकान बनाएले ने होइ छै आ ओ चारि कोठरीक मकानो बना लेलक। हौ ओकरा तँ बैरियाहीमे पच्चिसोटा भोँट नइ हेतइ।"

"आ जे अखन सरपंच छथुन मोहन भगत, हुनका बारेमे की विचार छह?"- हम पुछलिऐ।

रूपचन्द बजला-

"सरपंच लायक सभसँ नीक लोक वएह छैथ। हम सभ पाँच बर्खसँ हुनकर क्रिया-कलाप देखलिऐ हेन। बड़ नीक पंचैती करै छथिन। हिनका समैमे एकोटा मामला थाना आकि कोट-कचहरी नै पहुँचल। आदमियोँ भला-इमानदार छैथ। केकरोसँ एको पाइ घूसो नै लइ छथिन। की हौ विनोद भाय, तोहर की विचार?"

विनोद-

"हमर विचार की पुछै छहक। हम सभ मन बना नेने छी जे पाँच बर्ख मोहनजीकेँ औरो सरपंच रखबैन। हमरा गामक बारह-अना भोँट हिनके भेटतैन।"

रूपचन्द बजला-

"हौ, पौंरुकाँ सालक गप छिऐ। हमरा गामक एकटा धनिकाहाक बेटा एकटा गरीबाहाक बेटीक इज्जत लूटैक परियास केलक। इज्जत तँ लूटिये लइतै मुदा रक्ष रखलखिन भगवान जे इज्जत बँचि गेलइ।"

हम पुछलिऐ-

"की रक्ष रखलखिन भगवान? नै बुझलौं, कनी परिछा कऽ कहह।"

रूपचन्द बजला-

“छौड़ीक नाओं खैंकी छिऐ। ओकर उमेर पनरह-सोलह बर्ख हेतइ। ओ छौंड़ी असगरे खेरही खेतमे घास कटैत रहए। बेचूआ जखन ओकरा असगरे देखलक तँ ओकरा संग जबरदस्ती करए लगल। तैपर छौड़ी हल्ला केलक। हल्ला सुनि कऽ घसबैहनी सभ दौगल तँ बेचूआ पड़ा गेल। छौड़ीक ब्लाउज फाटि गेल रहइ। छौड़ीक बाप गरीब आदमी आ ओइ धनिकाहाक बटेदार, केतए जाएत। के ओकर निसाफ करतै?

किछ लोक कहलकै, सरपंच लग जा। ओ सरपंच लग गेल। पंचैती बैसल। धनिकाहा-डरे कोइ किछ बजबे ने करइ। सरपंच मोहनजी पंचैतीमे छौड़ाकेँ बजौलखिन। ओकरासँ पुछलखिन तँ ओ छौड़ा बाजल, खैंकी हमर खेरही कटैत रहए। हम ओकर छिट्टा आ हँसुआ छीनि लेलिऐ। तैपर ओ हमरा गरियाबए लगल तँ हम मारलिऐ। तँए ओ हमरापर झूठ-फूसक इलजाम लगबैए।

सरपंच साहैब घसबैहनी सभकेँ पंचैतीमे बजा पुछलखिन तँ ओ कहलकै, जखन हम सभ खैंकीक हल्ला सुनलिऐ तँ दौग कऽ गेलिऐ तँ बेचूआकेँ भागैत देलखिऐ। पंचैतीमे बेचूआ दोखी साबित भऽ गेल।

सरपंच साहैब बेचूआक बापसँ पुछलखिन, मरर जँ खैंकी अहाँक बेटी रहैत, तखन अहाँ की करितिऐ? खैंकीकेँ अपन बेटी बुझैत ई पंचैती अहीं करियौ।

एगारह हजार टाका बेचूआकेँ दण्ड आ पंचैतीमे दस बेर कान पकैड़ कऽ उठक-बैसक करैले कहल गेल रहए।”

विनोदजी बजला-

“मोहनजीक हमरोपर उपकार छैन।”

हम पुछलयैन-

“से केना?”

तैपर विनोदजी बजला-

“हमरा घरसँ पाँच हजार टाका आ मोबाइल चोरि भऽ गेल रहए। चोर पड़ोसियेक बेटा फेकूआ रहए। जखन फेकूआ मोबाइल बेचए नरहिया बजारक अर्चना मोबाइल रिपेयरिंग सेन्टरपर गेल तँ दोकानदार पिन्टूजी हमर मोबाइल चिन्ह गेला। किएक तँ हम अर्चने मोबाइल रिपेयरिंग सेन्टरमे मोबाइल रिचार्ज आ चार्ज करबैत रहै छी। पिन्टूजी फेकूआसँ पुछलखिन-

‘ई मोबाइल केतएसँ अनलिऐ?’

तैपर फेकूआ बाजल-

“हमरा भेटल।”

पिन्टूजी मोबाइल रखि कऽ हमरा फोन केलैन। जखन पिन्टूजीक फोन आएल ओइ समैमे हम सभ घरेमे मोबाइल खोजैत रही। मोबाइलक संग पाँच हजार रूपैओ गायब रहए। हम रामनगर ग्राम कचहरीमे पेटीशन देलौं। पंचैती बैसल। फेकूआ बाजल-

“मोबाइल हमरा रस्तापर भेटल।”

मुदा सरपंच साहब जखन डपटलखिन तँ फेकूआ मोबाइलक संग रूपआ सेहो गछलक। पाँच हजार टकाक संग हमर मोबाइल आपस भेल। फेकूआकेँ एगारह साए एकावन टका दण्ड भेल।”

काल्हि भोँट गिरत। रातिमे विनोदजी अपना पत्नीसँ पुछलखिन-

“सरपंचक लेल केकरा भोँट देबइ?”

तैपर पत्नी कहलकैन-

“केकरा देबइ! मोहनजीक छापपर देबइ, ठेलीगाड़ी छापपर मोहर मारि कऽ भोँट गिरेबै। धनि मोहनजी सरपंच साहैब जे चोरि भेल

पाँच हजार टकाक संग मोबाइल आपस भेल। नइ तँ चोरौनिहार दइतए?"

विनोदजी बजला-

"हँ से तँ ठीके कहै छिऐ।"

भोँटक विहान-भने चौकपर विनोदजी भेटला, पुछलयैन-

"कहह विनोद भाय, भोँट-भाँटक समाचार। सरपंचमे केहेन रहलैन मोहनजीक?"

विनोदजी बजला-

"हौ नन्द भाय, तोरासँ छाम की, हम सभ सरपंचक लेल जीतन कामतकेँ भोँट देलिऐ।"

हम क्षुब्ध भऽ गेलौं। पुन: पुछलयैन-

"आ मोहनजी?"

तैपर विनोदजी बजला-

"छोड़ह मोहनजीक बात। हौ जीतन कहुना छी तँ अप्पन जाति छी।"

हम विनोदजीक मुँह तकैत रहि गेलौं..!

❑

शब्द संख्या : 1424

इनारक पानि

नेपालक सप्तरी जिलामे एकटा गाम छै- तरही। बेस झमटगर गाम। गाम दू टोलमे बँटल अछि। विभिन्न जातिक बसोबास करैबला गाम। ओना तँ ऐ गामक लोक मुख्य रूपसँ खेतीपर निर्भर अछि मुदा सरकारियो नोकरी करनिहारक संख्या साए-सबा-साएसँ कम नइ हएत। ऐ गाममे नीक-नीक विद्वान सेहो छैथ। कृषि विभाग आ शिक्षा विभागमे ऊँच्च पदपर नोकरी करनिहार। पढ़ल-लिखल आ नीक-नीक विद्वानकेँ रहितो गामक लोकक विचार आ बेवहारमे संकीर्णता ऐछे।

ओना तँ ऐ गाममे बेसी जाति पनिचल्ले अछि मुदा एक घर डोम आ एक घर चमार सेहो बसल छैथ। डोम एक घरसँ पाँच घर भऽ गेला हेन मुदा चमार एक घरक एके घर छैथ। किएक तँ चमारक खनदान एक पुरखियाह। पनिचल्लाक मतलब ई भेल जे जइ जातिक पानि दोसर जातिमे चलैत होइन।

चमार तँ जमीन-जथाबला छैथ, मुदा डोम सभकेँ मात्र अपन घराड़ीएटा छैन। चमारक जीविकाक मुख्य आधार खेती छैन, जखन कि डोम सभ सूप, चालैन, कोनियाँ, छिट्टा, चंगेरा, डाल-दौरा, गुड़चल्ला आदि बीन बेच अपन गुजर करै छैथ। एकर अलाबे अगहन आ अखाढ़मे धनकटनी आ धनरोपनी करैले जनमे सेहो खटै छैथ। एकटा बात छै, ऐ गामक डोम सुगर नइ पोसने छैथ, आ ने दारू पीबै छैथ।

ऐ गाममे पीबैबला पानिक बड़ दिक्कत। किएक तँ चापाकल

लेल लेअर सर-जमीनसँ दू साए पचास फीट निच्चाँ अछि। तँए चापाकलक संख्या बड़ कम अछि। केकरो-केकरो चापाकल अछि जे अन्दरेमे गड़ौने अछि। नइ तँ बेसी लोक इनारेक पानि पीबै छैथ। एकटा इनार पछबरिया टोलक कामतपर आ दोसर पुबरिया टोलमे स्कूलपर अछि। पुबारि टोल आ पछबारि टोलक दूरी लगधग एक किलोमीटर भरि हएत।

चमार तँ जमीन-जथाबला लोक तँए अपने कल गड़ौने छैथ मुदा गामक डोमकेँ पीबैबला पानिक बड़ दिक्कत। डोमटोली पुबारि टोलसँ कनिक्के उत्तर अछि। चौकसँ साए लग्गा दक्षिण मिडिल स्कूल अछि। स्कूलेक बगलमे इनार अछि। इनार पक्काक बनल अछि। इनारेपर बाल्टीमे कड़ी लगा इनारसँ पानि भरैक बेवस्था छइ।

डोमक परिवारक औरत घैल आकि बाल्टी लऽ कऽ इनारपर एली, जँ पनिचल्ला जातिक कियो पुरुख आकि महिला रहल तँ इनारसँ पानि भरि कऽ घैल आकि बाल्टीमे ढारि दइले निहोरा केली। जँ कियो इनारसँ पानि भरि कऽ घैल आकि बाल्टीमे ढारि देलक तँ ओ औरत पानि लऽ कऽ अपना अँगना एली, नइ तँ ओतए बैसल रहली। पानि भरि दइक एबजमे बाँसक बेना सेहो देमए पड़ै छेन। कहियो-कहियो तँ घन्टो भरि इनारपर बैसए पड़ै छैन।

फगुआसँ एक दिन पहिने, चारि बजे दिनमे नेताजी मोटर साइकिलसँ लौकही जाइ छला। जखन ओ स्कूल लग एला तँ एकटा औरत हुनका 'नेताजी मालिक', 'नेताजी मालिक' कहि अबाज देलकैन।

नेताजी गाड़ी रोकि अकानए लगला तँ इनारक चबुतराक निच्चाँमे दूटा घैल राखल आ एकटा औरतकेँ ठाढ़ देखलखिन।

नेताजी गाड़ी ठाढ़ कऽ इनार लग एला तखन ओइ औरतकेँ

चिन्हलखिन। ओ जीतन मल्लिकक पत्नी ठेहोवाली छैथ। नेताजी ठेहोवालीसँ पुछलखिन-

“की बात? किए हाक देलह?”

ठेहोवाली कहलकैन-

“नेताजी मालिक, हिनकासँ कहैत लाज होइए, मुदा एक घन्टासँ एतए बैसल छी। केतेको गोरे आएल आ पानि लऽ लऽ गेल मुदा कियो पानि भरि कऽ हमर घैलमे नइ देलैन। अपने इनारसँ पानि भरि कऽ दुनू घैलमे ढारि दैतैथ तँ बड़ गुण मानितिऐन।”

नेताजी सोचमे पड़ि गेला। ओ सोचए लगला- कहू ईहो मनुखे छी। जेहने खून हमरा सबहक शरीरमे अछि तेहने खून एकरो शरीरमे छै किने। तखन ई अपनेसँ पानि किएक ने भरत! डोम भेल तँ की भेल? छी तँ ओहो मनुखे।

नेताजी सोचमे डुबल रहैथ कि ठेहोवाली टोकलकैन-

“मालिक बड़ अबेर भऽ गेल!”

नेताजी किछ सोचलखिन आ बजला-

“तों अपनेसँ पानि भरि कऽ घैलमे लऽ लएह।”

तैपर ठेहोवाली डराइत बजली-

“नइ गिरहत, हम अपनेसँ पानि नै भरब! कियो देखत तँ जुलुम भऽ जाएत! गामक लोक हमरा गरियौत आ मारबो करता। हमरासँ पानि छुबा जेतइ! हमरा सभकेँ गाममे रहब मोसकिल भऽ जाएत!”

नेताजी अपन बातपर जोर दैत कहलखिन-

“तों अपनेसँ पानि भरि कऽ लऽ जाह। जँ कियो किछ कहतह तँ कहि दिहक नेताजी पानि भरैले कहलैन, तँए भरलौं। नइ बिसवास होइए तँ नेताजी सँ पुछि लिऔ। हम सभ समैझ लेब।”

ठेहोवाली सोचए लगली। नेताजी मालिक पानि भरए कहै छैथ। कोनो अद्दी-गुद्दी लोक तँ छैथ नइ। कहुना छैथ तँ गामक नेता छैथ। गाममे केकरोसँ कम धनो-सम्पैत आकि कम समांगो नहियें छैन। खएर जे हेतै से बुझल जेतइ, अपनेसँ पानि भरब।

ठेहोवाली इनारसँ पानि खींच घैलमे ढारए लगली। जखन दोसर घैलमे पानि ढारैत रहैथ तखने लुचबा साइकिलसँ केतौ जाइत रहए, ओ देखलक, मुदा बाजल किछ ने।

लुचबा एक्कैस-बाइस बर्खक अछि। जहिना नाओं लुचबा तहिना एक नम्बरक लुच्चा सेहो ऐछे। भरि दिन एम्हरका बात ओमहर आ ओमहरका बात एम्हर करैबला। तँए लोक लुचबा कहै छइ। ओना असली नाओं जीबछ छिऐ। पुबारिये टोलमे ओकर घर पड़ै छइ। एक नम्बरक पीयक्कर सेहो अछि।

लुचबा चौकपर पहुँच साइकिलसँ उतैर बाजल-

“बड़का जुलुम भऽ गेल! आब हम सभ केतएसँ पानि आनि कऽ पीअब!”

एकटा गाछतर किछ लोक तास खेलाइत रहए। चारि गोरे खेलनिहार आ तीन-चारि गोरे देखनिहारो। दस बारह गोरे चाहो-पानक दोकानपर रहए। सबहक धियान लुचबाक बातपर चलि गेल।

फोचाइ दास पत्ता फेकैत बाजल-

“की जुलुम भऽ गेल? की कियो स्कूलक इनारमे जहर दऽ देलक हेन जे तों बजै छें, आब कोन पानि पीअब?”

तैपर लुचबा बाजल-

“नइ यौ, फोचाइ भैया। कियो पानिमे जहर नइ देलक हेन। इनारक पानि छुबा गेल। जीतना डोमक बौहु अपनेसँ पानि भरि

लेलक। हम अपना आँखिसँ देखलौं हेन।"

तैपर भुटकुन पुछलक-

"आर कियो देखलक की तोहींटा देखलिहीन?"

लुचबा-

"नेताजी सेहो देखलैन। ओकर मोटर साइकिल खड़ा छेलै आ ओ डोमिनियासँ गप्प करै छला।"

बिलट पुछलक-

"नेताजी डोमिनियाकेँ किछ ने कहलखिन?"

लुचबा बाजल-

"नइ यौ, ओ किछ ने कहलकै। डोमिनियाँ घैल भरि गाम दिस विदा भेल आ नेताजी फटफटिया स्टाट कऽ दक्षिण-मुहेँ।"

तैपर टुनटुन बाजल-

"हँ, दसे मिनट पहिने नेताजी गेला हेन। चौकपर हमरेसँ तमाकुल मांगि कऽ खेने छला। पुछबो केलिऐन, केतए जाइ छी। तँ बाजल छला लौकही बजारक काज अछि।"

ई गप-सप्प होइते रहए कि ठेहोवाली दुनू घैल नेने चौकपर पहुँचली। ठेहोवालीकेँ देखते लुचबा बाजल-

"हे देखियौ, डोमिनियाँ पानि नेने जा रहल अछि।"

फोचाइ बाजल-

"ऐ पनिभरनी कनी ठाढ़ हुअ।"

ठेहोवाली ठाढ़ होइत बजली-

"हमरा माथपर भारी अछि जे कहबाक छैन से जल्दी कहौथ।"

फोचाइ-

"तोहर घैल के भरि देलकह?"

ठेहोवाली जवाब देलक-

"हम अपनेसँ पानि भरि दुनू घैल भरलौं।"

लुचबा बाजल-

"केकरा पुछि कऽ इनारसँ पानि भरलीही?"

ठेहोवाली बजली-

"हमरा नेताजी मालिक कहलखिन, तँए अपनेसँ पानि भरलौं।"

फोचाइ बाजल-

"तोँ नेताजीक मुँहपर ई बात कहबहक?"

"हँ किएक ने कहब।" ठेहोवाली मुहेँ लागल बजली।

भुटकुन बाजल-

"अच्छा तों जा। हम सभ नेताजीसँ फरिछा लेब।"

नेताजीक नाओं हरी नारायण राय छिऐन। किछ लोक हुनका हरी बाबू तँ किछ लोक नेताजी कहै छैन। बेसी लोक नेतेजी कहै छैन। हरी बाबू जखन मैट्रिक परीक्षा दऽ गाममे रहैथ, ओही समैमे बी.पी. कोइराला राजतंत्रक विरोधमे आन्दोलनक शंखनाद केने रहथिन। हरी बाबू पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि आन्दोलनमे कुदि गेला। केतेको बेर जेल गेला। लकधक आठ बर्ख धरि भारतमे निर्वासित जीवन बितौलैन। अखन सप्तरी जिलाक नेपाली कांग्रेस कमिटिक अध्यक्ष छैथ। महात्मा गाँधीक विचारधारा हिनका रग-रगमे समाएल छैन। हिनक पिताजी सेहो लोहियावादी छेलखिन।

चारि बजे बेरुका समए। चौकपर लोकक आवा-जाही शुरू भऽ गेल छल। समुच्चा चौकपर एक्के बातक चर्च जे नेताजी डोमिनियासँ इनार आ इनारक पानि छुबा देलक! चौकपर पीपरक गाछतर पचासो

गोरे जमा भऽ गेल।

धोल-फचक्का हुअ लगल। सभ-सभ रंगक गप बजैत। फोचाइ बाजल-

"नेताजी अपेन कल गड़ौने छथिन। हम सभ इनारक पानि पीबै छेलौं, जेकरा डोमिनियासँ छुबा देलक! आब हम सभ केतएसँ पानि आनि कऽ पीअब।"

भुटकुन बाजल-

"नेताजी नीक काज नइ केलैन। हिनकापर पंचैती बैसाएल जाए।"

लुचबा बाजल-

"आइ रातिमे हम सभ केतएसँ पानि आनि भानस-भात करब?"

तैपर फोचाइ बाजल-

"जाबे धरि ऐ बातक कोनो निर्णए नइ भऽ जाएत ताबे धरि कामत परहक इनारसँ पानि आनि काज चलबै जाइ जाएब।"

तैपर लुचबा बाजल-

"कामत परहक इनार तँ अपना टोलसँ एक किलोमीटरसँ बेसिये हएत! एतेक दूरसँ कनियाँ-बहुरिया केना कऽ पानि भरि आनत।"

तैपर भुटकुन बाजल-

"नै आनत तँ स्कूलबला इनारसँ छुबेलहा पानि आनि कऽ भानस-भात करू!"

ओहीठाम बंगलोरमे इंजीनियरिंग पढ़ैबला विद्यार्थी आनन्द सेहो रहैथ। हुनका ई गप-सप्प नीक नइ लगलैन। ओ बजला-

"अँइ यौ फोचाइ भैया,डोम की मनुख नइ छी? ओकरा सबहक देहमे दोसर रंगक खून रहै छै की?"

तैपर फोचाइ बाजल-

“अहाँ चूप रहू। डोम मनुख छी तँ अहाँ अपना कलमे पानि भरए देबइ?”

आनन्द बाजल-

“हँ यौ, हम अपना कलसँ पानि भरए देबइ।”

भुटकुन बाजल-

“अहाँ अखन ने एते कुदै छी, बापक सामने सब बोलती बन्न भऽ जाएत। इंजीनियरिंगमे पढ़ै छी तँ बेसी बुझए लगलौं हेन की। हमरो भैया जिला कृषि अधिकृत छथिन।”

आनन्द बाजल-

“तँए एहेन तुच्छ विचार रखने छी।”

आनन्दक पिताजी एकटा दोकानमे चाह पीबैत रहैथ। कियो हुनका कहलकैन जे आनन्द डोमिनियाँक पाट लऽ कऽ बजै छैथ। ओ चाह पीनाइ छोड़ि गाछतर एला आ आनन्दकेँ बाँहि पकैड़ कात लऽ जा पुछलखिन-

“तों ठीके डोमिनियाँक पाट लऽ बजै छेलही आ कहलीही जे हम अपना कलमे डोमकेँ पानि भरए देब?”

आनन्द कहलकैन-

“बाबूजी हम केकरो पाट लऽ कऽ नइ बजलौं हेन। हँ, हम एतेक जरूर बजलौं जे डोमो मनुखे छी। अहूँ सोचियौ जे डोमक शरीरमे दोसर रंगक खून रहै छै?”

तैपर हुनकर पिताजी कहलखिन-

“तोँ ठीक कहै छी। मुदा ऐठाम समाजक मूभ दोसर अछि। समाज आखिर समाज छी। समाजसँ अलग भऽ कऽ कियो रहि

सकत? जखने हम अपना कलमे डोम सभकेँ पानि भरए देब तखने पूरा समाज हमरा वहिष्कार कऽ देत। गाममे असगरे भऽ जाएब। तोरा ऐ सभसँ कोन मतलब छौ। दू-चारि दिन-ले गाम आएल छेँ। अखन तोँ मात्र पढ़ैसँ मतलब राख। चल घर चल।"

आनन्द किछ ने बाजल। दुनू बापूत घर दिस विदा भऽ गेला।

आठ बजे रातिमे नेताजी गाम आपस एला। हिनका चौक परहक सभ बात मालूम भेलैन। हुनकर पिताजी कहलकैन-

"हरी, केलह तँ नीके काज मुदा समाजकेँ मंजूर नइ अछि। समाज आखिर समाज छी। तँए काल्हि पंचैतीमे समाज जे निर्णए करत ओकरा मानए पड़तह।"

दोसर दिन भोरे आठ बजे स्कूलपर समुच्चा गामक लोकक बैसार भेल। नेताजी, जीतन आ ठेहोवालीकेँ बजौल गेल। जीतन पाँचो भाँइ आएल। जीतनक कनियाँ ठेहोवाली सेहो एली। ओ बेसी डेराएल छेली। बैसारमे धोल-फचक्का हुअ लगल। गामक सभसँ बुजुर्ग गोपी बाबू खड़ा भऽ कऽ सभसँ शान्त रहैले आग्रह केलखिन। गोपी बाबू जीतनक पत्नी ठेहोवालीसँ किछ पुछए चाहलखिन तैपर नेताजी बजला-

"गोपी काका, जीतनक कनियाँक कोनो दोख नइ अछि। ओ पानि नइ भरैत रहए। हमहीं ओकरा जोर दऽ कऽ पानि भरए कहलिऐ- तोँ अपनेसँ पानि भरि लएह, तखन ओ डेराइते-डेराइते पानि भरलक।"

तैपर फोचाइ बाजल-

"ई काज अहाँ बड़ नीक केलिऐ की? भगवान अपनेकेँ सकरता देने छैथ, तँए अपने कल गड़ौने छी। कलक पानि पीबै छी। मुदा हम सभ जे इनारक पानि पीबै छेलौं तेकरो अहाँ डोमिनियासँ छुबा देलिऐ!

कहू अहाँ सन लोकक ई नीक काज भेल?”

नेताजी बजला-

“हमरा सन लोकक लेल ई नीके काज भेल। हम तँ डोम आ ब्राह्मणमे कोनो फर्के ने बुझै छी। जेहने खून डोमक शरीरमे दौगे छै, ओहने खून ने सभ मनुखक शरीरमे दौगे छइ। गाँधी बाबा ऐ छुआ-छूतकेँ तोड़लैन।”

लुचबाकेँ नइ रहल गेलै, बाजल-

“यौ नेताजी, अहाँ घरमे उड़ीस फड़त। अहाँ अपना कलमे डोम्बाकेँ पानि पीबए देबइ?”

नेताजी बजला-

“हँ! हम अपना कलमे डोमोकेँ पानि पीबए देब। अहाँ सभ कहै छिऐ जे इनारक पानि छुबा गेल तँ लाउ-ग एक लोटा पानि ओही इनारक, हम अखने सबहक सोझहेमे पीब। यौ बाबू, ओ सभ डोमो भऽ कऽ दारू नै पीबैत अछि मुदा अहाँ सभ तँ सेहो... ।”

तैपर भुटकुन बाजल-

“आँइ यौ नेताजी, अहाँ तुरूक भऽ जाएब तँ की पूरा समाज तुरूक भऽ जाएत? अहाँ गाए खा लेब तँ की पूरा समाज गाए खा लेत? अहाँ अपन नेतागीरी दुआरे ई सभ करै छी! हम सभ अहाँक विचार नइ मानब।”

पंचैतीमे उपस्थित बारह-अना लोक बाजल-

“हँ, हँ, हम सभ अहाँक विचार नइ मानब।”

पंचैतीमे किछ एहनो लोक रहैथ जे नेताजीक विचारसँ सहमत रहैथ, मुदा बेसी लोकक विरोध देख चुप्पे रहला।

नेताजी ठाढ़ भऽ बजला-

“हम गाँधीवादी लोक छी। तँए पुन: कहै छी, हम कोनो गलती नइ केलौं। मुदा रहब तँ अही समाजमे तँए समाजक जे निर्णए हएत ओकरा माथपर लेब।”

बैसारमे सँ एगारह गोरे उठि कऽ अलग गेला। ओइमे गोपियो बाबू रहैथ। लगधग अदहा घन्टाक पछाइत ओ सभ बैसारमे आपस एला। बैसारमे पुन: धोल-फचक्का हुअ लगल। गोपी बाबू ठाढ़ भऽ कऽ सभकेँ शान्त करैत बजलखिन-

“नेताजी नीक केलैन आकि अधला, हम तैपर नइ जाएब। मुदा समाजक जे निर्णए भेल अछि से बजै छी- पहिल निर्णए, नेताजी इनारक पानि उपछा कऽ इनारक कादो साफ करा देथुन। तेकर उपरान्त पाँच लीटर गंगाजल ओइ इनारमे गिरौल जाएत। तखन इनारक पानि शुद्ध मानल जाएत आ सभ गोरे पीअत। दोसर निर्णए- तीन दिनक भीतर नेताजी चौकपर एकटा चापाकल गड़ा देथुन जइमे लोक ताबे धरि पानि पीअत जाबेधरि इनारक पानि शुद्ध ने भऽ जाएत। आ तेसर निर्णए-डोम आकि चमार फेर कहियो कोनो कल अथबा इनारपर अपनेसँ पानि नै भरए।”

निर्णए सुनेलाक बाद गोपी बाबू नेताजी सँ पुछलखिन-

“की यौ नेताजी, अहाँकेँ फैसला मान्य अछि किने?”

नेताजी ठाढ़ भऽ कऽ बजला-

“समाजक जे निर्णए भेल, ओ हमरा पूर्णत: मान्य अछि।”

बैसार उसैर गेल। सभ कियो हरे-हरे कऽ अपना-अपना घर दिस विदा भऽ गेला। मुदा जीतन पाँचो भाँइ आ ठेहोवाली ठाढ़े रहल। जखन नेताजी घर जेबाले गाड़ी स्टार्ट करैत रहैथ तखने जीतन पाँचो भाँइ आएल। जीतन दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

“नेताजी मालिक, हमरा सबहक चलते अपनेकेँ एतेक गंजन

भेल। इनार साफ करबैमे जे पाइ खर्च हएत ओ हम पाँचू भाँइ तीरब।"

तैपर नेताजी कहलखिन- "तोरा सभ लग जँ ढौआ हुअ तँ पाँचो भाँइ मिलि कऽ एकटा कल गड़ा लएह।"

जीतनक भाए फेकन बाजल- "हँ मालिक हमरा लग पाँच हजार टका अछि। किछ कर्जो-बर्जो लऽ कऽ कल गड़ा लेब।"

नेताजी कहलखिन-

"लोहाबला पाइपक तँ बेसी दाम पड़तह, से नइ तँ पलास्टिके बला गड़ा लएह।"

जीतन बाजल- "सएह करब।"

नेताजी- "हमरा की भेल आ की हएत तैपर नइ जाह।"

अखाढ़ महिना बरखा नइ भेल। अर्द्रा नक्षत्रसँ अशरेश नक्षत्र धरि कहियो जोरगर बरखा नइ भेल। कहियो काल हल्का-फुल्का बरखा भेल जइसँ एतेक जरूर भेल जे बीआ नइ जरल मुदा कदबा-गजार जोकर कहियो बरखा नइ भेल। मगहा नक्षत्र चढ़िते मूसलाधार बरखा भेल। पोखैर-झाँखैर, चर-चाँचर सभ पानिसँ भरि गेल। लोक धन-रोपनीमे भीर गेल। मुदा जनक अभाव। आनो गामसँ जे जन आनत सेहो केना, परोपट्टाक यएह हाल। तरही गामक सेहो यएह हाल। जनक लेल हहाकार मचए लगल। धानक खेती पचता भऽ गेल रहए।

संझुका समए। नेताजीकेँ पिताजी कहलखिन-

"काल्हि दू बीगहा कदबा हएत। मुदा जन भेल पनरहेटा। कमतीमे चालीसटा जन चाही। तखन सभ कदबा रोपाएत।"

नेताजी कहलखिन-

“ठीक छइ। हम जीतन मल्लिकक ऐठाम जाइ छी। जँ केकरो गछने नइ हएत तँ कहबै रोपि देत।”

ई कहि नेताजी विदा भऽ गेला।

जीतन पाँचो भैयारीमे पनरहटा जन। जीतन नेताजीसँ कहलक-

“मालिक, जाधैर अहाँक धन-रोपनी रहत, हम सभ दोसर कोनो काज नइ करब। ने केकरो अनका खेतमे जाएब। काल्हि पनरहटा जन हमरा सबहक परिवारसँ अहाँक खेतमे जाएत।”

दसे दिनमे नेताजीक सभ खेत रोपा गेलैन।

एक दिन जीतन छिट्टा बीनैत रहए। तखने फोचाइ आ भुटकुन पहुँचल। फोचाइ बाजल-

“कहऽ जीतन की हाल-चाह छह?”

जीतन बाजल- “अहाँ सबहक कृपासँ ठीके अछि। अहाँ कहू, केम्हर-केम्हर एलौं हेन?”

फोचाइ बाजल-

“हौ जीतन, गजार सुखि रहल अछि। काल्हि दस कट्ठा कदबा करब मुदा जन एकोटा ने भेल हेन। दू दिन हमरो सम्हारि दइ जा।”

जीतन बाजल- “हम तँ सम्हारि दइतौं, मुदा हमरा सभसँ तँ खेते छुबा जाएत, तखन?”

फोचाइ आ भुटकुन जीतनक मुँह दिस तकैत रहि गेल। ओकरा सभकेँ पैछला सभ गप मन पड़ि गेलइ।

❑

शब्द संख्या : 2435

हमर पत्नीक मनोरथ

हम निर्मलीमे डाक्टर रमेश बाबूक क्लिनिकपर बैसल रही। डाक्टर साहैब कोठरीमे रोगी सभकेँ जाँच कऽ रहल छला। कोठरीक आगाँ राजदेव बाबू, रामविलास बाबू आ हम बैस कऽ मैथिली साहित्यपर चर्चा कऽ रहल छेलौं कि हमर मोबाइलक घन्टी बजल।

जेबीसँ मोबाइल निकालि नम्बर देखलौं तँ मालूम भेल हमर पत्नीक फोन छी। हम मने-मन भनभनेलौं-

"आबि गेल आफत...!"

एक मन भेल जे फोन काटि दी, फेर मन भेल जे रिसिभे ने करी। मुदा डर ईहो रहए जे जँ फोन रिसिभ नै करब तँ गामपर पहुँचते देरी महाभारत शुरू भऽ जाएत आ रातिमे फेरो मच्छर सभकेँ हमर भरपूर खून पीबाक अवसर भेट जेतइ। यौ बाबू की करितौं हारि कऽ मोबाइलक हरियरका बटम टीपैत बजलौं-

"हेलौ, की कहै छी?"

ओमहरसँ पत्नीक अवाज आएल-

"फोन किए ने उठबैत रहिऐ। की करै छेलिऐ?"

बजलौं-

"फोन तँ उठेबे केलौं, हँ! पहिलुक घन्टीपर नहि उठा चारिम घन्टीपर उठेलौं। अच्छा कहू की हुकुम?"

ओमहरसँ पत्नी बजली-

“दूटा ब्रेड पकौड़ा नेने आएब। आ हँ, पोलीथीनमे चटनी सेहो लऽ लेब।”

कहलयैन-

“ब्रेड पकौड़ा तँ गरमे खाइमे नीक लगै छै, ठंढामे तँ कोनो सुआदे ने बुझाएत।”

ओ बजली-

“अहाँ नेने आउ ने चूल्ही पजारि हम ताबापर सेक लेब।”

ई कहि ओ फोन काटि देली।

हमर मुँह लटैक गेल। किए तँ जेबीमे एकोटा छेदामो ने रहए। बीसटा टका जे रखने रही ओ साइकिलक ट्यूब पंचरमे खर्च भऽ गेल रहए। सोचमे पड़ि गेलौं। सोची केकरासँ मुँह छोड़ी। जँ केकरोसँ मुँह छोड़ी आ जँ पाइ नै देत तब तँ अपने सनक मुँह हएत आ तनाव सेहो बढ़ि जाएत। फेर सोची जँ पत्नीक फरमाइस पूरा कऽ कऽ गामपर नै जाएब तँ रातिमे फेरो दलानेपर सूतए पड़त आ सूतब की कपार, भरि राति मच्छर हौंकैत परात करए पड़त। हमरा दस बर्खक पहिलुका घटना मोन पड़ि गेल।

निर्मलीमे सर्कस आएल रहइ। गामक जनीजाति सभ सर्कस देखबाक प्रोग्राम बनौलैन। हुनका सबहक प्रोगाम सौंझुका 6 बजसे 9 बजेक शो देखबाक छेलैन। मुदा गामपर सँ विदा हेती दुइये बजे, किएक तँ पहिने जेती तखन ने बजारमे अल्ता, टिकुली, लिपिस्टिक स्नो-पोडर, लवनटोकी कानमेहक, नाकमेहक आ केशमेहक कीनती...।

हमरो पत्नीकेँ मालूम भेलैन। ओ जलखैये करैकाल हमरा कहली-

“यौ सुनै छिऐ?”

हम कहलयैन-

“कोनो कि कानमे ठेकी नेने छी जे नै सुनब। बाजू ने की कहै छी?”

तैपर पत्नी बजली-

“अँइ यौ, दारू पीब कऽ आएल छी की जे एना बजै छी?”

हम कहलयैन-

“से दिन कहिया हेतै जे पुतोहु कहत ..... । ऐठाम तँ चाह पीबैले पाइये ने अछि आ अहाँकेँ दारू सुझैत अछि! कहू ने की कहै छी।”

पत्नी बजली-

“गामक लोक सभ सर्कस देखैले जाइत अछि।”

तैपर बजलौं-

“ऐमे की लगै छइ। पच्चीस टका टिकटमे आ पच्चीस टकाक चाह-नाश्ता। पचास टकाक व्योंत करि लिअ। नइ होइए तँ तीन किलो चीकने बान्हि लेब। ओकरा पल्लापर बेच लेब, पाइ भऽ जाएत।”

ई बात सुनिते-देरी पत्नीक पारा चढ़ि गेलैन। ओ तामसे भेर भऽ गेली। बजली-

“अँइ! हम चिकना लऽ कऽ सर्कस देखए जाएब! नै जाएब! हमर कपारे जरल अछि जे अहाँ संग बिआह भेल। ने कहियो सिनेमा आ ने कहियो सर्कस देखेलौं। ने स्नो, ने पाउडर, ने नाकमेहक, ने कानमेहक, ने काजर, ने ठोर रंगा, ने सेनुर आ ने टिकुली कहियो अहाँकेँ जुड़ल। अहीठाम मैलामवाली छै, ओकर दुल्हा ओकरा रंग-रंगक साबुन, तेल आ सिंगारक चीज-वौस आनि-आनि दइ छइ।

जखनी घर बलाकेँ जे कहलक तखनी घरबला हजूरमे रहै छइ। की हमरा कोनो मनोरथ नै छइ। अहाँ बुते कहियो हमर कोनो मनोरथ पुरा भेल।"

ई कहैत ओ कानए लगली। आब तँ भेल पहपैट। हम सोची आब की करी। हम कहलयैन-

"मैलामवालीक घरबला मास्टरी करै छइ। तीस-पैंतीस हजार टका महिना कमाइ छै, आ अहाँक घरबला कएटा पाइ कमाइए। अच्छा हमहीं दोकानसँ चिकना बेच कऽ आनि दइ छी, अहाँ सर्कस देख आएब।"

तैपर पत्नी बजली-

"निर्मली बजार जाएब तँ सर्कसेटा देखब आकि किछु सिंगारो-पेटारोक चीज कीनब। हमरा कमतीमे दू साए टका चाही।"

हम कहलयैन-

"अहीं कहू जे अखन हाथमे एकोटा टका नै अछि तखन दू साए टका केतएसँ देब। के देत दू साए टका। जहिया पाइक ओरियान हएत तहिया निर्मली जा कऽ सिंगारक समान लऽ आनब। आइ सर्कसटा देख आबू। हम दोकानसँ चिकना बेचि पचासटा टका आनि दइ छी।"

तैपर पत्नी बजली-

"हम जाएब तँ दू साए टका लऽ कऽ नहि तँ नै जाएब।"

हम केतेको गोरेसँ दू साए टका मंगलौं मुदा कियो ने देलक। दोकानमे चिकना बेच पच्चास टका आनि पत्नीकेँ देलिऐन तँ ओ ढौआकेँ फेक देलक आ बाजल-

"दू बजे लोक सभ सर्कस देखए विदा हएत। अहाँ जँ दू बजे तक दू साए टका आनि कऽ देब तब तँ बड्ड बढ़ियाँ नहि तँ अहाँ जानी

आ अहाँक काज जानए।"

हम बड्ड परियास केलौं मुदा कियो मुँहपर माछी नै बैसए देलक। पत्नीक तुगलकी फरमान हमरा बुत्ते पूरा कएल नै भेल।

स्नान कऽ खेनाइ खा मैलामवाली लग गेलौं आ कहलयैन-

"भौजी दू साए टकाक व्योंत कऽ दिअ। बड्ड जरूरी अछि।"

तैपर मैलामवाली कहली-

"हमरा लग पाँचे साए टका अछि आ निर्मली सर्कस देखए जाइ छी। बजारमे चूड़ी पहिरब आ किछु सिंगारक समान सेहो कीनब। हमरा तँ पाँच साए टकासँ पारो ने लागत तँ अहाँकेँ केना देब।"

हम अपन सनक मुँह लऽ कऽ अँगना एलौं आ बोलीमे हजार मन मिश्री घोरैत पत्नीक हाथ अपना हाथमे लऽ कऽ कहलिऐ-

"हे समूचा गाम घूमि एलौं मुदा कियो टका नै देलक। केकरा-केकरा लग ने मुँह छोड़लौं मुदा कियो मुँहपर माछी नइ बैसए देलक। से नहि तँ अहाँ ई पच्चास टका लऽ कऽ सर्कस देख आउ, जखन पाइक व्योंत भऽ जाएत तँ दुनू गोरे फेर निर्मली चलब, सिनेमा देखब आ अहाँ सिंगारोक समान कीनि लेब।"

तैपर पत्नी हमर हाथ अपना हाथसँ झटकैत बजली-

"ईह! बेदरा जकाँ हमरा परतारए एला हेन! जाउ राखु अपन पचसटकही। नै हम सर्कस देखै छी।"

हम केतबो खुशामद केलिऐन मुदा ओ टस-सँ-मस नै भेली। आ ने सर्कसे देखए गेली। हमरो ब्लडपेसर बढ़ि गेल। मुदा दिमागकेँ स्थिर रखैत चौकपर चलि गेलौं।

एक्केबेर आठ बजे रातिमे चौकपर सँ एलौं। अँगना गेलौं तँ चूल्हा-चौका सभ बन्न रहए आ पत्नी कोप भवनमे जा कऽ सूतल

छेली। भीतरसँ बिलैया लगा नेने छली। हम केबाड़ लग जा कऽ केतबो हाक देलिऐ मुदा ने ओ केबाड़े खोलली आ ने किछु बजबे केलीह। सभसँ मोश्किल भेल जे रातिमे सूतब केतए। की करितौं हारि कऽ दलानपर जा अखड़े मोथीक पटियापर सूतलौं। सूतब की दैवक कपार भरि राति तौनीसँ मच्छर हौंकैत परात केलौं।

मनमे पत्नीक प्रति पूरा रोष भऽ गेल रहए। सोचलौं ओ पत्नी की जे पतिक दुख नै बुझलक..!

बिआहमे एकटा चारिअना भरि सोनाक औंठी देने रहए। वएह औंठी नरहिया बजारमे बन्हकी लगा दिल्ली विदा भऽ गेलौं। दिल्ली जा स्पोटमे पाँच हजार टका महिनापर काज पकड़लौं। आठ घन्टाक ड्यूटी रहए। चारि घन्टा ओभर टाइमो खटी। खा-पीब कऽ आ रूम भाड़ा दऽ कऽ चारि हजार टका बँचैत रहए।

छह मास धरि काज केला पछाइत लगधक पच्चीस हजार टका जमा भेल। एक दिन फोनसँ खबर भेल जे माए बीमार अछि। जँए छी तँए चलि जाउ।

हम दिल्लीक त्रिनगर बजारमे पत्नी-ले ब्रेसियर, स्नो, पाउडर, लाहबला चूड़ी, रोल्ड-गोल्डक नेकलस, कानक बाली, नाकमेहक नथिया, कानमेहक झुमका, गमकौआ साबून, ठोररंगा, पैररंगा आ लबन टोकी सभ सिंगारक चीज वौस कीनलौं। हँ, कपड़ा नै कीनने रही। किए तँ हमर कीनलाहा कपड़ा हमरा पत्नीकेँ पसिने नहि होइ छैन तँए सोचलौं दू हजार टका दऽ देबै अपन निर्मली जा जैन इंपोरियममे मनपसन्द कपड़ा कीनि लेती।

एकटा अटैचीमे सभ समान राखि गाम विदा भेलौं। दरभंगावाली सुपर फास्ट ट्रेनमे बैसलौं। केतेको परियास केलाक बादो रिजर्वेशन नै भेल छल मुदा जेनरले बौगीमे खिड़की लग एकटा सीट

भेट गेल रहए।

अटैचीकेँ बर्थपर रखि चौकन्ना छेलौं जे कियो चोरा ने लिअए। भरि राति सुतबो ने केलौं। मुदा बनारस अबैत-अबैत आँखि लगि गेल। सपनामे देखलिऐ हमर पत्नी आँगनमे सभ चीज-वौस रखि निहारि रहली अछि। ओ बड्ड खुश अछि। हमर हाथ अपना हाथमे रखैत बाजि रहल अछि- आइ हमर मनोरथ पूरा भऽ गेल। नीन टुटल तँ देखलिऐ एकटा बीस-बाइस बर्खक अति सुन्नैर लड़की हमरा कहि रहल छेली- कनेक हमरो बैसऽ दिअ प्लीज।

हम पहिने अटैची दिस देखलौं तँ ओ सुरक्षित बुझि पड़ल। तेकर बाद ओइ लड़की दिस धियानसँ देखलौं तँ ओ कोनो फिल्मी दुनियाँक हीरोइन जकाँ बुझि पड़ली। ताबेमे ओ लड़की फेर बाजल-

“प्लीज कनेके खिसकु ने।”

ओ गजब-कें सुन्नैर छेली। अपना आपकेँ भाग्यशाली बुझैत हम खिसैक गेलौं। ओ लड़की बैस गेली। भाग्यशाली ई बुझलौं जे एहेन दिव्य नवयौवना हमरा लगमे बैसली। हुनका शरीरसँ मधुर-मधुर सुगन्ध हमरा मदहोश करए लगल। ओ लड़की पर्स खोललक आ एकटा पत्रिका निकालि पढ़ए लगल। हमर आँखि हुनकर सुन्दरता निहारए लगल। एकदम गोर वर्ण, भरल-पूरल देह। सेव जकाँ गाल। हिरण जकाँ कजरारी आँखि। नागिनसन केश जे खुजले छल, कानमे तीन स्टेपबला झुमका, नाकमे हीरा जड़ल छक, समतोलाक फारा सन ठोर जैपर हल्का लाल रंगक लिपिस्टिक लागल। बिल्कुल पारदर्शी साड़ी आ ब्लौज पहिरने। साड़ीक भीतरसँ पेटीकोट आ ब्लौजक भीतर जे अधोवस्त्र पहिरने छेली से झलाक-झलाक देखाइत। ओ जे मेहदी लगौने रहए ओ ओकर पैरक सुन्दरतामे चारि चान लगबैत छेलइ। हमरा इण्टरमे हिन्दी क्लासक गप मोन पड़ि गेल। पूज्य गुरुदेव स्व.

टेकनारायण बाबू रश्मिरथि पढ़बै छेलखिन। कोनो बिन्दुपर युवतीक सुन्दरताक चर्चाक क्रममे कहने रहथिन-

"न पैरों में महावर रचाओ गोरी, संगमरमर का कलेजा पिघल जाएगा।"

संगमरमरक कलेजा पिघलौ वा नहि पिघलौ मुदा हमर छातीक धड़कन जरूर तेज भऽ गेल छल।

ब्लौज तेतेक ने कसल रहए जे ओकर जवानीक छातीक एक चौथाइ भाग बाहरे। जेना देखनिहारकेँ जवानीक टेलर देखबैत। ओ अपना ओढ़ब-पहिरबसँ अपन जवानीक भरपूर प्रदर्शन करै छेली। हमरा फेर कोनो कविक कविता मोन पड़ि गेल-

"जब कोई रमणी चलती है
यौवन सँवार के
मुर्दा भी देख लेता है
कफन उघार के।"

फिलहाल मुर्दा कफन उघारि कऽ देखौ वा नहि देखौ मुदा हमर नजैर बेर-बेर ओकर छलकैत जवानी दिस जरूर उठि जाइत रहए। हिन्दीमे एकटा उपन्यास पढ़ने रही- 'छलकता जवानी' आ उपन्यासक आवरणपर जे एकटा अर्द्धनग्न युवतीक फोटो रहइ निश्चित रूपे ई लड़की ओइ उपन्यासक आवरणक फोटो बुझाइत, एकदम साक्षात्।

हम ओइ लड़कीसँ पुछलिऐ-

"ट्रेन केतए पहुँचल अछि?"

ओ लड़की जवाब देलक-

"मुजफ्फरपुरसँ आगाँ निकैल गेल अछि। केतए उतरब।"

हमरा मुहसँ अनायास निकैल गेल-

"दरभंगा।"

तैपर ओ बजली-

"हमहूँ दरभंगे उतरब। अहाँ दिल्लीसँ अबै छी की?" ओ फेर पुछलक।

हमरा फेर बजा गेल-

"हँ दिल्लीसँ अबै छी।"

ई कहैत हम खिड़कीसँ बाहर मकैक फसल देखए लगलौं। ओ लड़की हमरा देहमे सटि गेली। हमरा जेना 440 वोल्ट बिजलीक झटका लगल, तहिना बुझना गेल। मुदा डरो हुअए तँए कनी अपनाकेँ सिकोरि लेलौं आ थोड़े ओइ लड़कीसँ देह अलग कऽ लेलौं। सोचलौं की जानि की भऽ जाए, किएक तँ कहल गेल छै- 'त्रिया चरित्रम् देवो ने जानए..।'

बजलौं-

"मेडम कनेक हटिये कऽ बैसू।"

ओ लड़की हमरा दिस तकैत बजली-

"की यौ बिआह भेल अछि की नहि।"

हम सोचलौं, लड़की ई गप किए पुछैए! कहलिऐ-

"हँ बिआह तँ भऽ गेल अछि।"

ओ फेर पुछलक-

"बाल-बच्चा अछि की?"

हमरा बजा गेल-

"हँ एकटा बेटीअछि।"

तैपर ओ पुछलक-

"अपन छी की अनकर?"

आब तँ बुझू जे हमरा रिश उठि गेल। मनमे बहुत बात आएल। मुदा डर हुअए जे किछु ऊँच-नीच गप बजा गेल आ जँ ई लड़की कोनो अबलट लगा दिए तखन तँ बड़का पहपैटमे पड़ि जाएब आ सभ प्रतिष्ठा माटिमे चलि जाएत। मुदा तैयो हम पुछलिऐ-

"मेडम एना किए बजै छिऐ।"

तैपर ओ कहलक-

"अहाँकेँ देखै छी जे मौगीक महक लगैए। पत्नियोँ हेती तँ हमरासँ सुन्नैर तँ नहियेँ हेती।"

हम सकदम्म भऽ गेलौं। फेर वएह पुछलक-

"आकि अहाँक बिआह हेमामालिनीक बहिनसँ भेल अछि?"

हम बजलौं-

"नइ जानि मेडम किएक अहाँ हमरा एहेन-एहेन बात कहै छी।"

तैपर ओ लड़की बजली-

"अच्छा छोड़ू ऐ बात सभकेँ आरामसँ चलू।"

ई कहि ओ फेर हमरा देहसँ सटि गेली। डर तँ हेबे करए मुदा अपना-आपकेँ बड्ड सौभाग्यशाली सेहो बुझैत रही जे एहेन दिव्य लड़कीक सानिध्य प्राप्त भऽ रहल अछि।

थोड़ेकालक बाद ओ लड़की अपन हाथक पत्रिका हमरा दैत बजली-

"लिअ पढ़ू अहाँ बोर भऽ रहल छी।"

हम पत्रिका पकड़ैत पुछलिऐ-

"आ अहाँ?"

जवाब देली- “हम गृहशोभा पढ़ै छी।

हम पत्रिकाक पन्ना उलटाबए लगलौं। पत्रिकामे नीक-नीक लड़की सबहक अर्द्धनग्न फोटो सभ रहए। एकटा कथा रहै- लबली हेमा। कथा बड्ड रोमेन्टिक रहए। हम ओइ कथामे हेरा गेलौं। ताबेमे ट्रेन समस्तीपुर टीशनपर पहुँच गेल छल। ट्रेन रूकल। एकटा चाहबला हमरा वोगीमे चढ़ि अवाज देलक-

“चाह गरम! गरम चाह..!”

ओ लड़की चाहबला दिस तकैत बजली- “ऐ चाहबला दो कप चाह देना।”

हम मने-मन सोची जे दू कप चाह की करती। फेर मनमे भेल जे भऽ सकैए जे एक कप चाहसँ छाँक नै भरैत होइ।

चाहबला दू कप चाह ओइ लड़कीकेँ पकड़ा देलकै। एकटा कप हमरा दिस बढ़बैत ओ लड़की बजली-

“लिअ चाह पीबू। एतेक भीड़मे अहाँ अपना दिक्कत सहि हमरा जगह देलौं।”

हम कहलिऐ- “धन्यवाद। अहाँ पीबू हम चाहबलासँ लऽ लइ छी।”

तैपर ओ बजली- “यौ अहाँ हमर पाइक चाह नै पीयब तँ अहीं दियौ ढौआ, हमहीं अहाँ पाइक चाह पीब। अहाँ ने छुबा जाएब मुदा हम नै छुबाएब।”

हम ओइ लड़कीक हाथसँ चाह पकड़ैत जेबीसँ एकटा दसटकही निकालि चाहबला दिस बढ़ा देलिऐ। ओ लड़की अपना पर्ससँ चारिटा मोट-मोट बिस्कुट निकालि दूटा बिस्कुट हमरा दिस बढ़बैत बजली-

“लिअ, बिस्कुटक संग चाहक मजा लिअ।”

हम कहलिऐ-

“धन्यवाद। अहाँ खाउ।”

तैपर ओ बजली-

“की होइए जे ई छौरी बिस्कुट खिया कऽ सभटा ढौआ-कौरी छीनि लेत। यौ हम एहेन नइ छी। हम मिथिला विश्वविद्यालयमे गृह विज्ञानक पी.जी फाइनलक छात्रा छी।”

की करितौं। ओकरा हाथसँ बिस्कुट लऽ चाहमे डुबा-डुबा खाए लगलौं।

बिस्कुट खेलाक किच्छे मिनटक पछाइत हमरा नीन आबए लगल। आँखि खुजल तँ लहेरियासराय अस्पतालमे बेडपर पड़ल रही। एकटा नर्स हमरा मुँहपर पानिक छीटा मारैत रहए। ने ट्रेन रहए आ ने ओ लड़की। हमरा चीज-वौससँ भरल अपन अटैची मोन पड़ल। हम बजलौं- “हमर अटैची?”

तैपर ओ नर्स बजली- “आपको दरभंगा रेलबे स्टेशनपर बेहोशी की हालत में उतारा गया है। पूरा बौगी खाली था। आप अपने सीटपर बिल्कुल बेहोश थे। चार घन्टा उपचार के बाद आपको होश आया है।”

हम अपन जीन्स पैन्टक जेबी टटौललौं तँ ढौआबला पर्स गायब रहए। हम बजलौं- “हाय रे हमर पत्नीक मनोरथ।”

ई कहैत हम फेर बेहोश भऽ गेलौं।

❑

शब्द संख्या : 2232, तिथि : 25.03.2017

चरित्तर कक्काक ब्लडपेसर

चरित्तर काकासँ भेँट करैले मन औनाइत रहए। हुनकासँ भेँट भेना एक माससँ बेसीए भऽ गेल छल। किएक तँ हमहूँ धनकटनी आ गहुम बाउग करबामे व्यस्त छेलौं। गहुम बाउगसँ फुरसत भेटल तँ नारक टाल लगाएब, धान दौनी कराएब, एकटा ने एकटा काज लगले रहल। दौन-दौगोनी होइत-होइत गहुम पटबै-जोकर भऽ गेल। यौ बाबू किसानी जीवनमे बड्ड भीड़। एकटा-ने-एकटा काज लगले रहत। आ जँ ओ काज समयपर नै करब तँ हानि छोड़ि लाभ नै हएत। मुदा नोकरी करैबलाकेँ से बात नहि। तहूमे सरकारी नोकरी करनिहारक तँ बुझू पाँचो आँगुर घीयेमे। आगि लागौ चाहे पाथर खसौ समयपर दरमाहा भेटबे करतै आ ऊपरका आमदनी अलगसँ। ने हर-हर आ ने खट-खट। देखै नै छिऐ प्रो. वीरेन्द्र बाबूकेँ केहेन मोछमे घी लगबै छथिन। एगारह बजे दिनमे महाविद्यालय जाइ छथिन आ तीन बजे बेरमे आपस आबि जाइ छथिन आ दरमाहा केतेक भेटै छैन...। खाएर छोड़ू ऐ बातकेँ...।

हम आ चरित्तर कक्काक बेटा विमल लंगोटिया संगी।पहलासँ बी.ए. धरि संगे पढ़लौं। ओ कलकत्तासँ बी.एड. कऽ लेलक तँए उच्च विद्यालयमे शिक्षकक पदपर नोकरी करै छैथ आ हम कोनो प्रशिक्षण नै प्राप्त केलौं तँए खेती-गिरहस्ती कऽ अपन जिनगीक गाड़ी खींच रहल छी। ओना, नोकरी-ले हमहूँ परियास कम नहि केलौं, मुदा ऐ युगमे भगवान भेटब असान अछि जखन कि नोकरी भेटब कठिन।

29 दिसम्बरकेँ जखन गहुम पटबैत रही, फोचाइ कहलक जे चरित्तर काका बेमार पड़ि गेला हेन। ब्लड पेसर बढ़ि गेल छैन। जखनेसँ कक्काक बेमारीक बात सुनलौं हुनकासँ भेँट करैले मन कछमछ करए लगल। कछमछाइत मनमे उठल- चरित्तर काका मेहनती किसान छैथ। कन्हापर कोदारि आ हाथमे खुरपी रहबे करै छैन। जीर-मरीच आ नोनक अलाबे खाइ-पीबैक कोनो वस्तु नै कीनए पड़ै छैन। कहियो ने सुनने रहिऐ जे चरित्तर काकाकेँ माथो दुखाएल हेतैन। फेर ब्लड पेसर किएक बढ़ि गेलैन?

विहाने भेने सुति उठि कऽ चरित्तर काकासँ भेँट करए लेल विदा भेलौं। रस्तेमे नित्यक्रियासँ निवृत्त भेलौं। कक्काक घर हमरा घरसँ लगधक डेढ़ किलोमीटरपर। हमर घर गामक दछिनवरिया टोलमे सभसँ दच्छिन आ हुनकर घर उतरवरिया टोलमे सभसँ उत्तर छैन।

चरित्तर काका दलानक चौकीपर कम्मल ओढ़ि कऽ बैसल रहैथ। हम दलानक निच्चेसँ कहलयैन-

“काका गोड़ लगै छी।”

काका बजला-

“नीके रहह। आबह-आबह। केतए हेराएल छेलह हेन। एक-डेढ़ मासक वाद तोरासँ भेँट भेल हेन।”

कहलयैन-

“की कहब काका, एक्कोरत्ती फुरसत नइ भेटै छल। अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे किसानक जिनगी केहेन होइ छइ। काल्हि गहुमक पहिल पटौनी समाप्त केलौं हेन। गहुमे पटबैतकाल फोचाइ कहलक जे काका बेमार भऽ गेला हेन। बुझू तखनेसँ अहाँक भेँट करैले मन कछमछ करै छल। सुति उठि कऽ एम्हरे विदा भऽ गेलौं।”

काका बजला-

“हँ, तेतेक ने टेंशन भऽ गेल अछि जे ब्लड पेसर बढ़ि गेल। आठम दिन डाक्टर रमेश जँचने रहए। कहलक जे नीचलका साए आ ऊपरका एकसाए साठि भऽ गेल अछि। दवाइ खाइ छी। काल्हि जँचबेलौं तँ कहलक आब ठीक अछि। तैयो परहेजसँ रहैले कहलक हेन। ठीक रहितो ऐ बेमारीमे दवाइ सभ दिन चलिते रहत सेहो कहलक। ठंढासँ बँचि कऽ रहैले कहलक हेन। भात आ नोन कम खाइले कहलक हेन।”

हमसभ गप करिते रही ताबेमे चरित्तर कक्काक पोती दूटा प्लेटमे चारि-चारिटा नमकीन बिस्कुट आ दूटा कपमे चाह दऽ गेल।

काका पुछलैन-

“पानियोँ पीबह?”

कहलयैन-

“हँ काका, पीब।”

काका पोतीकेँ कहलखिन-

“गइ रीना एकलोटा पानि आ एकटा गिलास नेने आ।”

रीना एक लोटा जल आ एकटा गिलास राखि गेल। हम बिस्कुट खा जल पीब चाहक चुस्की लेबए लगलौं। चाहो पीबी आ काकासँ गपो करी। हम पुछलयैन-

“काका, ऐबेर गहुमक खेती केते केने छी?”

तैपर काका जवाब देलैन-

“एक्को धुर नहि।”

कक्काक गप्पक हमरा कोनो अर्थे ने लगल। हम छगुन्तामे पड़ि गेलौं। सोचए लगलौं- काका जीवनी किसान छैथ। चारि-पाँच बिगहामे सभ साल गहुमक खेती करै छैथ। फेर एना किए बजला!

पच्चीसे नवम्बरकेँ विमल चौकपर भेटल रहए तँ कहने छल जे आइए गहुमक बाउग समाप्त केलौं। तैपर हम पुछनौं रहिऐ जे केतेक खेतमे गहुम बाउग केलह अछि। तैपर विमल कहने रहए पाँच बिगहामे। तैपर हम कहने रहिऐ-बड़ी अगता गहुमक खेती मारि लेलह। तैपर विमल बाजल रहए- रौ मीत पाँचो बिगहा खेतमे क्रान्ति धान रोपने रही। नारेपर कटबा लेलौं। फारबला ट्रेक्टरसँ एक दिन पाँचो विगहा खेतकेँ एक समार जोतबा लेलौं आ पाँच दिन रौद लगला बाद छठम दिन खाद आ बीआ छीटबा कऽ रोटावेटरसँ एक चास करा देलौं। आब की कोनो हर-बरदसँ खेती होइए जे बेसी समय लागत।

हम कहने रहिऐ- हँ से तँ ठीके कहै छीही। तोहर खेतो सड़के कातमे छौ, तँए ट्रेक्टर जाइक सुविधा छौ आ छह-सात बिगहा खेतो एकेठाम छौ।

विमल कहने रहए- हँ से तँ अछिए। एकेटा कमी अछि। बोरिंग नइ अछि। की करबै तीन-तीन ठाम लेअर जाँच करबौलिऐ मुदा 250-300 फीटसँ कमपर लेअरे ने भेटै छइ।

हम कहने रहिऐ- तोहर खेत तँ बिहुलो धारसँ पटि जाइ छौ। बोरिंगक खगतो तँ नहियेँ छौ।

विमल कहने रहए- हँ से तँ पटि जाइए।

हमरा सोचमे डुमल देख चरित्तर काका टोकलैथ-

“की सोचए लगलहक।”

कहलयैन-

“काका हमरा तँ अहाँ गपक कोनो अर्थे ने लागल। 25 नवम्बरकेँ विमल भाय कहने छला जे आइए पाँच बिगहा गहुम बाउग कऽ निचेन भेलौं हेन। ओ किए झूठ बाजल?”

तैपर काका बजला-

“ने विमले झूठ बाजल आ ने हमहीं गलत कहै छिअह।”

कक्काक बात सुनि हम आरो ओझरीमे पड़ि गेलौं। गपक कोनो भाँजे ने लागए। कहलयैन-

“काका, अहाँ की कहै छिऐ से तँ हमरा भाँजे ने लगैए।”

काका समझबैत बजला-

“सुनह, गहुम ठीके पाँच विगहामे बाउग केने छी। ओहो 25 नवम्बरकेँ। तोरा तँ बुझले छह जे गहुमक फसिलमे बाउग केलाक बीसम दिनसँ लऽ कऽ पच्चीसम दिन धरि पहिल पटौनी कऽ देबाक चाही। नहि तँ गहुमक गाछमे वृद्धि नै होइ छइ।”

मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ, से तँ ठीके। नहि तँ आखिरी पच्चीसम दिन धरि पहिल पानि देब अनिवार्य अछि।”

काका बिच्चेमे बजला-

“ठीके कहलहक। आब तोंही कहह जे हमरा गहुम बाउग केला पैंतीस दिन भऽ गेल हेन आ अखन धरि पटवन नै भेल। भेल एक्को धुर गहुम बाउग केनाइ? बुझह जे हाथो तरक गेल आ लातो तरक गेल।”

हम मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“से तँ ठीके कहै छिऐ। जँ गहुमक फसिलमे पटवन नै केलिऐ तब तँ सभ खर्चा आ मेहनत पानिमे चलि गेल। मुदा एना भेल किए?”

तैपर काका बजला-

“सभ साल बिहुल नदीसँ गहुमक पटवन भऽ जाइ छल। एमकी अगते बिहुल धार सुखि गेल।”

हम पुछलयैन-

“एना किए भेल? एतेक अगता धार किए सुखि गेल।”

काका बजला-

“सुनै छिऐ गोठ नरहिया लग एन.एच. 104मे पुल बनि रहल छै, तँए पुलक ठीकेदार धारकेँ गोठ नरहियासँ एक किलोमीटर उत्तर बान्हि देलक। तँए पानि एनाइ बन्न भऽ गेल आ धार सुखि गेल।”

हमरा चरित्तर कक्काक ब्लड पेसरक कारणक भाँज लागि गेल। समयपर गहुम नै पटलासँ कक्काक ब्लड पेसर बढ़ि गेल रहैन।

हम खड़ा होइत बजलौं-

“काका,जाइ छी। बड्ड काज अछि।”

ई कहैत हम विदा भऽ गेलौं।

❑

शब्द संख्या : 1069

कटही साइकिल

"कतेक दिन ऐ पुरनका कठही साइकिलपर चढ़बह। कहह दुनियाँ केतए-सँ-केतए चलि गेल आ तूँ बीस-बाइस बर्खक ऐ पुरनका साइकिलपर चढ़ै छह!" -गेनालाल जियालालकेँ कहलकैन।

जियालाल हँसैत बजला-

"हौ भाय, तोहर बेटा सभ जे कमाइ छह ने, तँए तोरा हरियरी सुझै छह।"

तैपर गेनालाल बजला-

"आ तोरा जे कोचिंग सेन्टर आ चटिया सभकेँ टीशन पढ़ेलासँ आठ-दस हजारक महिनवारी आमदनी होइ छह से की करै छहक। कमतीमे एकटा सकेण्डो हेण्ड फटफटिया कीनि कऽ चढ़ह। हौ मरबह तँ किछ लऽ कऽ दुनियासँ नै जेबह। जेतबे सुख-मौज ऐ धरतीपर करबह ओतबे संग जेतह।"

जियालाल बजला-

"हौ भाय, अखन हमरा बड़ समस्या अछि तँए अखन हमरा अही साइकिलपर चढ़ह दएह।"

चाहक दोकानदारो दुनू संगीक गप सुनैत रहए ओ बाजल-

"मर्र! ऐ लोहाक साइकिलकेँ कठही साइकिल किए कहै छिऐ?"

तैपर गेनालाल बजला-

"ऐ साइकिलमे पाइडिल देखै छिऐ, काठक छी आ ऐ

साइकिलपर जखन चढ़बै तँ जहिना कठही बैलगाड़ीक धुरामे सोन-तेल नै रहलापर चलैकाल कों-काँए, पों-पाँएक अबाज निकलै छै तेनाहियेे ऐ साइकिलसँ अबाज निकलै छइ।”

चाहक दोकनदार पुछलकैन-

“से अहाँ केना बुझलिऐ?”

गेनालाल जवाब देलखिन-

“एक दिन हम निर्मली बसेसँ गेल रही। एक बोरा नोन कीनि अही साइकिलपर राखि बस स्टैण्डपर गेल रही। बस स्टैण्डपर नोन रखि जखन साइकिल पहुँचाबए जियालालक कोचिंग सेन्टरपर गेलौं तँ बुझाएल जे ई लोहाक नहि, काठक साइकिल छी। तहियेसँ हम एकरा कठही साइकिल कहै छिऐ।”

जियालाल बजला-

“हौ भाय कनेको पलखैत नै भेटए जे साइकिलकेँ भंगठियो करा लेब। दू दिन भंगठी करैले मिस्त्री ओतए साइकिल छोड़ि देलिऐ मुदा साँझमे जखन साइकिल लाबए गेलौ तँ साइकिल ओहिनाक-ओहिना राखल।”

तैपर गेनालाल हँसैत कहलकैन-

“धुर्र बुड़ि, तोरा कपारमे सुख लिखले ने छौ। कमा-कमा पाइ बैंकमे जमा कर मुदा भोग तँ तोरा बेटाकेँ लिखल छौ।”

जियालाल हँसैत जवाब देलखिन-

“ठीके कहलीही भाय, हमरा भागमे सुख नै लिखल अछि।”

ई गप-सप्प गेनालाल आ जियालालक बीच भूतहा चौकपर चाहक दोकानमे होइत रहइ।

गेनालाल आ जियालाल हाइ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक

संगी। गेनालालक घर झिटकी गाममे जखैन कि जियालालक घर नवटोली गाममे। दुनू गोरेक छठा किलाससँ एगारहम किलास धरि बनगामा हाइ स्कूलमे संगे पढ़लैथ। संगे मैट्रिक पास केलैन। मैट्रिक पास केला पछाइत दुनू गोरे निर्मली कौलेजमे इन्टरमे नाओं लिखौलैन। निर्मली कौलेजमे बी.ए. धरि दुनू गोरे संगे पढ़ला। गेनालाल पास कोर्सक विद्यार्थी छला जखैन कि जियालाल अंग्रेजी आनर्सक छात्र।

बी.ए. पास केला पछाइत गेनालाल नौकरीक लेल परियास करए लगला।मुदा तीन बर्ख धरि परियास केला बादो जखन नौकरी नहि भेलैन तँ खेती-गृहस्तीमे भीर गेला। ओ अपना बापक एकलौता बेटा। पाँच बिघा जोतसीम जमीनक मालिक। ऊपरसँ गाछ-कलम-बाँस-पोखैर सभ किछु। नौकरी नहियोँ भेलापर गुजर-बसरमे कोनो दिक्कत नहि होइन। गेनालालकेँ दूटा बेटेटा। जे मैट्रिक केला पछाइत दिल्लीमे काज करै छैन आ दरमाहा भेटलापर अपन खर्चा राखि बापक बैंक-खातामे पठा दइ छैन। बेटा सबहक कमाइ आ खेतक उपजासँ गेनालाल आनन्दपूर्वक जिनगी बितबै छैथ। सुखक जिनगी बितबैक कारण ई जे परिवार छोट छैन। दुनू बेटा अखन अविवाहिते छैन जे दिल्ली खटै छैन। घरपर मात्र अपने आ पत्नी। खेतो सभ मनकूतपर लगौने छैथ। हँ, दूध खाइ वास्ते एकटा दोगला गाए जरूर पोसने छैथ।

गेनालाल अपना बेटा सभकेँ मैट्रिकसँ आगाँ ऐ दुआरे ने पढ़ौलखिन जे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नौकरी नै भेटलापर समाजमे जे दुरगैत होइए से देखैत छथिन। जखन कि कम्मो पढ़ल-लिखल लोक दिल्ली, मुम्बइ, कलकत्तामे प्राइवेटो नौकरी कऽ शानसँ अपन जिनगी बितबैत अछि। मुदा जियालालक सोच ऐसँ बिलकुल भिन्न छैन। हुनकर कहब ई जे जइ पढ़ल-लिखल बेकतीमे टाइलेन्ट रहत ओ

विद्यार्थीके ट्यूशनो पढ़ा अपन जिनगी शानसँ चलौत। पटनामे एकसँ एक कोचिंग संस्था अछि जेकर आमदनी लाखोमे अछि।

जियालाल सीमान्त किसानक बेटा। हुनका बाबूजीकेँ मात्र अढ़ाइ बीघा खेत। जियालाल दू भाँइ। जेठ जियालाल अपने आ छोट पन्नालाल। पन्नालाल जखन मैट्रिकमे पढ़ैत रहैथ तखने हुनकर पिताजी परलोक चल गेला। मुदा पन्नालालकेँ पिताजीक स्वर्गवासक बादो पढ़ाइ-लिखाइमे कोनो दिक्कत नै भेलैन। जेठ भाय जियालाल ट्यूशन पढ़ा छोट भाएकेँ माने पन्नालालकेँ एम.ए. धरि पढ़ौलकैन। एम.ए. पास केलाक तीनियेँ मासक पेसतर पन्नालालक बहाली शिक्षा मित्रक पदपर भऽ गेलैन।शिक्षा मित्रमे बहाल भेलाक दू मासक भीतर पन्नालालक बिआह एकटा डीलरक बेटीसँ भेलैन।

जियालाल अंगेजी आनर्सक संग बी.ए. केला पछाइत नौकरीक लेल काफी परियास केलखिन मुदा सफलता नइ भेटलैन। जइ समैमे सरकार शिक्षा मित्रक बहाली केलक ओइ समैमे जियालालक उमेर चालीस पार कऽ गेल रहैन। तँए शिक्षा मित्रमे बहाली होइसँ वंचित रहि गेला।

जखन सरकार शिक्षा-मित्रकेँ मानदेय पनरह साएसँ बढ़ा कऽ चारि हजार कऽ देलकैन आ एगारह मासक नौकरीकेँ साठि बर्खक उमर धरि स्थायी कऽ देलकैन तँ पन्नालालक पत्नी अपना दुल्हाकेँ सिखा-पढ़ा परिवारमे भीन-भिनौज करा देलकैन।

जखैन जियालाल आ पन्नालालमे भीन-भिनौजी भऽ गेलैन तँ जियालालकेँ एक बिघा जोतसीम खेत आर घराड़ी आ कलम-गाछी मिला कऽ पाँच कट्ठा हिसा भेल रहैन। हुनकर पाँच गोरेक परिवार। जेठ दूटा बेटी तैपर सँ एकटा बेटा आ दू परानी अपने। एक बिघा जोतसीम खेतसँ जखन परिवारक गुजर-बसरमे कठिनाइ होमए

लगलैन तँ जियालाल ट्यूशन पढ़ाबैपर बेसी जोर देलखिन। ओना तँ दस बर्ख पहिनहिसँ निर्मलीमे एकटा कोचिंग संस्थामे अंग्रेजी पढ़बैत रहैथ। कोचिंग आ ट्यूशनक कमाइसँ जियालाल अपन दुनू बेटीकेँ पढ़ा-लिखा कऽ बिआह कऽ देलखिन। दुनू बेटियो आ जमाइयो टी.इ.टी. पास कऽ शिक्षकमे बहाल छैन। एकटा बेटाकेँ नीक पढ़ाइ खातिर पटना बी.एन.कौलेजमे नाओं लिखौने छेलखिन। बेटो विवेक पढ़ैमे चन्सगर। ओ पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीमे एम.ए. कऽ प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे लागल छथिन।

आइ फेर गेनालालक भेँट भूतहा चौकपर चाहक दोकानपर जियालालसँ भऽ गेल। गेनालाल चाहक दोकानपर पहिनेसँ बैसल रहैथ। जखन जियालाल निर्मलीसँ टीशन पढ़ा भूतहा चौकपर एला तँ चाह पीबैले चाहक दोकानक आगूमे साइकिल ठाढ़ करिते रहैथ कि गेनालालक नजैर जियालालपर पड़लैन, ओ बजला-

“कह भाय, समाचार। आबो धरि वएह पुरनका साइकिलपर चढ़ै छेँ। रौ पूरा दुनियाँ सुधैर जेतै मुदा तूँ नहि सुधरबेँ। हे मरिहेँ ने तँ सभ किछ लाधि कऽ नेने जइहेँ। पचपन-छप्पनक उमेरमे ऐ कठही साइकिलपर चढ़ै छेँ। रौ तोरा बुझाएब आ दिल्ली पएरे जाएब बरबैर अछि। आ-आ चाह पीब ले।”

जियालाल हँसैत कहलकैन-

“तोहर जे बेटा कमा-कमा पाइ पठा दइ छौ ने तँए तोँ मोछमे घी लगबै छेँ।”

तैपर गेनालाल बजला-

“आब तँ तोरो बेटाक पढ़ाइ खतम भऽ गेल छौ। तोँ तँ तेसरे साल कहने रहँ जे विवेक पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए.मे फस्ट क्लाससँ उतीर्ण भेल हेन।”

ई गप-सप्प होइते रहए कि एकटा स्कारपियो गाड़ी आबि चाह दोकानक बगलमे रूकल। ड्राइवर गाड़ीसँ निकैल बीचला गेट खोललक। एकटा युवक गाड़ीसँ निच्चाँ उतरल। ओ पैन्ट-कोर्ट-टाइ लगौने रहए। जखने ओइ युवकक नजैर जियालालपर गेलैन ओ दुनू हाथे पएर छुबि हुनका गोर लगलकैन।

“बौआ विवेक! अच्छा काकाकेँ गोर लगहुन।” –गेनालाल दिस इशारा करैत जियालाल बजला।

विवेक गेनालालोकेँ पएर छुबि गोर लगलकैन आ बजला-

“बाबूजी, हमर चौथे दिन ट्रेनिंग खतम भऽ गेल। परसू बीरपुर डी.एस.पी. पदपर योगदान केलौं हेन। काल्हि पटनामे मीटिंग छल। अखन पटनेसँ बीरपुर जा रहल छी। ऐ ठाम एलौं तँ मनमे भेल भऽ सकैए बाबूजी निर्मलीसँ घूमल हेता।”

गेनालालक बोलती बन्द। ओ करवनो जियालालकेँ देखैथ तँ करवनो विवेककेँ आ करवनो ओइ स्कारपियो गाड़ीकेँ।

जियालाल विवेकसँ पुछलखिन-

“माएसँ असिरबाद लेबए कहिया अबै छहक।”

तैपर विवेक कहलकैन-

“मनमे तँ रहए जे पटनासँ घुमतीमे अहाँ सभसँ आर्शीवाद लऽ लेब मुदा दरभंगेमे रही तँ बीरपुरक एस.डी.ओ. साहैब फोन केलैन। ओ कहलैन जेतेक जल्दी बीरपुर पहुँच सकी पहुँचू। तँए बीरपुर जल्दी पहुँचब जरूरी भऽ गेल। रबि दिन गाम आबि रहल छी।”

ई कहि ओ जियालाल आ गेनालालकेँ गोर लागि गाड़ीमे बसि कऽ चलि गेला।

गेनालाल बजला-

"भाय जियालाल, तोहर कठही साइकिलक मान रहि गेलौं। तोहर बेटा पढ़ि-लिख कऽ डी.एस.पी. भऽ गेलौ। वाह भाइ वाह!"

तैपर जियालाल बजला-

"भाय हमर बेटा कि तोहर बेटा नइ छियौ।"

ई सुनि गेनालाल, जियालालकेँ भरि पाँज कऽ पकैड़ छातीसँ लगा लेलखिन।

❑

शब्द संख्या : 1193

सरकार हम पापी छी

धर्मराजजी महराज अपना कार्यालयमे गम्भीर मुद्रामे बैसल छला। ओसारपर बनल केबिनमे हुनकर स्टेनो चित्रगुप्तजी खाता-बहीक पन्ना उनटा रहल छेलखिन। बगलक कोठरीमे यमराजजी अपना दूत सभकेँ आदेश दऽ रहल छेलखिन।तरखने धर्मराजजीक टेबुलपर राखल फोनक घण्टी टनटनेलैन। धर्मराजजी फोन उठा बजला-

“हेल्लो के?”

ओमहरसँ अवाज आएल-

“हेल्लो धर्मराजजी प्रणाम्! हम इन्द्र बजै छी।”

धर्मराजजीक मुहसँ निकललैन-

“अच्छा, देवराज इन्द्रदेवजी, कहू की हाल-चाल अछि।”

इन्द्रदेवजी जवाब देलखिन-

“एम्हुरका सभ हाल-चाल पूर्ववते अछि, अपना दिसक हाल-चाल कहल जाए।”

धर्मराजजी-

“मृत्युलोकमे एकटा बस दुर्घटना भऽ गेल जइमे पच्चीस गोरे दुर्घटने स्थलपर कालकलवित भऽ गेला हेन आ किछ बेकती गम्भीर रूपसँ घायल छैथ जिनकर इलाज अस्पतालमे भऽ रहल छैन।”

इन्द्रदेवजी आगू पुछलखिन-

"ओइ पच्चीस गोरेमे केते बेकती स्वर्गक भागी हेता?"

तैपर धर्मराजजी कहलकैन-

"ओना, चित्रगुप्तजी बही-खाता उनटा रहला अछि, पान-सात मिनटक बाद ओ अपन रिपोर्ट पेश करता। रिपोर्ट देखलाक उपरान्ते पता चलत जे के स्वर्ग जेता आ के नर्क। मुदा जहाँ धरि हमरा पता अछि, ओइ पच्चीस गोरेमे बकला जेकर असल नाओं मंगल छिऐ स्वर्गक अधिकारी छैथ ओहूमे स्पेशल क्लासक।"

फोनपर गप होइते रहए तखने चित्रगुप्तजी अपन रिपोर्ट धर्मराजजीक टेबुलपर रखलखिन। धर्मराजजी फोनमे आगाँ बजला-

"ठीक छै कनेक कालक बाद फोन करै छी। ई कहि ओ फोन रखि रिपोर्ट पढ़ए लगला। पच्चीस गोरेमे तइस गोरे किछ कम तँ किछ बेसी पाप केने छला। मुदा दू गोरे एहेन छला जइमे बकला नामक बेकती बेसी पूण्य कमेने छला जखन कि धरमलाल नामक बेकतीकेँ बड़ पापी बतौल गेल छेलइ।"

धरमलाल आ बकला दुनूक घर बेलहा गाममे। धरमलालक छठिहारी नाओं विनोदानन्द। विनोदानन्दे नाओंसँ एम.ए; पी.एच-डी. कऽ मिथिला विश्वविद्यालय- दरभंगामे मनोविज्ञान विभागमे पी.जीक प्रोफेसर पदपर कार्यरत भेला। जखन दरभंगामे सपरिवार यानी पत्नी आ दुनू बाल-बच्चाक संग रहए लगला तँ पूजा-पाठकेँ धार्मिक काज बुझि पूजा-पाठपर बेसी जोर देलखिन। सकराँइते-सकराँइत सत्य नारायण भगवानक पूजा। मंगले-मंगल महावीरजीक स्थानमे बुनियाँ चढ़ाएब आ रइबे-रबि भोला बाबाकेँ आक-धथुर आ बेल पत्रसँ पूजा करै छला। तँए संगी-साथी आ महल्लाक लोक हिनका धरमलाल कहह लगलैन। एतबे नहि, सभ साल भादवमे कामौर लऽ कऽ बाबाधाम सेहो जाइ छला। नवरात्रमे दुर्गा पाठ सेहो करै छला।

बकलाक छठिहारी नाओं मंगल। जखन ओ पाँच बर्खक भेला तखने हुनकर पिताजी मंगलकेँ गरदैनमे कण्ठी बान्हि देलखिन। हुनकर पिताजी कबीर पंथी।जखन मंगल पनरह-सोलह बर्खक रहैथ-एक दिन हुनकर पिताजी एकटा आमक डारि जे नमैर कऽ खेतमे आबि गेल रहए आ हर जोतैमे दिक्कत होइ छेलै, काटैले कहलकैन। मंगल नमरलहा डारिपर बैस कऽ डारि काटए लगल। अदहा डारि कटि गेल रहै, तखने एकटा चरबाहा देखलक आ मंगलकेँ कहलक-

"रौ बकला, ई की करै छेँ। डारि लागल अपनो गिरमैँ आ देह-हाथ थौआ भऽ जेतौ।"

तहियेसँ मंगलक छठिहारक नाओं झँपा गेल आ बकला नाओं चालू भऽ गेल।गामक चेतनसँ लऽ कऽ बाल-बोध धरि सभ मंगलकेँ बकला कहह लगल।

बकला पढ़ै-लिखैक नाओंपर सोलह दूना आठ। हुनका लेल काला अक्षर भैंस बरबैर। एकदम भोला-भाला। छह-पाँच किछ ने बुझैत। जमीन जत्थाक नाओंपर बकलाकेँ पनरह धुर घराड़ीए-टा। ओना बकलाकेँ दू कट्ठा चौमासो छेलै आ ओइ चौमासक आड़िपर दूटा आमक गाछ सेहो रहइ जे बकला माए-बापक बेमारीमे बेच कऽ इलाज करौलक। ओही घराड़ीपर दूटा घर बनौने। अही फूसक घरमे दुनू परानियोँ आ दुनू बालो-बच्चा रहैत। पछबरिया घर लगा एकटा एकचारी देने जइमे एकटा गाए आ एकटा बकरी बन्हैत। एकचारीमे बाँसक मचान बनौने जइपर उठबो-बैसबो करैत आ सुतबो करैत। बकला भोला बाबूक चिमनीपर पजेबा उघैत। चिमनी बन्द भेलापर गाम-घरमे मजदूरी कऽ अपन गुजर करैत।

एक दिन बेलहा मिडिल स्कूलपर कवि सम्मेलनक आयोजन भेल छल। बकला कवि सम्मेलनकेँ कबीर सम्मेलन बुझि ओतए गेल।

जखन ओ पहुँचल तखन एकटा कवि अपन कविताक पाठ कऽ रहल छेलखिन। दोहा रहइ-

“सुनू यौ बाबू, सुनू यौ भैया
सुनू लगा कऽ धियान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ छैथ कियो
तीनू लोकमे आन यौ
माएकेँ बुझब माता पार्वती
पिताकेँ शंकर भगवान यौ
सुति उठि दुनूकेँ करबै
पएर छुबि प्रणाम् यौ
सभसँ पैघ पूजा, माए-बापक सेवा
राखब सदिखन धियान यौ
माए-बापसँ पैघ नै छैथ कियो
तीनू लोकमे आन यौ।”

बकला मनमे ठानि लेलक जहाँ धरि हएत माए-बापक सेवा करब। हुनका सभकेँ कोनो दिक्कत होमए नहि देबइ। चाहे अपना जे करए पड़ए।

घोघरडीहामे यज्ञ भेल। गामक लोकक संगे बकलो यज्ञ देखए गेल। यज्ञमे वृन्दावनक रास सेहो आएल रहइ। जखन बकला गौंआँ संगे रास देखए गेल तखन ओइ मंचपर एकटा पण्डितजी प्रवचन दऽ रहल छेलखिन। बकला गौंआँक संगे प्रवचन सुनए लगल। पण्डितजी कहैत रहथिन-

“अठारहो पुराणमे व्यासजीक दूइयेटा प्रमुख बात अछि।

दोसरकेँ उपकार करब सभसँ पैघ पूण्यक काज भेल आ दोसरकेँ अहित करब सभसँ पैघ पाप भेल।”

बकला मने-मन कहलक जहाँ धरि हएत दोसराक उपकार करब आ भूलोसँ कहियो अनकर अहित नै करब। गाममे केकरो बेटीक बिआह हौ आकि केकरो माए-बापक सराध हौ, बकला बिनु बजौलो जा कऽ खटैत। बकलाक पिताजीकेँ क्षय रोग आ माएकेँ दमा भऽ गेलइ। बकला दुनू कट्ठा चौमास बेच माए-बाबूकेँ इलाज करौलक। अपना भोजन करैसँ पहिने माए-बाबूकेँ भोजन करबैत छला। बकलेक सेवा-बरदाइसक कारण हुनकर माए-बाप बेमार रहितो 70-72 बर्ख धरि जीवित रहलखिन। माए-बाबूक मुइलाक बाद बकला जहाँ धरि सकल हुनका सबहक भोजो-भात आ क्रियो-कर्म केलक।

बेलहासँ सटले पेता गाममे, बारह-एक बजे दिनमे अगिलग्गी भऽ गेल। चैत मासक समए, पछबा हवा जोरसँ बहैत रहइ। दूइए-तीन घन्टामे पूरा गाम जरि कऽ छौर भऽ गेल।

भोरमे बेलहा गामक लोक सभ जिज्ञासा करए पेता गेल। बकलो गेल। अगिलग्गी काण्ड देख सभ दुखी भऽ गेला। लत्ता-कपड़ा, अन्न किछ ने बँचल छल। धिया-पुता भूखे लहालोट छल। जे धनिकाहा लोक छल हुनकर कर-कुटम आ हित-अपेक्षित लत्ता-कपड़ा आ चाउर-चूरा लऽ कऽ आएल मुदा बीस-पच्चीस घर मुसहरी लोकक सुधि लइबला कियो नहि। बकला धिया-पुताकेँ भूखे कनैत देखलक। ओ गामपर आएल। बेटीक बिआहले जे किछ पाइ ओरियान कऽ रखने रहए। ओइ पाइमे सँ तीन हजार टका निकालि घोघरडीहा बजार जा एक क्विंटल चूरा दस किलो गुड़, नोन आ कँचका मिरचाइ कीनि पेता मुसहरीमे जा बाँटि आएल।

धर्मराजजी रिपोर्ट पढ़िते छला कि यमराजक दूत पच्चीसो मृत

आत्माकेँ नेने पहुँचल। धर्मराजजी यमराजसँ कहलखिन-

"बकला आ धरमलालकेँ छोड़ि बाँकी सभकेँ साधारण नरक भेज दियौ।"

यमराजजी तइसो गोरेकेँ नरक पठा देलखिन। तैबीच धर्मराजजी यमराजसँ पुन: कहलखिन-

"बकलाकेँ स्वर्ग आ धरमलालकेँ रौरब नरक भेजल जाए।"

धर्मराजक बात सुनि धरमलालक आत्मा बाजल-

"अँइ यौ धर्मराजजी, बकला कहियो सत्य नारायणो भगवानक पूजा नै केलक आ ने कोनो तीरथे गेल तेकरा अहाँ स्वर्ग भेजै छिऐ आ हम जे एतेक पूजा-पाठ आ तीरथ केलौं, साले-साल कामौर लऽ कऽ बाबा धाम गेलौं, सालमे पच्चास मुरते बबाजीक भण्डारा कऽ कम्मलो बँटै छेलौं, तेकरा रौरब नरक! ई सरासर अन्याय छी।"

तैपर धर्मराजजी कहलखिन-

"ऐ मूर्ख, तूँ ई बता जे अपना माए-बाप आ दीन-दुखीक की सेवा केलेँ। मोन पाड़ि कऽ बता।"

धरमलालक आत्मा सोचमे पड़ि गेल। ओकरा अपन केलहा बेवहार जे माए-बाप आ दीन-दुखीक संग केने छल सिनेमाक रील जकाँ आँखिक सोझमे आबए लगल।

धरमलाल साढ़े नअ बजे रातिमे पत्नीक संग बजारसँ डेरापर आएल तँ जेठका भायक संग माए-बाबूकेँ देखलक। देखते धरमलाल जेठका भायसँ पुछलक-

"की बात छिऐ। केतए अबै जाइ गेलह हेन।"

भाय कहलकैन-

"बाबूकेँ लकबा मारि देलकैन। तँए इलाजक खातिर अनलयैन

हेन। हमरा लग तँ ढौआ-कौरी कम्मे अछि। दोसर गप हमरा लहेरियासरायक कोनो भाँजे ने बुझल अछि जे कोन डाक्टर कोन बेमारीक इलाज करैत अछि। तोरा तँ सभ भाँज बुझल छह। तँए भोरमे कोनो नीक डाक्टरसँ बाबूजीकेँ देखा दहुन। जाबे दवाइ वीरो चलतै बाबूजीकेँ अपने लग रखिहह आ जखन बाबूजी नीक भऽ जेता तँ गाम पठा दिहक।"

तैपर धरमलाल बाजल-

"की कहलहक, ढौआ-कौरी कम्मे छह। पाँच बिगहा खेत जे छोड़ने छिअ से अही दुआरे ने जे माए-बाबूक सेवा-बरदाइस करिहह। हुनका सभकेँ बेर-बेमारीमे इलाज कराबिहह। आ तोँ कहै छहक जे ढौआ-कौरीक कमी अछि। ऐठाम की हम रूपैआ छापै छिऐ। हमर बेटा-बेटी बाहर पढ़ैए। आइये मुन्नाकेँ पच्चास हजार टका भेजलौं हेन। आ पिंकीकेँ पाइ भेजैले बाँकीए अछि। हमरा एतेक फुरसत अछि जे लहेरियासराय डाक्टर ओतए जाएब। भोरमे एकटा विद्यार्थीकेँ संग कऽ देबह। ओ डाक्टरसँ देखा सभ जाँच करा साँझमे दवाइ लिखा देतह। जँ पाइ बँचतह तँ दवाइयो कीनि देतह। जँ पाइ नै बँचतह तँ गाममे पाइक व्योंत कऽ घोघरडीहामे दवाइ कीनि लिहह। गामेमे पथ-परहेज आ दवाइ चलह दिहक। आब तँ बाबूजीक उमेरो 72-73 बर्ख भऽ गेल हेतैन। कोन जरूरी छेलै, दरभंगा अनबाक। ओतै घोघरडीहामे कोनो डाक्टरसँ देखा दैतहक।"

भीतरसँ धरमलालक पत्नी कहलखिन-

"घोघरडीहामे किएक देखौलखिन। ऐठाम जे धरमशाला बनौने छिऐ से कथीले। दोसर गप जे ऐठाम तँ खजाना छै किने।"

धरमलाल भायसँ पुछलखिन-

"खाना खेने छहक किने। ऐठाम तँ खेनाइयोपर आफत अछि।

गैसपर खेनाइ बनै छै आ गैस सठि गेल छइ। हमसभ होटलसँ खा कऽ एलौं हेन।”

भाय कहलकैन-

“चूरा अनने छी। हम चूरे खा लेब। मुदा माए-बाबूले दू-दूटा रोटी भऽ जइतै तँ ठीक होइतै।”

धरमलाल बाजल-

“कहलिअ ने गैस खतम भऽ गेल अछि। रोटी केना बनतै। माइयो-बाबूजीकेँ चुरे खुआ दहक।”

भोरमे धरमलाल एकटा विद्यार्थीकेँ संग लगा माए-बाबूजी आ भाएकेँ लहेरियासराय डाक्टर ओतए भेजैत भायकेँ कहलखिन-

“ऐ विद्यार्थीकेँ चाह-नास्ता, खेनाइ आ टेम्पू भाड़ा-ले एक साए टाका दऽ दिहक। साँझमे दवाइ कीनि ओमहरेसँ दरभंगा टीशन जा ट्रेन पकैड़ लिहह। ऐठाम कथी-ले एबह।”

पाइयक अभावमे धरमलालक पिताकेँ ठीकसँ इलाज नै भऽ सकलैन। ओ आर बेसी बेमार भऽ गेला। दिनो-दिन स्थिति खरापे होइत गेलैन। जेठका भाय, प्रो. धरमलालकेँ समाद-पर-समाद दैत रहलैन मुदा प्रो. साहैब माए-बाबूक सुधि लेबए कहियो गाम नै एला। जखन बाबूजी मरि गेलखिन आ हिनका खबर भेलैन तँ अंत्येष्टी करए गाम एला। अपन नामक बास्ते रसगुल्ला–लालमोहनक भोज जरूर केलैन। कहियो माए-बाबूकेँ एकटा टका वा एक बीत कपड़ा नै देलखिन।

धरमलालकेँ आगू मन पड़लैन-

दुर्गा पूजाक छुट्टीमे सासुर जाइ छेलौं तँ सासु-ससुर-ले पाँचो टूक कपड़ा लऽ गेनाइ नै बिसरै छेलौं। जखन कि ससुर उच्च

विद्यालयसँ सेवा निवृत शिक्षक आ दुनू बेटा बैंक मैनेजर छेलैन।

एक दिन प्रो. धरमलालक डेरापर एकटा भिखमंगा जेकर एकटा पएर कटि गेल रहइ, आएल। ओ प्रोफेसर साहैबसँ भोजन करए-लेल पाँचटा टका मंगलक, मुदा प्रोफेसर साहैब ओइ भिखमंगाकेँ धक्का मारि कऽ भगा देलक। प्रो.धरमलालकेँ अपना-आपपर ग्लानि होमए लगल। ओ धर्मराजजीक आगाँ हाथ जोड़ि कहलक-

"सरकार हम वास्तवमे पापी छी।"

❑

शब्द संख्या : 1570

शिक्षाक अन्तिम उदेस

रामनगर डिग्री महाविद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहक आयोजन भेल। तीन दिवसीय कार्यक्रम रहए। पहिल दिन दू बजे दिनमे कार्यक्रमक उद्घाटन माननीय शिक्षा मंत्री एवम् कुलपति संयुक्त रूपसँ केलैन। उद्घाटनक पछाइत पहिल सत्रमे कौलेजक इतिहासक संग कौलेजमे की कमी आ की बेसी, ऐपर विद्वान-वक्तालोकैन अपन-अपन विचार रखलैन। ई कार्यक्रम साँझक पाँच बजे धरि चलल।

दोसर सत्रमे साँझक छह बजेसँ कौलेजक छात्र-छात्रा नृत्य, प्रहसन आ गीतनाद प्रस्तुत केलैन।

दोसर दिन, दिनक एगारह बजे छात्र-छात्राक बीच भाषण प्रतियोगिताक आयोजन छल। जेकर विषय छेलै- 'लोक किए पढ़ै-लिखैए, शिक्षाक अन्तिम उदेस की अछि?'

प्रतियोगिताक जूरीमे कौलेजक प्राचार्य महोदय, शिक्षक संघक अध्यक्ष आ छात्र संघक अध्यक्ष छला।

कार्यक्रममे कौलेजक शिक्षकगण, कर्मचारीगण आ पत्रकार, कौलेजक छात्र-छात्रा आ स्थानीय बुद्धिजीवी लोकैन सेहो उपस्थित छला।

अध्यक्षक आदेशसँ प्रतियोगिता प्रारम्भ कएल गेल। पहिल वक्ताक रूपमे बी.ए. फाइनलमे पढ़ैत छात्र आलोक ठाढ़ भेला। ओ अपना भाषणमे बजला-

"पूज्यनीय अध्यक्ष महोदय, पूज्यपाद गुरुजन, उपस्थित वुजुर्ग आ वुद्धिजीवी लोकैन, छात्र-छात्रा लोकैन- आजुक समैमे पढ़ाइ-लिखाइक बड़ महत अछि। जँ ई कहल जाए जे शिक्षा रोशनी छी तँ कोनो अनुचित नहि हएत। बिनु पढ़ल-लिखल मनुख आँखि रहितो आन्हर छैथ। शिक्षाक मूल उदेस ज्ञानी बनब छी आ ज्ञानी बनि कऽ अपन चरित्र निर्माण करब थिक। ऐ सन्दर्भमे पूज्य बापू गाँधीजी कहने छैथ- शिक्षाक अन्तिम उदेस चरित्र निर्माण छी। चरित्र निर्माणक पश्चात राष्ट्र निर्माण करब सेहो छी और सभसँ पैघ बात ई जे चरित्र निर्माणक संग मानवक सेवा शिक्षित मनुखक सभसँ पैघ कतर्व्य अछि।"

ई कहि आलोक बैस जाइ छैथ। जोरदार थोपड़ी बजा श्रोता लोकैन हुनकर भाषणक समर्थन केलखिन।

दोसर वक्ताक रूपमे अंजली ठाढ़ होइ छैथ। अंजली बी.ए. द्वितीय वर्षक छात्रा छैथ, मैक पकैड़ सम्बोधनक पश्चात अंजली बजै छैथ-

"अखन जे पूर्व वक्ता आदरणीय आलोक भाय बजला जे शिक्षाक मूल उदेस चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण और मानवक सेवा थिक, हम हुनका विचारसँ बिल्कुल सहमत नइ छी।"

श्रोतामे वुद्धिजीवी लोकैनक कान ठाढ़ भऽ जाइ छैन। अंजली आगाँ बजै छैथ-

"हम तँ कहब शिक्षाक अन्तिक उदेस मात्र ढौआ कमेनाइ छी। देखियौ, लोक पढ़ि-लिख कऽ पैघ-सँ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर, कलक्टर, एस.पी; बी.डी.ओ; प्रोफेसर, मास्टर नहि जानि की की बनै छैथ। मुदा किनकोमे भी चरित्रक निर्माण कहाँ होइ छैन। घूस लऽ कऽ अकूत सम्पैत जमा करए लगै छथिन। डाक्टर सभ कमीशनक लेल

अनावश्यक जाँच, कमीशनबला दवाइ आ बिनु जरूरतक ऑपरेशन करै छैथ। प्रोफेसर सभकेँ डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहा भेटै छैन, मुदा की ओ सभ निष्ठा पूर्वक अपन कर्तव्यक निर्वहन करै छैथ? डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहाक बादो हुनका सभकेँ सन्तोख कहाँ छैन। ट्यूशनक पाछाँ बेहाल रहै छैथ। हम तँ कहब जे विद्वान से बेइमान आ जे डाक्टरसे डाकू!"

श्रोता दिससँ जोरदार थोपड़ी बजैत अछि।

अंजली आगू बजै छैथ-

"आलोक भाय बाजल छला- राष्ट्रक निर्माण...। यौ देखबे करै छिऐ जे पैघ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर ढौआक लेल अपन देश छोड़ि विदेश जाइ छैथ आ अपन गाम-घर, देश छोड़ि विदेशमे बसि जाइ छैथ। एकटा बात आलोक भाय आरो बाजल छला जे मानवक सेवा। यौ जे अपन बुढ़ माए-बापक सेवा नहि कऽ रहल छैथ ओ आन मनुखक सेवा केना करता। तखन मानवक सेवा केना भेल आ मानवताक की भेल? हँ, पत्नीभक्त भऽ सकैत छैथ। हमर अनुभव अछि जे विद्वान लोकैन माए-बापसँ बेसी मोजर पत्नीकेँ दइ छथिन।"

ई कहि अंजली बसि जाइ छैथ। हिनका भाषणपर बड़ीकाल धरि थोपड़ी बजैत रहैत अछि।

तेसर वक्ताक रूपमे विवेक ठाढ़ होइत बजला-

"हम पहिलुका दुनू वक्ताक विचारसँ बिल्कुल असहमत छी।"

श्रोताक कान एकबेर फेर ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

विवेक आगाँ बजै छैथ-

"शिक्षाक उदेस चौवनिया नेतागिरी केनाइ थिक। चौवनियाँ नेतागिरी कऽ ब्लौक, थानामे दलाली आ गाम-घरमे झगड़ा लगा अपन

उल्लू सोझ करब आइ-काल्हिक पढ़ल-लिखल लोकक मुख्य काज रहि गेल हेन। जेतए तक पाइ कमेबाक बात अछि तँ ओइ लेल शिक्षित भेनाइ जरूरी नहि छइ। हमरा ओतए एकटा डीलर अछि, हँ-हँ वएह डीलर जे जनताक चाउर-गहुम आ मटिया तेल दइ छै, मोशकिलसँ दसखत करए अबै छै, मुदा ढौआ कमाइमे बड़का-बड़का इंजीनियर-डाक्टरक कान काटै छइ। पाँच बर्ख पहिनेसँ बोलेरो गाड़ीपर चढ़ैत अछि। मनुखोक सेवा करिते अछि। केकरो बेटीक बिआहमे पान-दस लीटर मटिया तेल दऽ दइ छइ। पाँच-दस गोरेकेँ चौक-चौराहापर चाहो-पान करा दइते छइ। फगुआमे किछ गोरेकेँ दारूओ पियाइए दइ छइ।"

ई कहि विवेक बैस जाइ छैथ। हिनको भाषणपर थोपड़ी बजैत अछि।

चारिम वक्ताक रूपमे अलका माइक पकड़ै छैथ। ओ अपना भाषणमे कहै छथिन-

"हम पहिलुका तीनू वक्ताक विचारसँ कनिक्को सहमत नै छी। यौ आजुक समैमे शिक्षाक अन्तिम उदेस बिआहमे बेसी-सँ-बेसी दहेज लेब थिक।"

वुद्धिजीवी लोकैन एक-दोसरक मुँह दिस देखए लगला। अलका आगू बजै छैथ-

"देखियौ, डाक्टरक बिआहमे केतेक दहेज भेटै छै, फेर इंजीनियरकेँ देखियौ, कलक्टर-एस.पी. आ बी.डी.ओ; सी.ओ.क तँ बाते किछु और छै जे लड़िका कौलेजमे पहुँच जाइत अछि बुझियो हुनकर माए-बापक लौटरी निकैल जाइत अछि। ओइ लड़काक बिआहमे दस-बीस लाख टका नगद एकटा मोटर साइकिल, दू चारि भरि सोन दहेजक रूपमे भेटब आम बात भऽ गेल अछि। तेतबे नहि,

डाक्टर-इंजीनियरकेँ बिना चारि चक्का गाड़ी आ कमतीमे बीस-पच्चीस लाख टका नगदसँ बिआहे ने होइत अछि। अहाँ कहबै ई तँ लड़काक बात भेल, लड़कीकेँ सुनू- पढ़ल-लिखल लड़कीक मांग बेसी छइ। जे मिडिलो पास लड़का छै ओहो अपन कनियाँ कमतीमे इन्टर पास तकै छइ। किए तँ नै बेसी तँ कम-सँ-कम इन्टर पास लड़की मास्टर तँ बनियेँ जाएत। पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआहमे दहेजोमे किछु छूट भेटै छइ। यौ हम अपने परिवारक गप कहै छी। हम दू भाँइ आ दू बहिन छी। जेठ दुनू भैया छैथ। बड़का भैयासँ छोटका भैया एक बर्खक छोट छैथ। बड़का भैया छठा तक पढ़ि खेती गृहस्तीक काज देखए लगला। छोटका भैया कौलेजमे पढ़ै रहथिन। बड़का भैयापर जे बरतुहार सभ आबथिन आ हुनका सभकेँ जखन पता चलैन जे लड़का छठे धरि पढ़ल छै तँ ओ सभ जे आपस गाम जाथि से फेर घुमि कऽ नै आबैथ। मुदा छोटका भैयाक बिआहक लेल बरतुहारक लाइन लागल रहए। बड़का भैयाक बिआहमे बाबूजीकेँ अपना तरफसँ खर्च करए पड़ल रहैन। तँए हम कहै छी जे शिक्षाक उदेस दहेज लेब छी आर किछु नहि।”

ई कहि ओ बैस जाइ छैथ। हिनको भाषणपर बड़ीकाल धरि थोपड़ी बजैत रहल।

भाषण प्रतियोगिताक प्रथम पुरस्कार अलकाकेँ भेटलैन। हम सोचै रही जे प्रथम पुरस्कार आलोक नहि तँ अंजलीकेँ भेटतैन। मुदा से नहि भेल। हम छगुन्तामे रही। सोचैत रही प्राचार्य महोदय भेटता तँ पुछबैन। संयोग नीक बैसल। एकटा कथा गोष्ठीमे प्राचार्य महोदय भेटला। हम पुछि देलिऐन-

“भाषण प्रतियोगितामे श्रीमान्, कोन आधारपर अलकाकेँ प्रथम पुरस्कार देलिऐन?”

प्राचार्य महोदय गम्भीर होइत बजला-

“शिक्षक संघक अध्यक्ष आ छात्र संघक अध्यक्षक विचार प्रथम पुरस्कार आलोकेकेँ देबाक रहैन, मुदा हम अड़ि गेलिऐ आ हमरा आगाँ हुनका दुनू गोरेकेँ किछु ने चललैन।”

हम पुछलयैन-

“अपने कोन बिन्दुपर अड़ि गेलिऐ?”

तैपर ओ जवाब देलैन-

“हमरा अपन बेटाक बिआह मोन पड़ि गेल रहए, जखन हमरा बेटाक बिआहक लेल बरतुहार एला तँ हम स्पष्ट कहि देलिऐन- हमरा बेटाक इंजीनियर बनेबामे बारह लाख टाका खर्च अछि। तँए ओकरा बिआहमे कमतीमे पच्चीस लाख टका लेब। लड़कीबला सहर्ष पच्चीस लाख टका दइले तैयार भऽ गेल छला।”

❑

शब्द संख्या : 1085

हमर लॉटरी निकलल

झंझारपुर रेलबे टीशनक बगलमे एकटा दवाइ दोकान अछि, नाओं छिऐ- नवीन फार्मेसी। ओइ दोकानक ई विशेषता छै जे निर्मलीक डाक्टरक पुरजा हुअए वा दरभंगाक डाक्टरक, फुलपरासक डाक्टरक पुरजा हुअए वा तमुरियाक डाक्टरक, सभ दवाइ भेट जाएत। तँए दोकानमे खरीदवालक भीड़ हरिदम लगले रहैत अछि।

हमरो पत्नीक इलाज चलि रहल अछि। डाक्टर साहैब कहने रहथिन जे छह मास धरि दवाइ खाए पड़तैन। पाँच मास तँ बीति गेल आब छठम मासक दवाइ चलतैन। तँए हमहूँ दवाइ कीनैले झंझारपुर विदा भेलौं। चारिये बजे भोरबामे उठि कऽ तैयार भऽ भपटियाही स्कूल लग मुख्यमंत्रीबला सड़कपर एलौं। ओइठामसँ टेम्पू पकैड़ परसा हाल्टपर पहुँचलौं। परसा हाल्टपर टिकट कटा छह बजिया ट्रेनक प्रतीक्षा करए लगलौं।

बगलमे बैसल एक गोरे बाजल- “ट्रेन आइ निर्मली सबेर गेल अछि तँए छह बजे धरि ऐठाम पहुँच जाएत।”

मोबाइलमे समए देखलौं, पौने छह बजैत रहए। ठीक छह बजे ट्रेन परसा हाल्टपर पहुँचल। हम एकटा कोठरीमे चढ़ि गेलौं। सबेर रहितो ट्रेनमे भीड़ छल।

ट्रेन घोघरडीहा टीशन पहुँच कऽ रूकल। एकटा महिला जे सलवार-समीज पहिरने रहए, हमरे कोठरीमे माने जइ कोठरीमे हम बैसल रही, ओहीमे चढ़ल। घोघरडीहा टीशनपर ट्रेनमे भीड़ बढ़ि गेल

छल। ओ महिला जैठाम हम बैसल रही, ओहीठाम आबि चारू दिस हिया कऽ तकलक। केतौ खाली जगह नै देख हमरासँ कहलक-

"बाबा, कने हमरो बैसए दिअ।"

ओइ महिलाक बाबा कहब सुनि हम छगुन्तामे पड़ि गेलौं। आखिर हमरा ई औरत बाबा किए कहलक। भाइजी कहैत तँ ठीक छेलइ। कक्को कहैत तँ ओतेक सोच नहि होइतए। बाबा किए कहलक..!

हम हिया कऽ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि ओइ महिलाकेँ देखए लगलौं। तैबीच ओ फेर टोकलक-

"एना की निंगहारि-निंगहारि देखै छी। कहियो मौगी नै देखने छिऐ की? कनेक घुसकु ने।"

आब तँ भेल औरो पहपैट। हमरा भेल जेना कोनो चीज चोरि करैत पकड़ा गेलौं। हम कनी खिसैक गेलौं। ओ महिला हमरा देहमे सटि कऽ बैस गेली। दोसर कियो रहैत तँ ओइ महिलाक सटब नीके लगिते। धरमागती पुछू तँ हमरो नीक लगैत मुदा ओ औरत जे बाबा कहने छेली तही सोचमे डुमल रही। सोची जे एतेक बुढ़ भऽ गेलौं जे ई महिला हमरा बाबा कहलक..?

गाड़ी सीटी देलक आ ससरए लगल। एकटा बीस-बाइस बर्खक लड़की जेकरा कोरामे एकटा लकधक साल भरिक बच्चा रहै, ओ खिड़की लग प्लेटफार्मपर ठाढ़ छेली, ओइ औरतसँ बजली-

"मम्मी ठीकसँ जइहेँ। गाम पहुँचते फोन करिहेँ।"

फेर कोरैला बच्चासँ कहली-

"बौआ, नानीकेँ टा टा कऽ दियौ।"

ओ महिला खिड़कीसँ हाथ निकालि हिलबए लगली।

हमर मन खसल रहए। हम सोचैत रही, आखिर ई महिला हमरा बाबा किए कहलक! जखन कि ओकरो नाति-नातिन भेल छै जे अखने देखलौं हेन।

हम ओइ महिला दिस हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे ओकर केश रंगल छइ। सलवार-समीज तेतेक कसल रहै जे, शरीरक अंग, जे परदामे रहबाक चाही ओ अदहासँ बेसी वेपर्दा भऽ जाइ जखन ओ कनेको निहुरए। शरीरक रंग एकदम गोर। दोहारा हार-काठ। शरीर ने बेसी मोटे आ ने बेसी पातरे। एकदम छरहर। आँखिमे काजर लगौने, कानमे आधुनिक डिजाइनक बाली पहिरने। एन-मेन सोनाक लगइ। एकटा हाथमे गोल्डेन चेनबला टाटा क्वार्ज घड़ी। दोसर हाथमे कीमती चूरी। ठोरमे गाढ़ लाल रंगक लिपिस्टिक, नाकमे पाथर जड़ल छक, गरदैनमे मोतीक माला। आँगुर सभमे पाथर जड़ल औंठी। आँखिमे गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा। कन्हामे पर्स लटकल। हाथमे मेहदी लगौने। जखन ओकरा पएर दिस तकलौं तँ तकिते रहि गेलौं। दुनू पैरमे आरत लगौने जे ओकर पैरक सुन्दरतामे चारिचान लगबैत। हमरा कोनो कविक दोहा मोन पड़ि गेल-

"न पैरों में महावर रचाओ गोरी,
संगमरमर का कलेजा पिघल जाएगा।"

हम अन्दाज लगेलौं, ऐ महिलाक उमेर कमतीमे 40-42 बर्खसँ कम नै हेतइ। मुदा तेना कऽ मेन्टन केने अछि जे तीस-बत्तीस बर्खक लगैत अछि। की कहू, मन घोर-घोर भऽ गेल रहए। किछु सोहेबे ने करए। ताबत ऐगला टीशनपर पहुँच ट्रेन रूकल। हम उतैर गेलौं। पानक दोकानपर जा ऐनामे अपन चेहरा निंगहारि कऽ देखलौं तँ बुझाएल जे अदहासँ बेसी केश पाकि कऽ उज्जर भऽ गेल अछि। सोचलौं, सुआइत ई महिला हमरा बाबा कहलक। फेर सोचलौं,

ओकरो केश तँ रंगले रहइ। फेर ऐनामे देखलौं तँ अपन गाल पचकल बुझाएल जखन कि ओइ महिलाक गाल पुआ जकाँ फूलल छेलइ। तहूमे सेब जकाँ लाल। फेर ऐनामे देखलौं तँ आँखि एक हाथ तरमे बुझाएल। पानक दोकानदार टोकलक-

"पान खाएब की? केहेन पान खाइ छी, मीठा पत्ता आकि...।"

बिच्चेमे हम कहलिऐ-

"नै यौ बाबू, पान नइ खाएब।"

दोकानदार पुछलक-

"एना किए कननमुँह जकाँ बजै छी? की कियो रूपैआ-तुपैआ नहि तँ निकालि लेलक हें?"

"से तँ नै भेल अछि।"

ई कहैत हम ससैर कऽ मोसाफिर खानामे आबि एकटा ब्रैंचपर बैस गेलौं। मन हुअए बोम फारि कऽ कानए लागी। हमरा कौलेजक समैक गप मन पड़ि गेल। की जिनगी छल। फिल्मी हीरोक स्टाइलमे रहै छेलौं। अमिताभ बच्चनक स्टाइलमे बाबरी राखी। अन्दर सुटिंग करि पेन्ट-सर्ट पहिरैत रही। आँखिमे करिक्का चश्मा रहैत छल। कौलेजक लड़की सभ हमरा राजेश खन्ना कहए। एक दिनक घटना मोन पड़ि गेल। एकटा लड़की जेकर नाओं अलका रहइ, ओ एकटा कागज हमरा कॉपीमे रखि देलक। हम कॉपी खोललौं तँ ओ कागज देखलिऐ। ओइमे लिखल रहै- आइ लव यू आ निच्चाँमे अलकाक दसखत रहइ। हम बुझू अकासमे उड़ए लगल छेलौं, किएक तँ अलकाकेँ कौलेजक छौड़ा सभ कौलेज क्वीन कहैत छेलइ। ओ बड़ सुन्दर छेली। दोसर दिनसँ अलका कौलेज नइ अबैत रहए। पता चलल जे अलका बेमार पड़ि गेल अछि। बादमे पता चलल ओकर बाबूजी जे पीएनबी बैंकमे मैनेजरक पदपर काज करै छला, हुनकर

प्रमोशन क्षेत्रीय प्रवंधकक पदपर दरभंगामे भऽ गेलैन हेन। तँए ओ सपरिवार दरभंगा चलि गेला। अलका आब दरभंगेमे पढ़त। एक मास तक हम अलकाक गममे गमगीन रहलौं।

ताबेतमे ट्रेनक सीटी सुनलौं। मुसाफिरखानासँ बाहर एलौं, गाड़ी टीशनपर पहुँच चुकल छल। गाड़ीमे चढ़ि गेलौं।

परसा हाल्टपर ट्रेनसँ उतैर टेम्पू पकैड़ गाम आबि गेलौं। धोती-कुरता पहिरनहि ओछाइनपर जा पड़ि रहलौं। पत्नी चूल्हि लग छेली, ओ देखली तँ लगमे आबि पुछली-

"मर! की भेल हेँ जे एना बिना कपड़े बदलने पड़ि रहलौं। मन-तन ठीक अछि किने?"

हम किछु नहि बजलौं। हमरा हुअए जे बोम फारि कऽ कानए लागी।

पत्नी फेर पुछली-

"दवाइ आनलिऐ की?"

हम तैयो किछु ने बजलौं।

पत्नी सोचए लगली आन दिन जे झंझारपुर दवाइ आनए जाइ छला तँ अढ़ाइ-तीन बजे धरि घुमि कऽ गाम अबै छला। आइ साढ़े दसे बजे आपस आबि गेला। भरिसक पाकेटमार रूपैए नहि तँ निकालि लेलकैन। बजली-

"रूपैआ ने तँ पॉकेटमारी भऽ गेल?"

हम फेरो किछ ने बजलौं।

हमर पत्नी सोचली जे आखिर ई बजैत किए ने छथिन। ओ हमरा माथपर हाथ दैत पुछलैन-

"माथ ने तँ दुखाइत अछि?"

हम किछु ने बजलौं। हमर पत्नी हमर हाथ अपना हाथमे लऽ कऽ बड़ प्यारसँ बजली-

“अहाँक हमर सप्पत छी, कहू की भेल। एना किए उदास भऽ कऽ पड़ल छी।”

हम कनैत जकाँ बजलौं-

“की हम बुढ़ भऽ गेलिऐ।”

तैपर हमर पत्नी बजली-

“किए, से किएक पुछै छी। के अहाँकेँ बुढ़ कहैत अछि। हम तँ आइ धरि नै कहलौं हेन।”

हम कहलिऐ-

“आइ ट्रेनमे एकटा मौगी हमरा बाबा कहलक।”

हम ओइ औरतक पूरा हुलिया अपना पत्नीकेँ बता देलिऐ।

हमर पत्नी ठहक्का लगा कऽ हँसल। हँसैत बाजल-

“तँ ई बात छिऐ!”

हम कहलिऐ-

“अहाँ दिल खोलि कऽ हँसै छी। हमरा मन होइए जे भोकारि पाड़ि कऽ कानए लगी।”

पत्नी बजली-

“ऐमे केकर दोख। केतेक दिन कहलों जे समराट बनि कऽ रहू। मुदा अहाँ छी जे खादीक धोती, झोलंगाबला कुरता पहिर कन्हापर गमछा लऽ केतौ विदा भऽ जाइ छी। ने दाढ़ी कटबै दी आ ने केशे सीटै छी। तँ बाबा नै कहत तँ बौआ कहत।”

हम कहलिऐ-

“सम्राट जे कहै छिऐ से कोनो हम राजा महराजाक बेटा छी जे सम्राट बनि कऽ रहब।”

तैपर हमर बेटी जे टीशन पढ़ि कऽ आएले छल, बाजल-

“पापा, मम्मी सम्राट नहि स्मार्ट कहैत अछि।”

तैपर हमर पत्नी बजली-

“हँ, हँ की कहलीही, बुच्ची असमाट?”

हमर बेटी जे आइ.एस-सी.मे पढ़ैत अछि बाजल-

“असमाट नै स्मार्ट।”

हम पत्नीकेँ कहलिऐ-

“अहूँ तँ कहियो काल कहैत रहै छी जे, आब अहाँकेँ के पुछत?”

पत्नी हमर हाथ अपना हाथमे लऽ बजली-

“उ तँ प्यारसँ मजाकमे कहै छी।”

तैपर हम बजलिऐ-

“के कहलक, मजाकमे कहै छी आकि... ।”

बिच्चेमे हमर पत्नी हमर बात कटैत बजली-

“अहाँक देह छुबि कऽ कहै छी जे ई गप हम मजाकमे कहै छेलौं। आब मजाकोमे नै कहब। उठू, मुँह-हाथ धोउ ताबत हम चाह बना कऽ नेने अबै छी।”

बजलौं- “अखन हमरा चाह-पान किछ ने सोहाइत अछि।”

तैपर पत्नी तोष दैत बजली-

“अहाँ एक्को मिसिया मनमे टेंशन नै लिअ। एक्के मासमे अहाँकेँ गोविन्दा जकाँ हीरो बना देब। फेर देखबै जे सोलह सालक लड़की अहाँसँ केहेन बेवहार करैत अछि।”

बिहाने भने हमर पत्नी हमरा संग केने निर्मली एली। पहिने डाक्टर रमेश बाबूक क्लीनिकपर अनली। डाक्टर साहैबकेँ हमरा देखबैत हमर पत्नी बजली-

"डाक्टर साहैब, हिनकर तेना कऽ इलाज करि दियौन जे गाल पुआ जकाँ फुलि जाइन।"

तैपर डाक्टर साहैब कहलखिन-

"गाल फुलबेटा नहि करतैन बल्कि सेब जकाँ लालो भऽ जेतैन मुदा दवाइक संग खानो-पान नीक हेबाक चाही।"

पत्नी बजली-

"डाक्टर साहैब, अहाँ जे-जे कहबै से-से खुएबैन मुदा गाल फुलबाक चाही।"

डाक्टर साहैब किछु केप्सूल आ तीन फाइल टॉनिक लिख, खेनाइमे की-की हेबाक चाही से सभ हमरा पत्नीकेँ समझा देलखिन।

डाक्टर साहैबक क्लिनीकसँ निकैल हम सभ बजार गेलौं। बजारमे एक किलो मनक्का, पाँच किलो सेब, पाँच किलो बदाम कीनि पत्नी झोरामे रखली। तेकर बाद क्लॉथ इंपोरियममे जा विमल सूटिंग-सर्टिंगक दू-दूटा पैन्ट-शर्टक कपड़ा सेहो किनलैन। कपड़ा लऽ कऽ हम सभ मॉडर्न टेलरमे जा कऽ नाप दऽ कपड़ा सिबए लेल देलिऐ। पत्नी टेलर मास्टरकेँ कहलकैन-

"फिटिंग एकदम ठीक-ठाक हेबाक चाही।"

तैपर टेलर मास्टर जवाब देलखिन-

"मैडम, अहाँ एक्को रत्ती चिन्ता जुनि करू, कपड़ा पहिरलाक बाद सर बिल्कुल गोविन्दा जकाँ लगथिन।"

दर्जीकेँ कपड़ा देलाक बाद पत्नी हमरा लऽ कऽ हनुमान

रेडीमेडपर एली आ सेल्समेनकेँ हमरा देखबैत कहलखिन-

"हिनका लेल दूटा नीक जीन्स पैन्ट आ दूटा टी-शर्ट निकालू।"

सेल्समेन पुछलकैन-

"की रेन्जमे निकाली मैडम?"

तैपर पत्नी बजली-

"रेंजक चिन्ता नै करू। स्टेनडरसँ स्टेनडर निकालू।"

सेल्समेन पच्चीस-तीस पीस जीन्स पैन्ट आ पच्चीस-तीस पीस टी-शर्ट हमरा सबहक आगाँमे पसारि देलक। ओइमे सँ एकटा ग्रे कलरक आ एकटा ब्लू कलरक जीन्स पैन्ट पसिन केलौं। तेनाहियेे एकटा लाल रंगक टी-शर्ट आ दोसर ब्लू रंगपर उज्जर धारीवला टी-शर्ट पसिन केलौं। चारि हजार टकाक बिल बनल। दोकानदारकेँ बिल भुतान कऽ चश्माक दोकानपर गेलौं। ऐठाम गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा खरीदली। चश्मा खरीदलाक बाद जूता दोकानपर जा एक जोड़ा खादिम कम्पनीक लेदरबला फूल जूता आ एक जोड़ा सैन्डिल खरीदली।

ई सभ खरीदलाक बाद पत्नी पुछली-

"आर किछ बाँकी तँ नइ रहल ने।"

हम कहलिऐ-

"दूटा रूमाल, दूटा कोठारी गंजी आ एकटा टाई।"

पत्नी बजली-

"ठीके, चलू पंसारी रेडीमेड सेन्टरमे ई सभ लऽ लइ छी।"

गंजी, टाइ आ रूमाल कीनलाक बाद पत्नी हमरा लऽ कऽ मुम्बइ सैलूनमे गेली। ओइठाम पत्नी हजामसँ कहली-

"हिनका फिल्मी असटाइलमे बाबरी छाँटि दियौन आ केशो रंगि

दियौन।”

जाबे हजाम हमर केश बनौलक ताबेमे पत्नी एकटा नीक रेजर, एक पैकेट टोपाज ब्लेड, ब्रश बा बढ़ियाँ क्रीम आ फेयर इन लवली क्रीम सेहो कीनि कऽ आनली।

सभ समान कीनलाक बाद हम सभ मुन्ना होटलमे मासु-भात खेलौं आ कनीकाल मोसाफिर खानामे अराम कऽ चारि बजेमे टेम्पू पकैड़ आपस गाम आबि गेलौं।

दोसर दिनसँ भोरमे अढ़ाइ साए ग्राम सेबक फलाहार करी। फल खेलाक एक घन्टाक पछाइत गुड़क संग साए ग्राम औंकुरल बदाम खाइ। फेर एक गिलास दूध पीबी। खानामे पालकक साग सेहो खाइ। रातिमे सुतैसँ पहिने मनक्का देल एक गिलास दूध पीबी। आ तेकर बाद डाक्टर साहैबक लिखल केप्सूल आ टॉनिकक सेहो सेवन करी। पनरह दिनपर केश रंगी आ तेसरा दिनपर दाढ़ी बनाबी। जहिया केतौ जेबाक हुअए तँ जाइसँ पहिने दाढ़ी बना कऽ फेयर इन लवली क्रीम लगौनाइ नहि बिसरी।

एक मास बीतैत-बीतै हमर गाल पुआ जकाँ तँ नहि फूलल मुदा सटकलो नहियेँ रहल। चिकनाए गेल। चेहरापर रोहानी आबि गेल।

संयोगसँ पितियौत सारक बिआहमे सासुर जेबाक रहए। गेलौं। बरियाती जाइ काल जखन ब्लू जीन्स पैन्ट आ ललका टी-शर्ट पहिर गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा लगा विदा भेलौं तँ हमर सारि जे एम.ए.मे पढ़ै छैथ, बजली-

“पाहुन तँ गोविन्दा जकाँ लगै छथिन।”

तैपर हमर पत्नी बजली-

“गइ छौरी, एना नहि हमरा दुल्हाकेँ आँखि लगाबही।”

सारिक बात सुनि बुझू हमर मन तँ अकासमे उड़ए लगल। बिआहसँ पहिने जखन बरमाला भऽ रहल छल तँ दुल्हिनक संग चारि-पाँचटा लड़की सभ बरमालाबला मंचपर ठाढ़ छेली। ओइ चारि-पाँचटा लड़कीमे एकटा सत्तरह-अठारह बर्खक बड़ सुन्नैर जे एन-मेन करीना कपुर जकाँ लगै छेली ओ एकटकसँ हमरे दिस निहारि रहल छेली। जखन हमर आँखि हुनकर आँखिसँ मिलल तँ ओ हँसए लगली।

बरमालाक बाद जखन ओ दुल्हिनक संग जाए लगली तँ हमरा लग आबि बजली-

"हेल्लो, फेर भेँट हएब।"

ई कहि ओ आगाँ बढ़ि गेली।

हमरा भेल जेना लाख टकाक लॉटरी भेट गेल।

❑

शब्द संख्या : 1995

टेट्रा हीरो

समय दिनक एगारह बजि कऽ पनरह मिनट होइत रहइ। स्थान रामनगर डिग्री कौलेज। कौलेजमे छात्र-छात्रा लोकैन पहुँच रहल छल। अलका आ अंजली पहुँच चुकल छेली।हुनका सबहक प्रथम घण्टीमे हिन्दीक क्लास छेलैन, मुदा हिन्दीक प्रो. अनील बाबू छुट्टीपर छला। तँए क्लास स्थगित छल।

अंजली अलकासँ कहलक-

“चल कॉमन रूममे चलि कऽ पेपर-पत्रिका देखैत छी।”

दुनू गोरे कॉमन रूम पहुँच पेपर-पत्रिका पढ़ए लगली। कनीकालक बाद एकटा बुलेट मोटर साइकिलक अवाज सुनाइ पड़ल। अंजली बजली-

“आबि गेल टेट्रा हीरो!”

अलका पुछलक-

“के टेट्रा हीरो! ई टेट्रा हीरो के छी दीदी?”

अंजली जवाब दैत बजली-

“देखही ने कौलेज पहुँचते सीधा कॉमन रूमक गेटपर पहुँचत। विक्रम नाओं छिऐ।”

दुनू छात्रा गप करिते छेली आकि एकटा बुलेट मोटर साइकिल ठीक कॉमन रूमक गेटक आगूमे आबि कऽ रूकल।

एकटा लड़का जीन्स पैन्ट आ भेस्ट पहिरने, कारी चश्मा लगौने,

कानमे इअर-फोन लगौने मोटर साइकिलसँ उतरल। गाड़ी खड़ा कऽ आँखिसँ चश्मा हटा माथपर लगौलक आ जेबीसँ सिगरेटक पाइकेट निकालि ठोरसँ लगा लाइटरसँ जरा पीबए लगल। सिगरेट पीब कऽ धुइयाँक छल्ला बना मुहसँ निकालए लगल। सिगरेट पीबैत कॉमन रूमक गेटपर पहुँच भीतर तकलक। ओकर नजैर अलकापर जा कऽ अँटैक गेल। ओ अलकाकेँ तजबीज कऽ देखए लगल।

अलका ओकरालेल अजनबी लड़की छल। ओ सोचए लगल जे ऐ लड़कीकेँ तँ ऐ कौलेजमे कहियो नइ देखने रहिऐ। ई लड़की तँ गजब सुन्नैर आ हसीन अछि। ऐ कौलेजमे जेतेक भी लड़की पढ़ैत अछि ओइ सभमे सभसँ सुन्नैर ई लड़की अछि। दऽ वेस्ट गर्ल ऑफ दीस कालेज कहल जाए तँ कोनो गलत नै हएत। फेर सोचलक नै एकरा कौलेजक क्वीन कहल जाए। मुदा ई छी के? कोन इयरक छात्रा छी? की नाओं छिऐ एकर? सोचलक अंजलीसँ पुछै छिऐ। ओकरासँ तँ गप-सप्प अछिए। ओ बाजल-

"हेल्लो अंजली?"

अंजली जवाब दैत बजली-

"हेल्लो विक्रम!"

विक्रम फेर बाजल-

"अंजली की हाल-चाल अछि।"

अंजली जवाब देलक-

"सभ ठीक-ठाक अछि। अहाँ अप्पन सुनाउ। बहुत दिनपर देखलौं हेन।"

विक्रम जवाब देलक-

"हँ, पनरह दिनसँ पटनामे रही। पेपरमे तँ देखनइये हेबै।

बाबूजीकेँ मंत्री-मण्डलमे शामिल कएल गेलैन हेन। हुनका बिजली मंत्री बनौल गेलैन हेन।”

अंजली बजली-

“हमरा तरफसँ बधाइ।”

विक्रम बाजल-

“धैनवाद। अच्छा अंजली ई नव छात्रा?”

अंजली जवाब दैत बजली-

“ई अलका छी। हमर ममेरी बहिन।”

विक्रम पुछलक-

“पहिने तँ ई ऐ कौलेजमे नै छेली।”

अंजली कहलक-

“हँ, पहिने ई मोतीहारी कौलेजमे छेली। अलकाक बाबूजी यानी हमर मामा ओतए इलाहाबाद बैंकमे मैनेजर छलाह। एक मास पहिने हुनक बदली भोपाल भऽ गेलैन। तँए अलका मोतीहारी कौलेजसँ टी.सी. लऽ रामनगर कौलेजमे एडमीशन करा लेली। आब ओ बी.ए. फाइनल अही कौलेजसँ करती।”

विक्रम अलका दिस घुमि कऽ बाजल-

“हेल्लो अलका।”

अलका बजली-

“हेल्लो।”

ताबेमे घन्टी बजल। अंजली आ अलका अपन-अपन क्लास दिस विदा भऽ गेली। विक्रम मने-मन बाजल-

“देखब अहूँ के देखब।”

ओ कौलेजक कैन्टीन दिस विदा भऽ गेला।

अंजलीक घर रामेनगरमे। ओ रामेनगर कौलेजसँ इन्टर केलक आ रामेनगर कौलेजमे हिन्दी विषयमे बी.ए. आनर्समे नाओं लिखौलक।

अलकाक बाबूजी इलाहाबादसँ बदली भऽ मोतीहारी एला तँ अलका मोतीहारी कौलेजसँ इन्टर कऽ मोतीहारीए कौलेजमे हिन्दी आनर्समे नाओं लिखौलक। मैट्रिक ओ इलाहाबादेसँ केने छेली। जखन हुनकर पिताजीक बदली भोपाल भऽ गेलैन तखन अलका मोतीहारी कौलेजसँ टी.सी. लऽ रामनगर कौलेजमे नाओं लिखा लेली। दुनू कौलेज एके विश्वविद्यालयमे पड़ैत अछि तँए कोनो परेशानी नै भेल।

अलका आ अंजली ममियौत-पिसियौत बहिन। अंजली जेठ आ अलका छोट। अलका अपना पीस ओतए रहि कऽ पढ़ए लगली।

रातिमे जखन अलका आ अंजली सुतए गेली तँ अलका पुछलक-

"दीदी तों विक्रमकेँ टेट्रा हीरो किए कहै छीही? हीरो सुनैत छी, डबल हीरो सेहो सुनैत छी। मुदा ई टेट्रा हीरो तँ पहिल बेर सुनलौं हेन!"

अंजली जवाब दैत बजली-

"हमहींटा नहि, पूरा कौलेज विक्रमकेँ टेट्रा हीरो कहैत अछि। देखलीही नहि केहेन स्टाइल बनौने रहए आ केहेन स्टाइलमे सिगरेटक धुआँ मुहसँ बहार करए। ओकर चरित्र बड़ गड़बड़ छइ।"

अलका पुछलक-

"की चरित्र गड़बड़ छइ?"

अंजली बजली-

“विक्रम कौलेजक लड़की सभकेँ बड़ टॉर्चर करै छइ। कोनो लड़कीक ओढ़नी खींच लइ छै तँ कोनो लड़कीसँ भद्दा मजाक सेहो करए लगैत अछि। लड़की सभ ओकरासँ डरल रहैत अछि।”

अलका बजली-

“की दीदी, तोहूँ ओकरासँ डरै छीही?”

अंजली जवाब देली-

“हम कोन बड़का बापक बेटी छी। प्रिंसिपल साहैबक बेटी सेहो ओकरासँ डरैत अछि।”

अलका पुछलक-

“आखिर एहेन कोन बात छै जे सभ ओकरासँ डरैत अछि?”

अंजली बजली-

“विक्रम कौलेजक मुख्य दाताक परिवारसँ विलौंग करैत अछि। ओकरे दादा दीनदयाल बाबू दस बीगहा जमीन दऽ कौलेजक स्थापना करबौने रहथिन।हुनके नाओंपर कौलेजक नाओं- दीनदयाल जनता महाविद्यालय- रामनगर अछि। विक्रमक पिताजी प्रभुदयाल बाबू कौलेजक प्रबन्ध समितिक अध्यक्ष छथिन। प्रभुदयाल बाबू दस बर्खसँ रामनगर विधान सभा क्षेत्रसँ विधायक छथिन। एमकी मंत्री-मण्डलमे हुनका बिजली विभागक कैविनेट मंत्रीक पद देल गेलैन हेन। कौलेजक सभ प्रोफेसर आ कर्मचारी विक्रमसँ डरैत अछि। बहुत प्रोफेसर आ कर्मचारीसँ तँ विक्रम रंगदारी सेहो तसिलैत अछि।”

अलका बजली-

“ऐँ गे दीदी। बड़का बापक बेटा छी तँ कौलेजमे गुण्डपनी करत! की विक्रमक क्रिया-कलाप प्रभुदयाल बाबूकेँ नै बुझल छैन। प्रिंसिपल साहैब हुनका किएक ने सभ गप कहै छथिन।”

अंजली कहलक-

“असलमे विक्रम अपना बापक एकलौता बेटा छी। तँए बेसी दुलारू रहल अछि। मंत्रीजी हुनका पटना डेरापर रहए लेल कहैत छथिन मुदा ओ नालायक ओतए रहए नै चाहैत अछि।”

अलका बजली-

“पटनामे गुण्डपनी थोड़ेक चलत। पटनामे गुण्डपनी करत तँ मुख्यमंत्री लग शिकायत हएत। बेटाक चलते बापोकेँ मंत्री पदसँ हाथ धुअए पड़त।”

अंजली-

“हँ, तँए ओ पटनामे नै रहि रामेनगरमे रहैत अछि। एकटा गप और छइ।”

अलका पुछलक-

“ओ की दीदी।”

अंजली कहए लगली-

“ओ की कोनो कौलेजक नियमित छात्र छी। ओ तँ दू बेरसँ बी.ए. फाइनलमे फेल कऽ रहल अछि। खाली लड़कीकेँ अपना चंगुलमे फंसबै खातिर कौलेज अबैत अछि। ओ दसटा लड़काक गिरोह बनौने अछि। ओकरा सभकेँ चाह-नाश्ता, दारू-मुर्गा खियबैत-पियबैत रहैत अछि।”

अलका बजली-

“दीदी एहेन गुण्डासँ तों गप किएक करै छैं? एहेन आदमीसँ तँ नफरत करबाक चाही।”

अंजली बजली-

“हम तँ डरे गप करै छी। ओकरा ई नै बुझाइ जे हम ओकरासँ

नफरत करै छी। जखन कि वास्तवमे हम ओकरासँ नफरत करै छी। जहियासँ विभाबला घटना बुझलिऐ।”

बिच्चेमे अलका पुछलक-

“की विभाबला घटना? कनी फरिछा कऽ कह ने।”

अंजली कहए लगली-

“सुन। विभाक बाबूजी कौलेजक चपरासी छी। ओकर घर विक्रमक घरक बगलेमे पड़ैत अछि। विक्रमेक बाबूजी विभाक पिताजी–दीना भाय–केँ कौलेजमे चपरासीक नौकरी दियौलकैन।”

अलका पुछलक-

“विभाक पिताजीकेँ दीना भाय किए कहलीही? की ओ तोहर रिलेटीव छियौ?”

अंजली कहली-

“नै गे। तों नव-नव कौलेजमे एलही हेन तँए तोरा नै बुझल छौ। दीना भाइक पूरा नाओं दीना नाथ वर्मा छिऐन। मुदा तेतेक नीक सोभाव आ बेवहार हुनकर छैन जे प्रिंसिपल साहैबसँ लऽ कऽ सभ प्रोफेसर, कर्मचारी आ छात्र-छात्रा हुनका दीना भाय कहि कऽ सम्बोधित करै छैन। खाली विक्रमेटा हुनका दीनू वर्मा कहैत छैन।”

अलका फेर पुछलक-

“अच्छा विभाबला घटना बता। की भेल रहै विभाक संग।”

अंजली-

“एक दिन विभा पएरे कौलेजसँ घर जाइत छेली। विक्रम देखलक तँ ओ फटफटिया गाड़ी लऽ कऽ ओकरा लग जा कऽ कहलक- ‘आ गाड़ीपर बैस। हमहूँ घरे चलैत छी। तोरा तोहर घर लग उतारि देबौ।’

तैपर विभा बजली- 'नै अंकल हम पएरे चलि जाएब। अहाँ जाउ।'

विक्रम जोर दैत बाजल- 'बैस ने। कतेक नखरा करै छैं। एक दिस अंकल कहैत छैं दोसर दिस डरैत छैं। की कियो अपना अंकलोसँ डरैत अछि।'

विभा बजली- 'नै अंकल से बात नै छइ। कियो देखत तँ की कहत। अहाँ जाउ हम पएरे आबि जाएब। पनरह-बीस मिनटमे तँ पहुँचिये जाएब।'

मुदा विक्रम नै मानलक। ओ बाजल- 'तों हमरा बातकेँ ठोकराबै छैं। एकर अंजाम बुझै छीही।'

आखिरमे विभा ओकर मोटर साइकिलपर बैसल। बैसल तँ मुदा विक्रमसँ चारि इंच पाछाँ घुसैक कऽ। विभाकेँ फटफटियापर बैसते विक्रम गाड़ी स्टार्ट केलक आ ततेक स्पीडमे गाड़ी चलौलक जे विभाकेँ हारि कऽ विक्रमकेँ भरि पाँजकेँ पकड़ए पड़ल। नै तँ ओ गिर जाइत।

विभा बाजल- 'अंकल गाड़ी रोकू। मुदा विक्रम विभाक बातकेँ अनसुना करैत गाड़ीक स्पीड आर बढ़ा देलक। गाड़ीकेँ रामनगर बाजार दिस नहि लऽ जा कऽ नेशनल हाइबे दिस मोड़ि देलक। विभा डरे सर्द भऽ गेली। ई तँ संयोग नीक रहए जे ओमहरसँ विक्रमक पिता-विधायकजी अबैत छलाह। विधायकजी गाड़ीएमे सँ विक्रमकेँ देखलखिन। ओ ड्राइभरसँ कहि गाड़ी सड़कपर रोकि कऽ उतैर गेला। ओ विक्रमक मोटर साइकिलपर विभाकेँ देख नेने रहथिन। विभो विधायकजी केँ देख नेने रहए। ओ जोरसँ हल्ला केलक- 'बाबा बचाउ। विक्रम अंकल हमरा जबर्दस्ती नेने जाइत अछि।'

विक्रमो अपना पिताकेँ सड़कपर खड़ा देखलक तँ मोटर साइकिल रोकि देलक।

विभा मोटर साइकिलपर सँ कूदि कऽ उतैर गेल आ विधायकजी लग जा कऽ कानए लगल। विधायकजी सभ गप बुझि गेला। बुझबो केना ने करितैथ। परोक्ष रूपसँ तँ विक्रमक गुण्डागर्दीक खबैर हुनका होइते रहै छेलैन। ओ विभाकेँ गाड़ीमे बैसौलक आ अपना घर-रामनगर एला। तैबीच विधायक जीक मोबाइलक घन्टी बजल। ओ मोबाइल रिसिव करैत बजला- 'हलो, के बजै छी।'

ओमहरसँ अवाज आएल- 'सर हम दीना बजै छी। विक्रमबाबू विभाकेँ मोटर साइकिलपर बैसा कऽ नेशनल हाइवे दिस लग गेला हेना।'

ई कहि ओ कानए लगल। विधायकजी फोनपर कहलखिन- 'जुनि कानू दीनाजी। विभा सुरक्षित हमरा लग अछि। अहाँ हमरा घरपर आबि जाउ।

दीना भाय, विधायक प्रभुदयाल बाबूक ओइठाम पहुँचला। दीना भायकेँ देखते विभा जोरसँ कानए लगल। कनैत बाजल- 'बाबूजी जँ आइ विधायक बाबा नै भेटितैथ तँ अहाँकेँ हमर लाश भेटैत।'

विभा सभ घटना अपन बाबूजी आ विधायकजीकेँ बता देलकैन। विधायकजी विभा आ दीना भायसँ बेटाकेँ तरफसँ गलती मानैत हुनका सभकेँ वापस घर भेज देलखिन।

ऐ घटनाक बाद विभा कौलेज एनाइ छोड़ि देलक। ओ हमर बड़ नजदीकी बहिना छी। हमरा किछ बुझले ने रहए। एक दिन दीना भायसँ पुछलिऐ तँ ओ बतौलैन- 'विभा बीमार अछि।'

हम विभाकेँ देखए ओकरा घर गेलिऐ तँ विभा हमरा सभ बात बतौलक आ कहलक- 'बहिना विक्रमक चालिमे कहियो ने फँसिहेँ। ओइ दिनसँ हम विक्रमसँ नफरत करए लगलौं।"

अलका बाजल-

"ठीक छै दीदी। हम ओकरासँ नै डरब आ ने ओकरासँ गपे करब।"

अंजली बजली-

"विक्रमसँ दूरे रहैमे फायदा छौ।"

मंगल दिनक गप छी। अंजली आ अलका कॉमन रूमसँ निकैल अपन-अपन क्लासमे जाइ छेली आकि विक्रम पहुँचल। ओ मोटर साइकिल रोकि कऽ बाजल-

"हेल्लो अंजली।"

अंजली बाजल-

"हेल्लो। हेल्लो विक्रम।"

विक्रम फेर बाजल-

"हेल्लो अलका।"

मुदा अलका किछ जवाब नै देलक। ओ जोर-जोरसँ चलैत अपना क्लास दिस बढ़ि गेल। तैपर विक्रम बाजल-

"देख लेबो। तोरो देख लेबो अलका। जे गति-लीलाकेँ केलिऐ सएह गति तोहर नै केलियो तँ हमर नाम विक्रम नहि।"

अंजली डरि गेली आ सोचए लगली। ठीके बीस-पच्चीस दिनसँ लीलाकेँ नै देखै छिऐ। ओ सोचए लगली लीला साथे कोनो अनहोनी तँ नै भऽ गेलै हेन!

अलका आ अंजली जखन कौलेजसँ वापस घर अबैत छेली तँ अलका पुछलक-

"दीदी ई लीला के छी। ओकरा साथे विक्रम कोन घटना केलक हेन।"

अंजली जवाब देलक-

“लीला हमरे संगे हिन्दी आनर्सक छात्रा छी। ओकर बाबूजी फौजमे नौकरी करै छला। कारगिलमे शहीद भऽ गेला। लीला पढ़ैमे चन्सगर अछि। ओ स्वभिमानी सेहो अछि। देखबा-सुनबामे बड़ सुन्नैर। बड़ कम बजएवाली। एक दिन विक्रम ओकरो मोटर साइकिलपर बैसैले कहने छल मुदा लीला ओकरा चालिमे नै फँसल। मुदा बीस-पच्चीस दिनसँ ओ कौलेज नै आबि रहल अछि। जखन कि एको दिन अवसेन्ट नै रहै छेली।”

अलका बजली-

“दीदी विक्रम हमरा धमकी देलक जे, जे तोरो गति लीला जकाँ नै बना दियौ तँ हमर नाओं विक्रम नहि।”

अंजली कहलक-

“हँ गे, हमरा तँ तोरो चिन्ता भऽ रहल अछि। तहूँ तँ विचित्र छेँ। विक्रम तोरा हेल्लो कहलकौ तँ तोंहू ओकरा हेल्लो कहि दैतहिन। ऐमे तोहर की चल जइतौ।”

अलका बाजल-

“दीदी तों चिन्ता जुनि कर। पहिने चल तँ लीलाक घरपर, देखिऐ ओकर की हाल-चाल छइ।”

दुनू बहिन लीलाक घर गेली। लीलाक माए आ लीला अँगनेमे छेली। लीलाक चेहरा एकदम पीयर भऽ गेल रहए। लीला अंजलीसँ बतौलक-

“जे एक दिन विक्रम बजारसँ हमरा एकटा बोलेरो गाड़ीमे उठा कऽ एकटा सुनसान जगहपर लऽ जा कऽ बलात्कार केलक, आ कहलक जँ केकरो कहबीहीन तँ तोहर नग्न फोटो पूरा कौलेज आ

बाजारमे बाँटि देबौ। हारि कऽ तोरा आत्महत्या करए पड़तौ।"

ई कहि लीला आ लीलाक माए कानए लगली।

अंजली लीलासँ पुछलक-

"ऐ घटनाक सूचना तों थानामे नै देलहीन?"

लीलाक माए बजली-

"गइ बुच्ची, थाना-कोर्ट सब तँ ओकरे छिऐ। कोनो फायदा नै होइत। उल्टे बदनामी।"

अलका बाजल-

"लीला बहिन, धैर्य राखू। अहाँक साथे जे घटना भेल ओ हमरो साथे भऽ सकैत अछि। हम सभ मिलि कऽ ऐपर विचार करब।"

ऐगला दिन अंजली आ अलका कौलेजक कैन्टीनसँ क्लास जाइत छेली। विक्रम अलकाकेँ रास्ता रोकि कहलक-

"बड़ घमण्ड छौ तोरा।"

ई कहि ओ अलकाक ओढ़नी पकैड़ कऽ खींचलक। अलकाकेँ जुडो कराटाक नीक प्रैक्टीस छल। ओ तीन-चारि करार्टीमे विक्रमकेँ जमीनपर गिरा देलक। तीन-चारिटा विक्रमक चमचा अलकापर झपटल, मुदा अलका ओहो तीनू-चारू लड़काकेँ जमीनपर गिरा वेहोश कऽ देलक। पूरा कौलेजमे जंगलक आगि जकाँ ई घटनाक खबर पसैर गेल।

कौलेजक सभ लड़की अलकाकेँ घेर लेलक। ओइमे सँ किछ लड़की अलकाकेँ उठा प्रिंसिपल साहैबक चेम्बर दिस बढ़ल। अलका बहिन जिन्दावादक नारासँ पूरा कौलेज गुंजयमान होमए लगल।

जखन प्रिंसिपल साहैबकेँ ऐ घटनाक खबर भेलैन तँ हुनका किछु फुरबे ने करैन। ओ सोचथिन जे विक्रम मंत्रीजीक बेटा छी।

हमरापर कोनो-ने-कोनो कार्रवाइ जरूर हएत। एमहर कौलेजक छात्र-छात्रा, प्रोफेसर, कर्मचारी, सभ मिलि कऽ प्रिंसिपल साहैबकेँ विक्रम आ ओकर चमचापर कार्रवाइ करबाक लेल दबाब बनौलक।

अलका प्रिंसिपल साहैबकेँ कहलक-

"गुण्डा सभकेँ गिरफ्तार कराउ। नै तँ हम सभ चेम्बरसँ नै निकलए देब।"

सभ छात्र-छात्रा, प्रोफेसर, कर्मचारी अलकाक बातक समर्थन केलक। हारि कऽ प्रिंसिपल साहैब थाना फोन केलखिन। दरोगा अपन दल-बलक संगे कौलेज आएल मुदा विक्रमकेँ गिरफ्तार करएमे आना-कानी करए लगल। पिंसिपल साहैब ऐ घटनाक सूचना विक्रमक पिताजीकेँ फोनपर देलखिन। मंत्रीजी कहलखिन-

"हम एक घन्टामे कौलेज पहुँच रहल छी।"

मंत्रीजी रामनगरसँ चालीस किलोमीटर दूरीपर एकटा पावर ग्रिड स्टेशनक उद्घाटन कार्यक्रममे छला।

ठीक एक घन्टाक बाद ओ कौलेजपर पहुँचला। कौलेजक हॉलमे सभ छात्र-छात्रा, प्रोफेसर-कर्मचारीक संगे मंत्रीजी आ प्रिंसिपल साहैब बैसला।

मंत्रीजी अलकाकेँ धैनवाद दैत विक्रमक बद्-तमीजीक लेल माफी मंगलखिन।

अलका कहलक-

"माननीय मंत्री महोदय आ प्रिंसिपल साहैब, अपने सभ कियो हमरा संगे लीला बहिनक ओइठाम चलू।"

मंत्रीजी संगे अंजली, अलका आ प्रिंसिपल साहैब, लीला ओइठाम पहुँचल।

लीला, मंत्रीजीकेँ अपना संगे घटल सभ घटना बतौलक।

अलका बाजल-

“माननीय मंत्रीजी, जँ लीला अपनेक बेटी रहैत तँ अपने की करितिऐ?”

मंत्रीजीक बोलती बन्द भऽ गेलैन। थोड़ेकालक बाद ओ बजला-

“लीला बेटीक संगे जे घटना भेलै ओ जघन्य अछि आ विक्रम जे घटना केलक ओ अक्षम्य अछि। बाजू अलका बेटी एकर की समाधान हेतै आ विक्रमकेँ कोन दण्ड देल जाए।”

अलका बाजल-

“विक्रमकेँ लीला बहिनक संग बिआह कऽ दियौ।”

अलकाक प्रस्तावकेँ स्वीकारैत मंत्रीजी कहलखिन-

“विभाक बिआह सेहो हएत। प्रिंसिपल साहैब, अहाँक नजैरमे कोनो लड़का हुअए तँ बाजू। विभाक कन्यादान हम स्वयं करब। देहेज तँ नै मुदा किछ उपहार देब।”

काल्हि बिआह पंचमी छी। ऐगला दिन पूरा कौलेज दुल्हनक भाँति सजौल गेल। कौलेजक फील्डमे पण्डाल बनल। विक्रम आ लीलाक बिआह आ संगे विभाक संग दीपककेँ सेहो बिआह करौल गेल। प्रिंसिपल साहैब लीलाक आ विधायकजी विभाक कन्यादान केलखिन। कौलेजक सभ छात्र-छात्रा तथा प्रोफेसर-कर्मचारी उपस्थित छला। सभ कियो लीला आ विक्रमक संग दीपक आ विभाकेँ बधाइ देलक। दीपक रामनगरे कौलेजमे किरानी-पदपर कार्यरत छैथ। अलकाकेँ पकैड़ लीला बोम फाड़ि कऽ कानए लगली।

मंत्रीजी बजला-

“बेटी हुअए तँ अलका जकाँ।”

अलका विक्रमक लग जा पुछलक-

“विक्रम भैया अपनेकेँ भाइजी कहू आकि पहुना?”

विक्रम जवाब देलक-

“भाइयेजी नीक रहत। एमकी राखीमे अहाँक घरपर आएब।”

“नै भाइजी अहाँ नहि तोरा कहियो। तोरामे अपनत्वक बोध होइत अछि।”- अलका बजली।

“अच्छा, तोरा घरपर राखीमे ऐबौ।” – विक्रम बाजल।

“हम अखने अहाँ हाथमे राखी बान्हब।”

ई कहि अलका अपना ओढ़नीकेँ फाड़ि विक्रमक हाथपर बान्हि देली। विक्रम अलकाकेँ एकटा पाँच साए टकाक नोट देलक।

विक्रम, अलका, अंजली आ लीलाक संगे विभाक आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगल।

❑

शब्द संख्या : 2482

मरजादक भोज

निर्मली-घोघरडीहा लिंक रोडपर कोसी प्रोजेक्ट कालोनीसँ पच्छिम एकटा चाहक दोकानपर चाह पीबैत रही। हमरा संगे राजदेवजी आ महेशजी सेहो चाह पीबैत रहैथ। राजदेवजी पुछला-

“की यौ रायजी, दुर्गा बाबूक बेटाक बियाहमे बरियाती जेबै की?”

हम कहलयैन-

“यौ बरियाती जाइमे तँ बड़ परेशानी छइ। रातिमे जाउ भोजन करू आ तुरन्ते गाड़ीमे बैसू आ आपस आउ। कनेको आराम नहि। मुदा नै जेबै सेहो नइ बनैए। जाए तँ पड़बे करत किने।”

तैपर महेशजी बजला-

“आइसँ तीस-पैंतीस बर्ख पहिने जे बरियाती जाइ छेलौं, ओइ बरियातीमे केहेन आनन्द अबै छल। रातिमे बरियाती जाइ छेलौं, विहान भने रूकै छेलौं, घरवारी (कन्यागत) मरजादक भोज खुअबै छला आ तेसर दिन जलखै खुआ कऽ बरियातीक विदाइ करै छला।”

मर्यादासँ मरजाद होइत अछि तँए मरजादक भोजक अपन अलग महत्त अछि। मरजादक भोजक नाओं सुनि हमरा दूटा मरजादक भोज मोन पड़ि गेल।

08 मार्च 2016 केँ रामबाबूक बेटीक बिआह बड़ धूम-धामसँ भेल। बरियातीमे बोलेरो, क्वालिस, स्कार्पिओ आ टाटा सूमो मिला कऽ

एगारह गोट गाड़ी आएल छल। एकर अलाबे दूटा मैक्सी आ एकटा टेक्टर सेहो आएल छल। भी.आइ.पी. टाइप बरियाती बोलेरो, स्कारपिओ, क्वालिस आ टाटा सूमो गाड़ीमे आएल छला, जखन कि गाम-घरक साधारण लोक दुनू मैक्सीमे आएल छला। भार आ डाल-दौरा आदि समान टेक्टरमे आएल छल। बरियातीमे बैण्ड बाजाक आलाबे डी.जे. सेहो आएल रहए। डी.जे. बाजापर नचैले बरियातीक युवक आ गौंआँ युवकक बीच मारि-पीट भऽ जइतए मुदा रच्छ रहल ई जे दुल्हाक पिता श्रीलालजीकेँ ऐ बातक खबर भऽ गेलैन आ ओ आबि कऽ डी.जे बाजा बन्न करा देलखिन आ कल जोड़ि कऽ गौंआँ आ बरियातीक बीच ठाढ़ भऽ कहलखिन-

"आब डी.जे. बाजा बन्न रहत। अहाँ सभ बैंड बाजाक आनन्द लिअ। मुदा कियो नाचू जुनि।"

सभ कियो हुनकर बात मानि लेलकैन।

धमौरा गाममे सोने लालक परिवारक गिनती प्रतिष्ठित परिवारमे होइ छैन। किएक तँ सोने लालक पिताजी गेनालाल बड़ पैघ जमीन्दार छला। तीन-तीन गाममे कामत छेलैन। तीन साए बिगहासँ बेसी जोतसीम जमीन रहैन तेकर अलावे दस बिगहामे पोखैर, बाँस आ कलम रहैन। दरबज्जापर पतियानी लगा कऽ बखारी रहैन। जेहेन घोड़ापर गेनालाल चढ़ै छला ओहन घोड़ाक दाम अखन लाख टकासँ कम नै हएत। सोने लालो अपना अमलदारीमे जीप रखने छला।

सोने लाल बापक श्राद्धमे दिल खोलि कऽ भोज केने छला। भोजो की आजी-गुजी रहए? नहि। सभा परहक भोज रहए। ओहोमे खाजा-लड्डूक भोज। शुद्ध घीमे बनल। एक मास धरि भोज होइते रहल। किए तँ एक दिनमे एक्के गामक पंचकेँ खुआबै छेलखिन। अखनो बुढ़-पुरान लोक ओइ खाजा-लड्डुक भोजक चर्च करैत नइ

अघाइ छैथ।

ओही सोनेलालक माझिल बेटा रामबाबूक बेटीक बिआह छेलैन। रामबाबूक एकटा बेटा एम.ए. पास कऽ गैमन इण्डियामे भण्डारपाल पदपर नौकरी करै छथिन। पाइ कमा कऽ टाल लगा देने छथिन।

रामबाबूक दूटा बेटीक बिआह तँ बापेक अमलदारीमे भऽ गेल छेलैन। मुदा तेसर बेटी भारतीक आइ बिआहक मरजाद छी। आब तँ रातिमे बरियाती अबैत अछि आ रातियेमे खा-पीब कऽ चल जाइत अछि। बड़ भेल तँ बरक संगे बरक बाबूजी आ चारि-पाँच गोटेक आर रहला जिनका कन्यागत जलखै खुआ कऽ विदा कऽ दइ छथिन। जँ लग-पासक बरियाती रहल तँ भोजनो करबै छथिन।

मुदा रामबाबू बरक पिता श्रीलालजीकेँ कहने रहथिन-

“ई धमौरा छी, तहूमे हम सभ खबास पट्टी छी। हम बरियातीकेँ मरजाद राखब। मरजादक विहान भने जलखै खुआ कऽ डाली-पाती देब तखन बेटीक विदागरी करब।”

तैपर बरक पिता श्रीलालजी कहने रहथिन-

“अहाँक शर्त्त हमरा मंजूर अछि मुदा गाड़ी-घोड़ा जे दू-दिन अँटकत तेकर भाड़ा अहाँकेँ देमए पड़त।”

तैपर रामबाबू कहने रहैन-

“हम डालीमे गाड़ी-घोड़ा, गाजा-बाजाक खरचा जोड़ि कऽ देब।”

सूर्यास्तसँ पहिने मरजादक भोज शुरू भेल। अँगनासँ लऽ कऽ दरबज्जा तक बरियाती आ सर-कुटुम खेनाइ खाइले बैसला। गामक नतहारी खरिहाँनमे बैसला। मरबापर बर, बरक पिताजी, बरक माम,

बरक बहनोइ आ बरक संगी-साथी मिला कऽ एगारह गोरे भोजन करए बैसला। सबहक आगाँमे फाइवरबला प्लेट, कटोरा आ गिलास परसल गेल। तुलसी फूल चाउरक भात, राहैड़क दालि, भाँटा-अल्लू आ सजमैन-कोबीक तरूआ, अल्लू-कोबीक तरकारी, तिलौरी, चरौरी, अमलाक अचार, तरलाहा मेरचाइक संग टमाटरक चटनी, सलाद, पापड़ आ शुद्ध देशी घी परसल गेल। तदोपरान्त भोजन शुरू भेल। जखन लोक दालि खेनाइ बन्न कऽ देलक तखन बैगन-अदौरी परसल गेल। बैगन-अदौरीक बाद बरी-झोरी चलल। अँगनामे दोहरा-तेहरा कऽ बरी-झोरी बाँटल गेल मुदा दरबज्जापर बारीक एक्केबेर बरी-झोरी बाँटि कऽ चलि गेल। कियो देखनिहार नै छल। अँगनेमे सँ दही-चीनी आ सकरौरी बाँटब शुरू भेल। जखन दरबज्जापर दहीक बारीक आएल तँ रामबाबूक बहनोइ मुरहद्दीबला श्यामलाल बजला-

"दरबज्जापर आ खरिहाँनमे एक्केबेर बरी-झोरी बाँटल गेल अछि। खेनहार सभ झोरी मंगिते अछि।"

रामबाबू दहीक बारीक संगे छला। श्यामलालक बात सुनिते देरी हुनकर टीक ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ बहनोइकेँ कहलखिन-

"की कहलिऐ, झोरी मंगिते अछि? हँ यौ, जे भोज नै करै छै, से दालि बड़ खाइ छइ। यौ के आइ-काल्हि मरजाद रखै छइ। हमरो गाममे एकसँ एक भूप सभ छैथ मुदा बरियातीकेँ रातियेमे विदा कऽ दइ छथिन।"

तैपर मुरहद्दीबला श्यामलाल बजला-

"छोड़ू ने, कियो अपन नाओं करैत अछि। अहाँ बरियातीकेँ मरजादक भोज खुएलौं तँ अपन नाओं केलौं। दोसर गप्प जे भगवान अहाँकेँ सकरता देने छथिन। तँए मरजाद रखलौं।"

रामबाबू बजला-

“हमरोसँ बेसी सकरताबला लोक अही धमौरा गाममे अछि। देखै छिऐ जे रातियेमे विदागरी कऽ दइ छथिन। किएक तँ जँ विहान भने विदागरी करथिन तँ दस-बीस कप चाह आ किछ गोरेकेँ जलखैयो खुआबए पड़तैन किने।”

श्यामलालकेँ सारक बात विसाइन जकाँ बुझेलैन ओ बजला-

“अच्छा जेतए लोक जे करैए तेकरा छोड़ू आ आब चूप रहू। बरियातीमे सभ तरहक लोक छथिन, सुनता तँ की कहता?”

रामबाबू बजला-

“की कहता? कियो ने किछु कहता। हँ, वएह किछु कहता जे कहियो भोज नै केने हेता।”

श्यामलाल सोचलैन जे जँ आगा किछु बजै छी तँ ई आओर बेसी बजता तइसँ नीक जे चुप्पे रही आ एतए-सँ ससैर जाइ। ओ चुपचाप ओतए-सँ जाए लगला।

मुदा रामबाबू चुप नै रहला ओ आगाँ बजला-

“देखब अहूँकेँ। एक्केटा बेटी अछि। देखब केतेक खर्च करै छी आ केहेन बर-बरियातीक स्वागत करै छी।”

ई गप श्यामलालो सुनलखिन मुदा चुप्पे रहब उचित बुझलैन। तँए चुप्पे रहला। ओ दलानपर जा कऽ पड़ि रहला। रहि-रहि कऽ हुनका सारक बात ‘देखब अहूँकेँ... ।’ कानमे गुंजए लगलैन।

दलानपर एला श्यामलालकेँ दू-तीन मिनट भेल हेतैन कि अँगनामे हल्ला सुनलैन। ओ हड़बड़ा कऽ उठला आ अँगना पहुँचला। अँगनामे रामबाबू जोर-जोरसँ बजैत रहथिन-

“कहू तँ अहाँ सभ केतेक दही जिआन कऽ देलिऐ। कोनो कि ई दही पोडरक छी? फुल क्रीम सुधा दूधक दही छी। चालीस रूपैये लीटर

दूध कीनि कऽ दही पौड़ल गेल अछि।"

तैपर बरक पिताजी बजला-

"यौ समधी, भोज-काजमे किछ-ने-किछ जिआन हेबे करै छइ। की करबै अहिना होइ छइ।"

रामबाबू बजला-

"अहाँ कहै छिऐ, की करबै? केहेन-केहेन लोककेँ बरियाती अनने छी जे हमरा बेइज्जत करैपर वीर्त अछि। अहीं कहू जे एकटा पातमे दही घटि जाइत तँ हमर प्रतिष्ठा रहैत?"

श्रीलालजी बजला-

"आब हल्ला केलासँ कोन फेदा। एतेक खरचा केलौं तइले कोनो बात नहि आ दू-चारि सेर दही जिआन भऽ गेल तइले तामस करै छी। लिअ हमरेसँ लगती भेल। हमहीं माफी मंगै छी। मुदा बरियातीकेँ किछ ने कहियौन। ओ सभ फेर अपनेक दरबज्जापर नइ औता। हम अपनेक कुटुम भेलौं, केतेको बेर आएब।"

रामबाबूकेँ अपन गलती महसूस भेलैन। ओ बजला-

"नै समधी, अपनेसँ कोनो गलती नै भेल। हमरासँ बड़का भूल भेल। हम सभ बरियातीसँ माफी मांगै छी।"

श्रीलालजी जल्दी-जल्दी हाथ धोइ कऽ भरि पाँजमे रामबाबूकेँ लऽ छातीसँ लगा लेलखिन।

तीन भाँइक भैयारीमे रामबाबूकेँ एक्केटा बहिन सुगाबती जे तीनू भाएसँ छोट छली। सुगाबतीक बिआह मुरहद्दी गाममे भेल रहए। ओकर दुल्हा श्यामलालजी जमानाक मैट्रिक पास मुदा कोनो प्राइवेट वा सरकारी नौकरी नै करैत। पाँच बिगहा जोतसीम जमीन। श्यामलालजी खेती-गृहस्ती कऽ आ चटिया सभकेँ टीशन पढ़ा अपन

परिवारिक गाड़ीकेँ खींचैत दुनू बेटाकेँ बी.ए. पास करौलैन। हुनकर जेठका बेटा दिल्लीमे प्राइवेट नौकरी करैत अछि आ छोटका बेटा पंचायतेमे पंचायत शिक्षक। जेठका बेटा विवाहित जे अपन परिवार दिल्लीए-मे संगे रखैत। छोटका बेटा कुमारे। सभसँ छोट बेटी रीता जे झूमक महासेठ महिला कौलेज- मधुबनीमे बी.ए. फाइनलमे पढ़ै छैथ। श्यामलालजीक दुनू परानीक मनमे छेलैन जे छोटको बेटाक बिआह कऽ ली। मुदा छोटका बेटा कहलकैन जाबे रीताक बिआह नै हएत ताबे अपन बिआह हम नै करब।

श्यामलालकेँ सासुरमे सार रामबाबूक बातक बड़ आनि लागल छेलैन। हुनका दिमागमे हरदम रामबाबूक बात नचैत रहैन। 'देखब बेटीक बिआहमे बरियातीक केहेन स्वागत करै छी।'

ओ मने-मन संकल्प केने छला जे सरबेटीक बिआहमे बरियातीक जे स्वागत भेल रहए तइसँ नीक स्वागत रीताक बिआहमे बिरयातीक करब। रामबाबू जेहेन खेनाइ बरियातीकेँ खुऔने रहथिन तइसँ नीक खेनाइ खुआएब। बरियातीक मरजादो राखब। फरवरीमे रीताक बी.ए. फाइनल-परीक्षा हएत। ऐगला मार्चमे ओकर बिआह कऽ देब। जुग-जमाना खराप छइ। जवान बेटीकेँ राखब नीक बात नहि। कोनो ऊँच-नीच भऽ जाएत तँ खनदानक नाक कटि जाएत।

श्यामलालजी आगू सोचैत रामबाबूक बेटा तँ गैमन इंडियामे नौकरी करै छै जे ढौआ कमा कऽ टाल लगा देने छइ। बेटेक कमाइपर रामबाबू एहेन डील-डालसँ बेटीक बिआह केलैन। मुदा हमरा तँ से नै अछि। एकटा बेटा परिवारक संग दिल्लीमे प्राइवेट नौकरी करैत अछि ओ रीताक बिआहमे बड़ सहयोग करत तँ लाख टकासँ बेसी थोड़े करत। छोटका पंचायत शिक्षक छी। ओहो बड़ देत तँ दूसँ अढ़ाइ लाख देत। गोटेक लाख अपना लग अछि। कुल मिला कऽ चारि-साढ़े

चारि लाख टाका देखै छी। बेटा सभकेँ जखने कहब जे बरियातीक मरजाद राखब तखने बेटा सभ कहत जे अहाँकेँ कुकुर कटने अछि जे बरियातीक मरजाद राखब। आब मरजाद के रखै छै, जे अहाँ राखब। मामक बेटाकेँ तँ दू नम्बरबला ढौआक कमाइ छैन तँए मरजाद राखि अपन नाओं केलैन। मुदा हमरा सभकेँ कोन दू नम्बरक कमाइ अछि। हमरा सभकेँ नाओं नइ करबाक अछि। रामबाबू आगाँ सोचैत मुदा किछु भऽ जाएत मरजाद रखबे करब। आ नीकसँ स्वागत-बात करबे करब।

धमौरासँ एलाक तेसर दिन बेरु पहर ओ गहुमक खेत दिस जाइत रहैथ। रस्तामे एकटा दू बिगहाक पोखैर अछि जइमे केचली भरल छेलइ। पोखैरक महारपर पहुँचला कि हुनका सारक बात मोन पड़ि गेलैन- ‘देखब अहूकेँ एक्केटा बेटी अछि, बरियातीक केहेन स्वागत करै छी... ।’

ओ महारपर ठाढ़ भऽ गेला। किछु जेना फुरबे ने करैन। नजैर पोखैरमे भरल केचलीपर पड़लैन। दसो बर्खसँ ई पोखैर मरना भऽ गेल अछि। तेकर कारण छल पोखैरक फटेदारक आपसी झंझट। ओ सोचला जँ ई पोखैर कोनो तरहेँ लीजपर हमरा भेट जाए तँ ऐमे माछ पोसि कऽ दू-चारि लाख टकाक उपार्जन भऽ सकैत अछि। ऐ पोखैरमे चारिअना फाँट हमरो अछि। ओ मने-मन सोचि लेलैन- जेना जे करए पड़त, करब मुदा ई पोखैर लीजपर लेब।

श्यामलाल चोट्टे घुमि गेला। गामपर एला पछाइत पोखरिक पाँचो फटेदारक बैसार केलैन। पाँचो फटेदारकेँ चाह-पान सेहो करौलखिन। चाह-पानक बाद कहलखिन-

“पोखैर हमरा दऽ दइ जाउ। जे उचित ढौआ हएत हम देब मुदा बाबा-परबाबाक खुनाएल पोखैरकेँ बर्बाद जुनि करै जाउ।”

किछु काल तँ बड़ धोल-फचक्का भेल मुदा अन्तमे पच्चास हजार रूपैआ सलानापर तीन बर्खक लेल श्यामलालकेँ पोखैर देबाक लेल सभ कियो सहमत भेला।

श्यामलाल पोखैरक केचली साफ करा जाल गिरौलैन। केचली साफ करबैमे जेतेक ढौआ लागल छेलैन जंगलिया माछसँ ओतेक आमद भऽ गेलैन। पोखैरक केचली नीकसँ साफ करा पोखैरमे चून गिरौलखिन। अगते अद्रा नक्षत्रमे तमुरिया हेचरीसँ माछक जीरा आनि कऽ पोखैरमे देलखिन।

माछक खोराकी लेल खइर, गोबर आ मूर्गी फार्मसँ मूर्गीक बिष्टा समय-समयपर पोखैरमे गिरबैत रहलखिन।

सुतरलैन, कातिक पूर्णिमाक विहान भने मलाह बजा पोखैरमे घुमौआ जाल फेकबौलखिन। एक्के छापमे दस-बारहटा दू साए ग्रामसँ आधा किलो धरिक माछ जालमे फँसि कऽ ऊपर भेल।

श्यामलालक मन खुशीसँ नाचए लगलैन। हुनका भेलैन जे आब हमर सपना साकार भऽ जाएत। सार जे कहने रहए 'देखब अहूँकेँ' ओ मोन पड़लैन। सोचए लगला फागुनमे रीताक बिआह करब। मलाहसँ पुछलखिन-

"अदहा फागुनमे ई माछ केतेक-केतेक टा भऽ जाएत?"

मलाह कहलकैन-

"पनरह फागुनमे ई माछ सभ कमसँ कम अदहा किलो भाकुर आ बिकेट एक किलोसँ सबा किलो धरिक भऽ जाएत।"

श्यामलाल आगाँ पुछलखिन-

"अदहा फागुनमे ऐ पोखैरसँ केतेक माछ ऊपर हएत आ ओइसँ केतेक ढौआक आमदनी हएत?"

तैपर मलाह कहलकैन-

“कमसँ कम पनरह क्विंटल माछ निकलत जइसँ दू लाखसँ बेसी ढौआक आमदनी हएत।”

9 मार्चकेँ रीताक बिआहक दिन तय भेल। एक मार्चकेँ पोखैरमे महजाल गिरा माछ बेच कऽ दू लाख पच्चीस हजार टका श्यामलालजीकेँ आमदनी भेलैन। पच्चास हजार टका पोखैरक फटेदारकेँ दऽ एक लाख पचहत्तर हजार रूपैआ श्यामलालजी रखलैन।

पहिने तँ दुनू बेटा बरियातीकेँ मरजाद रखैक विरोध केलकैन मुदा श्यामलालजी जखन धमौराक घटना सुनौलखिन तँ दुनू बेटा मरजाद रखैले सहमत भऽ गेलैन। बरक सरोमानक भार दुनू भाँइ अपना माथपर आ खेनाइ-पीनाइ आ स्वागतमे खर्च भार श्यामलालजी अपना ऊपर लेलैन।

रातिमे रीताक बिआह छल। रामेबाबूक समैधक दोसर बेटा जे रेलबेमे इंजीनियर पदपर कार्यरत छथिन हुनकेसँ बड़ धूम-धड़क्कासँ रीताक बिआह भेल। एक साएसँ ऊपर मरकड़ी रोडपर लगौल गेल छल। ताजमहल जकाँ पण्डाल बनौल गेल छल। रौतुका खेनाइमे पुरी-तरकारी, सलाद, तैपरसँ माछ आ अन्तमे सुधा दूधक बनल रसभरी आ वैष्णवक लेल पुरी, तरकारी, पलाउ, दालि फ्राइ, सलाद, पापड़ आ अन्तमे रसभरीक बेवस्था छल। आइ जलखैसँ पहिने बरियाती सभकेँ फलहार करौल गेलैन। फलहारमे सेब, समतोला, दारीम, अंगुर आ पँच-पँच छिम्मी मालभोग केरा छेलइ।

जलखैमे कचौरी-सब्जीपर चारि तरहक खीर जइमे चननचूर चाउरक खी, मखानक खीर, सेवइक खीर आ सबुरदानाक खीर तैपरसँ गाजरक हलुआ छेलइ। मरजादक भोजमे एगारहटा तरकारी,

अदौरी, बरी, घी, पापड़ सलाद, फूल क्रीम सुधा दूधक दही आ नारीयल, छोहाड़ा, किसमिस, इलायची देल सकरौरी सेहो खुऔल गेल। बरियाती सभ श्यामलालकेँ दिल खोलि कऽ यश देलकैन। दुल्हाक माम रामबाबूकेँ कहलकैन-

"ओना तँ धमौरामे बर-बरियातीक बड़ स्वागत भेल छल मुदा मुरहद्दीमे जे बरियातीक स्वागत भेल ओइ आगाँ अहाँ अठारह भेलौं आ श्यामलाल बाबू बीस भेला।"

तैपर रामबाबू बजला-

"यौ समधी श्यामलालो बाबू तँ हमरे बहनोइ छैथ किने। ओहो तँ धमौरेक अंग भेला किने।"

श्यामलालजीकेँ बरक मामक बात सुनि मनमे सबुर भेलैन जे बिआहक सभ खर्च ऊपर भऽ गेल। होइतो अहिना छै किने जे जखन कियो भोज-भनडारा करैत अछि आ भोज-भनडारा केनिहारकेँ यश भेट जाइ छै तखन हुनका संतोख हेबे करै छैन।

श्यामलालजी बजला-

"यौ समैध हम जे अपने लोकैनकेँ कण-साग लऽ कऽ स्वागत केलौं से सभ हिनके सबहक[1] आर्शीवाद छिऐन।"

बहनोइक बात सुनि रामबाबूक छाती सूप सन भऽ गेलैन, हुनका पैछला बात जे भारतीक बिआहमे बहनोइकेँ कहने रहथिन, ओ मोन पड़ि गेलैन। श्यामलालजीक महानता देख हुनका आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलैन।

❑

शब्द संख्या : 2195

---

[1] रामबाबूक



नन्द विलास राय

जनम- २ जनवरी १९५७ ई.मे। पिताक नाओं- स्व. बच्चा राय, माता- स्व. दुर्गा देवी आ श्रीमती परमेश्वरी देवी। गाम+पोस्ट- भपटियाही, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार) मोबाइल नम्बर- ९९३१९०९६७१

जीविकोपार्जन- कृषि।

शैक्षणिक योग्यता- बी.एस-सी।

प्रशैक्षणिक योग्यता- आइ.टी.आइ. (टर्नर)

साहित्यिक कृति- (१) सखारी-पेटारी- लघु कथा संग्रह, (२) मरजादक भोज- लघु कथा संग्रह, (३) छठिक डाला- कविता संग्रह, (३) बहिनपा- एकांकी संचयन।

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-55-1

कथा संग्रह

दूधबेचनी

राम विलास साहु

दूधबेचनी

राम विलास साहु

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-71-1

दाम : ₹ 200/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

Doodhbechnee
Collection of Short Stories
by Shri. Ram Vilas Sahu.

समर्पण

कथाक सत्तैर

गामक गाछी

हमरा गाममे एकटा पुरान गाछी अछि जे पच्चीस-तीस बिगहामे अखनो पसरल अछि। ई गाछी साए बर्ख पूर्व गामक जेठरैत बाबा लगौने छला। गाछो तेहने पैघ-पैघ आ विशाल अछि। जइमे बहुतो प्रकारक आम, जामुन, कटहर, बरहर,गुल्लैर, सीरीष, शीशो आ नीमक गाछ अछि। केतेको आमक गाछक स्वरूप सुन्दर तँ केतेको विकृतो अछि। गामक बुढ़-बुढ़ानुसक कहब अछि जे किछु बर्ख पूर्व ई गाछी जंगल सन छल। दिनोमे अन्हारे आ डेरौन लगै छल। तँए लोक एकरा 'भुतहा गाछी'क नाओंसँ जनै छल। बरसातक समयमे गाछी घनघोर जंगल जकाँ भऽ जाइ छल। जइमे बानर, सियार, हरिण, नीलगाए, जंगली सुगरक संग अनेको साँप-कीड़ाक बसेरा छल। मुदा किछु लोक सभ मिलि हिम्मत जुटा कऽ बहुतो जानवरक शिकार केलक आ किछु जानवरकेँ खिहारि-खिहारि भगौलक। मुदा अखनो बानर आ सियारक राज गाछीपर अछिए। जखन जानवर उकपात करए लगैए तखन जालमे फँसा भगबैए। वर्त्तमानमे गाछी जानवरसँ मुक्त भऽ गेल अछि।

बरखा बितते गामक लोक गाछीमे जे घास-झाड़-झंखार रहैए तेकरा काटि-छाँटि साफ कऽ सुन्दर बनबैए। गामक गरीब लोक गाछीमे पत्ता खड़ैर, सुखल ठौहरी जारैन खातिर लऽ जाइए। जारैनक

समस्या जे गरीबमे बनल रहैए, ओ समस्या ऐ गाछीसँ दूर करैए।

वसन्तक आगमन होइते बच्चा-बेदरू, स्त्रीगण आ बुढ़-पुरान सभ कियो गाछीमे निःसन्देह जाइए। गामक सैयो धिया-पुता खेल-कूद करैए। किछु पुरान विशाल गाछ जे सुखि जाइए तेकरा गाछक मालिक काटि-काटि लऽ जाइए आ ओइ स्थानपर नव गाछ रोपि दइए। अखन तँ ओ गाछी सुन्दर-मनोरम लगैए। जे गाछी पहिने भुताहि आ डेरौन छल। अखन गामक लोककेँ सुख-दुखमे सहायक बनल अछि। जाड़क समयमे गरीब लोक पत्ता खड़ैर टाल लगा जारैनक भण्डार करैए। सुखल डारिक ठेहुरीसँ घूर जरा जाड़ भगबैए। कुम्हार लोक ओइ गाछीसँ पत्ता खड़ैर ओइ पत्तासँ आबा लगा माटिक बरतन पकबैए आ हाट-बजार बेच गुजर करैए।

जाड़क अन्त होइते वसन्तक आगमन होइए कि गाछी मज्जरसँ वौड़ाए जाइए। मज्जरक गमकसँ वातावरण सुगन्धित भेलासँ गाछीमे मधुमाछी भनभनाइत मधुक छत्ता लगा मधु जमा करैमे मस्त भऽ जाइए। कोयली, पपीहाक संग रंग-रंगक चिड़ै-चुनमुनी डारिपर बैस वसन्ती हवामे झूलि-झूलि अपन-अपन मधुर गीत सुनबैए। बच्चा-बेदरू, किशोर-किशोरी सभ गाछीमे तरह-तरह केर खेल खेलैत वसन्ती माहौलक आनन्दसँ पुलकित होइए। देखते-देखते किछु दिनमे मज्जरसँ टिकुला देख गाछीक मालिक सभ प्रसन्न भऽ खोपड़ी आ मचान बना गाछीक ओगरवाहि करए लगैए।

जखने आम कोशा जाइए तखने तँ गाछीक शोभा एतेक रमणीय भऽ जाइए जेकर वर्णन केनाइ साधारण विद्वानक लेल सहज नै अछि। गाछ फलक भारसँ झूकि लोककेँ सदिखन जेना किछु कहए लगैए तहिना भऽ जाइत अछि। तेज हवा आकि अन्हर जखने अबैए तखने सभ लोक, दिन हुअए कि राति, उठि-पुठि कऽ गाछीए आबि

आम बीछ-बीछ लऽ जाइए। कहियो-कहियो तँ आमक खातिर झगड़ा-झंझट सेहो भऽ जाइए। मुदा बुजुर्ग आबि झंझटकेँ सुलझा दइ छैथ। जखन रोहैण नक्षत्रमे आम पाकब शुरू होइए तखन गाछबलाक अलाबे आनो-आन सभ आम बीछि लऽ जाइए। दिनकेँ के कहए जे रातियोमे नीन हरा जाइ छइ। राति अन्हरिया हुअए कि इजोरिया एक दोसराक गाछक आम बीछि कऽ भागि जाइए।

गाछीमे आम पकैसँ पहिने गाछीक मालिक वा रखबार गाछीक रखबारि करए लगै छैथ। किछु मालिक अपने नै कऽ सकै छैथ तँ दोसरकेँ रखबारि दऽ दइ छैथ। एक राति बिरजू मालिकक आम बुधुआ आ चुनुआ चोरा कऽ बिछैत रहए। ओइ समयमे बिरजू मालिकक बेटी अड़हुलिया आ हुनकर पुतोहु वीणा, गाछी पहुँचली। ओ दुनू गोरे देखली जे बुधुआ आ चुनुआ आम चोरा कऽ बीछि रहल अछि। मालिक खोपड़ीमे नीनसँ सुतल छला। दुनू ननैद-भौजाइ मीलि कऽ दुनू आमक चोरकेँ हिम्मतसँ पकैड़ लेलक। चुनलाहा आमक जलखरी छोड़ि चुनुआ हाथ छोड़ा कऽ भागैमे सफल भऽ गेल। मुदा बुधुआकेँ दुनू ननैद-भौजाइ मिलि कऽ दबोचि जोर-जोरसँ हल्ला करए लगली।

हल्ला सुनि बिरजू मालिकक नीन टुटलैन। नीन टुटिते बिरजू मालिक दौग कऽ आबि बुधुआपर बिगड़ैत बजला-

“अँए रौ बुधुआ, तोरा ई केना हिम्मत भेलौ जे हमर आम चोरा कऽ भागि जाइ छँह। तोरा ई नहि बुझल छौ जे साए दिन चोरकेँ होइ छै तँ एक दिन साधुओकेँ होइ छै। ई केतुका कानून छै रौ। आँखि बन्न आ डिब्बा गाइब। ई तँ हमर बेटी-पुतोहु फ्राउन्टेपर पकड़लकौ मुदा हम पकैड़तियौ तँ जहिना तूँ आम खा आँठी फेंक दइ छीही तहिना हम तोरा खा कऽ तोहर हड्डीकेँ फेंक दैतियौ।”

एतेक बात सुनि बुधुआ जोरसँ गरजैत बाजल-

“ई हाल हमरा अहाँ की करब। अहूँ ने जेलक जरलाहा रोटी खा कऽ अपन किश्मत जारि लेब।”

बात बढ़ि कऽ बतंगर भेल जाइत रहइ। गाछी लोकसँ भरल रहइ। कियो कहै खूब मारू, हाथ-पएर तोड़ि दियौ तँ कियो कहै जानसँ नै मारियौ मालिक।सभ लोक बैस शान्तिसँ दण्ड-जुरिमाना लीअ। तँ कियो कहै छोड़ू की नाहँकमे आमक खातिर झगड़ा बढ़बै छी। झगड़ा-रगड़ासँ दुश्मनी हएत, अनेरे कोट-कचहरीक फेरामे पड़ब।

बाता-बाती होइते रहै कि बुधुआक बाप झगरू, मंगल काका आ गामक मुखिया धनपति बाबूक संग गाछीमे पहुँचला। मुखियाजीकेँ पहुँचिते सभ लोक शान्त भऽ गेल।

मुखियाजीक जेहने नाम छैन तेहने मनो। धनपति बाबू मनक धनी लोक सेहो छैथ। मुखियाजी बिरजू मालिक आ बुधुआसँ बेरा-बेरी बयान सुनि दुनू गोरेकेँ समझाबैत बजला-

“देखू, हमरा-अहाँसँ जानवर आ गाछ-बिरीछ नीक अछि। जानवरो बड़का-छोटका मिलि कऽ प्रेमसँ जंगलमे रहैए। तहिना गाछो-बिरीछ गाछीमे वा वन-जंगलमे बड़का-छोटका एके संगे मिलि कऽ रहैए। हमहूँ सभ बड़का-छोटका मिलि कऽ संगे रही। तखने जिनगीमे शान्ति भेटत आ बेसी खुशीसँ जीवन कटत। ई छोट-छीन बातक खातिर की झगड़ा करै छी। मानलौं बुधुआ आम चोरा कऽ बीछि लेलक। एकटा बातपर विचार कऽ अहाँ सभ कहू जे ई गाछी जखन जानवरक अड्डा छल, घनघोर जंगल छल तखन ई गाछी भुतहा गाछीक नाओंसँ जानल जाइ छल। तइ समयमे गामक गरीबे सभ मिलि जानवरकेँ भगौलक आ जंगल-झाड़केँ काटि साफ केलक। तँए आइ ई गाछी स्वर्ग सन बनल अछि। गामक बुढ़ लोकक कहब अछि

जे बुधुआक दादा कालेसर अही गाछीक गछकट्टीमे दबि मरि गेला। आइ कालेसरक बेटा-पोता पाँच-दसटा आम खसल-पड़ल बीछि लेलक तँ कोन बड़का जुलुम केलक। तखन बिना पुछने रातिमे आम बिछलक से गलती भेल। ऐ गलतीकेँ सभ कियो माफ कऽ दियौ आ बुधुओ अपन गलती स्वीकारत।”

मुखियाजीक बात सुनि बुधुआ अपन गलती स्वीकारैत हाथ जोड़ि माफी मांगलक।

अन्तमे मुखियाजी कहलखिन-

“आजुक समाजमे जे परिस्थिति अछि जइमे कोन गलत आ कोन सही अछि तेकरा फरिछाएब बड़ कठीन अछि। तखन एहेन गलती नै करी जइसँ उलैझ समाजे पछुआए जाए। क्षमासँ महानता सेहो बढ़ैए आ समाजक संतुलन सेहो बनल रहैए। जँ छोट-छोट बातक उलझनमे पड़ब तँ लड़ि-झगैड़ कऽ सभ मरब आ समाजक विकास रूकि जाएत। आइ धरि लड़ाइ-झगड़ासँ किनको किछु नै भेटलै। फोकटमे हानि छोड़ि लाभ नहि भेल।”

मुखियाजीक अदर्शवादी वचन सुनि सभकेँ ज्ञान भेल। सभ कियो एके स्वरमे बाजल-

“ई गाछी हमरा सबहक पैतृक धरोहर छी, समाजक इज्जत छी।”

❒

शब्द संख्या : 1021

कमतिया हबेली

जानकी घोलाति आ मधुमाछी जकाँ भनभनाइत रस्ता धेने घर जाइ छेली। रस्ते कातमे मदीना दादी बैस किनको बाट जोहि रहल छेली। मदीना दादी झुनकुट बुढ़, सौंसे गामक लोक दादी कहि उद्बोधन करै छैन। नजैर पड़िते मदीना दादी जानकीसँ पुछि देलखिन-

“जानकी केतए-सँ अबै छहक। एकटा काज कऽ दाए तखन जइहह।”

जानकी बजली-

“दादी एकटा की दू-चारिटा कऽ देब मुदा घरपर कियो नइए आ ओसरापर चिल्हकाकेँ सुता कऽ गेल छेलौं। बहुत अबेर भऽ गेल, कनैत हएत।”

मदीना दादी बजली-

“हइ, तूँ बड़ हड़बड़िया छह, एतेक देर तोरा कोनो चिन्ते ने छेलह आ हम टोकि देलियह तँ हड़बड़ी लगि गेलह! हमरो घरपर कियो नइए, हमरा चाह पीबैक मन भऽ गेल। चुल्हिपर पानि खोला दूध दऽ चाहक पत्ती देलिऐ, चीनीक डिब्बा खोलि जखन चीनी दैतिऐ तँ चीनीए नहि। लेधुरिया सभ डिब्बा खोलि सभटा चीनी खा गेल। तूँ कनी चुल्हबा दोकानसँ दू टकाक चीनी लाबि दाएह। चाह बनिते अछि

हमहूँ पीब आ तोहू पीबि लिहह।”

जानकी बजली-

“दादी, दोकान दूर अछि हम अपने ऐठीम जाइ छी चिल्हको लऽ लेब आ चीनीओं नेने अबै छी, तखने बैस गप्पो करब आ चाहो पीब।”

मदीना दादी निराश नइ भऽ आश भरल नजैरसँ निहारैत बजली-

“जा तूँ कोनो कम गहींरगर छह।एके तीरे दूटा शिकार करए चाहै छह।”

जानकी रमकैत-दमकैत घर दिश विदा भेली। घरसँ दूरे छेली कि चिल्हकाकेँ कनैक अवाज सुनली। अवाज अकानिते दुलकी दैत आँगन जाधैर पहुँचली ताधैर चिल्हका कनैत फफचीहारि काटि, उनैट-पुनैट ओसारसँ निच्चा आँगनमे गिर गेल छल। हाँइ-हाँइ नूनू बौआ कहि जानकी कोरामे लऽ छातीसँ सटा दूध पीबए लगली। चिल्हका दूध पीबिते अलिसा गेल। कागतक टुकड़ीमे चीनीक पुड़िया बना एक हाथमे लऽ चिल्हकाकेँ कोरामे सम्हारि-पकैड़ मदीना दादीक घर दिश विदा भेली।

मदीना दादी चुल्हिपर कखनो चाहो निहारैत आ कखनो रस्तोपर नजैर दौड़बैत रहैथ जे जानकी कखनी चीनी लऽ कऽ आएत जे चाह बनत।

जानकीकेँ कनी देरी भेलासँ चुल्हिपर चाहो उधिया-उधिया अधजरू भऽ गेल। मदीना दादी आश लगौने ने अगुतेली आ ने घबड़ेली। ओ जनै छेली जे जानकी चिल्हकौर छी चिल्हकाक लटारममे लगि गेली।

मदीना दादीक मन खुद-बुद होइते छेलैन कि जानकी हहाइते

पहुँचली आ बजली-

“दादी की कहू, कनियोँ अँगना जाइमे देरी होइतए तँ हमर चिल्हका प्राण तियागि दइतए। ओकरे सम्हारैमे लटारम भऽ गेल, तँए देरी लगल।”

मदीना दादी बजली-

“से तँ तूँ बड़ होशियारि-सुतिहारनी छह। जे मनमे ठानै छह से कए कऽ दम मारै छह। लाबह चिल्हकाकेँ हम पकड़ै छी, तूँ चाहमे चीनी दऽ छानि दूटा गिलासमे नेने आबह। चाहो पीअब आ गप्पो करब।”

जानकी चुल्हिपर चाह देखलक तँ ओ खदैक-खदैक कऽ अधजरू भऽ गेल छल। सुगन्धो चहाइन-चहाइन, जल्दीसँ तीन-चारि चुटकी चीनी दऽ हिला-मिला कऽ उताइर दूटा गिलासमे लऽ मदीना दादी लग एली।

एक गिलास मदीना दादीकेँ आ दोसर गिलास अपने लेली। चाह तँ जरि कऽ जराइन भऽ गेल छल मुदा पीबैमे सुअदगर रहइ। दू-चारि घोंट लैत मदीना दादी जानकीकेँ टोकलखिन-

“जानकी तूँ तखनी केतए-सँ अबै छेलहक से तँ नै बजलह?”

जानकी बजली-

“दादी, की कहू! अपन हारल, हाथतर गेने कहैमे अपने संकोच होइए। मुदा हिनका नै कहबैन से उचित हएत। जा कहब नै ता समाधानो केना हएत। बहुत दिनक बाद मालिकक हबेली गेल छेलौं।”

बिच्चेमे मदीना दादी बजली-

“की कोनो पैघ बात वा काज छेलए की?”

जानकी बजली-

"दादी, हमरासँ तँ बेसी अनुभव हबेलीक अहींकेँ हएत।"

मदीना दादी बजली-

"हबेलीकेँ तँ हम आब नाओं चर्च नै करै छी। ओकरे मारल तँ तीन पीढ़ीसँ दुख काटि रहल छी। पहिने तूँ कहऽ ने जे हबेली किए गेल छेलह?"

जानकी बजली-

"दादी, अहूँ खैन-खा कऽ हमरेपर लगल छी। कहुना छी तँ गामक मालिकक हबेली छी किने, जँ कनियोँ बाजबमे हुसि जाएब तँ गामोमे ने बास हुअ देत।"

मदीना दादी बजली-

"तोरा ने डर होइ छह, हम तँ हबेली कहियो ने मानलिऐ आ ने मानै छिऐ। ओइसँ नीक तँ गामक गरीब-दुखिया जे जाइते मातर टुटलोहो ओछाइन बिछा आदरसँ बैसा कऽ हाल-चाल पुछबो करैए आ एक गिलास पानि-चाह पीआ कऽ विदा करैए। दुखो-सुखक धड़ीमे सोझहा आबि मदैत करैए। मुदा जेकरा तूँ हबेली कहै छहक आ आनो सभ कहै छै तेकरा हम कमतिया बुझै छी।"

जानकी बजली-

"से केना दादी! जे गामक मालिक जमीन्दार छैथ ओ कमतिया केना भेल?"

मदीना दादी बजली-

"तूँ बुझबहक केना, तोहर उमेरे की भेलह हेन। ओ की गामक डीहबासू छी। ओ तँ बाहरसँ आबि गाममे बसि कऽ सबहक जमीन हरैप जमीनदार बनि गेल आ गामक लोककेँ गुलाम जकाँ दिन-राति

खटबए लगल। जेतेक शोषण आ दुख ने कमतिया सभ समाजक लोककेँ देलकै जे समाज टुटि छिड़िया गेल। तेकर नाम तोँ ऊँचगर करै छह, तोरा अखनी परिचय नै लगलह हेन।”

जानकीक मोनमे जिज्ञासा बढ़लै आ अचरज सेहो भेलै तखने मदीना दादीसँ पुछि पड़ली-

“दादी नै बुझलौं कमतिया हबेलीक किरदानी। कनी फरिछा कऽ बता दिअ।”

मदीना दादीक मनमे जेना उमकी एलैन तहिना उमकैते बजली-

“तूँ बुझबहक केना! भरि दिन तँ अपन दुख-धन्धामे लगल रहै छहक, ओइसँ जे समय भेटै छह तँ फहरदवाल मारि ऐ अँगनासँ ओइ अँगना गाल बजबै छहक। कहियो ई भेलह जे गामक बुढ़-बुजुर्गक लगमे बसि गामक बितलाहा दिनक चर्च करी आ ओहन-ओहन बातक कान धरी जे आगू काज देत।”

जानकी बजली-

“दादी, जहियेसँ होश आ बोध हएत तहियेसँ ने सीखब-बुझब। एतेक दिन तँ गरीबीए-मे दिन काटलौं, अखैन धीए-पुतामे ओझराएल रहै छी। जहियासँ हबेली छोड़ि दुनू परानी अपन काजकेँ गहि कऽ पकड़लौं तहियासँ महड़ा भादोकेँ खाइ छी। घरबला छह मास घरक काज करैए आ छह मास परदेश कमा लबैए, तँए दू सेर अन्नो देखै छी आ दूटा रूपैओ।”

मदीना दादी बजली-

“हबेलीक काज किए छोड़ि पड़ेलह?”

जानकी बजली-

“की कहबैन दादी, जाबे हबेलीक काज करै छेलौं ताबे पेटो ने

भरए। काजक मजूरीबला काज कम, बेगारीए बेसी खटै छेलौं। दुपहरिया लगा कऽ दुनू परानी खटै छेलौं आ बोइन तँ दूर रहए, पनपिआइयो ने भरि बुत्ता भेटै छेलए। खेतीक काज करै छेलौं तँ बोइनो ऐ सालक पौंरुका, पौंरुकाबला बोइन तेंसरा झझमझेसँ दइ छेलए। कहियो भाभंस नै भेल जे दुनू साँझ चुल्हि पजारितौं।”

मदीना दादी बजली-

“आइ किए, कथी-ले कमतिया ऐठीम गेल छेलहक से ने कहह।”

जानकी बजली-

“दादी, अहाँसँ छाम की। हमरा तँ मन जरैए। जँ अहाँकेँ कहब तँ सुनिते अहूँकेँ देहमे आगि नेसि देत।”

मदीना दादी बजली-

“तूँ की कहबह कमतियाक किरदानी, हम तँ सभ खेल-बेल देखने-भोगने छी आ देह लगा मारने छी। मुदा बताबह ने तोरा की भेलह।”

जानकी बजली-

“दादी, पौंरुका साल अखाढ़-सौनमे हबेलीबला मालिक दुहारिक माटि बुझू खाए गेल। भोरमे अन्हरौखे आबि निहोरा करैत कहै लगल जे हमर खेत अफारे रहि जाएत। गोरहा खेत छी कहुना धनरोपनी कऽ दएह। चास नहि लगत तँ बास केना हएत। सुनि हमरो मन ढलि गेल। हमर घरबला हर जोति गजार-कादो करए आ हम किछु बोनिहारक संगे धनरोपनी कऽ देलिऐ। एक दू दिन नै दुनू परानी बीस दिन खटि देलिऐ। बीस दुनी चालीस पेसरी बोइन भेल। माने पाँच मन भेल। पाँच मनमे तीन मन तँ कहुना कहि-सुनि देलैन मुदा दू मन धान अखन धरि नै देलक। सालसँ बेसी भऽ गेल। एक तँ

आसीन-कातिक मास अहुना सालक तेरहम मास होइए, तहुमे एतेक रास पाबैन-तिहार...। खर्चे-खर्च...।

घरबला बाहर कमाइले जाएत। सोचलौं हबेलीमे दू मन धान कमाएल बोनि अछिए, आनि कऽ एक पसेरी धान चूड़ा-ले ताड़ि देबै आ एक पसेरी धान भाड़ि-ताड़ि कऽ मुरहीक चाउर बना लेब। हाथे मुसरे चूड़ा कुटि लेब दोसर दिन मुरही भुजि देबै जे घरबलाक बटखर्चा दऽ देबइ। जे धान बँचत तेकरा उसैन सुखा कुटि लेब। ओइ चाउरसँ कातिक खेप जाएत।"

मदिना दादी बजली-

"की भेलह, देलकह आकि नै देलकह?"

जानकी बजली-

"की कहूँ दादी, कोनो की एक दिन बोइन-ले हबेली गेलौं हेन। जाइत-जाइत टाँग टुटि गेल। बोइन जोखैमे घिघरी कटबैए। अखैन तक नै देलक। जखन जाइ छी तँ बेगारीए काज अढ़ा दइए। कहु ने हम अपने चिल्हकौर छी। सक-बुत्ता लगबे ने करैए, केना भिरगर काज कऽ देबइ। अही खातिर हमर घरबला आनठाम काज करैए मुदा हबेलीक काज नै करैले जाए चाहैए।"

मदीना दादी बजली-

"आब तूँ बुझि गेलह, बोइन आनैमे तेरह डिबिया तेल जरि जेतह। हमरो घरबला ऐ कमतिया हबेलीक अढ़ौती आ बेगारी खटैत-खटैत दुनियाँसँ चलि गेला। एक मन मरूआ आ दू मन धान कर्जामे नेने रही तेकर सुदिक सुदि जोड़ि कऽ कर्जे तरमे दस कट्ठा चौमास आ दू कट्ठा बासडीहो लिखा हरैप लेलक। ई जे हमर डीहबास देखै छहक से सरकारीए परती छिऐ। घरबलाक मुइला पछाइत जखन बास डीहपर सँ भगा देलक तखन हमर दुनू बेटा माथपर छिट्टामे माटि उघि-

उघि भरि कऽ बाँस-खुट्टा ऐ समाजसँ मांगि-चांगि कऽ घर बनौलक आ हमहूँ बुढ़ारीमे राति दिन संग देलिऐ। दुनू बेटा कमतिया हबेली आइ धरि घुमि नै गेल। काजे ने एतेक सीखौने छी जे कहियो बैस नै खाइए। काजक लूरि रहने काजे चढ़ल रहैए। तूँ हबेलीक फेरमे लगले छह।"

बिच्चेमे जानकी बजली-

"दादी, हम कमेलहा बोइन नै छोड़बै। हमरोसँ सूदिक सूदि जोड़ि नेने अछि। आइ जँ हमहूँ कहिये देलिऐ जे बोइन राखू दू मनक तीन मन असूल कऽ लेब, अहाँक अन्नो-पानि दुना-तिगुना बढ़ि जाइए आ गरीबक बोइन जे छह मास, साल भरिक पछाइत देबै तँ ओकर सूदि नइ हेतइ। हमहूँ सूदि लगा कऽ लेब।"

मदीना दादी बजली-

"सुना कऽ कहलहक की नहि?"

जानकी बजली-

"सुना कऽ! चिकैर कऽ कहलिऐ। जहाँ ने कि सुनलक कि जेना बिढ़नी कटलापर लोक छिटपिटा उठैए तहिना छिटपिटा लगल। मुदा किछु कहैक साहस नै भेलइ। जँ किछु बजितए तँ समाजसँ दस बेकतीकेँ बजा पानि उताइर दैतिऐ।"

मदीना दादी बजली-

"साँझ पड़ि गेल। छोड़ह अखैन हबेलीक गप-सप्प। जेते काल ओझराएल रहब तेते काल घरक काज पाछु पड़ि जाएत। सौंझुका पहर बीतल जाइए, पहिने घरमे साँझ-बाती देखा लइ छी।"

जानकी बजली-

"दादी, हमहूँ जाइ छी साँझ-बाती दइले। अबेर भऽ गेल।

चिल्हको सम्हारब आ भानस-भात करब। काजपर सँ घरबला अबै छैथ तँ सबेरे खा कऽ सुतै छैथ। मुदा कमतिया हबेलीक किरदानी कहियो फलिसँ सुना देब।"

मदीना दादी बजली-

"कहियो किए बजलह, आइ अबेर भऽ गेल आ अखन गपक बेर नै काजक बेर छी तँए, अखन तहूँ जा काल्हिये दुपहरियामे अबिहह फलिसँ सभ गप सुना देबह।"

मदीना दादीकेँ गोर लागि जानकी अपन घर दिस विदा भेली। कमतिया हबेलीक किरदानी बुझैक जिज्ञासा मनमे बढ़िये गेल छेलैन। मनमे होइत रहैन जे कखनी राति बितत जे काल्हि दुपहरमे दादी लग जाएब। सभ काज सम्हारि भानस-भात कऽ पतिकेँ खीआ अपनो खा कऽ सुति रहली। भिनसरे उठि हाँइ-हाँइ काज कऽ पनपिआइ आ खेनाइ बना काजसँ निवृत्त भऽ गेली। चिल्हका नेने दुपहरियेमे दादी लग पहुँचली।

मदीना दादी नहा-खा हुक्कामे चिलम बोझि सोंट मारि सुनगबै छेली। दादी जानकीकेँ अबैत देख बजली-

"कनियाँ, पुबरिये ओसरापर बैसह। किए तँ तोरा कोरामे चिल्हका छह एतए बच्चाकेँ हुक्काक धुइयाँ लगि जेतह। हमहूँ उठि कऽ पुबरिये ओसरपर अबै छी। अखैन कोनो काजो नहियेँ अछि। निचेनसँ गप-सप्प करब।"

जानकी बजली-

"दादी, अहाँ ने काजसँ निचेन छी मुदा हम तँ असगरूआ छी, बहुत काज पछुआएल अछि। तोहूमे अपने परदेश जाइबला छैथ। हुनको ओरियान करए पड़त। हम तँ कमतिया हबेलीक किरदानी जनैले अहाँ लग एलौं हेन। काल्हि ने हमरा आ ने अहाँकेँ समय रहए

जे बता दइतौं।”

मदिना दादी बजली-

“चटपट नै करह कनियाँ, पहिने कनी हुक्का पीअ दएह तखन निचेनसँ गप करब।”

मदीना दादी जोर-जोरसँ सोंट मारि हुक्का पीबए लगली। चिलमक कंकर जरि गेल तखन हुक्का मोख लग गड़ लगा ठाढ़ कऽ पुबरिया ओसारपर आबि चटकुनी बिछा बैसली।

दुनू गोरेमे चौबगलीक गप-सप्प शुरू भेल। जानकी चारू कातक गपक भूमिका बान्हि कमतिया हबेलीक केन्द्र बिन्दु बना मदीना दादीसँ पुछि देलखिन।

मदीना दादी बजली-

“जखन भागवतक कथा जकाँ कहबह तँ सुनबहक तँ मुदा एक कानसँ सुनबहक आ दोसर कानसँ बोहि जेतह। से नहि तँ तपसी जकाँ धियान लगा सुनबहक तखने किछु जानबो करबहक आ हमरा मुइला पछाइत गाममे तोहू ने दादी हेबहक, जेना आइ हम छी। गाममे केहेन-केहेन कारनामा सभ भेल मुदा लोक सहैत रहल, ने कियो बुझैले तैयार आ ने कियो विरोध केलक। मुदा आजुक दिन किछु बदैल गेल आ लोकोमे विचारो बदललैए। जे नजायजकेँ विरोध करए लगलैए। तैयो समाजमे पछुआएलकेँ मौजरे केतेक छै जे विरोध करत। अखनो गरीब लोकक डेग-डेगपर शोषण होइ छै आ ओ देह लगा सहैत रहैए, ओकर संगो दइबला कियो ने तैयार होइ छइ।”

कनखरल जानकी बिच्चेमे पुछि देलखिन-

“दादी, की गरीबक मुँहमे बोली नै छै, की विवेकक कमी छै जे एतेक दुख सहितो शोषित होइए। आखिर एकर कारण की अछि?”

मदीना दादी जोरसँ हुंकार भरैत बजली-

"सुनह तेकर कारण कोनो एकेटा छै जे झब-दे कहि देबह। बहुत रास कारण छै। एकरा लग महाभारतो फेल अछि। मुदा हमरा जे बुझल आ अनुभव कएल अछि तेकर एकटा अंश कहै छिअ। पहिने-राजा महाराजाक शासन चलै छेलै हुनका सबहक कानून बड़ कठोर! छोट-छोट गलती करैबलाकेँ नमहर-नमहर सजा भेटै छेलइ। लोक ओइ कठोर दण्डक डरसँ विलाइ बनल रहै छल। खेतक मलगुजारी बड़ करगर छेलइ। जइ साल उपजा होइ छेलै तइ साल तँ कहुना लोक मलगुजारी दइये दइ छेलै मुदा जइ साल रौदी वा दाही होइ छेलै तँ मलगुजारी चुकता नै कऽ पबै छेलइ। पहिने खेतीक अलावा ने दोसर कोनो साधन छल आ ने कोनो रोजगार, जइसँ लोक कमा कऽ पेट भरैत। गामक गाममे भुखमरी होइ छेलइ। गरीब लोक सभ बाल-बच्चा आ अपन घर-परिवार छोड़ि ढाका-मुंगेर, मोरंग कमाइले चलि जाइ छल। गामक जमीनदार कर्जे तरमे गरीबक सभटा जमीन लिखा हड़ैप लेलक। मलगुजारी नइ देलापर राजा सेहो खेत सभकेँ निलाम कऽ लइ छल। ओ जमीन सभ अपन लगुआ-भगुआ सभकेँ दऽ दइ छल। ओही निलामीबला जमीनक जागीर बना केतेको जमीनदार बनल। किछु लोक मुंशी-मनेजर आ शर्कलक हाकीमसँ मिलि कऽ गरीब आ किसानक जमीन जे निलाम होइ छेलै ओ कनी-मनी रूपैआ दऽ अपना-नामसँ जमीनक पट्टा बना लइ छेलइ। ऐ तरहेँ मिथिलाचंलक मूलवासी गरीब भऽ गेल। बहुतो डीहबासु सभ भूमिहीन बनि बिलैट गेल। जे जमीनबला छेलै से गरीब मजदूर भऽ गेल आ बाहरसँ आबि कमतिया सभ जमीनदार भऽ गेल। ओ सभ अपन-अपन कामत बना रहए लगल। ऐठामक भूमिहीन मजदूर पेटक खातिर कमतिया सबहक खेतमे मजदूरी, बेकारी, नोकरी-चाकरी करै छल। कमतिया सबहक धिया-पुता पढ़ि-लिख आनठाम हाकिम-

हुकाम बनि शहरमे रहैए आ कामतक जमीनक उपजासँ नेहाल भऽ गेल। तैयो संतोख नै भेलै। ऐठामक गरीब-मजदूरकेँ कर्जेतरे बेगारी खटैत-खटैत कहियो पर नइ भेलै जे विरोध करितै। जखन देश अजाद भेल तेकर किछु बर्खक पछाइत गरीब-मजदूरक यूनियन बनलै। कम्युनिष्ट पार्टीक लोक सह देलकै। गामे-गाम कमतिया सबहक जमीनपर लाल झंडा गारि डंका बजा-बजा चुनौती देलकै। खेतक उपजाकेँ लूटिस करौलक। तखन किछु कमतियाकेँ कमेदाममे जमीन बेचए पड़लै। मुदा जे कमतिया अपना सबहक समाजमे हिल-मिल रहए लगल ओ सभ कोठा-सोफा बना डीहबासु भऽ गेल। मुदा चालि-चलैन पूर्णत: नै बदललै। कहबी छै- चालि, प्रकृति आ बेमाए ई तीनू मुइने जाए। लोक सभ जे कहौ मुदा हम तँ सभ दिन कमतिया कहलिऐ आ अखनो कहै छिऐ। तूँ सभ ने धनिक आ कोठा-सोफा देख हबेली कहै छहक।”

बिच्चेमे जानकी बजली-

“दादी, अहाँक बात सुनि बहुत जानलौं मुदा अहाँ कमतिया कहै छिऐ आ हम हबेली कहै दिऐ, तखन दुनू जोड़ि कऽ कमतिया हबेली बाजब नीक नै हएत की?”

मदीना दादी बजली-

“बजबाक लेल मुँहक कोनो भाड़ा-खर्चा लगै छै, जे मन हुअ से बाजह मुदा उचित बुझि बाजबह तखन ने समाजोक लोक सीखत। इएह उनटा-पुनटा भेने ने आइ मिथिलाक लोक आनठामसँ बेसी गरीब अछि। जेकर सुधि आइ धरि कियो ने लेलक।”

❑

शब्द संख्या : 2385

घुमि गाम चलु

रबिया पत्नी संगे खेत आ चौमासमे तरकारी उपजा कऽ परिवार चलबैए। बैसारी समयमे घर-घरहटीक मजूरी सेहो करैत अछि। तइसँ भरि पेट भोजन तँ भेट जाइए मुदा बाहरी खर्चाक लेल कोनो आमदक साधन नै अछि। रबियाक पत्नी गर्भवती अछि। एक राति भोरबेमे पत्नी रधियाक पेटमे जनमासुतक दरद शुरू भऽ गेल। रबियाक हाथ छुच्छ, एको छदाम नै जे कोनो वैदकेँ बजा दवाइ-दारू करैत। मुदा भगवान ऐ बिपैतमे मदैत केलखिन आ सुहरदे बेटाक जन्म भेल। भोरे अन्हारेमे रबिया उठि गामसँ पल्हैनकेँ बजा देख-भालमे लगा आ दोकानसँ उधारे रधियाक किछु दवाइ, करू तेल आनलक। खुशी मने रबिया रधियाकेँ सोइरी घरमे खेनाइ-पिनाइपर धियान दैत रहल। बेटाक जन्मक खुशीमे गुड़-आदी गाममे बाँटलक। मुदा छठमा दिन छठीहारक लेल रबियाकेँ चिन्ता रहए जे छठीहारक समान आ नवका वस्त्र इत्यादी केना आएत। रबियाकेँ एकटा उपाय सुझल जे किछु खेत भरना राखि महाजनसँ रूपैआ उठा सभ काज सम्पन्न कऽ दइ छी आ फेरो कमा कऽ रूपैआ महाजनकेँ सठा खेत आपस लऽ लेब। ऐ तरहेँ रबिया काज सम्पन्न केलक। बेटाक जन्म गरीबी आ दुखक समय भेल तँए नाओं रखलक- दुखना।

दुखनाक जन्म भेने रबियाकेँ परिवारक खर्च बढ़ि गेल। कहियो

दवाइ तँ कहियो तेल-कुर आ कहियो नुआँ तँ कहियो खेलौना। खेत पहिने भरना लगल रहए, चौमाससँ खर्चा पुंगबे ने करइ। आ अपनो घरेमे ओझराएल रहए। बोइन-मजूरी करि कऽ कोनो धरानी पेट भरैत गेल। दू बर्खक पछाइत बेटीक जन्म भेल। दुखक घड़ीमे परिवारक खर्चा बढ़ैत गेल।

एक दिन रबिया पत्नी रधियासँ विचार केलक जे आब आगू दिन केना कटत? रधिया बजली-

“बेटा-बेटी नमहर हएत तँ काजक मदद अहूँकेँ आ हमरो करत। ताबे कोनो तरहेँ दिन खेपु आ हमहूँ सकताइ छी तखन दुनू गोरे कमाएब। तइले किए मन छोट करै छी।”

दिनो बढ़ल आ बेटो-बेटी बढ़ि सियान भऽ गेल। रबिया विचार केलक जे पहिने बेटीक बिआह कऽ लेब पछाइत बेटाक बिआह करब। किए तँ बेटीक बिआहमे दान-दहेज लगत। जँ पहिने बेटाक बिआह करब तँ बेटीक बिआह बेरमे बेटा-पुतोहु अरंगा करत।

रबियाक बेटी अड़हुलिया बड़ सुन्नर, चतुर आ काजमे कुशल अछि। गामो-समाजक लोक अड़हुलियाकेँ देख सराहैए। बगलेक गामक धनिक लाल बाबू प्रतिष्ठित बेकती छैथ। ओ अपन बेटा लेल अड़हुलियाक हाथ मंगै खातिर रबियाक घर पहुँचला। रबिया बाजल-

“हम गरीब छी, अहाँ धनीक। हम केना अहाँमे सकब जे अहाँक बेटासँ अपन बेटीकेँ बिआहब।”

मुदा धनिक लाल बाबू अपन घरमे कुशल गृहणीक अत्यन्त जरूरी बुझि आ सुन्नर कन्या देख, सोचैत-विचारैत रबियाकेँ कहलक-

“देखू रबि, सम्बन्ध दिलक मिलानीसँ होइए धनसँ नहि। हमरा अहूँ किछो नै देब। मात्र कुल लक्ष्मीसन कन्या खुशी-खुशी देब बाँकी सभ काज हम समझब। अहाँक कोनो खर्च नै करए पड़त। हम अपना

बेटा आ परिवारमे सभकेँ समझा-बुझा लेब।"

रबिया सभ बात सुनि मने-मन सोचलक धनिकलाल बाबूक विचार उत्तम छैन। हमरा नै कोनो खर्च हएत, हमर बेटी सुखी घर जाएत। तहि क्रममे गप-सप्प चलिते रहए कि धरक बनल अड़हुलिया हाथक स्वादिष्ट जलखै आ चाह भेल। रबिया उठि आँगन जा कऽ पत्नी आ बेटासँ विचारि दरबज्जापर आबि धनिकलाल बाबूसँ बाजल-

"देखू, हम अपनेक प्रतिष्ठा राखलौं। शादीक रिस्ता मंजूर करै छी मुदा हमरो इज्जत अहाँ राखब।"

जखने बिआहक बात गामक लोक सुनलक तँ दाँते औंगरी काटए लगल। कियो कहए जे बिआह केना हेतै, किएक तँ अमीरी-गरीबीमे बड़ फर्क होइ छइ। मुदा अधिक लोकक सोच रहै जे अहिना सम्बन्ध अधिक लोक करत तखन ने ऊँच-नीचक खाधि मेटाएत आ समाजसँ दहेज प्रथाक अन्त हएत। किछु लोक तँ परोक्षेमे विरोध करए मुदा गामक अधिक लोक प्रसन्न अछि जे गरीबक बेटीक बिआह नीक घर-बर आ प्रतिष्ठित परिवारमे भऽ रहल अछि।

रबिया बेटीक बिआहक तैयारीमे जुटि गेल। मुदा सोचैत रहए दहेज ने नै दिअ पड़त, तैयो तँ बेटीक बिआह आ विदाइ करबामे बहुतो समानक जरूरत पड़बे करत किने। बरियाती आ कुटुम सबहक मान-मर्यादा, खान-पानक लेल रूपैआक इंजाम करैये पड़त किने।

रबियाक किछु खेत पहिने भरना लगल छल आ शेष जे पाँच कट्ठा बँचल छेलै ओहो भरना लगा अपन बेटीक बिआहक काज सभ मिलि करए लगल।

बिआहक दिन बरियाती समयपर पहुँचल। गामक लोक सभ आ उपस्थित कुटुम सभ मिलि बरियातीक स्वागत करए लगल। नाश्ता-पानि, चाहक पछाइत वर्तमान रीति-रेबाजसँ दुल्हा-दुल्हिनक

बरमाला भेल। दुल्हा-दुल्हिनक जोड़ी देखैले गामक लोक उमैड़ पड़ल। सभ मने-मन राम-सीता सन जोड़ीकेँ असिरवाद देलक। बिआहक काज शुरू भेल आ बरियाती-सबहक भोजनक बिजौ भेल।

बिआहक काज सम्पन्न भेला पछाइत रबिया बेटीक विदाइमे लगि गेल। बेटी आइ नैहरसँ सासुर जेती तिनकर भार-दौर बरदगड़ीपर साँठि आ दोसर गड़ीपर पलंग, कुर्सी, अलङा, पीढ़िया, आलमारीक संग अनेकानेक चीज-वौस लादि बान्हि तैयार केलक। तेसर संफनीबला गड़ीपर ओहार दऽ दुल्हा-दुल्हिनक विदाइ कऽ रबिया अपन समधी- धनिकलाल बाबूक देहपर साल ओढ़ा कऽ गला-सँ-गला मिलल आ बाजल-

“समधी बाबू, अड़हुलिया आब हमर बेटी नहि, आब अहाँक छी। हम जे सकलौं से पुरा केलौं। कुल लक्ष्मी अहाँक देलौं।”

धनिक लाल बाबू रबियाक धिरज बान्हैत वचन देलखिन-

“अहाँक बेटी आब हमर इज्जत आ लक्ष्मी छी। हमरा रहैत कोनो तरहक कष्ट नै हएत।”

अड़हुलिया अपन सासुर पहुँच कऽ खूब खुशीसँ रहए लगली। कुशलतासँ सासु-ससुर आ पतिक सेवा, घरक काज, सुन्दर विचार आ बेवहार देख सभ कहए जे एहेन पुतोहु भगवान सभकेँ देथुन जे सबहक घर स्वर्ग बनल रहत।

अड़हुलियाक कमी रबियाक घरमे हुअ लगल। घरक काज आ ऊपरसँ मजदूरियो करबाक चिन्ता रबियाकेँ बढ़ि गेल। काजक भारसँ रधिया बेमार पड़ि गेल। रबिया विचार केलक जे बेटा- दुखनाक बिआह कऽ लइ छी। पुतोहु घरक काज करती, तइसँ पत्नीक काजक भार सेहो कमि जाएत आ किछु आराम सेहो भेटत। मुदा पुतोहु अपने बेटी सन काजुल बेवहारी आ सुन्नर करब।

एक दिन रबिया सनेश नेने बेटीसँ भेँट-मुलाकात करैले जाइत रहए। रस्तामे सोचबो करए जे समैधसँ बेटाक बिआहक चर्च करब।

समैधक घर पहुँच बेटीसँ भेँट करि समैध लग रबिया बैसल। गप-सप्पक क्रममे रबिया अपन बेटाक बिआहक चर्च केलक । समैध बजला-

"हमरा गामेमे पुबरिया टोलमे हमर पुरान मित्र रघुनीजी छैथ। हुनकर बेटी बुधिया बड़ सुन्नर, बड़ काजुल आ सुशील सेहो अछि। जखन अहाँ अपना बेटाक बिआह केतौ करब तइसँ नीक रघुनीजीक बेटीसँ करू। दुनू गोरे घुमैत-फिरैत चलू हम मित्रसँ भेँटो कऽ लेब आ बिआहक चर्च सेहो करब।"

टहलैत दुनू समैध रघुनीजीक द्वारिपर पहुँचला। चाह पीबैक क्रममे बुधियाक बिआहक चर्च भेल। रघुनीजी बजला-

"धनिकलाल बाबू, बुधिया कोनो हमरेटा बेटी छी आ अहाँक नहि छी। जेतए बढ़ियाँ हुअए, हमरो विचार रहत। हमरा-अहाँमे फर्के की अछि। मुदा एकटा बातक धियान राखए पड़त, हम गरीब छी गरीबे कुटुम करब। किए तँ गरीब-अमीरमे विचार आ बेवहारमे फर्क होइत अछि।"

तखने रबिया लड़की देखबाक इच्छा व्यक्त केलक। तैपर रघुनीजी अपन बेटीकेँ बजा देखौलक आ बाजल-

"इहए छी हमर बेटी- बुधिया, बजा-भुका कऽ देख लिअ।"

रबियाकेँ लड़की पसिन भऽ गेल।

रघुनीजी बेटीकेँ कहलक-

"बेटी, तूँ पहिने अपन हाथक बनल जलखै आ चाह नेने आबह, पछाइत खैनी-सुपारी सेहो नेने अबिहह।"

रघुनीजी मिथिलाक रिति-रेबाजसँ नवका कुटुमकेँ सम्मान करैत बेटीक हाथसँ बनल जलखै-चाह करा खैनी-सुपारी दऽ बिआहक दिन निसचित करबाक लेल गामक पण्डित दीनानाथ जीक घर पहुँचल। पण्डीजी शुभ बिआहक मुहुर्त पत्रामे देख बजला-

"बिआह पंचमीक दिन बड़ शुभ लगन अछि। मुदा एकटा विचार मानी तँ कहब।"

रघुनीजी बजला-

"बाजू ने पण्डीजी! अपनेक विचार कोनो कि गलत थोड़े हएत।"

पण्डीजी बजला-

"कम खर्चमे मन्दिरमे बिआह करू। की झेल-झटारमक लटारममे पड़ब।"

रघुनीजी रबिया आ धनिकलाल बाबू पण्डीजीक विचार मानि गामक मन्दिरमे बिआहक कार्यक्रम सम्पन्न करबाक निर्णय लेलैन। बिआह पंचमी दिन गामक मन्दिरमे मिथिलाक रीति-रेबाजसँ बिआह सम्पन्न भेल।

बेटा-बेटीक बिआह भेने रबियाकेँ खुशी तँ भेल मुदा चैन नहि भेल। खेत भरना लगने घर-खर्च पुंगबे ने करइ। खेतो कमि गेलै आ मजूरी सेहो। ऊपरसँ कपड़ा-दवाइक खर्च केना चलत। ऐ चिन्तामे रबिया दिन-राति डुमल रहै छल। एक दिन बेटासँ विचार करैत रबिया बाजल-

"गामक लोक सभ पंजाब-दिल्ली कमाइले जाइए, चलह ओकरे संगे दुनू बापुत अपनो सभ बाहरे कमाएब। घरमे दुनू सासु-पुतोहु मिलि काज करती। बाहरी कमाइसँ भरनाबला खेतो छोड़ा लेब आ कर्जो चुका लेब।"

दुखना अपन पिताक विचारसँ सहमत भेल। दुनू बापुत गामक संगबेक संग पंजाब चलि गेल।

रबिया दुनू बापुत पहिल बेर पंजाब आएल। ऐठामक वातावरण, जलवायु आ रीति-रेबाजसँ परिचित नइ अछि तँए ओ संगीक संगे काज करए लगल। लोक घर छोड़ि परदेश ऐ लेल अबैए जे कम समयमे बेसी मजूरी करि बेसी रूपैआ कमा घर भेजब।

दुनू बापूत रबिया कमाइ खातिर दिन-राति परिश्रम करए लगल। पंजाबमे धन-रोपनी करए लगल। धनरोपनीमे दुनू बापुत कुशल, कीलाक-कीला धनरोपनी कऽ खूब कमेलक। मुदा पंजाबक भीषण गरमी, एक दिन कीलेमे रबिया बेहोश भऽ गिर गेल। दुखना अपना पिताकेँ खेतमे गिरल देख झट-दे उठा कनहापर लादि डाक्टरक क्लिनीकपर पहुँचल। डॉक्टर दू-चारिटा इंजेक्शन आ कतेको रंगक टेबलेट देलखिन आ दुखनाकेँ बजा समझाबैत कहलखिन-

“देखू अहाँक पिताकेँ कालाजार बोखार भेल अछि। हिनका एक मास धरि इलाज चलत, अराम करत आ समयपर भोजन-दवाइ खा सुतत। खूनक कमी सेहो अछि।”

डॉक्टरक बात सुनिते दुखनाक होश उड़ि गेल। मुदा धिरजसँ मास भरि इलाज पिताक करौलक। जे कमेलहा रूपैआ छल से सभटा खर्च भऽ गेलइ। छुच्छे हाथे आगू इलाज केना चलत। सोचमे दुखना पड़ि गेल, असगर कमाएब कि पिताक सेवा करब। दुखनाक परेशानी देख मने-मन रबिया सोचए जे गाम-घरमे जे कियो बेमार पड़ैए तँ घरक सभ सदस्य मिलि सेवा करैए आ गामोक लोक आबि-आबि हाल-चाल पुछैए। दुख-सुखमे सहयोग करैए। मुदा परदेशमे सभ अपन-अपन कमाइक पाछू लगल रहैए। संगी सभ सेहो हाल-चाल नै पुछैए, मदैतक तँ बाते दूर। मदैत करत किए। ऐठामक लोक कोनो हमर

गामक छी आकि दियाद-वाद छी जे दू-चारि छेबो करए ओ अपन-अपन मजूरीमे लागल रहैए, हमरा लग किए औत।

रबिया बेटाकेँ कहलक-

“बौआ, ऐठामसँ घुमि अपन गाम चलह। अपना गाम-घरक जिनगीमे जे दया-धर्म, प्रेम-भाव आ सहयोग करैक विचार अछि से एतए नहि अछि। रहल कमाइ-खाइक बात तँ अपने गाममे एतेक मेहनत-मजूरी करब तँ ऐठामसँ बेसीए हएत। अपन गाम परदेश छोड़ि लोक आन परदेश आबि कऽ दिन-राति मेहनत कऽ ओतुक्का विकास करैए मुदा एतेक मेहनत जखन अपने देश आ अपने गाममे करत तँ अपनो देश आ गामक विकास हएत किने। घुमि गाम चलु बौआ, अपने घर रहि सभ मिलि मेहनतसँ गाम आ देशक विकास करब। ई बात बहुत पहिने डाक कहने छला- ‘घरक आधा रोटी नीक आ बाहरक सौंस रोटी नहि नीक।”

❑

शब्द संख्या : 1575

बिपैत

रामनाथ आ सितिया दुनू परानी बोनिहार अछि। दुनू मिल बोनि-बुत्ता कए घर चलबैए। शिबू आ मिट्ठू दूटा बेटा एकपीठिये अछि। दुनू तरा-ऊपरी, तेहने बान्हकाट ओहने बान्हल गठगर देह-दशा। दुनू बेटाक शरीर देख रामनाथ आ सितिया खेबा-पीबामे कोनो कोताही नै हुअ देलक। दुनूक धुआ-काया देख बैरनिक जेना नजैर लागि गेल। बर्खाक समय आएल रहए। कोसीक बाढ़ि गामक चारूकात घेरने। मुदा घर-अँगना बँचल रहइ। कोसीए-पानिमे नहेनाइ-धोनाइसँ लऽ कऽ सभ करम होइत रहए। दोसर कोनो उपाइयो नहियेँ रहै जे साफ पानि पीबैयो-ले आनत। कोसीक जट्ठर पानिक प्रभावे मालो-जाल सर्दियाह भऽ मरए लगल। आ लोको सभकेँ बोखार लागए लगलै। पीलहा रोग आ कालाजार बोखारसँ अनधुन लोक सभ मरए लगल। एमहर गाममे बाढ़िक पानिसँ कटनियाँ सेहो हुअ लगल। गामक गाम कटनियाँसँ भाँसए लगल। गामक लोककेँ जिनगी जीनाइ मोश्किल भऽ गेल। केकरो कियो देखैबला नहि जे बिपैतक ऐ घड़ीमे कियो मदैत करत। लोको आ मालो-जालो एतेक ने मरए लगल जे गाममे फौती आबि गेल। जेहमर देखिऐ कि सुनिऐ, चारूकात कन्नारोहैट होइत रहए। तही बीच रमनाथक छोटका बेटा- मिट्ठू सेहो बेमारीक चपेटमे आबि गेल। दिन-

राति बोखारसँ देह धधकैत रहै छेलइ। दवाइयो के आ केना आनत। जलमग्न इलाका, ने डॉक्टर, ने दवाइ-दारू आ ने दोसर कोनो उपाय। इलाजक अभावमे मिट्ठू प्राण तियागि सभ दिनक लेल कोसीमे विलीन भऽ गेल।

बेटाक मृत्यु भेने रामनाथ दुनू परानी सोगाए गेल। छौर-झँप्पीए दिन गति-सराध जे जनलक से अपने कऽ देलक। निच्चाँमे बाढ़ि आ ऊपरसँ बर्खाक झाँट करवनो ने दम मारए। दस-पनरह दिन धरि सौंसे गाम-घर पानिसँ घेराएल रहल। जखने पानि घटलै कि लोक सभ गाम छोड़ि-छोड़ि जान बँचबए पड़ाए लगल। लोक अपन-अपन ठौर पाबि कर-कुटमैतीमे जा गड़ लगौलक।

रामनाथो अपन शिबुकेँ कान्हापर बैसा माथपर झोरा-बोरामे किछु घरक समान लेलक आ विदा भेल। संगे, पत्नी सेहो बकरीकेँ पाँजमे कसि कऽ पकैड़ पानियेँ-पानि पतिक पाछू-पाछू विदा भेल।

आन गामक एकटा नहबरिया नाह खेबैत जाइ छल। देखते रामनाथ जोरसँ पुक्की देलक कि सुनिते नहबरिया नाह छींटपर लगौलक। सभकेँ नाहपर चढ़ा कोसी टपा देलक। सबहक जान पलटलै आ हिम्मत कऽ तीनू गोटए समान आ बकरी नेने निर्मली टीसनक घरमे आएल। एकटा कोणपर जगह पाबि समान राखि बैसै गेल।

रामनाथ पत्नीसँ बाजल-

“कहुना कालक मुहसँ बचलौं। जँ आइ घर नै छोड़ितौं तँ एकटा बेटा तँ नहियेँ रहल, जे छी बँचल तीनू सेहो कोसीए-मे समा जइतौं। बुझू वंशे चौपट छल।”

पतिक बात सुनि सितिया बजली-

“जे भेल से बिसैर जाउ, वंशक रखबार तँ अहाँ छी। एकटा बेटा

तँ अछिए। एकरे पालि-पोसि दियौ जे गाम-समाजमे वंशक नाओं नै मेटत।”

मन थीर होइते रमनाथ बाजल-

“अखन जीवित छी, मुदा भूखक आगि जरा कऽ मारि देत, तेकर कोन उपाय करब!”

सितिया बजली-

“खाइले तँ मोटरीमे सेहो किछु नहियेँ अछि। तखन आँचरक खूटमे एकटा पचसटकही बान्हल अछि मुदा सेहो तँ भीजले अछि। एकरे नेने जाउ, किछु बेसाहि आनू।”

रमनाथ ओ भिजलाहा पचसटकही नेने टीसने कातमे चाह-जलखैक दोकानपर पहुँचल। दोकानपर दोकानदार नहि, दोकानवाली छेली। ओहो झुनकुट बुढ़ मुदा थेहगर। रामनाथ दोकानवालीसँ बाजल-

“दस टकाक जलखै झब-दे दिअ, बड़ भूख लागल अदि। तहूमे हम तँ बरदासो कऽ लेब मुदा एगो छोट कनटिरबा आ घरोवाली अछि। भूखे लहालोठ भेल अछि।”

रामनाथ पचसटकही बढ़ा दोकानवालीक हाथमे दिअ लगल कि ओ बजली-

“रूपैआ तँ भिजल अछि, रंगो खराप भऽ गेल अछि। दोसर रूपैआ दिअ।”

रामनाथ मिरमिराइत बाजल-

“बड़ बिपैतमे छी। दोसर रूपैआ नइ अछि। कोसीक बाढ़िमे फँसल रही, एकटा बेटो दुखे मरि गेल। दस-पनरह दिनपर बाढ़ि घटल तखन कहुना जान बँचा अखने ऐठाम एलौं हेन।”

दोकानवाली बजली-

“रूपैआ चुल्हि लग सुखा लिअ, बेर-कुबेरमे आगू काज देत। जलखैमे कथी सभ लेब से बाजू।”

रामनाथ बुढ़ियाक आँखि दिस देखैत बाजल-

“चूड़ा-मुरही आ घुघनी, तीनू मिला कऽ दऽ दिअ।”

दोकानवाली निष्ठुर नहि, दयामन्ती। ओ अहगरसँ तीनू गोरे लेल तीनटा कागतक पतौड़ामे चटनीक संगे जलखै दऽ देलक आ कहलक-

“जाउ, पहिने खा कऽ पानि पीबू तखन ऐठाम आएब। हम चाहो पिआ देब।”

दोकानवाली बुढ़ियाक बात सुनि गुनधुन करैत रामनाथ किछु बाजल नहि, जलखैक पतौड़ा सम्हारि कऽ टाकाकेँ धोतीक खूटमे बान्हि विदा भेल। जलखैक एकहकटा पतौड़ा तीनू गोरे अपन-अपन हाथमे लऽ खाए लगल। जाबे भूखल रहए ताबे बाप-बेटा बिनु सुअदने खेलक, मुदा पछाइत सुआदि-सुआदि कऽ...।

सितिया एक मुट्ठी चूड़ा-मुरही बकरियोकेँ देलक आ अपनो खाइत बजली-

“जलखै बड़ सुअदगर अछि।”

तीनू गोरे जलखै खा, पानि पीब भूख मेटौलक कि रामनाथकेँ चाह पीबैक मन भेलइ। पत्नीकेँ कहलक-

“चाह पीबैक मन होइए, अहूँ पीब की?”

सितिया बजली-

“बिपैतसँ पहिने उबैर जाउ तखन ने सख करब। अखन तँ बिपैतीए-बिपैत पड़ल अछि।”

पत्नीक बात सुनि रामनाथ बाजल-

“बिपैत सहब मनुखक पैघ गुण होइत अछि। जाबे तक मनुख बिपैत नइ सहत ताबे तक सुख केना खोजत। दुखे-सुखक बीच ने मनुख जिनगी जीबैए। ठीक ओहिना जेना दू किनारक बीच धार आगू बढ़ैत-बढ़ैत सागरमे मिलैए। तहिना ने मनुखो स्वर्ग धरि पहुँचैए। ई संसारे दुख-सुखक खान छी, जइमे सभ जीव-जन्तु संघर्ष करैत जिनगी पार लगबैए। यएह ने असल जिनगीक सुख छी। जँ हारि मानि लेब तखन तँ आफद-बिपैतमे फँसल रहबे करब।”

पतिक नमगर-चौड़गर लेक्चर सुनि पत्नी चनकैत बजली-

“लगले बिपैतकेँ बिसैर गेलिऐ जे एना बजै छी। जाउ ने चाह पीअब तँ झब-दे पीब आउ। तखने ने ठरो-ठेकान लगाएब। ई तँ कोनो अपन गाम-घर छी नहि, आनठाम छी। काज खोजि करब, केतौ जगह ठेकानि कऽ खोपड़ी बना रहब, तखने ने आगूक जिनगी चलत। रोजी-पुजी तँ अछि नहि, मुदा समांग आ हाथ-पएर तँ भगवान देने छैथ। कमा कऽ खा तँ सकै छी।”

रामनाथ गपकेँ बिलमबैत चाह पीबैले विदा भेल।

रामनाथकेँ अबैत देख देकानवाली बुढ़िया चाह बनबए लगली। रामनाथकेँ लगमे अबिते बुढ़िया बजली-

“आबह बौआ, जलखै केलह? निम्मन लगलह किने? चाहो बनैए, बैस पीब लएह। असगरे पीबह कि घरोवाली पीतह? जँ पीतह तँ बजौने आबह, ओहो पीब लेत।”

रामनाथ बाजल-

“ओ केना औती। छोटका कनटिरबा, बकरी आ मोटरी-चोंटरी सेहो अछि।”

बुढ़िया बजली-

“जाह ने सभ किछु नेने बजौने आबह। चाहो पीब लेत आ बाजियो-भुकियो लेब। मनो बहटारल जेतैन। अपनो लग बेसीए जगह अछि। राति भरि अहीठाम रहि जइहअ।”

रामनाथ आस देख उठि कऽ विदा भेल। मनमे विचार केलक जे मुसाफिरखानामे नीनो नहि हएत आ टीसनपर चोरियो-चपाटीक डर रहैए। कहीं छोट ननुआगर बेटा वा बकरीए चोरि भऽ जाएत तखन तँ बिपैतक ऐ घड़ीमे आरो बिपैत बढ़ि जाएत।

सोचैत-विचारैत रामनाथ विदा भेल। पत्नी लग आबि बाजल-

“चलू, दोकानवाली बुढ़िया बजबैए। चाहो पीब लेब आ राति भरि ओतै रहियो जाएब। जगहो सुरक्षित अछि।”

झोरा-बोरा आ बकरी लऽ कऽ तीनू गोरे बुढ़ियाक दोकानपर आएल।

सितिया बुढ़ियाकेँ देखते पएर छुबि कऽ गोड़ लागि लगमे बैसल।

रामनाथ समान राखि बकरीकेँ कोण लग खुट्टामे बान्हि ब्रेंचपर बैस गेल। बुढ़िया चाह छानि दुनू परानीकेँ दऽ अपनो पीबए लगली। चाह पीबैत तीनू गोरेमे गप-सप्प हुअ लगल। पहिलुका जान-पहचान तँ छल नहि, तँए पहिने जानब-ठेकानब नीक जकाँ भेल। रामनाथ आ दोकानवाली बुढ़ियो कोसिकन्हेक वासीक जनतब भेल। तखन बुढ़िया बजली-

“बौआ रामनाथ, रौतुका खेनाइ बनाइये लइ छी। सभ कियो एहीठाम खइहअ आ सुतियो रहिहअ। हमहूँ तँ असगरे रहै छी। चाउर आ सजमैन अछिए। भात आ सजमैनक तीमन बना लइ छी, सभ कियो प्रेमसँ खाएब।”

सितिया मने-मन सोचए जे बुढ़ीक उमेर अस्सी बर्खसँ बेसीए

छैन। आ से भानस कए कऽ खुऔती आ हम सभ बैस कऽ खाएब से उचित नहि हएत। कोनो की हम सभ पाहुनाइ आएल छी। से नहि तँ हमहूँ भानस-भातमे लागि-भीर दइ छिऐन।

सितिया चोट्टे उठि कऽ सजमैन सोहि मेहींसँ बना बुढ़ीकेँ कहली-

“माए, अहाँ समान सभ देखा दिअ, हमहीं भानस करै छी।”

बुढ़िया बजली-

“ओना, भानस करबह तँ करह, आइ तोरे हाथक बनाएल खाएब। मुदा तोरा ई नहि बुझि पड़ह जे हम नै सकब। अहू उमेरमे लगधक साए आदमीक जलखै आ चाह सभ दिने बनबै छी, ओकरे कमाइ खाइ छी।”

भानस बनल। सभ कियो खा कऽ सुतैले बिछौन केलक। बिछौनपर पड़िते बुढ़िया अपन दुखनामा सुनबए लगल-

“बौआ, हमरो सासुर कोसीए पेटमे रहए। जोबहा गाम जनिते हेबह। हमर पति बाढ़िमे भँसियाएल एकटा लकड़ी पकड़ए गेल रहए, पानिक रेत आ ढल बड़ करगर छेलइ। लकड़ीक टोन नमहर आ मोटगर रहै जे पकड़मे सम्हार नइ खेलकै, बेसम्हार भऽ गेलइ। भँसैत-भँसैत पानिक लपेटमे चल गेल। अगम पानि रहइ। पलेटीमे घुमैत-घुमैत निच्चे मुहेँ डुबि गेलैथ आ ऊपरसँ लकड़ीक भारी टोन दाबि देलकै। से मुइला पछातियो लहाश केतए गेल से आइ धरि केतौ पता नइ लागल। हम समरथे रही, एकेटा बेटा कोरामे छल। तेतेक ने बाढ़ि-पानि आबि गेल जे केकरो कियो देखनिहार नहि रहल। दुरकाल समयमे हिम्मत करि कऽ साड़ीक फाँढ़ बान्हि बेटाकेँ अँचरामे लपेट पीठपर बान्हि लेलौं। आ हेलैत-हेलैत सिसौनी देने निर्मली एलौं। नैहरक कोनो आसे ने छल। माए-बाप आ भाए सभ जे कमाइले

बंगाल गेल से ओत्तै बसि गेल। जेकर कोनो थाह-पता नै अछि। जुआनीए-मे बड़का बिपैत पड़ि गेल। जन-बुत्ता कऽ लोकक घरक बरतन-बासन माँजि आ कुटोन-पिसौन कऽ कोनो-धरानी बेटाकेँ पोसलौं। बेटा चेतनगर भेल मुदा बपटुगर भेने बहलोलहा। ओहो लमपटहा सभ संगे बिगैड़ गेल। जुआड़ी-नशेरी बनि केतए भागल तेकर कोनो पता नहि। मरि गेल कि जीविते अछि से ईश्वर जानैथ। एहनो विकट बिपैतमे हम जीबठ बान्हि करेजाकेँ पाथर बना बिपैतकेँ सहैत जिनगी आगू ससरबै छी।"

बुढ़ीक बात सुनि रामनाथक हूबा जेना जागल। हुबगर होइत रामनाथ बाजल-

"बुढ़ी माए, बिनु आलमक नारी भऽ, केना एतेक हिम्मत केलिऐ!"

बुढ़ी उत्तर दैत बजली-

"बौआ, हिम्मत केना ने करितौं। हिम्मते बले ने नारीपनसँ पुरुखपन जगा भितुरका पौरुषकेँ जगौलक। मनुखक खगता समाजकेँ होइ छइ। समाज तँ ओ सागर छी जइमे छोट जीवसँ लऽ कऽ नमहर-नमहर जीव रहैए आ सबहक गुजर-बसर होइए। जेहेन मनुख तेहेन समाजक निर्माण होइए। बिपैत सहब हमरे-तोरेसँ ने लोक सीखत।"

रामनाथ बाजल-

"हम अपन बिपैतकेँ बड़ पैघ बुझैत रही, मुदा अहाँक बिपैत सुनि हमर दिल आ मन बुझू हेरा गेल। हमरा तँ किछु फुरबे ने करैए जे की करब आ की नइ करब।"

रामनाथकेँ समझाबैत बुढ़ी बजली-

"बौआ, हृदयकेँ सक्कत बनाहब। मनमे मनोबल जगा आगू मुहेँ चलह। पुरुख छह, पुरुखपना जगाहब। पत्नी-बेटा संगे नव जिनगी

ठाढ़ करह। समाजकेँ कसि कऽ पकैड़ चलह। सभ बिपैत बिर्डो-बिहाड़ि जकाँ उड़ि जेतह। तोरा तँ सभ किछु छहे, मुदा हमरा बिपैत छोड़ि आर के?"

❑

शब्द संख्या : 1576

झंझैटक जड़ि सिनुरिया आमक गाछ

किसुनदेव पित्तमरू आ बड़ कंजुस लोक अछि। आ पत्नी सेहो एकबोलिया तथा झगड़ाउ प्रवृतिक छइ। जटही नैहर छिऐ। तँए, सभ हिनका जटहीवाली कहै छैन। मुदा दुनू परानी किसुनदेव खूब हिमतगर आ मेहनती अछि। जखन किसुनदेव किछु बेसाह करैए तँ जटहीवाली एक-एक पाइक हिसाब लइए। ओहुना किसुनदेव किनको देखौंस नै कऽ कमे खर्चमे जिनगी चलबैत आबि रहल अछि। मुदा तैयो बरबैर जटहीवाली अकारणो हनपट करैत झगड़ैत रहैए। किसुनदेवकें बपौती सम्पैत किछु बेसीए भेटल छैन तँए खुशहाल अछि। ने किनकोसँ अराइर आ ने लेन-देन रखने अछि किसुनदेव। एकर कारण अछि किसुनदेवक हाथ-मुट्ठी सक्कत रहल आ मनबढ़ू सेहो नइ अछि। अपन खेत बेसी तीन फसिला छै, बाड़ीए-झाड़ीक साग-तरकारी सालो भरि खाइए। सालक अन्दर बढ़ोतरी जे अन्न आकि चीज-वौस होइ छै, ओ बेच रूपैआ जमा कऽ केतौ पाँच-दस कट्ठा जमीन खरीद लइए। सभ धनसँ पैघ किसुनदेव जमीनकें बुझैए। बेसी जमीन भेने खेतीक काज बढ़ि गेल। अपने दुनू परानी केतेक काज करत, समयपर मजदूरक अभाव रहने, खाद-बिआ आ पानिक महगी आ अन्नक दाम कम भेने किसुनदेवकें खेतीसँ रूचि कमि गेल।

किसुनदेव सोचलक जमीन बेसी अछि जइमे किछु जमीन तीन-

फसिला सेहो अछि, से नहि तँ दू-फसिला आ किछु भीठ जे एक-फसिला अछि, जइमे मेहनत बेसी आ फसिल कम होइए, आ जँ ओइमे दोसर तरहक फसिल करबो करब तँ तइले समांग चाही, तेकरो अभाव अछि। से नहि तँ निमन हएत जे दू-तीन बिघा भीठ जमीनमे आमक गाछ लगा दइ छी। आमक गाछ लगबैमे बेसी पूजीक सेहो जरूरत नहि...।

यएह सभ सोचि किसुनदेव साए पेड़ कलमी आमक आ साए पेड़ सरही आमक गाछ लगबैक निर्णय कऽ लेलक। गाछीक देख-भाल चारि-पाँच साल करए पड़त, बढ़ियाँ गाछी भऽ जाएत। जमीनो सुरक्षित रहत। फलो खाएब आ फल बेच रूपैओ कमाएब आ जारैन लकड़ीक अभाव सेहो कहियो ने हएत। पहिने कलमी आमक गाछ चुनि-चुनि सभ रंगक कीनि अनलक। जइमे रोहनियाँ बम्बइ, डोमा बम्बइ, चपड़ी बम्बइ, लंगड़ा बम्बइ, दुधिया सपेता, सीपिया, जर्दालू, गुलाबखास, अम्रपाली, दशहरी, कलकतिया, शीतल प्रसाद, फैजली, सिक्कुल आ कृष्णभोग इत्यादिक बाग लगौलक।

दोसर बागमे सरहीक चुनल आमक आँठीसँ गाछ बना रोपलक। जइमे रोहनियाँ, कटहरबा, गुड़हा, चीनियाहा, सुपरिया, करियम्मा, दरिमा, केलबा, मिश्री भोग, कर्पुरिया, कोहबा, लड्डुबा, सिनुरिया, सोनहा इत्यादि रंग-बिरंगक आमक गाछ लगा कलम बागकेँ चारूकातसँ टाट लगा घेर देलक। बागकेँ पटबै खातिर एकटा चापाकल सेहो गड़ा कऽ निचेन भऽ गेल।

किसुनदेवकेँ खेत-खरिहाँन, बाड़ी-झाड़ी, गाछी-बाँसक कोनो कमीए ने अछि। मुदा कमी अछि शिक्षाक। ऐ लेल किसुनदेव पहिनेसँ मन बनौने जे बेटा सभकेँ पढ़ाएब। मुदा जेठ बेटा- रामानन्द कम्म पढ़ि किसान बनल। दोसर बेटा- श्यामानन्द पढ़ि-लिख कऽ शिक्षक बनल

आ तेसर बेटा विद्यानन्द अंचलक किरानी बनल। किसुनदेवकेँ ऊँच्च शिक्षापर बेसी जोर नै रहए। किएक तँ बेसी पढ़ि लोक डॉक्टर-इंजीनियर आकि जज-कलक्टर बनि नौकरी खातिर घर-गाम छोड़ि आनठाम चलि जाइए। तेतबे नहि, एकभगाह सेहो भऽ जाइए, ओ अपने सुख-सुविधामे लगि माए-बाप आ गाम-समाजक सेवा करनाइ बिसैर जाइए। तँए, गाम-समाज अखन पिछैड़ उपेक्षित भऽ रहल अछि। दिनो-दिन पाछूए मुहेँ जा रहल अछि। जेबो केना ने करत, ओहन लोक भेलासँ सभसँ पैघ समस्या समाजमे ई अछि जे गामक सम्पैत सेहो घेरा जाइए, गाममे रहत नहि, रहत बाहर आ जड़ो-जमीन अपने राखत। समाजक लोक सभ जे अभावक जिनगी बिता रहल अछि। तेकर अनेक कारणमे एकटा ईहो कारण अछिए किने। तेतबे नहि, माए-बापकेँ सुख ने बेटासँ आ ने बेटाकेँ सुख माए-बापक भेटैए। जखन परिवारक सभ सदस्य मिलि-जुलि परिवारमे रहत तखन ने सबहक सुख-दुखक अनुभूति सभ करत आ एक-दोसरकेँ सहयोग सेहो हएत। गाम-समाजक असल संस्कृतिकेँ वएह ने बँचेने अछि जे गामेमे अछि। जे बाहर रहैए ओ तँ आन संस्कृतिमे रमि जाइए। तिनकासँ आशा करनाइयो मुर्खता अछि।

किसुनदेवक परिवारक विकास हर तरहेँ भेल। आमदनियोँ कोनो कम नै अछि। खेतीक आमदनी, शिक्षक आ किरानीक वेतन तैपर सँ गाछ-बाँसक आमदनी। एक तँ सोना, तैपरसँ सोहागा आरो चमक बढ़ा देलक। मुदा किसुनदेवकेँ ई विकास चिन्ता बढ़ा देलक आ पड़ोसिया सभ जरए लगलै। परिवारमे तीनू बेटाक विचारमे अन्तर भेने सुमत नै रहल। भैयारीमे एक-दोसरसँ कनाइर-अराइर हुअ लगल। सभ अपना-अपनीकेँ कौशल करए लगल। पत्नी- जटहीवालीक मुँह-पुरखी सेहो चलि गेल। जहिना किसुनदेवक परिवारक विकासक जे गति रहए ओ रूकि गेल। खाम्हें बले ने घर मजगुत होइए, जँ खाम्हेंमे

घुन लगि जाए तँ घर गिरबे करत किने।

किसुनदेवक घर गिरए लगल। गामक लोक सेहो नजैर चढ़ौने रहै छइ। किएक तँ लोकर्कें अपन विकाससँ जेते खुशी नै होइए तइसँ बेसी खुशी दोसराक घँसने होइए। हेबो किए ने करत। धनीकेँ रहलासँ जँ समाजकेँ कोनो उपकारे ने हेतै तखन तँ कहबियो छै किने- अन्हराकेँ जगने की आ धधराकेँ तपने की...। दोसरकेँ हुनकासँ की भेटलै। बड़ पैघ नमहर गाछ ताड़-खजूरक होइ छै मुदा केकरो ओकर छाहैरो भेटै छइ। अपने नीक कहलासँ नीक हएत आकि दस लोक नीक कहत तखने ने नीक हएत।

किछु दिनक पछाइत किसुनदेवक घरमे धक्कम-धुक्का हुअ लगल। झंझैट बढ़ैत गेल। कियो केकरोसँ कम नहि, किए कियो केकरो रूआब सहत।

आमक महिना रहइ। आमक कोनो कमी नहि, सैंकरो प्रकारक आम मुदा सभसँ नीमन आम सिनुरिया अछि। सबहक नजैर ओही आमपर लगल रहइ। सिनुरिया आमक जोड़ा ऐ परेपट्टामे नहि अछि। जेहने पिअर आ लाल रंगक रंग आ ऊपरसँ आधा आम सेनुर रंगसँ रंगल आधा सेरक आम, देखैओमे ललीचगर तेहने सुआदोमे मधु सन मीठ आ तेहने रसगरो। एक-दूटा आमक रस पीब कऽ लोक भरि दिन खेपि सकैए। नहि देखा कऽ तँ चोराइयो कऽ लोक सिनुरिया आम जरूर खाइए। किसुनदेवक पुतोहुओ सभ मोटाक-मोटा सिनुरिया आम अपन-अपन नैहर भेजैए। तैयो घरमे झंझैट ओइ आमक खातिर पसैर गेल। केकरो संतोखे ने, तँए झंझैट बढ़िते गेल आ भिनौजीक नौवत परिवारमे आबि गेल। निर्णय भेल जे गामक पाँचटा बुर्जुग पंचक बीच सभटा सम्पैतक बँटबारा हएत।

किसुनदेवक घरमे भिनौजी हएत तेकर खबैर सौंसे गाममे पसैर

गेल। बिहाने पंच बजाएल गेल आ बँटबारा शुरू भेल। मुदा एक-दूटा पंचोकेँ मन रहइ जे कहुना झंझैट हल नइ भऽ बढ़ए।

पंचक बीच हाथ जोड़ि किसुनदेव बाजल-

“हम हिस्सा नै लेब आ जेठ बेटा रामानन्द संगे रहब, से बेटो स्वीकार केलक।”

घर-घराड़ी, खेत, अन्न बरतन-बासन, गहना-जेबरक उपरान्त बाँस-गाछीक बँटबारा हुअ लगल। बाँस-गाछ आ गाछीक जमीन बाँटैत-बाँटैत सिनुरिया आमक गाछ दू भाँइक सीमानक बीच पड़ि गेल। मामला एतहि फँसि गेल, तखन पंच बजला-

“ई सिनुरिया आमक गाछ गामक चुनल आम छी। बीच सिमानमे पड़लासँ दुनू भाँइक सझियामे रहत। दुनू भाँइ आम बाँटि खाएत आ दस-पाँच छुटल-बढ़ल लोको खाएत।”

पंचोकेँ मन साफ नै रहए, ओ सभ चाहै छला जे कहुना सिनुरिया आमक गाछ सझिया रहत तँ हर साल आमक समय आमक खातिर झंझैट हेबे करत। जखन कि पंच लोकैन चाहितैथ तँ गाछक दाम लगा कोनो एक भाइक हिस्सामे दऽ कऽ झंझैटक अन्त कऽ सकै छला। मुदा सझिया राखि देलैन।

किसुनदेवक मझिला बेटा- श्यामानन्द जे शिक्षक छैथ, ओ बजला-

“यौ पंच महराज, झझैटक जड़ि तँ यएह सिनुरिया आमक गाछी छी। अही खातिर तँ दिन-राति झगड़ा होइत रहैए। हम तीन भैयारी छी, जँ ई आमक गाछ तीनटा रहैत आ एकेटाक गाछ तीनू भाइक हिस्सा होइत तखन झगड़ा नै होइएत। मुदा से तँ नहि अछि, तँए गाछकेँ काटि बाँटि दियौ। झंझैटक जड़ि खतम भऽ जाएत। ने रहत बाँस आ ने बाजत बौसली।”

श्यामानन्दक बात सुनि सभ पंच गुब्दी लादि देलक। एक दोसरसँ कनफुसकी करए जे कहुना मामला फँसल रहए। एमहर किसुनदेव गाछ कटबाक बात सुनि सोचमे पड़ि गेल। ओ मने-मन कहए जे पंच तँ परमेश्वर होइए, मुदा ई पंच सभ तँ झगड़लगौन छी। पंचपर समाज केना बिसवास करत। ई सिनुरिया आमक गाछ हमरेटा नहि, गामक गौरव छी। एहेन सुन्नर आम किनको गाछीमे नइ अछि। ऐ आमक गाछ लेल जे हमर नाम चलैए से कटलापर बुता जाएत। लोक गाछ-बेख लगबैए उपकार लेल मुदा हमर बेटा आ पंच मिलि एहेन नामी आमकेँ अन्त करैपर तुलल अछि...।

किसुनदेव अनपढ़ मुदा अनुभवी लोक, सोचि-विचारि कऽ ठाढ़ होइत पंचक बीच बाजल-

“यौ पंच मालिक, हमर बेटा सभ पढ़ियो-लिखियो कऽ बुड़िबके अछि आ अहूँ सभ ओकरे संगे बहै छी से केतेक उचित अछि। कनी हमरो बात सुनू, ई गाछ हमर रोपल छी तँए सभसँ बेसी अधिकार हमर अछि। ई आमक गाछ हमर प्राण स्वरूप अछि। जखने ई गाछ कटत तँ हम सोगे मरि जाएब। जइ गाछकेँ अपने सभ झंझैटक जड़ि बुझै छिऐ ओ हमरा जीविकामे दऽ दिअ। हमहूँ आम खाएब आ बेटो सभ खाएत आ लोको सभ खाएत तँ काया जुड़ेतै। जँ से नहि करब तँ कहबी सन हएत- जे रोपलक ताड़ से चटलक...।”

किसुनदेवक बात सुनि पंच सभ घबराइत सोचमे पड़ि गेला। तखने शिवलाल काका अपन बेटाकेँ कौलेजमे नाओं लिखा कऽ घुमि घर जाइ छला। किसुनदेव काकाकेँ देखते मातर जोरसँ बजौलक। शिवलाल काका सभ बात सुनि समैझ कऽ बजला-

“पंच परमेश्वर होइए, पनचैती निष्पक्ष करैए। दूधक दूध आ पानिक पानि बेराए कऽ झंझैटकेँ अन्त करैए, तँए ने पंच परमेश्वर

कहबैए। जे पंच केकरो पक्ष लऽ कऽ पनचैती करैए ओ पंच अधर्मी होइए। ई कोन नमहर विवाद अछि जे तइले सभ परेशान छी। बँटबारा तँ एहेन हुअए जे साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए। देखियो किसुनदेव, केतेक संतोषी अछि जे अपन अरजल जमीन-जत्था गाछी सभ सम्पैत पंचक बीच बेटामे बाँटि देलक। अपना लेल मात्र एकटा आमक गाछ मंगैए। तखन पंचक कर्तव्य होइए जे सहजे झंझैटक अन्त कऽ दिऐ। सिनुरिया आमक गाछ किसुनदेवक जीविकामे दऽ दियौ। बुढ़ारियोमे आम सन फल दान-पुन करत आ धर्म कमाएत। यौ आमक गाछ कहीं झंझैटक जड़ि होइए, झंझैटक जड़ि तँ लोक होइए।”

शिवलाल कक्काक बात सुनि किनको चहुओ ने हिलल आ बँटबारा समाप्त भेल।

❑

शब्द संख्या : 1462

जारैन

दुखनी दादी झुनकुट बुढ़ छैथ। हिनका उमेरक भरि गाममे कियो ने अछि। अखन धरि केशो अदहा कारीए छैन आ दाँतो झलकैत तथा आँखियो चोखगर जे अनहरियोमे सुह-सुह करैत सभ काज करै छैथ। दिन-रातिक क्रिया-कलापक प्रति बड़ सजग आ अनुभवमे किनकोसँ पारंगत छैथ। गामक कोनो सुखद वा दुखद काजक सलाह-विचार उत्तम स्तरक दइमे दादी करवनो ने सकुचाइ छैथ। से चाहे कियो रहअ। ऐ लेल गामक लोको सभ दादीक सम्मान करै छैन। एतेक उमेर रहितो दुखनी दादीक जिनगी सरल आ स्वावलम्बी अछि। परिवारो कोनो छोट नहि, तीनटा बेटा-पुतोहु सभ धीगर-पुतगर। पोता-पोती मिला कऽ दर्जन भरिसँ बेसीए छैन। सबहक भरण-पोषण बटिया खेती आ मजदूरीसँ होइए। दूटा बेटा समय-समयपर परदेशो खटैए आ खेतीक समय घर आबि खेती सेहो करैए। घरमे अन्न, पानि, दालि, तरकारीक कमी तँ नहि, मुदा जारैनक समस्या बनल रहैए। तइले दुखनी दादी अनहरगरे उठि खर्रा-बोरा लऽ गाछीसँ पत्ता खर्ड़ैर-बीछि आनै छैथ। किछु जारैन गाइक गोबरसँ सेहो पुंगबै छैथ। मुदा पुतोहु सभ जारैनक ओरियानक भीर नइ जाइ छैथ।

जारैनक खातिर दुखनी दादी एक दिन जेठकी पुतोहु लग बजली-

“केतेक दिन हम जारैनक भार उठेबह। आबो तँ तूँ सभ उठाबह। हमरा बुढ़ाड़ीमे पलखैत हएत।”

जेठकी पुतोहु किछु ने बजली मुदा छोटकी पुतोहु कान पाथि जे चिनवारेसँ सुनै छेली ओ लगमे आबि चनकैत बजली-

“माए, जमाना बदैल गेल। अखन के पत्ता-पुत्तीसँ भानस करैए। बजारसँ लऽ कऽ गाम धरि फ्रीएमे सरकार रसोइ गैसक कनेक्शन दइए। तखन एतेक मेहनत आ समय लगा पत्ता-पुत्तीक धुइयाँमे भानस करबाक की जरूरी अछि।”

दुखनी दादी हुँहकारी दैत बजली-

“मुँहक कोनो जमा खर्ची नहि ने लगै छइ, तँए ने जे मन होइ छह से बाजि दइ छहक। बिना भिरे जँ खीर होइतै तँ सभ ने खीरे खइतए।”

छोटकी पुतोहु किछु उत्तर नहि दऽ पुछलखिन-

“से केना, माए?”

दुखनी दादी पुतोहुकेँ समझाबैत बजली-

“महगी जमाना अछि तइमे जे जेते अकीलदारीसँ काज करत ओ ओते ओझड़ीसँ हटल रहत। जे फैशनेमे आनन-फानन करत ओ तेहेन कऽ बनरफाँसमे फँसत जे जिनगी भरि फँसले रहत।”

जेठकी पुतोहुकेँ नै रहल गेलैन, बजली-

“तखन लोक रसोइ गैस-ले किए मुड़कटाबैल करैए?”

दुखनी दादी उत्तर दैत बजली-

“गैसक खातीर लोक मुड़कटाबैलियेटा नै करैए, बेसी रूपैआ खर्च करैए आ भरि-भरि दिन गैस-गोदामपर रौदे-बसाते जान सेहो गमौने रहैए। लोक अपन चालि छोड़ि खजन चिड़ैयाक चालि पकैड़

केतेक दिन चलत।"

छोटकी पुतोहु मुँह चमकाबैत बजली-

"ई बुढ़िया तँ अपन जमानाक बात बजै छैथ। अखन सरकारक घोषणा छै जे पर्यावरणमे जे प्रदूषणक समस्या छै तेकरा कम करैले गैस-चुल्हाक उपयोग करू आ अहाँ खर्चा डरे भरियबै छी।"

दादी टोन मारि उत्तर बजली-

"जेतए जारैनक समस्या छै ओतए ने गैसक जरूरत छै मुदा गाम-घरमे तँ एतेक गाछ-बिरीछ, कलम-बाग, काठ-कुकाठ आ बाँसक बोन अछि जेकर सुखल ठेहुरी आ पातक जारैन प्रर्याप्त मंगनीए भेटैत अछि। तखन एतेक रूपैआ खर्च करि कऽ गैसक कोन खगता अछि। हँ, खगता छै शहर-बजारमे, जेतए जारैनक अभाव अछि। रहल पर्यावरणक सबाल, तँ ओ सरकार आ अमीरक बनौल समस्या छी। डीजल-पेट्रौलक विषहा धुइयाँसँ उत्पन्न समस्या छी। जारैनक धुआँ पर्यावरणमे बहुत कम हानि करैए।"

जेठकी पुतोहु अपन मुँह दबले बजली-

"तखन सरकार गामो-घरमे किए प्रचार करै छइ। जा कोनो विशेषता नइ छै तँ अनेरे किए वौआएल फिरै छइ?"

दुखनी दादी समझाबैत जेठकी पुतोहुकेँ कहलखिन-

"देखह कनियाँ, अखन फैशन आ सुविधाक जमाना छै। फैशन आ सुविधाक चलन पहिने अमीर लोक करै छल, तेकरे देखौंस गरीब सेहो करए लगैए। आमदनी कम आ महगी रहने गरीबकेँ कहियो पर नइ होइ छइ। जखन कमे लोक गैसपर भानस करैए तखन तँ एतेक महग अछि मुदा जखन सभ उपयोग करए लगत तँ समयपर मिलबो करत कि नहि, तेकर कोनो गारंटी अछि।"

छोटकी पुतोहु मुँह टेंढ़ करैत बजली-

“सरकार जे योजना चलेने अछि से की छी?”

दुखनी दादी हाथक इशारा दऽ शान्त भऽ सुनैले कहि बजली-

“सरकारक मनसा जनताकेँ सुविधा प्रदान करनाइ थोड़े छी। केतेको रंगक बिहंगरा ठाढ़ कऽ ओझरी लगा रूपैआ बटोरैक साधन बना रहल अछि। धीरे-धीरे दाम बढ़ा-बढ़ा विकट समस्या उत्पन्न कऽ जनताक बीच असंतोष बढ़ाएत। जेना देखहक, गाम घरमे जे जारैन, पत्ता-पुत्ती सभ अछि से की हएत? ओ सरकार लऽ लिअ आ बदलैनमे गैस दीअ, तखन ने गरीबक लेल सुविधा हएत। नै तँ एतेक गाछ बाँस आ पत्ता गाममे अछि तेकरा लोक की करत। जे काज मेहनतसँ आ मंगनीमे होइए तइ लेल हजारक हजार टाका लोक खर्चा करैए। जखन कि सोच बदैल एतेक रूपैआ बँचा परिवारक दोसर विकास तँ कऽ सकैए।”

छोटकी पुतोहु बजली-

“माए, अहींक सोचला आ करलासँ थोड़बे सभ चलत।”

दुखनी दादी जवाब देली-

“जखन हम करब तखन ने दोसरो करत। ओना, जेकरा उड़बाक छै से उड़ह, हम किए देखौंससँ उड़ब। मुदा विचार करबाक जरूरी अछि जे लोकक संख्या दिन दूना आ राति चौगुना बढ़ि रहल-ए। ओइ अनुपातमे गाछ, वृक्ष लगाबी जइसँ फलो-तरकारी उपलब्ध हएत आ लकड़ीक संगे जारैनक समस्या सेहो दूर हएत। दोसर उपाय अछि- गाए-महींस पोसु, दूध-दही-घी सेहो खाएब आ गोबरक गोइठासँ जारैन मंगनीमे हएत। ओ काज अखनो कऽ असानीसँ जारैनक समस्या दूर कऽ सकै छी। परती-पराँत, पोखैरक महार आ भीठ जमीनमे गाछ-बिरीछ लगा ओकर पत्ता-झाँखी-ठेहुरीसँ जारैनक

पूर्ति हएत। एतबे नहि, घरतीक वातावरण सेहो शुद्ध रहत। खर्च किछु नहि, आमदनीए आमदनी।”

आब छोटकी पुतोहुकेँ जेना ज्ञानक कुण्डली एकाएक खुजल। खुजिते बजली-

“माए, अखुनका लोक पढ़ियो-लिखियो कऽ एहेन सोच नहि रखने अछि। आनन-फाननमे रूपैओ लूटबैए आ जिनगी सेहो जोखिममे बितबैए। जे काज कनियेँ मेहनतसँ मंगनीए-मे हएत तेकरा नमहर समस्या बनौने अछि। ई अनुभव आइ हम अहींसँ सिखलौं। समाजमे अहाँ सन बुढ़-बुजुर्गकेँ रहने एकसँ एक पैघ समस्या मात्र अनुभवेसँ हल भऽ जाएत। अखन हम जानलौं जे जारैन कोनो समस्या नै छी, लोकक खूद ठाढ़ कएल समस्या छी। दुखनी दादीक बतौल अनुभवक बाट पकैड़ चललासँ खाली जारैनेक समस्या नहि, बल्कि आनो-आनो समस्या सभ दूर कऽ जिनगी सुलझा सकै छी।”

दुनू दियादनी बोड़ा-खड़्ा लऽ जारैन बीछैले गाछी दिस विदा भऽ गेली।

❑

शब्द संख्या : 914

जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर विसए

आनन्द बाबू खनदानी धनिक आ प्रतिष्ठित बेकती छैथ। हिनक प्रभाव परोपट्टामे छैन। सैंकड़ो बिघा जमीन, बाग-बगिचा, बाँसक कोठी छैन आ हाट-बजारक ठीकेदारी सेहो करै छैथ। तैसंग पंचायतक मुखिया रहने आरो बेसी लोकप्रियता कमेने छैथ।

आनन्द बाबूकेँ तीनटा बेटा आ एकटा कोरपच्छू बेटी सेहो छैन। बेटा-बेटी सभकेँ समान मानि उच्च शिक्षा देबाक प्रयास केलाह। मुदा से नै भऽ सकल। एकटा बेटा खेती-बाड़ी, दोसर ठीकेदारी-नेतागिरी आ तेसर इंजीनियर छैन। तीनू बेटाक बिआह भेलाक बाद जखन बेटी इण्टर पास केलकैन तखन बेटीक बिआह करैक निर्णय सेहो केलैन। शहरक नामी-गामी परिवारमे इंजीनियर लड़कासँ सम्बन्ध ठीक केलाह।

आनन्द बाबू अपन बेटीक बिआहक शुभ दिन तँइ करबाक लेल नौकर भेज पण्डित बुद्धिनाथजीकेँ बजौलैन। पण्डीजी लगले उपस्थित भेला। आनन्द बाबू पण्डीजीसँ बजला-

“पण्डीजी, बेटीक बिआह करब, सम्बन्ध ठीक भऽ गेल अछि से अपने एकटा उत्तम शुभ दिन उचारि बताउ। अखन समैध साहैब आएले छैथ, दुनू गोरे मंजूर कऽ लेब।”

पण्डीजी बजला-

“मालिक, बिआह आ पूजापाठ तँ हमर पेशे छी। हमरा कोनो पंचांग देखबाक अछि। बिआहक दिन तँ हमरा मुहेँमे रटल अछि। आइसँ पनरहम दिनक दिन भेल, सभसँ उत्तम लगन अछि ओइ दिन। काजोक लेल दिन ने बेसी आ ने कम भेल।”

पण्डीजीक बात सुनिते दुनू समधी बिआहक दिन मंजूर करैत अपन-अपन काजमे लगि गेला।

आनन्द बाबू बिआहक सामग्री जुटाएब आ नौत खिराएब शुरू कऽ देलैन। भोजन, मिठाइ बनबैक लेल हलुवाइ, पण्डाल सजेबाक लेल टेन्ट, मरबा बनेबाक लेल मिस्त्री, बरियातीक सुआगत लेल आदमी सबहक चयन करए लगला।

आनन्द बाबूक एक पुरान मित्र, स्कूलिया संगी, पण्डित उग्रनाथजी छैथ। हुनकर घर पाँच-छह कोस दूर छैन। ओ पैघ विद्वान छैथ। वनारस यूनिभरसिटीसँ ज्योतिषाचार्य केने छैथ। हुनका न्योता देबा लेल आनन्द बाबू चिट्ठी लिखि अपना मनेजरकेँ दऽ पठौलखिन।

मनेजर पण्डित उग्रनाथ जीक घर पहुँचल। पण्डीजीक लग जा प्रणाम करैत अपन नाओं ठेकान बता चिट्ठी दऽ बिआहक न्योता मौखिक रूपमे सेहो देलकैन।

पण्डित उग्रनाथजी चिट्ठी आ न्योता ग्रहण केलैन तथा चिट्ठी पढ़ि मनेजर साहैबसँ बजला-

“सुनू अहाँ अपना मालिककेँ कहबैन जे बिआहक दिन शुभ नइ अछि। हमर मित्र केना ई लगन मंजूर केलखिन। एहेन दिनमे पागलो लोक ने बिआह करैए।”

मनेजर अबिते आनन्द बाबू लग बाजल। मालिक तुरन्ते नौकरकेँ भेज पण्डित बुद्धिनाथजीकेँ बजा सारा वृतान्त कहलैन।

पण्डित बुद्धिनाथजी सुनिते आवेशमे आबि एक लप माटि लऽ

आनन्द बाबूक हाथमे दैत बजला-

"हमर उचारल आ बनौल बिआहक दिनकेँ जे उल्लंन करता ओ हमरासँ पहिने शास्त्रार्थ लेल तैयार भऽ जाउथ। हमहूँ कोनो अछरकटुआ पण्डित नइ छी। ऐ परोपट्टामे हमरासँ बेसी जजमनिका किनका अछि। आइ धरि कोनो पण्डितकेँ हमरा सामने सिर उठेबाक साहस नहि भेलैन। मुदा मालिक ई तँ पहिने कहू जे कोन पण्डित एहेन बात अपनेकेँ कहला।"

आनन्द बाबू चिन्तित मुद्रामे बजला-

"पण्डीजी, अहाँ होश सम्हारि कऽ बाजू, जे पण्डित ई बात हमरा कहलैन हेन ओ हमर मित्र सेहो छैथ। आ सुनि लिअ, ओ कोनो ईग्गी-दुग्गी पण्डित नहि, काशी बनारसक पढ़ल आ नमहर ज्योतिषाचार्यक डिग्रीधारी छैथ। हुनका अहाँ माटि दऽ चैलेन्ज करै छिऐ। हुनकर नाओं छिऐन पण्डित उग्रनाथ।"

'पण्डित उग्रनाथ' सुनिते बुद्धिनाथजीकेँ जेना बुधिये हेरा गेलैन। नाग जकाँ जे फुफकार कटै छला से सभटा एकाएक मलिन भऽ गेलैन। मने-मन सोचैत-विचारैत बुद्धिनाथ पण्डित अपन घर दिस विदा भेला। घर पहुँचते मनमे खुदबदी हुअ लगलैन। स्नान-धियान कऽ पूजा-पाठ केला पछाइत पनिपीआइ करि पण्डित उग्रनाथजीक घरपर पहुँचला। ओना, दरबज्जा लग पहुँच आगू बढ़ैक हिम्मतमे थोड़ेक कमी आबि गेल छेलैन तथापि हिम्मत जुटा कऽ दरबज्जापर गेला।

उग्रनाथ बाबू दुआरियेपर नमहर आसन लगा माघक रौद तपैत शास्त्र-वेदक अध्ययन कऽ रहल छला। बुद्धिनाथजी दुआरिपर पहुँचते पण्डित उग्रनाथजीक पएर छुबि प्रणाम कऽ अपन परिचय दैत बजला-

"हम अहींक जाति स्व. पण्डित शंकरक पुत्र बुद्धिनाथ छी। हमरा पण्डीताइक ज्ञानक अभाव नहि मुदा पिताजीक विरासतमे

यजमनिका बहुत भेटल अछि तहिसँ कमा-खटा गुजर करै छी। विनती करै छी हमर उचारल शुभ विआहक दिनक जँ अपने अशुभ बनेबै तँ हमर यजमनिका छिना जाएत। तखन हमर जिनगी केना चलत। हम अपनेक शरणमे छी, क्षमा कऽ दिअ आ कोनो उपाय बता दिअ जइसँ हम उबैर सकब, तखने हमर प्रतिष्ठा समाजमे बनल रहत। जँ से नहि हएत तँ आनन्द बाबू हमरा जीबए नइ देता।"

पण्डित उग्रनाथ बाबू योग्य आ अनुभवी बेकती छैथ। ओ पण्डित बुद्धिनाथक विनती सुनि हुनकर हृदय द्रवित भऽ गेलैन आ अतिथि जानि आदरसँ बैसा समझाबैत बजला-

"देखू, पण्डिताइ केनाइ कोनो गुनाह नहि अछि। मुदा ओइले योग्य बनब जरूरी अछि। जाति महान नै होइए कर्म महान होइए। मुदा अहाँ जे गलती केने छी तेकर फलो अहींकेँ भोगए पड़त। बिना लगनोक जे लगन बनबै छिऐ तँ हानि किनका हएत।"

बुद्धिनाथजी विनम्रतापूर्वक बाजल-

"अपने पैघ विद्वान थिकौं, शास्त्र-वेदसँ कोनो उपाय बता देल जाउ जइसँ हम उबैर सकब।"

उग्रनाथ बाबू पंचांग निकाइल देखैत बजला-

"अपने जे शुभ बिआहक दिन बना निश्चित केने छी ओ दिन बिआहक लेल अशुभ अछि, ओइ दिन असलमे मृत्युयोग अछि। जँ बिआह हेबो करत तँ तीनटा आफत हएत। पहिल- कन्यापक्षक हानि, दोसर- वरपक्षक हानि आ तेसर- जे बिआहक दिन बतौलक तेकर हानि। तीनूमे सँ एकटा हानि हएत अर्थात् मरत। ई तँ बुझू कहबीए सिद्ध हएत- जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर बिसाए।"

बुद्धिनाथजी बजला-

"लिखल जे हएत से हएत मुदा ओइसँ हमरा की नोकसान? हम

तँ सेनूरदान करबैक मालिक छी। कम-सँ-कम सेनूरदानक उपाय तँ बता दिअ, बाँकी हम समैझ लेब। ओइ बिआहमे अपने आमंत्रित छीहे, उपस्थित भऽ हमरो आ आनन्दो बाबूक मान बँचा देबैन। सिरिफ कोनो विरोध आ उलझन नै हुअए। अहाँक उपस्थितिसँ हमरो बल भेटत। जखन अहाँ विरोध नै करबै तखन केकरा चौहु अलगत जे हमरा सामने बाजत। सिरिफ उपाय बता दिअ।"

पण्डित उग्रनाथ बाबू बजला-

"कोनो तिथि चौबिसो घन्टा अशुभ नै होइए, क्षण-पल भरि लेल जरूर शुभ होइए। ओ शुभ समय रातिक बारह बाजि कऽ पाँच मिनटमे अछि, ओइ समय मुस्तैद रहि सेनूरदान करा देबइ।"

बुद्धिनाथजी खुशी होइत बजला-

"ओ समय 12:05 रातिक हमरा जीहपर रटल रहत। बरियाती अबिते कोनो विद्ध होइ आकि नहि होइ, मुदा ओइ समयमे हम पहिने सेनूरदान करा देबै, बाँकी काज घरवारी अपन आगू-पाछू करबैत रहता।"

पण्डित उग्रनाथ बाबूक पएर छुबि प्रणाम कऽ बुद्धिनाथजी घर दिस विदा भेला।

पण्डित उग्रनाथ बाबू, बुद्धिनाथक पण्डिताइक मुर्खतापर सोचए लगला। सोचब रहैन जे बुद्धिनाथ अपन पिताक विचारसँ विपरीत केना भेला? पण्डित शंकर मिश्र ऐ इलाकाक प्रसिद्ध विद्वान आ ज्योतिषी छला। भागवत कथा वाचन, यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ, घरवास, डीहगुनाइ आ जन्म कुण्डली बनेनाइ आदि काजक लेल मसहूर छला। मुदा हुनकर पुत्र अछरकटुआ केना भेल? तेतबे नहि, अछरकटुआ रहैत एतेक दिन धरि अपन जजमनिका केना सम्हारि रखलक?

एमहर बिआहक दिन लगिचा गेल। आनन्द बाबू जोर-शोरसँ काजक तैयारीमे लगल छैथ। बिघा भरिमे पण्डाल, सैंकड़ो कार्यकर्त्ता गामक बारहो वर्णक लोक बरियातीक स्वागतक लेल तैयार। चारि-पाँच दिन पहिनेसँ दूध नपौनाइ, दही पौड़नाइ, हलुआइ सभ मिठाइ बनौनाइ शुरू केने अछि। गामक लोक आ कुटुम सभ पहिनेसँ काजक देख-रेखमे लागल।

आइ बिआहक दिन छी, बरियाती औत। समग्र गाममे खुशीक माहौल अछि। सभ लोक स्वागतक लेल तैयार अछि। स्त्रीगण मंगल गीत गबैत अछि। बुद्धिनाथजी सबेरे साँझे आनन्द बाबूक दुआरिपर पहुँचला। सभ किछु घुमि-घुमि कऽ देख दलानक चौकीपर विश्राम लेल आसन रखलैन। दू-चारि होशगर कार्यकर्त्तासँ कहलखिन-

“देखू, हम अहीठाम आराम करै छी, जँ हम नीन पड़ि जाएब तँ हमरा समयक खियाल नै रहत, तँए दस बजे रातिमे उठा देब। किएक तँ सेनूरदान समयपर शुभ मुहुर्तमे कराएब।”

मुदा जखन झलअन्हारी भेल तखन पण्डीजीक मन भेलैन जे रातिमे भोजन विलम्बसँ मिलत। से नहि तँ अखन सभ कियो फुर्सतमे अछि अखने, सबेरे-सकाल पहिने भोजन कऽ ली, पछाइत आराम करब नीक हएत।

पण्डीजी आनन्द बाबूसँ बजला-

“मालिक, हमरा सबेरे किछु भोजन करा देल जाउ। हम आरामे करब आ समयपर उठि तैयार भऽ बिआह कराएब। बरियाती पहुँचलापर सभ कियो हुलि-मालिमे लगि जाएत।”

आनन्द बाबू एक आदमीकेँ जवाबदेही दऽ पण्डीजीकेँ बजा बैसा कऽ भोजन नीकसँ खुआबए लगला। केराक पातपर दही, चूड़ा, चीनी, तरकारी आ अनेको प्रकारक मिठाइ परोसि देलखिन। भोजन

स्वादिष्ट आ रूचिगर रहए। पण्डीजी तहिया-तहिया खूब खेलैन। भोजनक अन्तमे पण्डीजी बजला-

"यौ एतेक दूधक दही आ सामान सभ जे बनल तेकर छाल्ही की भेल, नै बँचल-ए?"

खियौनहार आदमी बाजल-

"छाल्हीकेँ के पुछैए!"

छाल्हीसँ भरल एकटा कौरना उठा कऽ ओ आदमी नेने आबि पण्डीजीक आगूमे रखि देलकैन। पण्डीजी छाल्ही-चूड़ा आ मिठाइ संगे कण्ठ ठेका कऽ भोजन केलैन। खाइ खातिर पानि पीबे ने करैथ। पेटमे जगहे ने बँचल रहि सकलैन। कहुना उठि हाथ-मुँह धोइ रसे-रसे दलानपर जा पड़ि रहला। पड़ले-पड़ल एकटा घड़ीबला बेकतीकेँ बगलमे ठाढ़ देख पण्डीजी बजला-

"बाउ, हमरा दस बजे रातिमे उठा दिहअ। हम समयपर बिआहक विधि करा सेनूरदान करा देब।"

साँझ पड़िते पण्डालसँ घर धरि बिजलीक रोशनीसँ जगमगा गेल। बरियातीक सभ समान इन्तजाम आ गामक लोक बरियाती देखबाक लेल पण्डालक चारूकात टाट लगल ठाढ़ रहए। तखने समाद आएल कि बरियातीक जीप गामक पछबरिया थलही नदीमे फँसि उनैट गेल। गामक सैंकड़ो नवयुवक नदी तरफ दौड़ पड़ल। थालमे उनटल जीपमे सवार बर आ लोकनियाँ सभ कादोमे नहाएल हल्ला करैत, सभ बाल-बाल बँचल। ग्रामीण युवक सभ मिलि ठेल-ठेल जीपकेँ नदीसँ ऊपर केलक। सभ कियो दोसर वस्त्र बदैल तैयार भऽ दरबज्जापर पहुँचला। सभ ग्रामीण लोक बरियातीक सुआगतमे जुटि गेला।

तही समयमे पण्डीजीक पेटमे जोरसँ दर्द शुरू भेल। सुखल

चूड़ा-छाल्ही आ मिठाइ पेटमे फुलि बढ़ैत रहए तँए पेट फुलि कऽ ताज कऽ देलक। पण्डीजीकेँ कुहरैत देख किछु लोक जमा भऽ गेल। ओइमे सँ एकटा बुढ़बा बाजल-

"पण्डीजीक पेटमे निनाइ उखैर गेल अछि से कारी पहलवानसँ पेट ससरबा दियौ। ओ ससारिते देरी ठीक कऽ देतैन।"

तुरन्ते कारी पहलवानकेँ बजौल गेल। कारी पहलवान अबिते देरी एक माली करू तेल मंगा पण्डीजीक पेटपर चपगरसँ तेल लगा हाथसँ ससारए लगलैन। पहलवान आदमी जोरसँ दाबि-दाबि ससारैत रहए। पण्डीजीक पेटक आँत फाटि गेल। ओ जोर-जोरसँ चिचियाए लगला...।

चिचियाइत पण्डीजी बजला-

"हौ बाप! आब हम मरि जाएब। बँचाबह हौ लोक सभ..!"

एमहर बिआहक समय, दरबज्जापर बरियातीक सुआगतमे सभ लागल छला। डॉक्टरी के लऽ जाएत पण्डीजीकेँ। मुदा आनन्द बाबू खटियापर टंगबा कऽ आदमीक संगे होस्पीटल भेजबा देलखिन। मुदा पण्डीजीकेँ रस्तेमे पेट फाटि गेल आ मरि गेला।

गामपर बरियाती आबि घर-दुआरी लगल रहए, ऐ परिस्थितिमे पण्डीजीक लाश केना आनन्द बाबूक दरबज्जापर आनैत। सबहक विचार भेल जे बाहरेसँ बाहर पण्डीजीक लाश हुनके घर पहुँचा देल जाए, हुनकर परिवारक लोक दाह-संस्कार करत आ अपना सभ नहाए-सोनाए बरियातीक सुआगत करब, सहए कएल गेल।

बरियातीक सुआगत आ बरमाला कार्यक्रमक पछाइत बिआहक काज हएत।

मुदा बिआह कोन पण्डित करौत। पण्डितक अभावमे आनन्द बाबूक मित्र पण्डित उग्रनाथ बाबू जे अतिथिक रूपमे आएल छला ओ

सही समयपर माने बारह बाजि कऽ पाँच मिनटपर नीक मुहुर्तमे बिआहक काज सम्पन्न करौलखिन। भिनसर होइते बरियातीकेँ डाली-पाती दऽ विदा केला पछाइत जखन पण्डित बुद्धिनाथजीक मृत्युक समाचार समुच्चा गाममे पसरल, तखन पण्डित उग्रनाथ बाबू मने-मन बजला-

"हम पहिनहि हुनका कहने छेलिऐन- जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर विसाए।"

❑

शब्द संख्या : 1673

कौल्हुक सुच्चा करुतेल

बात तीन-चारि दसक पूर्वक छी। तहिया हम नवालिके रही। फागुन मास रहै, पछिया हवा रमकैत रहए। रबिया आ बुधना दुनू भाँइ चिमनीपर पजेबाक खेबालमे माटि बनबए गेल रहए। माटि कचैर बना दुनू भाँइ संगे लेढ़ाएले घुमि घर आएल। रौदाएल रहए, पोखैरक महारपर गाछक छाँहैरमे आबि जिराइत रहए, मन थिर भेला पछाइत पोखैरमे भरि मन देह मांजि नहा कऽ घर विदा भेल। घर पहुँचते मटियाएल देह उज्जर लगबे करए आ चुनचुनेबो करए। दुनू भाँइक राँइ-बाँइ देह देख माए बजली-

“बौआ, तोरा दुनू भाँइक देह किए एना राँइ-बाँइ फाटल लगै छौ! कनी करुतेल किए ने लगा लइ छेँ?”

रबिया बाजल-

“से तँ ठीके माए, बहुत दिनसँ तेल-कुड़ देहमे नै औंसलौं हेन। घरसँ नीकहा करुतेल नेने आ।”

माए बजली-

“निकहा तेल तँ बौआ कनियेँ रहए, सेहो कहिया ने सधल। तरवन बजरूआ खाँटी तेल कनी अछि से औंस ले।”

रबिया-बुधना दुनू भाँइ खूब चपकारि-चपकारि तेल देहमे

लगेलक। देहक चमड़ी जे फाटल छल तइमे रबरबाए कऽ तेल लगल आ देहमे लहैर मारए लगल। जहिना मसल्ला पीसैकाल मिरचाइक दाफसँ हाथ लहरैए तहिना समुच्चा देहमे लहैर मारए लगल। बुधना रबियासँ पुछलक-

"भैया, बजारक खाँटी करुतेल देहमे लगेलापर एतेक किए लहैर मारैए?"

रबिया बाजल-

"रौ बौआ, की कहबौ तेलक हाल। जहिना लोको रंग-बिरंगक अछि तहिना तेलो। ई जे बजारमे खाँटी तेल बिकाइए से कोनो ऐठाम बनैए जे सुच्चा तेल रहत। आन-आन राज्यमे तेलक कारखाना लगल अछि जइमे बहुतो जीज-वौसक तेल बनैए। तेलकेँ छानि शुद्ध कऽ रंग आ केमिकल मिला टीनक-टीन भरि देशमे बिकाइए। तेलो टटके बुझेतौं। मुदा कहियाक बनल छी आ केतेक दिनक पछाइत बिकाइए से लिखलेटा रहैए।"

बुधना बाजल-

"जखन देहमे औंसलासँ एतेक लहरैए तँ देहक चमड़ीकेँ बिगाड़ि तँ ने देत?"

रबिया बाजल-

"देहक चमड़ियेटा नै बिगाड़ैए बल्कि ऐ तेलक बनल खाइबला चीज-वौस लोक बेवहार करैए तइसँ बहुतो हानि आ बेमारी होइए। चर्मरोग, गैष्ट्रीक अल्सर, अपच आ लीवर-सूजन बेसी होइए। जँ आँखि कानमे पड़ि जेतह तँ आँखियोमे अँखिदुखी आ कानोमे कनदुखी हुअ लगतह।"

गप-सप्प होइते रहए कि शिबु काका खराम पहिरने पट-पटबैत पहुँचला। दुनू भाँइकेँ घौलाइत-बड़बड़ाइत देख ठाढ़ भऽ बजला-

“रौ रबिया-बुधना, बेर खसि पड़ल आ तूँ दुनू भाँइ बैसल की करै छीही?”

रबिया बाजल-

“काका, हम दुनू भाँइ सुच्चा करुतेल आ बजरूआ खाँटी करुतेलमे ओझराएल छी। हम सभ तँ काठक कौल्हु तँ नै देखलौं।”

शिबु काका बजला-

“रौ तेलक भाँज एना नै ने बुझबिही। पहिने अँगना जो खेने आ, तखन हम बुझा देबौ।”

बुधना बाजल-

“काका, ताबे अहाँ दलानेमे बैसू, हम दुनू भाँइ खेने अबै छी।”

कहि, रबिया-बुधना अँगना जा माएसँ खेनाइ मांगि खाए लगल आ माएसँ बाजल-

“माए, तहूँ खा कऽ दलानेपर अबिहेँ। शिबु काका बैसल छथिन, ओ करुतेलक महत्वपूर्ण बात बतेता।”

माए बजली-

“चल तूँ सभ हम पीठेपर अबै छी।”

रबिया सुपारीक टूक काकाकेँ हाथमे दैत चुनौटी निकालि चून-तमाकुल चुनबए लगल। दुनू गोरे तमाकुल खा थूक थुकैड़ गप-सप्प शुरू केलक। बुधना आ रबियाक संग माए सेहो कातमे बैसली। रबियासँ बेसी धियान बुधना रखने रहए जे सुच्चा करुतेलक हाल केना जानी, तँए ओ बिच्चेमे काकासँ पुछलक-

“काका, आब तँ सभ निचेन भऽ गेलौं सुच्चा करुतेलक चर्चा भऽ जाएत तँ बड़ नीक हएत।”

शिबु काका बजला-

“देरी हमरामे नहि, तोरे सभमे छह। हम तँ चाहबे करै छी जे गाम-समाजक पुरना रीति-रिवाज आ चालि-चलैन सभ कियो जानि जाए, जइसँ समाजक प्रथा चलैत रहत। किएक तँ पहिलुकबा जे चालि-चलैन अछि ओइसँ लोकक संस्कृति आ रोजगार चलन्तमान होइए आ शुद्ध समानो भेटैए। ने मिलाबट आ ने बेइमानी।”

बातकेँ शिबु काका आगू बढ़बैत फेर बजला-

“देख रबि, तूँ सभ अखन धिया-पुता छँह। तोहर बाप मरि गेलखुन मुदा माए जीविते छथुन। पुछि लहुन तोरा माए संगे बापकेँ चुमौन करा हमहीं अनने छी। ई जे हमर चौरस चाकर सुडौल आ पाँच हाथक देह देखै छीही से शुद्ध अपन गाए-महींसक दूध-दही आ घी खेलहा पोसल छी। पौआ-पौआ कठहा कौल्हुक सुच्चा सेरसो-तोड़ीक तेल सभ दिन ऐ देहमे पचबै छेलों। तँए ई देह अखनो इस्पात जकाँ सोझ आ मजगुत अछि। की कहबौ, जखन तोरा बापक चुमौन करबए गेलौं तँ किछु लोककेँ गुदुर-फुसुर करैत सुनिलेए की हमर कान ठाढ़ भऽ गेल। हम अपन चलह-पहल करए लगलौं। हमरा देख कऽ ओतुक्का लोककेँ सिटी-पिटी बन्न भऽ गेलै। आ केकरो चौहुओ ने अलगले आ ने मुँहसँ बकारे फुटलै।”

बिच्चेमे बुधना बाजल-

“कका, अहाँ तँ अपन बीतल बात कहलौं मुदा सुच्चा करुतेलक बात बता दिअ जे हमहूँ सीखब।”

काका बजला-

“बुधन हम बुढ़ भेलौं बजैत-बजैत भँसिया जाइ छी। सभ गप मनो नइ रहैए। तूँ ठीके हमरा मोन पाड़ि देलैं। अच्छा, सुन कहै छियौ- पहिने समाज पछुआएल छल। लोक सभ काजकेँ बाँटि-बाँटि लूरिक हिसाबे करै छल आ एक-दोसरकेँ सहयोग करै छल। तँए जेकर जे

काज छल ओ ओइ काजक लूरि सीखने ओस्ताज कहबै छल आ तहिना समाजो रहए। सबहक काजो सभ रंगक रहइ। कियो काठक काज, कियो सोना-चानीक काज, कियो खेती-बाड़ी तँ कियो तेल पेरइ छल। ऐ तरहेँ अनेकानेक काज समाजमे होइत रहए। सभ तरहक काजो आ सभ चीज-वौसक जरूरत सेहो एक-दोसरसँ पूर्ति होइ छल। अही समाजमे एकटा विशेष वर्ग अछि जे कठहा कौल्हु बना बरद जोइत घुमा-घुमा तोड़ी, सेरसो, तीसी, तिल पेर-पेर समाजमे सुच्चा तेलक कारोबार करै छल जे अखन अन्त भऽ गेल अछि। किएक तँ अखन हाट-बजारक बेवस्था अछि, जइमे सभ समान बनले-बनल भेटैए। अखन ने ओ लोक आ ने ओ समाज अछि। जहिना फेंटल लोकक समाज अछि तहिना मिलाबट कएल चीज-वौस। पुछही ने माएकेँ, पहलवान ब्राण्ड, डबल परी, हिरण छाप, इंजन छाप, मशाल छाप, धारा, फरचुन आ स्कूटर छाप इत्यादि, ई जे रंग-बिरंगक डिब्बाबला करुतेल भेट रहल अछि से पहिने भेटै छल?”

माए मुड़ी डोलबैत बजली-

“नहि, ई सभ तेल पहिने कहाँ छल। एकरा सबहक नाउओं ने सुनने रही। ई सभ तेल तँ आब चलनमे आएल।”

बुधना बाजल-

“तखन लोक पहिने तेलक जरूरत केना पुरा करै छल?”

शिबु काका बजला-

“ओइ समयमे समाजमे कौल्हुसँ तेल पेराइ छल, कौल्हेबला सँ लोक करुतेल कीनै छल। चाहे, जेकरा सेरसो-तोड़ी रहै छेलै ओ बहतौन दऽ पेराइये लइ छल। जैठाम कौल्हु नइ रहै तैठाम लोक तेलक भौड़ी-बट्टा करए। टाड़ी-टाड़ामे सुच्चा करुतेल लऽ गामे-गाम घुमि बेचए। तेलक नपना कोइया रहै जे कनमा, चाठी, अधपौआ आ पौआ

भरिक रहै छल। कोइए-सँ नापि तेलक बिकरी होइ छल। रूपैआ अथबा अन्नक बेच दऽ लोक तेल लइ छल।”

जखन समाजमे किनको बेसी तेलक जरूरत होइ छेलैन तँ ओ कौल्हुबलाक एठीम सेरसो-तोड़ी आ कि तीसी लऽ पहुँचै छला। कौल्हुबला सेरक हिसाबसँ बहतौन लऽ पेर दइ छेलइ। बहतौनमे जेतेक सेरसो-तोड़ी पेरै तेतेक अन्न मेहनतमे लइ छेलइ। हिसाबो नीके बनल छेलै, तीन सेर सेरसो-तोड़ीमे एक सेर तेल आ तीन सेर अन्न बहतौन लइ। तेलक खइर सेहो कौल्हुबलाकेँ होइ छेलइ। खइरकेँ लोक गाए-महींसकेँ कुट्टी-सानीमे खिबैले कीनि लइ छल। मेहनतिया काज भेने आमदनियो दोबर, एकटा बहतौन दोसर खइरक आमद।

रबिया सुनबेटा करए मुदा बुधना मने-मन अपन रोजगारक बुधियो लगबए। जखन अपने घरमे रोजगार भऽ जाएत तखन कमा कऽ जिनगी नीकेसँ जीब लेब। गपक क्रम टुटल देख बुधना बाजल-

“काका, ई काठक कौल्हु केना आ के बना देत? जँ बनि जाएत आ सभ सरमजानक ओरियान भऽ जाएत तँ हम यएह काज करब। ने रौद-बसातक डर रहत आ ने कखनो बैसारी हएत। जेहेन मेहनत करब तेहेन आमद हएत।”

शिबु काका बजला-

“काज तँ बड़ नीक अछि। गाम-समाजसँ जुड़ल स्वतंत्र-स्वावलम्बीबला काज अछि। जेहेन काज तेहेन मान-सम्मान। आत्मनिर्भरता सेहो आबि जेतौ। काजो तेहेन अछि जे सभ दिन चलतौ। कहियो बैसारी नै हेतौ। किएक तँ तेलक बिना केकरो काजो थोड़े चलत। ओना, कौल्हुक काज अखन उसैर गेल अछि। कौल्हु बनबैक कारीगर सेहो आब नहियेँ रहल। कौल्हु बनाएब सभ मिस्त्रीक बस नहि। जँ कारीगर मिल जाए तँ अखनो ई काज बड़ नीक हएत।

समाजमे सभकेँ सुच्चा करुतेल ई भेटत आ एकटा रोजगार समाजमे ठाढ़ हएत। कौल्हुक कारीगरोकेँ रोजगार बढ़त। एकटा समाजक जीविकोपार्जनक कला जे उसरन भऽ गेल सेहो पुनः पुनर्जीवित हएत।"

बुधना बाजल-

"कका, जँ कौल्हु बना काज करब तँ कोन-कोन चीजक ओरियान करए पड़त?"

शिबु काका बजला-

"ओरियान की करए पड़त, सभ समान तँ अपना घरेमे अछि। मुदा कला बिनु जानवर छी। तखन कौल्हु लेल एकटा मोटगर कटहरक छह-फिट्टा टोन आ मोहैन लेल चारि-पाँच फीटक कुसुम वा बेलक सुरेबगर लकड़ीक जरूरत पड़त। किए तँ मोहैन ओही दुनू लकड़ीक होइए से बुझल अछि। तेकर अलाबे एकटा मजगुत पहटा, पालो आ एकटा भुटबा बूतगर बरद चाही। जँ बेसी कौल्हु चलत तँ दूटा बरद, नहि तँ एकोटासँ काज चलत।"

बुधना बाजल-

"कटहर आ बेलक गाछ अपने अछि। पालो, पहटा आ हरबोहा जोड़ा बरदो अछिए। सिरिफ कौल्हु बनबैबला कारीगर खोजए पड़त। हम इएह रोजगार करब। घरे गाममे रहि कमाएब- खाएब आ समाजक बीच रहब। कका, कनियेँ धियान दऽ कारीगर खोजि कौल्हु बनबा दीअ।"

शिबु काका बजला-

"कारीगर खोजैले गामे-गाम जाए पड़त। किएक तँ ई रोजगार गामे-घरक छी। सिजिनो तेल पेरैक आबि रहल अछि। तोड़ी, तीसी आ सेरसो ऐबेर खूब उपजबो कएल अछि।"

किछुकाल रूकि शिबु काका फेर बजला-

"रबि, तूँ काल्हिये कटहर आ बेलक गाछ काट आ हम-बुधना दुनू गोरे कारीगरक खोजमे जाएब। जाबे कारीगर नै भेटत ताबे घुमि कऽ घर नै आएब।"

शिबु काका आ बुधना भोरे एकटा झोरामे बटखर्चा- दू सेर चूड़ा-मुरही आ नोन-मिरचाइ तैसंग धोती-गमछा लऽ विदा भेला। पहिने जइ-जइ गाममे बेसी कौल्हु चलै छल से काकाकेँ बुझले छैन। फुलकाही, हिरपट्टी, लदनियाँ होइत लौकही पहुँचला। पता चललैन जे कौल्हुक कारोबार कहिया ने बन्न भऽ गेल आ कारीगरो सभ बुढ़ाए-बुढ़ाए मरि गेल। अखन एकटा बुढ़ा कारीगर महदेवामे पंची साहु, सोमरन पट्टीमे दुनू भाय सोनेलाल साहु आ किशुन साहु पुरान इलाकाक मसहूर कौल्हुक कारीगर छैथ। कौल्हु बनेबो करै छैथ आ भंगठल कौल्हुकेँ मरोमत सेहो करै छैथ। शिबु काका आ बुधना खोजैत झलफल साँझमे सोने लाल साहुक घरपर पहँचला।

सोनेलाल साहु आएल अतिथिकेँ आदर-सम्मानसँ चौकीपर बैसा सुआगत केलक। शिबु काका सोनेलालसँ कहलखिन-

"हम एकटा कठहा कौल्हु बनबए चाहै छी से अहाँ बना दिअ।"

सोनेलाल बाजल-

"कौल्हुक काज तँ बहुत पहिने बन्न भऽ गेल, ओजारो सभ हराए-ढराए गेल। तखन एते दूरसँ एलौं हेन तँ पहिने जिराए किछु जलखै खा चाह पीबू तखन काज हेबे करत।"

सोनेलाल किशुनकेँ बजौलक। किशुन सोनेलालक पितियौत भाए, हुनका लग औजार सभ अछिए। दुनू भाँइ कौल्हु बनबैले तैयार भेला। किशुन लाल बाजल-

"हम दुनू भाँइ जाएब आ हमर संगबे महदेवाक पंची साहु सेहो

रहता। तीनू गोरे मिलि काज कऽ देब। खेनाइ-पिनाइ छोड़ि तीन हजार रूपैआ लेब। कौल्हु बनबैसँ लऽ कऽ चालू करैत-करैत सात-आठ दिन समय लागि जाएत।"

शिबु काका मंजूर कऽ लेलैन। रातिक भोजन कऽ सभ कियो सुति रहला। अन्हरौखे उठि सभ कियो विदा भेला। रस्तेमे चाह-पान करैत दुपहरमे पंची साहुक घर महदेवा गाम पहुँचला। दिनक भोजन कऽ साँझ धरि घुमि अपन गाम एला। थाकल ठेहियाएल सभ कियो खाए-पीब कऽ आरामसँ सुति रहला। भोरे उठि दिशा-मैदानसँ आबि लकड़ीक टोन गाछीएमे बना उठा दरबज्जापर राखि छेब कौल्हु बनेनाइ शुरू कऽ देलक।

लकड़ियो नीके रहइ। खूब अहगर, तीन-चारि सेरक खोंइछबला कौल्हुक पेट साफ करैत तेलक निकास बनबए लगल। मोहैन बना बाँसक ओधिकेँ घुमौना, लकड़ीकेँ डँर-घुमौना सभ बनबैमे चारि दिन बीत गेल। पाँचम दिन कौल्हुमे बाँसक खाप पंची साहु भरि मोहैन सेट केलक। छठमा दिन कौल्हु गारि सभ सरमजानकेँ जुति लगा सेट केला पछाइत जगहकेँ नीप-पोति रातियेमे पूजा-पाठ कऽ प्रसाद चढ़ा देलक। सातम दिन भोरे तीन सेर सुखल तोड़ीमे एक चुरुक पानिक मोहि दऽ मिला कऽ कौल्हुमे दऽ पालो सेट कऽ बरद जोइत घुमबए लगल। पहटापर भार खातिर एक गोरे बैस गेल बा बरदोकेँ हाँकए लगल। घुमैत-घुमैत जखन पचास-साठि फेरा लगल की तेल गड़-गड़ा कऽ चुबए लगल।

गड़गड़ाइत तेल चुबैत देख सबहक मनमे खुशी भेल। गामक धिया-पुतासँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुस, सबहक हुजुम लागि गेल। किएक तँ कहियो लोक कौल्हुसँ तेल पेरैत नै देखने रहए। एहेन साफ सुच्चा करुतेल देख सभकेँ अचरज लगए।

कारीगर पंची साहु अपने हाथे प्रसाद आ पहिल घानीक तेल लोकक बीच बाँटि देलक। दहिना हाथमे प्रसाद आ बामा हाथक तरहत्थीमे एक कोइया तेल। लोक सभ परसादी मुँहमे लऽ तेल माथक चानिपर रगड़ैत सुच्चा तेलक आनन्द लैत अपन-अपन घर विदा भेल।

सुच्चा करुतेलक खबैर समुच्चा गाममे पसैर गेल। देखैयो-ले आ तेलो लइले लोक एबो करए आ जेबो करए। बेरा-बेरी बरदकेँ उनटा-फेर कऽ भरि दिन कौल्हुमे जोतने आ सेरसो आ तोड़ी पेरैया करैत रहल। रबिया-बुधना तीनू कारीगरकेँ आ शिबु काकाकेँ मेहमान जकाँ आदर-सम्मान कऽ भोजन करेलखिन। भोजनक तरूआ, भुजुआ आ तरकारी ओही कौल्हुक सुच्चा तेलमे बनल। भोजनो सुआदिष्ट आ उत्तम रहए...।

शिबु काका बजला-

“बजारू खाँटी तेलक बनल तरूआ-तरकारी तँ चमचमाइन लगैए मुदा काठक कौल्हुक सुच्चा तेलक बनल चीज-वौस तँ घीओसँ चिक्कन होइए।”

रबिया-बुधना शिबु काकासँ विचारि तीनू कारीगरकेँ एक-एक जोड़ धोती-गमछा आ 51-51 टाका विदाइ देलक। तीन हजार रूपैआ, जे मजूरी गछने छल सेहो देलक। तीनू कारीगर विदा होइसँ पहिने कौल्हु लग जा देखलक। तखन बुधना कौल्हु जोतने रहए। सोनेलाल ठाढ़ भऽ कौल्हुकेँ देख बजला-

“रबि आ बुधन दुनू भाँइ सुनह, अखन एक-दू मास कौल्हु चलबह, जखन खापक घाट चिक्कन भऽ जाएत, तखन तेल कम उतरए लगतह तँ हमरा बजाबिहह। हम आबि खाप बदैल ठीक कऽ देबह आ दुनू भाँइकेँ सिखाइयो देबह तँ आगू ऐ तरहक भंगठी अपनेसँ कऽ लइ जेबह। किएक तँ कौल्हुक खाप बदलनाइ झंझटिया होइए। जँ

कनियों उरेब भऽ जेतह तँ तोड़ी-सेरसो पिसेबे ने करतह आ ने तेल चुतह। तूँ दुनू भाँइ मनसँ काज करह। हम एहेन लक्ष्मी कौल्हु बना देलिअ जे तोरा धनक अम्बार लगा देतह।"

दुनू भाँइकेँ पीठ ठोकि आशीष-वचन दऽ कारीगर विदा भेलाह।

रबिया-बुधना दुनू भाँइ बेरा-बेरा कौल्हु चलबए आ माए भानस-भात कऽ बरदक कुट्टी-सानी करए। खइर-नोन फुला कऽ बरदोकेँ सानी समयपर खुआबए लगली। बरदो खइर खा तैयार भऽ गेल। लोको सभ तेल-खइर कीनैले आबए लगल। अपनो गामक लोक आ आनो गामक लोक सेरसो-तोड़ी, रैंची-तीसी लऽ लऽ आबि पेरबैले नम्बर लगौने रहैए। तीनिए-चारि मासमे बुधना-रबियाक घर अन्न आ खइरसँ भरि गेल। तेल-खइर जे नगदी बिकाइ तइसँ हाथपर साए-दू-साए रूपैआ हरिदम रहबे करैए। जइ अन्न आ रूपैआ खातिर रबिया-बुधना हरदम बेकल रहए, अनकर काज करए आ बैसारीमे चिमनीपर पजेबा पाथि गूजर करए ओकरा कर्म संगे किश्मतो साथ देलक जे आइ अपने काजसँ छुट्टी नइ होइए। काजो बढ़ल आ आमदनी सेहो बढ़ल।

रातिमे दुनू भाँइकेँ समझाबैत माए बजली-

"बौआ, पहिने दिक्कतदारी रहए आ काजो-आमदनी कमे रहए। मुदा आब काजो बढ़ि गेल, तँए कहै छिअ जे दुनू भाँइ बिआह कऽ लैह जे पुतोहु घर रहती तँ काजो सम्हारि देती। हम तँ बुढ़ भेलौं नजरियो कम अछि तँए तोरो सभसँ विचार करब उचित बुझना जाइए। अहुना जँ लोक घरमे कोनो काज करैए तँ अपनामे विचारि करैए, तखन ओ काजो नीक होइए।"

रबिया-बुधना दुनू भाँइ माइक बात सुनि किछु बाजब उचित नइ बुझि चुप्पे रहल।

बेटाक किछु उत्तर नहि पाबि मनमे सोचली जे केकर बेटा-बेटी माए-बापकेँ सोझमे कहैए जे हमरा बिआह कऽ दए।

भिनसरबेमे रबिया-बुधना उठि कौल्हुमे घानी दऽ बरद जोतने रहए कि शिबु काका खराम पहिरने पटपटबैत पहुँचला। रबियाक माए बरतन-बासन करै छेली। खरामक पटपटाएब सुनि लगमे आबि शिबु काकाकेँ बैसैले कहलखिन। तरवने बुधना सेहो कौल्हुक घरसँ निकलल तँ शिबु काकाकेँ देख माएसँ बाजल-

"माए कनी टेस्टगर चाह बनेने आ, कको पीता आ अपनो सभ पीब। भरि दिन तँ काजमे जोतले रहै छी।"

जेतेक कालमे रबियाक माए चाह बना ऐली, तैबीच बुधना शिबु काकासँ गपो करए आ तमाकुलो चुनबए। शिबु काका रबियासँ कौल्हुक आमदनीक चर्च सेहो केलैन।

चाह नेने रबियाक माए एली। शिबु कक्काक हाथमे चाहक गिलास पकड़बैत बजली-

"भैया, अपने समाजक बुजुर्ग आ अनुभवी बेकती छथिन। जहिना हमरा दुनू बेटाकेँ रोजगार कऽ देलखिन तहिना दुनूकेँ बिआहो करा घर बसा देथिन। रबियो-बुधनाकेँ बाप नै छै जे कहबै। तरवन तँ नीक कि अधला, देख-रेख तँ हिनके करए पड़तैन।"

शिबु काका बजला-

"सेहो करब मुदा समय लगा कऽ ने करब। जँ एतेक दिन दिक्कत काटलह तँ थोड़बे दिन आरो काटह। एमकी शुरूए बला लगनमे दुनू भाँइक बिआह कऽ देब। बेरा-बेरी करब तँ काजो बरदाएत आ खर्चो बेसी हएत।"

रबियाक माए बजली-

“भैया, लड़की बेसी पढ़ल आ सिफलाहि नै हुअए। बिनु पढ़लो हुअए मुदा कमासुतनी, पितमरू आ नीक-बेवहारक हुअए।”

शिबु काका बजला- “लेनो-देन करबहक?”

रबियाक माए बजली-

“लेन-देन की करब भैया, अनका धनसँ लोक धनिक नै होइए। दहेजक रूपैआ तँ हहासेमे उड़ि जाइए आ उनटे बदनामी माथपर चढ़ि जाइए। हमरो आ हमरा बेटाकेँ एहेन विचार नै अछि जे ई करम करी। धन तँ लोक अपना कर्म आ मेहनैतसँ कमाइए। अनकर देलहा धन बाढ़िक पानि जेना अबैए तेना चलियो जाइते अछि। मुदा मेहनतक कमाएल धन स्थायी होइए। हमरा किछु ने चाही, खाली कमासुतनी पुतोहु कऽ दौथु।”

शिबु काका बजला- “बड़ नीक विचार छह तोहर। सएह करब।”

गप-सप्प चलिते रहए कि चन्दू मालिक रबियाक दरबज्जापर एला। शिबु काकाकेँ देख बजला-

“गोर लगै छी काका।”

शिबु काका अकचकाइत बजला-

“नीके रहअ बौआ चन्दु। आबह, बैसह। बहुत दिनपर भेँट भेलह, हाल-चाल कहअ।”

चन्दु मालिक बजला-

“सभ ठीके अछि काका, भगवानक कृपा आ अहाँ सबहक दयासँ दनदनाइ छी।”

शिबु काका बजला-

“केमहर आइ चान उगल जे तूँ एमहर घुमै छह?”

चन्दु मालिक बजला-

“यौ काका, लोकेक मुहेँ प्रसंशा सुनि एलौं हेन। लगधग महिना दिन पूर्व पोता भेल। की कहब, जखन पोताकेँ बजरूआ खाँटी करुतेल लगा कऽ जाँतैए तँ बच्चा फकसियारी काटि कनैए। अपनो छगुन्ता होइए, तखन अपनो तेल लगा देखलौं तँ सौंसे देहमे लहरए लगल। आँखिमे भकभका कऽ लागल।”

शिबु काका बजला- “हौ चन्दु, घरमे ढेरक-ढेर सेरसो उपजल हेतह, अखने लऽ आनह, तुरन्ते रबिया पेर देतह। ओ शुद्ध कंचन तेल कथी-ले लगेलासँ लहरत आकि देहे लसियाएत।”

रबियाक माए घरेसँ सुनै छेली। मालिक पोताक नाओं सुनि ओ रौतुका कौल्हुक ठोपारीबला तेल एक बाटी नेने एली आ बजली-

“अखने ई तेल नेने जाथु, पोतोकेँ आ अपनो लगा कऽ देखिहथिन।”

चन्दु मालिक तेल देख सुघिं प्रसन्न भेला। घर पहुँचते पोताकेँ तेल लगबैले कहलखिन। पोताकेँ तेल लगा-लगा जेते जाँतए पोता तेते हँसए। कथी-ले एकोबेर चूँ-चाँ करत।

चन्दु मालिक ओइ तेलमे सँ कनी तेल लऽ अपना माथपर लगा मुँह-हाथमे सेहो लगेला। बड़ नीक तेल, ने कोनो झाँस आ ने एकोरत्ती लहैर। तखने दस सेर सेरसो लऽ पेरबए विदा भेला। सभ कियो वएह तेल आँसए आ तीमनो-तरकारी करए। लगबैयो आ खाइयोमे बड़ सुन्दर लागल।

चन्दु मालिक प्रसन्न भऽ सोचए लगला जे एतेक सुन्दर काज लोक छोड़ि किए देलक?

चन्दु मालिक सौंसे गामक लोककेँ दुपहरियामे अपने दरबज्जापर बैसा कऽ कहलखिन-

"जेहेन समय भऽ गेल अछि तइमे शुद्ध खाद्य भेटब कठिन अछि। मनुखकेँ अपन काजपर भरोस करए पड़त। तखने शुद्ध चीज-वौस प्राप्त हएत। सभ कियो अपन-अपन गाए-महींस पोसू तखन शुद्ध दूध-दही आ घी मिलत। अपन हाथक कुटल-पीसल चाउर-चूड़ा-आँटा इत्यादि उपयोग करू। अपनासँ सेरसो-तोड़ीक तेल पेराउ तखने शुद्ध तेलसँ भेँट हएत। शुद्ध खाद्य खेलासँ निरोग काया रहत। आइ जे एते रंग-बिरंगक रोग-व्याधि पनैप रहल अछि एकर कारण ईहो सभ अछि जे शुद्ध खाद्यसँ हम-सभ दूर भऽ रहल छी। अपना हाथे काज केलासँ बेकारी सेहो दूर हएत। अपन पूर्वज लोकैन अहिना जीबै छला। ऐ सभ काजसँ एक-दोसराक सहयोग होइए आ समाजमे एकता आ प्रेम सेहो बढ़ैए। लोको स्वावलम्बी आ आत्मनिर्भर बनि असली जिनगी जीबैए। जहिना गाममे रबिया-बुधना काठक कौल्हु बैसा अपन रोजगार ठाढ़ केलक आ अपना मेहनतक बदौलत जिनगीकेँ खुखहाल बनौलक तहिना गाम-समाजमे तेतेक रंग-रंगक काज अछि जइमे लोक मेहनत करए तँ गाम-समाज खुशहाल भऽ जाएत। गामक लोक जे कमाइ खातिर घर छोड़ि बाहर जाइए से ने जाए पड़त।"

चन्दु मालिकक बात सुनि लोक सभ काज करैक संकल्प लेलक। सभ कियो थोपरी बजा चन्दु मालिककेँ बातकेँ सम्मान केलक।

शिबु काका रबिया-बुधनाकेँ कमासुतनी लड़की खोजि बिआह कराए देलखिन। दुनू भाँइ मिलि आब कौल्हुक जगह लोहोबला तेलपेरा मशीन कीनि लेलक। आब काजो बढ़ि गेल छेलइ। दुनू पुतोहुओ घरक काज सम्हारि लेली।

❑

शब्द संख्या : 3063

दूधबेचनी

चलितर आ पवितर दुनू भाँइक समल्लिते कमौआ परिवार अछि। माए-बाप पहिनहि स्वर्गवास भऽ गेलखिन। एकटा बहिन- रीता जुआन अछि। बड़ लूरिगर-कमासुतनी सुन्नर अछि। मुदा पढ़ल-लिखल नै रहने बिआहक गड़े ने लगैए जे लग्न ठेकत।

नारेदिगरमे सम्पन्न परिवार हिरालालक छैन। हुनका एकेटा बेटा- सोनेलाल, परिवारो नीक गुणगर अछि आ धनक कोनो कमीए ने। मुदा बेटा मतिछिन्नु, बिआह हेबे ने करए। चलितर-पवितरकेँ गड़ लगल, ओ अपन बहिनक बिआह सोनेलालसँ बिनु दहेजक केलक।

रीता सासुर बसए लगली। समय पाबि सासु-ससुरक सेवा टहल सेहो करए। उत्तम विचार मनमे रखने आ करितो। दू बर्खक पछाइत वसन्त पंचमी दिन रीताकेँ जौंआँ दूटा बेटा भेल। परिवारमे सभ कियो खुशीक माहैल बनौने।

छठीहार दिन भोज-भण्डाराक सरमजान करए लगल। धुमधामसँ छठीहार मनौल गेल। गौंआँ सभ कहए जे भगवानो जेकरा दइ छथिन तेकरा छप्पर फारि कऽ।

मुदा रीताक परिवारमे ई खुशी बेसी दिन नै रहल। तीनिये बर्खक पछाइत सोनेलालक मति आरो बिगैड़ गेल। राज-राजक इलाज

आ सिद्ध ओझा-गुनीसँ झाड़-फूक करौलक मुदा सुधरल नहि, मरि गेल। पुत्रक सोगमे हिरालाल दुनू परानी सेहो मरि गेला। पति, सासु-ससुरक इलाज श्राद्ध-कर्म आ भोज-भातमे तेते ने खर्च भेल जे रीताक धन हहैर गेल। बहुतो घरक समान आ जमीन-जत्था बीकि गेल। ने घरमे बुढ़-बुजुर्ग रहला आ ने गार्जन। मसोमाती राज, ने कियो कहनिहार ने सुननिहार। तैयो रीता धीर-गम्भीर बनि अपन सुझ-बूझसँ परिवारकेँ आगू मुहेँ ससारैत रहली।

दुनू बेटाक लालन-पालनमे कोनो कोताही नइ हुअ देलक। पाँच बर्खक पछाइत दुनूकेँ गामक स्कूलमे पढ़बए लगल। घर-गिरहस्ती आ खेतीक काजक लूरि रीता नैहरेमे सीखने छेली, तँए घर भरल-पुरल रखने। मुदा 1954 ईस्वीमे कोसीक बाढ़ि-पानि तेतेक ने आएल जे सम्पूर्ण नारेदिगरकेँ तहस-नहँस कऽ देलक।

रीताक जमीन कोसीक पेटमे समा गेल आ जे बँचल से बालुक बुर्जा बनि गेल। खट्टा, काश, पटेर आ झौआक बोनक अलाबे किछु ने देख पड़इ। रीताक चास बिलैट गेल। अल्हुआ, सुथनी, मरूआ, कौउन आ कोदो उपजा कऽ रीता जीवन चलबए लगली। दुख-पर-दुख बढ़ितो रीता जिनगीसँ हारि नै मानली। किछु दिनक पछाइत जन-मजूरी कऽ घरक खर्च चलबए लगली।

रीताक मन मोहिया कऽ घुरियाए लगल। मोहियाइते मन घुमि कहलकै- दू-चारिटा लगहैर गाए-महींस पोसब।

रीता अपन गहना बेच दूटा महींस आ तीनटा गाए कीनि सेवा करए लगली। घासक कोनो कमीए ने छल। घास काटि-काटि गाए-महींसक आगू ओगारबो करए आ एक साँझ चरेबो करए। दूध बेच कऽ गुजर करए लगली। नीक आमदनी हुअ लगल। दूधक कारोबार देख रीताकेँ लोक दूधबेचनी कहए लगल। दूधबेचनी सुनि रीताकेँ

खुशीए होइत। मनमे होइत रहैन घूसखोरनी आकि घूसखौकासँ सात कच्छे नीक अछि किने।

बेटाकेँ पढ़बै खातिर रीता दिन-राति अपन काजमे मनसँ लागल रहै छेली। दुनू बेटा जहिना देखै-सुनैमे नीक तहिना पढ़ैयोमे चन्सगर। बपटुगर रहितो दुनू बेटाकेँ रीता दरभंगामे राखि पढ़बए लगली। कोनो दिक्कत नै भेने फस्ट डिविजनसँ पास करैत एक भाँइ बी.एस-सी आ दोसर बी.कॉम कऽ नोकरी तलाशए लगल।

नोकरीक कम्पेटिशन परीक्षामे एक भाँइ रेलबेमे आ दोसर भाँइ बैंकमे कमप्लिट केलक। दुनू बेटाकेँ आन प्रदेशमे नोकरी भेल। दुनू भाँइ अपन-अपन बिआह अपने मने परदेशेमे कऽ लेलक आ परिवार बसा-बसा दुनू भाँइ सुख-मौजसँ रहए लगल।

बुढ़ माएकेँ के देखैए। दुनू भाँइ अपन-अपन काज आ परिवार लऽ कऽ उगए-डुमए लगल। धीरे-धीरे अपन गरीबीकेँ जहिना बिसरए लगल तहिना माइक कष्टकेँ सेहो बिसैर गेल।

झुनकुट बुढ़ भेने रीताक समांग खसि पड़ल। समांग खसने रीताकेँ ने काज करैक शक्ति आ ने गाए-महींसक सेवा-टहल करैक इच्छा-शक्ति रहल। अपन आगूक जिनगी केना चलत आ के सहारा करत तेकर चिन्ता बढ़ि गेल।

शारीरिक शक्ति घटने रीता सोचए लगली जे अपन कर्तव्य तँ हम इमान राखि बेटा लेल केलौं मुदा बेटाक धरम ने चाही जे अपन माइक दूधकेँ मोन राखत। जे बेटा दूधक कर्ज नै चुका सकैए ओ...।

बेटा लेल जेते केलौं तेते जँ समाज लेल करितौ तँ अपन कल्याण संगे समाजोकेँ कल्याण होइतए। बेकती खराप भऽ सकैए मुदा समाज नहि। तरवन समाजक शरणमे जा कसि कऽ पकड़ब सही हएत। ओना, समाजोमे तँ अपन प्रतिष्ठा अछिए। ने केकरो धारने छी

आ ने केकरोसँ उकटा-पुकटी कहियो भेल। हम अपन जिनगीकेँ काजमे लगौने छी तखन के हमरा अकठाह की अनटाह कहत। हम की कोनो जिनगीकेँ उखठाह बनौने छी जे कियो जरत-मरत। अपन जिनगी तँ सरल सरस अछिए, जरूर समाज संग देबे करत।

रीता सोचि विचारि दोसर दिन समाजक लोक सभकेँ बैसा बजली-

“हम समाजक बीच रहि जिनगी बितेलौं। अपन शरीरसँ कमा परिवारकेँ आगू ससारलौं। मुदा हमर समांग खसि पड़ल। बेटा-पुतोहु सभ जे करैए से अहाँ सभक सोझहेमे अछि। जखन बेटा लेल एते केलौं तँ हमर धरम बनैए जे समाजक लेल सेहो किछु करी।”

तैबीच बेचन बाजल-

“अपनेक इच्छा की अछि से खोलि कऽ आगू बाजू।”

रीता बजली-

“हमर अन्तिम इच्छा अछि जे अपन खेत-पथार-डीह-डाबरक संग गाए-महींस सभ किछु समाजकेँ सौंपि दी। जइमे एकटा गोशाला आ एकटा स्कूल बना दिऐ, जेकर कागज हम समाजकेँ बना देब।”

समाजक सभ कियो सर्व-सम्मैतसँ विचार मानि लेलक। तैबीचमे रामरीत आगू आबि बाजल-

“गोशाला आ स्कूल, दुनूक खगता समाजमे अछि। गोशालाक आमदनीसँ गरीबक धिया-पुता पढ़बो करत आ गाए-महींसक सेवो करत।”

बिच्चेमे एक बेकती ठाढ़ होइत बाजल-

“बड़ सुन्नर विचार। जखन एकटा दूधबेचनी एतेक तियाग करैले तैयार अछि समाजक खातिर तँ हम समाज मिलि हिनकर सभ सेवा-

टहल जिनगी भरि निमाहब। दूधबेचनी गामक इज्जतकेँ बढ़ौलक। धन आ ज्ञान दुनूकेँ बढ़बैले जे प्रण लेली अछि ओ साक्षात् लक्ष्मी-सरस्वतीक देवी भेली किने।”

समाजक लोक देवी रूपमे दूधबेचनी- रीताकेँ माला पहिरा समाजमे घुमबए लगल।

❑

शब्द संख्या : 832

गोदानक गाए घुमि घर आएल

कोसीक कहर आ कटनियाँसँ तबाह भेल सरयुग अपन माथपर हाथ रखि दुखित मने सोचैत रहए। जिनगीमे केतेको बेर घर बनेलक मुदा घरक सुख नै भेटल आ कोसीक कटनियाँमे दहा गेल। ने रहैले घर आ ने घराड़ी। दुनू बेटा, पत्नी आ बेटीक संग अपनो गाम छोड़ि सरयुग विदा भऽ गेल। जाइत-जाइत नेपालक बोडर कातमे सरकारीए जमीनपर गामक लोकसँ बाँस-करची जियल मांगि-चांगि एकटा फुसि घर बनेलक आ रहए लगल।

दुनू परानी बोइन-बुत्ता करि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबए लगल। सरयुग मेहनतिया कर्मठ अछिए, घर-घरहठक काजमे निपुन अछि, तँए काजक कोनो कमीए ने रहै छइ। सभ दिन काज करए।

सरयुगक पत्नी- सुगिया सेहो मेहनती, पितमरू, सहनशील, हँसमुख संस्कारी अछि। गामक लोक सुगियाक काज आ बेवहारसँ खुशो अछि प्रसंशा सेहो करैए। खेतीक काजमे सुगियाक हाथ कियो ने पकैड़ सकैए। काजमे बड़ झाड़ल, तँए लोक सुगियासँ काज करबए लगल। दुनू परानीक सभ-दिना काज भेटने बोइन-बुत्तासँ आमदनी बढ़ल आ जिनगीमे हरियरी आएल। सुगिया सभ दिन सबेरे खेनाइ बना धिया-पुताकेँ खिआ बकरी चरबैले भेज दैत अपनो काजपर चल जाइत। कमासुतनी आ जोगनी सुगिया तँए आमदनी हरिदम

पछुआएल रहैत। बकरीसँ सेहो आमदनी भेल तखन सुगिया पतिकेँ कहलक-

"बेटा-बेटी-ले एकटा गाए कीनब। बेटी घास-पात आनत आ बेटा गाए चराएत। सभ मिलि दूधो खाएब आ बेचबो करब। पछाइत पहिने बेटीक बिआह करब तखन बेटाकेँ कमाइले पंजाब भेजब।"

पत्नीक नीक विचार सुनि सरयुगो सहमत भेल।

बेटीक बिआह धुम-धामसँ केलक, गामोक लोक सहयोग केलक मुदा बेसी खर्च भेलासँ किछु महाजनी भऽ गेल। सरयुग अपन जेठका बेटा- रघुकेँ कमाइ-ले पंजाब भेज देलक। बेटाक कमाइ आ अपन कमाइसँ महाजनी सधा बढ़ियाँ घर बनौलक। तैसंग किछु घर-घराड़ी आ किछु खेती जोग जमीन कीनि लेलक। आब बोइन-मजदूरी करब छोड़ि अपन काज करैत जिनगी चलबए लगल।

एक दिन सुगिया पतिकेँ कहलक-

"रघु आब जुआन भऽ गेल। आब रघुकेँ घर बजा लिअ आ ओकर बिआह करि दियौ। नीक हएत जे अही फागुनमे कऽ दिऐ। ऐ समयमे गाए-बियाएत दूध-दही बेसी नै किनए पड़त। अपने गाएसँ पाँच सेर दूध भऽ जाएत।"

मुदा विचारल बात मनेमे रहि गेल। माघ मास रहइ सरयुग भोरबेमे पोखैर दिस जाइत रहए कि ठण्ढ लगि गेलइ। शरीरक अंग बेकाम भऽ गेलइ। समयपर उचित इलाज नै भेलासँ सरयुगक मृत्यु भऽ गेलइ। जेठका बेटा पंजाबेमे रहै, छोटका बेटा- बौकु, पिताक मुखाग्नि दए दाह-संस्कार केलक।

चारिम दिन छौरझप्पी हएत, कर्म लेल महापात्रजीकेँ बजौलक। महापात्रजी रघुक घर पहुँचते दुआरिपर बान्हल गाए देख हिया लेला। एहेन गाए परोपट्टामे किनको ने अछि। गाए साक्षात् लक्ष्मी सन अछि।

गाए महापात्रजीक नजैरमे बैस गेल।

छौरझप्पी केला पछाइत, जखन महापात्रजी घर पहुँचला तँ सुतै-बैसैत हरदम वएह गाए नजैरमे नचैत रहैन। गाए प्राप्त करबाक लेल महापात्रजी युगती खोजए लगला। मने-मन विचार केलैन जे श्राद्धकर्ममे गोदान लेल ओही गाएकेँ भाँजपर चढ़ाएब। घाटपर यजमानकेँ रिझा कोनो-धरानी मना लेब।

श्राद्धक समय लगिचा गेल। रघु नै आबि सकल। किएक तँ चिट्ठी पंजाब पहुँचैमे एक पनरहिया लगि गेल आ घर अबैमे चारि दिन आरो लगल। रघु अपन पिताक मरितो समय मुँह नै देखलक, आ ने पिताकेँ मरलापर आगि दए सकल। श्राद्ध-कर्म सेहो अपना हाथे नै कऽ सकल।

माघक मास जाड़सँ हार हिलैत रहए। पछिया हवा आ कुहेससँ अन्हार रहइ। श्राद्ध-कर्मक वास्ते महापात्रजी पहुँचला। पोखैरक महाड़पर घाट बनल, महापात्रजी कर्म करबैले बिछाएल नारपर बैस मोटगर चद्दैर ओढ़ि बौकुसँ बाजल-

"बौआ, पोखैरमे जा नहा भिजले वस्त्र पहिरने ऐठाम आउ, कर्म हएत।"

बौकु देहपर सँ चद्दैर उतारि जखन नहाइ-ले जाए लगल तँ जाड़सँ देह थरथराए लगलै। मने-मन सोचए जे हम कोन पाप केने छी, जखन सभ जान बँचबैले मोट चद्दैर आ कम्बल ओढ़ि जाड़सँ बँचैत अछि। मुदा हम छी अभागल जे एहेन विकट समयमे नेहाएब। परन्तु, पिताक लेल श्रद्धा भावसँ नहा कर्मपर बैसल।

श्राद्ध-कर्मक समानक कोनो कमी नहि, नव वस्त्र- खटिया, पटिया, छाता, साड़ी, धोती, मधु, मखान, पिण्ड, तील, जअ, अरबा चाउर, उसना चाउर, दालि, सतंजा अन्न, घी, दही, धुप, दीप, फल,

फूल, पान, सुपारी आ लड्डू इत्यादि यथास्थान पिण्ड कटाइमे सोना-चानी मांग केलैन। दक्षिणामे कमसँ कम दू साए एकावन रूपैआ हाथमे कर्ताकेँ लइले आग्रह केलैन।

महापात्रजीक सभ बात सुनि बौकु बाजल-

"हम गरीब छी। सोना-चानी तँ देखनौं ने छी। केतए-सँ देब।"

महापात्रजी बजला- "सोना-चानी शुद्ध द्रव्य होइए, विद्ध शुद्ध हएत। जखन अहाँ कर्मपर सोना-चानी दान करब तखने अहाँक पिता स्वर्गमे सोना-चानीक ठेरीपर बैसता आ अहूँ भरल-पूरल सभ दिन रहब। हम तँ कहबे करब, मुदा करब तँ अहीं।"

कर्ममे बिलम्ब भेल। बौकुक शरीर जाड़सँ थरथराइत रहए आ रहि-रहि कऽ कुदए लगल।

मने-मन महापात्रजी सोचए जे जेतेक देरीसँ कर्म हएत तेतेक जजमानक देह जाड़सँ कठुआएत। अपना लेल ई नीक्के। जजमानक देह जाड़सँ कठुआएत तखने जे मांगब से सभटा देत। मौका देख महापात्रजी बजला-

"जजमान! सोना-चानी नै अछि तँ छोड़ू, मुदा अन्तिम दान आ पैघ दान होइए गोदान। गोदानसँ अपनेक पिता आ पुर्खाकेँ स्वर्गमे सभ दिन दूध भेटत। अपनेक दरबाजापर हुनके पोसल-पालल गाए अछिए, ओ गोदान करू। तुरन्त दान महाकल्याण।"

एक तँ बौकु नवालिक अछिए, दोसर- जाड़सँ देह थरथरा रहल छेलै, बेचारा किछु सोचि समैझ नै सकल। मनमे एलै गोदान विध छी, फेर तँ गाए हमरे रहत।

ओ ई नहि बुझैत रहए जे गोदान कएल गाए महापात्रजीक हएत। गाए मंगा गोदान कऽ देलक। महापात्रजी दक्षिणा करा कर्म अन्त कऽ गाए-बाछीकेँ हँकने अपन घर पहुँचला। सज्जन दूधगर गाए

आ बाछी देख महापात्रक परिवारक सभ कियो खूब प्रसन्न भेल।

जखन पंजाबमे रघुकेँ घरक चिट्ठी भेटल खुश भऽ अपन मित्रसँ पढ़ौलक। मुदा चिट्ठीक बात सुनिते दुखी भेल।

पिताक मृत्यु सुनि तैयार भऽ घरक लेल ट्रेन पकैड़ चलि देलक। चारीम दिन जखन घर पहुँचल तँ देखलक घर-दुआरि उदास, अंग-भंग भेल अछि। दरबज्जापर गाए नहि, खाली नादि खुट्टा पड़ल रहए। जोर-जोरसँ अबाज देलापर बौकु आएल।

अबिते भैयाक देख हाथसँ झोड़ा आ माथक बेरा लऽ आँगन आएल। माए एकटा ओछैनपर सोगाएल पड़ल छेली। जे घर स्वर्ग सन रहए ओ आब नरक बनि गेल अछि।

रघु मने-मन सोचए पिता तँ स्वर्ग गेला मुदा गाए की भेल? कनियेटासँ गाएकेँ पालन-पोषण केने छेलौं। माए आ छोटका भाएकेँ बोल-भरोष देलक।

रघु रूखल-सुखल खाए भूख मेटौलक। पछाइत बौकुसँ पुछलक-

“गाए की भेलौं?”

बौकु डरिते बाजल-

“बाबूजीक श्राद्ध-कर्ममे गोदान कऽ देलिऐ।”

रघु- “किनका राय-विचारसँ गोदान केलही।अपने मनसँ आकि माए कहने रहौ?”

दुनू बेटाक बात सुनि माए बजली-

“बौआ एक तँ कमौआ बाप अचक्केमे दुनियाँसँ गेलौ, दोसर लक्ष्मी सन गाए सेहो दुआरिपर सँ चलि गेलौं। आब हम केकरा लऽ कऽ जीयब। केना गुजर काटब ऐ बुढ़ाड़ीमे।”

रघु, माए आ छोट भाएकेँ बोल-भरोष दैत बाजल-

“नसीबमे जँ लिखल हेतौ तँ गाए घुमि आबि जेतौ, नहि तँ माथ पटकलासँ आब की हेतौ।”

धीरज दैत रघु युगती खोजए लगल। रघु बौकुसँ पुछलक-

“महापात्रजीक घरक पता बुझल छौ, केतेक दूर आ केमहर अछि। हमरा संगे तूँ भोरे चलिहेँ।”

रघुक आँखिसँ नीन उड़ि गेल रहए। भोरबेमे उठि दुनू भाँइ हाथमे ठेंगा नेने दू कोस दूर, महापात्रजीक घरक समीप पहुँचल आ गामक चरचित लेलक।

गाए खुटामे बान्हल नादिमे सुखल कुट्टी करवनु-करवनु टुघरए आ रूकि-रूकि हौंकुरैत रहए। गाए खाइ बिनु दुबर आ दुखी रहए। बाछी तँ दूध बिना दूधकट्टू भऽ टगैत रहए।

किछु समय बाद महापात्रजी दूहै वास्ते बालटीन लऽ दरबज्जापर पहुँचला। बाछी खोलि गाएकेँ पन्हेलक आ बाछीकेँ ठठा दोसर खुट्टामे बान्हि दूध दूहलक। दुहैयेकाल बिच्चेमे महापात्रजीक छोट-बड़ बच्चा-बेदरू थनतरसँ बाटी-बाटी दूध लऽ पी-पी कऽ खुशी मनबैत रहए।

एमहर दुनू भाँइकेँ सभ तमाशा देख-देख करेजा फटैत रहइ। आपसमे विचार करैत रघु बाजल-

“देखही बौकु, महापात्रजी श्राद्ध-कर्ममे कहने छेलौं गोदान केलासँ पिता आ पुर्खाकेँ स्वर्गमे दूध खाइले मिलतौ मुदा से नहि, तोरा ठकि लेलकौ। देखही गाए तँ स्वर्ग नहि पहुँचल ओ पहुँचल महापात्रजीक घर। तोरा मुँहमे जाबी लगेलकौ आ अपना घरमे दूधक नदी बहबैए। सामने देखै छी, हुनकर बाल-बच्चा दूध पीब कऽ लहोठिया, भोल्टा सन खलीफा बनल अछि आ तूँ सुखि कऽ छहोड़ा

बनल छँह। देखही भरि बाल्टीन दूध दूहि आँगन लऽ जाइए।”

दुनू भाँइ हिम्मत कऽ महापात्रजीक दरबज्जापर आएल।

महापात्रजी दुनू भाँइकेँ देख बजला-

“जजमान बाउ, दूनू भाँइ पहुँचलौं हेन किछु विशेष बात छी की आकि कोनो आरो घटना भेल हेन?”

रघु आवेशमे आबि बाजल-

“हमरा पिताजीक श्राद्धकर्ममे अहाँ हमरा छोट भाएसँ गाए-बाछी ठकि लेलौं। माए मरत तँ दुनू भाँइ अहाँक दुआरिपर नोकरी करब की?”

महापात्रजी खिसिया कऽ बजला-

“की कहलौं जजमानजी, कनी सम्हैर कऽ बाजू। गाए-बाछी ठकलौं नहि, गोदानमे मिलल। समाजक लोक जनैत अछि।”

रघु बाजल- “गोदानक गाए स्वर्गमे जा हमर बाप-पुरुखाकेँ दूध कहाँ पीबैत अछि। ओ तँ अहाँक दरबज्जाक शोभा बढ़ौने अछि। आँखिसँ देख रहल छी जे अहाँकेँ दूध पीबैए। ई ठकपनी नहि भेल तँ की भेल?”

तखने रघु जोर-जबरदस्ती करैत गाए-बाछीक डोरी खोलि देलक। डोरि खुजिते गाए-बाछी रघुक घर दिस लंक लऽ कऽ भागल। बौकु रेबारैत गाए-बाछीकेँ, गाम दिस विदा भेल। पाछू-पाछू रघु सेहो दौड़ैत घर आएल।

गाए-बाछीकेँ देख रघुक माए जे सोगाएल पड़ल छेली ओ उठि कऽ खुशी होइत गंगा जल आ दुबि-धानसँ गाएकेँ चुमौलक आ प्रेमसँ पीठ पोछलक। गाए-बाछी अपन मलिकिनी सुगियाक हाथ चाटए लगल।

पीठिया ठोक केने महापात्रजी दू-चारिटा पंचकेँ बजौने संगे रघुक दुआरिपर पहुँचला आ पनचैती बैसा देलखिन। पनचैती हुअ लगल।

पंच लोकैन सभ बातक जानकारी लैत रघुसँ पुछलखिन-

“गोदान केलहा गाए लोक आपस नै लइए। ई धर्मक विरूद्ध छी जे पुरान लोकक कहब अछि।”

रघु बाजल- “पंच महराज, महापात्रजीसँ पुछियौन जे घरक मालिक पिताकेँ मरलापर माए होइए की नहि। हमर भाए- बौकु अखन नवालिगे अछि।

श्राद्ध-कर्ममे पोखैर महारपर भिजले देह पूजबैत रहैथ। जाड़सँ बौकु हिलैत रहए। पूजाक सामग्री आ वस्त्र, रूपैआ-पैसा, सोना-चानीक बहाना करैत लोभ-लाचलमे गोदानक बहाना करैत महापात्रजी हमर गाए हाँकि लेलैन। बाजल छला गोदानक गाए स्वर्ग पहुँच पिता आ पुरुखाकेँ दूध पीऔत। मुदा हम दुनू भाँइ महापात्रजीक घर पहुँच कऽ देखलौं जे हुनकर बाल-बच्चा दूध पीबैत अछि। ई केतेक उचित छी।

ई अन्धकारमे पड़ि समाज केतेन दिन पिसाइत रहत। हमर आइ आँखि खुजि गेल। ई गोदान पुरुखा लेल नहि, महापात्रजीक लेल होइए। महापात्रजी बौकुकेँ नासमझ, अबोध जानि गोदानक बहाना बना गाए ठकि लेलैन। ई ठक नहि छी तँ की छी?”

सभ पंच आपसमे विचारि बजला-

“श्राद्ध-कर्म हुअए मुदा गोदान इत्यादि आडम्बर आ अन्ध-विश्वास छी। समाजक लोक सचेत रहू। रघु आइ समाजक आँखि खोलि देलक। जखन महापात्रजी कहने गोदानक गाए स्वर्ग पहुँच मरलहाकेँ स्वर्गमे दूध पीबैत अछि।

मुदा गाए स्वर्ग नै पहुँचल तँ गाए महापात्रजी अपना घर किए लऽ गेला। ओ इमानदारीसँ गाए रघुकेँ घुमा देथुन।"

महापात्रजी पंचक बात सुनिते मुँह लटका घर दिस विदा भेला।

❑

शब्द संख्या : 1612

असिरवाद

बात तीन दसक पूर्वक छी। एक समय बहुत तेजीसँ एहेन खबैर पहुँचल कि गाम-गामक लोक उठि कऽ पीपरा जाए लगल। पीपरा ओइ समय सहरसा जिलाक अन्तर्गत छल। मुदा अखन सुपौल जिलामे अछि। खबैर छल-

“पीपरामे एकटा बुढ़ियाकेँ भगवती मैया सपना देलखिन जे निर्मल मनसँ बिना भेद-भावसँ लोकक बीच जड़ी-बुटीक बनल दवाइ नि:शुल्क प्रसाद रूपमे बाँटू। ऐ दवाइसँ कोनो प्रकारक रोगसँ ग्रसित रोगी छुटकारा पाबि जाएत।”

ई खबैर काने-काने सुनैत गेल आ छुआछुतबला रोग जकाँ तेजीसँ बढ़ैत गेल। ई बात टेलीफोनक माध्यमसँ तेजीसँ पसरल।

ई बात सुनि गाम-धरसँ हेंजक-हेंज बेमार लोक पीपरा पहुँचए लगल। पीपराक भीड़ सिंहेश्वर मेलाकेँ फेल कऽ देलक। भीड़केँ कन्ट्रोल करैले प्रसाशनक ओरसँ पुलिस लगौल गेल छल आ गामक लोक सुरक्षा लेल मदैत करैत छल।

यएह खबैर सुनि लक्ष्मीनियाँ गामक किछु लोक पैदल कोसी नदी पार करैत सुपौलक रस्तासँ पीपरा पहुँचल। ओइठामक दवाइ खा घुमि घर आएल।

सही जानकारी मिललासँ हमरा गामक दोसर हेंज पीपरा जेबाक योजना बनौलक। योजना ऐ तरहसँ बनाएल गेल जे कम खर्चमे, सुगम रस्तासँ एक-दोसरक सहयोगसँ मिलि-जुलि संगे जाएब आ आएब।

लक्ष्मीनियाँसँ पीपरा लगभग पैंतीस-चालिस किलोमीटर अछि, दच्छिन-पूबक कोणमे। विचार एहेन भेल जे निर्मलीसँ पूब कोसी नदीकेँ तीन-चारि धारक समूह पार करैत सुपौल पहुँचब आ दोसर दिन सुपौलसँ पीपरा पहुँचब। ई बात सुनि हमर माए हमरो गौंआँक संग जाइले कहली। किएक तँ ओइ समय हमर उमेर लगभग बारह-तेरह बर्खक छल जे बरबैर बेमारे रहै छेलौं।

विहाने पीपरा जेबाक तैयारी भेल। हमहूँ खाइ-पीबैक समान आ एक सेट कपड़ा- चद्दैर, गमछा आ धोती झोड़ामे रखि तैयार रही। पता लागल जे गामक दू-तीन झूण्ड भोरे विदा भऽ गेल। मुदा हमरा टोलक झूण्ड दिनुका भोजन कऽ विदा भेल। ऐ झूण्डक संग हमहूँ विदा भेलौं। मुदा हमरा जाइक विचार नहि छल, किए तँ कोसी धारक रस्ता छी, पैदल चलए पड़त। जाइ-अबैमे पाँच-छह दिन समय बेकार भऽ जाएत।

हम सतमा बोर्ड परीक्षाक तैयारीमे लगल छेलौं। गर्मीक मौसमक अन्तिम सप्ताह रहइ। तँए, सफर करब उचित नै बुझि पड़ै छल। मुदा मनोबल कम नै छल। अपने पड़ोसिया काका-भैया संगे निर्मली होइत कोसीक कछेरमे पहुँचलौं। कोसीक भीषण बाढ़ि ढलपर ढल बजरैत देख सबहक हिम्मत टुटि गेल। तैयो किछु संगबेक विचार भेलैन जे नाहसँ टपि चलू। यात्रीक कमी नहि, नाहेक कमी छल। मुदा ओइ समयमे एकटा मझोलबा नाह लऽ नाविक आएल। घाटपर लगिते नाह खचा-खच्च भरि गेल। स्थिति-परिस्थित देख हम अविलम्ब

निर्णय लेलौं की नाहसँ कोसी पार नै भऽ सकब। एहेन स्थितिमे नाह डुमि सकैए। हम अपन मेरियामे ई विचार रखलौं।

किछु लोक हमर विचारकेँ विरोध केलैन। बजला जे चढ़ल नाह केना घुमि जाएब।

मुदा हम अपन निर्णयपर अडिग रहलौं। हमर संगबेमे किछु लोक नाहसँ उतैर गेला मुदा किछु लोक, जे हट्ठी छला से नाहसँ पार भऽ जेबाक लेल नाहसँ नहि उतरला। घाटसँ खुलिते नाह पानिक तेज धारामे एकाएक आँखिसँ ओझल भऽ गेल। नाहमे सवार किछु लोक, जे हेलब जनै छल ओ सभ अपन-अपन जान बँचेलक। मुदा अधिकांश लोक कोसीक तेज धारामे समा गेल।

आँखिक देखल ई घटना अखनो चौंका दैत अछि। चौंक गेल छला ओहो सभ जे हमर बात मानि नाहसँ उतैर घाटपर ठाढ़ रहैथ। सभ कियो हमरा धन्यवाद देलैन आ पुन: हम सभ निर्मलीमे बस पकैड़ विदा भेलौं।

रानीगंजमे दोसर बस पकैड़ रातिमे पीपरा पहुँचलौं। हम सभ यात्रीगण उचित स्थान एकटा बाधमे बनल स्कूलक ओसारपर शरण लेलौं। भीड़ एतेक जे सुइयो ने समा सकै छल।

खाइ-पीबैक लेल ने दोकान आ ने होटल ठहरैक स्थान। अपन-अपन झोड़ासँ चूड़ा, सतुआ निकालि सभ कियो खा कऽ पानि पीब राति बितेलौं। भोरमे उठि बेरा-बेरी दिशा-मैदानसँ निवृत्त भऽ दतमैन कऽ नहाइ-ले पाँतिमे लगलौं। पानिक बड़ अभाव, ने इनार-पोखैर आ ने कोनो नदी छल। मुदा पंचायतक ओरसँ दूटा चापाकल सड़कक कातमे, किछु हटि कऽ खेतमे गाड़ल छेलइ। विशाल भीड़ आ रैलामे लोक केना नहाइत। कोनो तरहेँ दू लोटा पानि माथपर ढारि भिजले देहे दवाइ लेल लाइनमे लागि जाइ छल लोकसभ। दवाइ मिलत कि नहि,

तेकर ठेकान नहि। मुदा देर-सबेर सभकेँ भांग-बथुआक कुटल-पिसल दवाइ प्रसाद सभकेँ एक चुटकी भेट जाइ छल।

हमहूँ आ हमर संगी सभ सेहो बेरा-बेरी लाइनमे लगि गेलौं। भोरे जे लाइनमे लगलौं तँ नअ-दस बजे करीबमे दवाइ मिलल। दवाइ खा पानि पीब सभ संगी अपन-अपन जलखै निकालि पनपियाइ केलौं। तरवन सबहक विचार भेल कि दिनुका भोजन लेल सभ मिल अपनेसँ भानस-भात करब।

माटिक दूटा पतली, कराही, चाउर, दालि, अल्लु, नोन, तेल, मिरचाइ आ राहैर दालिक बेवस्था केलौं। भात-दालि आ अल्लुक चोखा बनैत-बनैत दुपहरिया बीति गेल। भूखसँ सबहक देहमे कोनो लज्जैत नहि छल।

भोजन बड़ नीक नहि तँ कोनो बेजाइयो नहि। ओना, तँ भूखलमे गुल्लैर सेहो मीठे होइ छइ। मुदा भात-दालिक संग अल्लुक चोखा, सभ कियो भरि-भरि इच्छा खेलौं। बरतन-बासन धोइ गाछक डारिमे बान्हि लटका रखलौं, किएक तँ आइ राति रहि फेरो दोसर दिनक दोसर खोराक दवाइ खा कऽ जाए पड़ैत। लग-पासक कारनी सभ तँ पहिल खोराक दवाइ खा कऽ अपन-अपन घर चलि जाइत छल मुदा हमरा सभ संगे तँ से नहि, दूरसँ आएल छी, रहए पड़त।

किछुकाल धरि अराम केला बाद घुमि-फिर कऽ पीपरा बजारक सभ अनुभव केलौं। पीपरा बजार ओइ समयमे कोनो नमहर नहि, चौक जकाँ दस पाँचटा दोकानक छल। मुदा पीपराक खाजा बड़ नामी छल, मसहूर। दस रूपैये किलो खाजा मिलै छेलइ। कियो आधा सेर तँ कियो सेर भरि खाजा सनेसक लेल लेलक। रातिमे किनको भूख नहि, किएक तँ दिनमे सभ अबेरमे खेने छेलौं। बीच-बीच खाली पानि पीबैत रही।

रातिमे सबेर-सकाल ओइ स्कूलक ओसारपर कहुना कऽ घोंसिया-घोंसिया जगह बना सुइत रहलौं। भोरबेमे उठि दिशा-मैदान आ दतमैन कऽ नहाइ-ले लाइनमे लगलौं। भीड़ एतेक जे चापाकलक चारू बगल लोक थाहा-थही करैत। कलक चारूकात कट्ठा भरिमे थाले-थाल। ओइ थालमे धक्कम-धुक्का, रेलम-रेल करए, कियो पिछैड़ थालमे गिरबो करए। एक तँ नहाइमे लाइन लगल-लगल लोक अधमरू भऽ जाइत छल। दोसर दवाइ लेल सेहो लाइनेमे लागल रहए पड़इ। रौद-गर्मीमे मौलाएल लोक पानिक आसमे। हम सोचै छेलौं कि हमरा सबहक समाजमे अखनो धरि लोक अंध बिसवासमे पड़ि अपन जान गमबै पाछू पड़ल अछि। ऐठाम तँ नीको लोक बिमार भऽ जाएत। सोचैत रसे-रसे ओइ थालमे अपने डेग बढ़बैत आगू बढ़ै छेलौं। ओइ समयमे नजैर बगलबला पाँतिपर पड़ल। देखलौं एकटा मौलबी दुबर-पातर सुदामा जकाँ एक हाथमे पातर ठेंगा, दोसर हाथमे बदना नेने ओइ भीड़मे मरैले तैयर छला। बदना आ पकलाहा नमहर दाढ़ी देख हम बुझि गेलौं कि मुसलमान मौलवी छिआ।

मुदा ओ ठेलम-ठेलमे ठेला कऽ पिछैर थालमे गिर गेला। हाथक ठेंगा आ बदना छुटि फेका गेलैन आ अपने ठेहुन भरि थालमे खसि पड़ला। ओइ पाँतिक लोक मुँह तकैत रहि गेल, कियो पाँति छोड़ि मदद करैले तैयार नहि, किए तँ पाँतिमे पाछू पड़ि जाएत। मनमे भेल जे हुनकर जानक मदैत जरूरी अछि। किएक तँ कोनो बेकतीक परान बँचाएब सभ मनुखक धर्म होइत अछि। हम झट-दे अपन हाथक लोटा दोसर बेकतीकेँ पकड़ा हुनका लग फानि कऽ गेलौं। हुनकर दुनू बाँहि पकैड़ भरि पाँज कऽ पकैड़ पजिया कऽ उठा थालसँ बाहर सुखल जमीनपर बैसा ठेंगा आ बदना सेहो आनि कऽ हुनका हाथमे पकड़ा देलिऐन। हुनकर देह केराक भालैर जकाँ काँपि रहल छेलैन।

ओ वेचारे कुहैर कऽ बजैत हमरा माथपर हाथ राखि असिरवाद

दैत बजला-

“खुदा तुझे शलामत रखे।”

हुनकर ईशारासँ हम समझलौं की ओ पानि मांगि रहल छैथ। हम हुनकर बदना लऽ थालमे घुसि भीड़केँ धकलैत पानि आनि हुनका हाथमे देलिऐन। पुन: अपन लोटा लऽ पाँतिमे लागि गेलौं। मुदा दोसर खोराक दबाइ सहजे मिल गेल। हम दवाइ खा स्कूलपर आबि गेलौं। हमर सभ संगी साथी दवाइ लऽ आपस आबि भोजन बनबैमे लागि गेल। सभ कियो भोजन कऽ अपन-अपन झोड़ा-झँटी लऽ घर तरफ विदा भेलौं।

जखने हम सभ बस लग एलौं कि ओहूठामक भीड़ देख अचम्भा लागि गेल। बसमे तील रखैक जगह नहि। बसपर लोक निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि ठसमठस। बस तँ देखेबो ने करए, खाली लोकेटा देखाइ। हमर संगी सभ बसपर छड़ैप-छड़ैप ऊपर चढ़ए लगल मुदा हम बजलौं-

“हौउ सुनै जाइ जा, एना काज नै करह। जानक खतरा मोल नै लएह। कोनो बसबला मंगनी लऽ जाएत। बसपर निच्चा-सँ-ऊपर धरि केतौ जगह नै छै, जँ लटैक-फटैक जाएब तँ खतरा हेबे करतह। तूँ सभ जेबह तँ जाह मुदा हम दोसर बससँ जाएब।।”

हमरा लाटक सभ संगी बससँ उतैर गेल। हम सभ दोसर बसक इंतजारमे ठाढ़ भऽ गेलौं। लगले दोसर बस आएल आ सवारी चढ़ौलक। दस मिनटमे बस खुजल। पीपरासँ रानीगंज होइत कोसी बराजपर दऽ कऽ साँझ पड़ैत कुनौली पहुँचल। मुदा कुनौलीसँ निर्मलीक लेल कोनो बस नहि, पता चलल जे एकटा बसक दुर्घटना भेल जइमे बहुतो लोक मरबो कएल आ घाइलो भेल। तँए, बस बन्न रहए। साँझक समय, गर्मी सेहो छेलै, हम सभ पएरे विदा भेलौं किएक

तँ घरमुहाँनी चलैमे हिम्मत रहए। चलैत-चलैत कुनौलीसँ महादेवमठ रातिक साढ़े आठ बजे पहुँचलौं। सभकेँ भूख-पियास लगि गेल। सभ थाकि गेलौं। सबहक विचार भेल जे राति महादेवेमठमे बिताएब। भोरे चलब। जलखै बेर घर पहुँच जाएब। मुदा बसक दुर्घटना भेलासँ रस्ता बाधित रहए। कोनो गाड़ी नै रहलासँ महादेवमठमे सवारीक भीड़ बढ़ले जा रहल छल। छोट-छीन चौकपर पाँच-सातटा दोकान, सेहो चुटपुजिया। फुटहो ने खाइले मिलए जे पानियोँ पीब। सड़केपर बैस सभ कियो पचताइ छेलौं कि एकटा नमहर ट्रक आएल। ट्रकक खलासी हल्ला करैत बाजल-

"निर्मली जाइले जे यात्री छी से चलू, पाँच रूपैआ भाड़ा लगत।"

यात्री सभकेँ यात्राक मुसिबत रहबे करए, पाँच रूपैआ भाड़ा देलासँ एके घन्टामे घर पहुँच जाएब। सभ कियो ओइ ट्रकमे सवार भऽ गेल। ट्रकक खलासी पहिने सभसँ पँच-पँच रूपैआ भाड़ा तसील लेलक, तखन ट्रक खोललक। ओइ समयमे सड़क पकी आ बढ़ियाँ नइ रहए। केतौ पक्की तँ केतौ कच्ची सड़क रहए।

जखन ट्रक उछलैत-कुदैत भुतहा सुलीश गेट लग आएल, ओही दिन साँझक समयमे जे बसक दुर्घटना भेल रहए, जइमे पनरह आदमी मरल आ पचीस-तीसटा घायल भेल छल, तँए ओइठाम माने सुलीश गेट लग पहिने ट्रकेँ रोकि पुलिस छान-बीन केलक। रातिक समय, पुलिसक पहरा, सुनसान जगहमे ट्रकक रोशनीपर, एक-दिसनेसँ पसरल लाश- जे टुटल-फाटल आ थकुचल लेहु-लोहान देख सबहक प्राण सुखि गेल। जहिना जगहक नाओं भुतहा तहिना मुर्दासँ भरल स्थल। डरसँ सबहक माथ चकराए लगल। मुदा पुलिस पुछ-ताछ केला बाद ट्रककेँ आगू बढ़ैले इशारा देलक।

भुतहासँ ट्रक विदा भेल। हम सभ एगारह बजे रातिमे निर्मली पहुँचलौं। निर्मली पहुँचलापर सबहक जान पलैट गेल। सभ संगी-साथी एकेबेर बाजल-

"ठीके आजुक यात्रामे कोनो ग्रह रहए। तखन जे पीपरामे पहिल बस छोड़ि देलौं से नीक्के भेल। ओही बसक यात्रीक मेलसँ जे बस आएल वएह यात्री सभ दुर्घटनाक शिकार भेल।"

काका बजला-

"कर भला तँ हो भला।"

हम बजलौं-

"से तँ ठीके भेल। पैघ लोकक आशिर्वाद बड़ काज दैत अछि। जखन हम पीपराक भीड़मे जे बुढ़बा मुसलमान-फकीरकेँ थालमे सँ बँचेलिऐ, तखन ओ आशिर्वाद दैत कहलैन- खुदा तुझे सलामत रखें। वएह आशिर्वाद अखन काज देलक। तँए, आइ अपना सभ सलामत घर घुमि ऐलौं।"

काका बजला-

"हौ बौआ, तँए लोक सभ जखन घरसँ आनठाम जाइले विदा होइए तँ बड़-बुजुर्गकेँ गोर लागि पहिने आशिर्वाद लइए। मुदा हमरा आइयो मन कहैत रहैए जे माइक आशिर्वादसँ कोसीक धारमे डुमैसँ बँचलौं आ अबैत काल मोलबीजीक असिरवाद बसक दुर्घटनासँ बँचि सुरक्षित घर घुमि एलौं। से मन पड़ैत रहैए। माइक आशिर्वाद आ मोलबीजीक- अल्लाह तुझे सलामत रखें। से बेर-बेर अखनो मन पड़ैत रहैए।"

❑

शब्द संख्या : 1722

ई केकर दोख

रूपन आ कारी लंगोटिया संगी। दुनू गोरे बच्चेसँ संगे खेलाए आ संगे पढ़बो करए। जाति एक नइ रहितो खेनाइ-पीनाइमे कोनो भेद नहि। दोस्तीक केतेको कथा पढ़ने आ उदाहरण जनने दुनू गोरे दोस्तीक सम्बन्ध जोड़ि कृष्ण-सुदामा जकाँ निमाहैक संकल्प केलैन। बातो अहिना छेबो करए जहिना रूपन अमीर तहिना कारी निच्छस गरीब। मुदा आगू चलि रूपनक सोभाव धूर्त्त कपटी मुदा कारी निश्छल सोझमतिया। तैयो दुनू जे बच्चेमे संकल्प केने छल ओकरे इमानदारीसँ दोस्ती निभा रहल अछि। दोस्तीमे कुश्ती हेबाक कहियो अवसर नै आएल। कारी सत्तयुग दिस तँ रूपन कलियुग दिस ।

रूपन धनी भेने आगू पढ़ैत रहल आ कारी पाँच किलास पढ़ि, पढ़ाइ छोड़ि देलक। कारण जे कारीक पिता घुरन अल्पे उमेरमे मरि गेला। बापक श्राद्ध-कर्म करैमे कारी कर्जाक तर दबि गेल। माए तेतरी मसोमात बनि कारीकेँ संगे काजक लूरि सीखेबो करए आ बोनि-मजूरी कऽ कहुना दुनू साँझक बुतात ओरियान करैत रहल। पतिक मरने चिन्ता-सोगमे सोगाएल तेतरी बेमार भऽ गेली। बेटाकेँ परिवारक भार देख तेतरीक मन आगू-पाछू हुअ लगल। एक दिन बेटाकेँ कहलखिन-

“बौआ, हमरा जिनगीक कोनो ठेकान नै रहि गेल। जीब की मरब। हम अपने जीबैत तोहर बिआह कऽ लेब जे परिवार नीक-

नहाँति चलतह। घरक काजो बाँटि-बाँटि करियह। आब हमर कोनो ठेकान अछि। अहुना बपटुगर छह आ हमहूँ मरि जाएब तँ बपटुगर-मइटुगर दुनू भऽ जेबह। एक तँ गरीब छहे, दोसर पेदार भेने के अपन बेटीकेँ तोरासँ बिआह करतह।"

तेतरी अपन लत्तिया-गोतियासँ भाँज लगा कारीकेँ बिआह केलक।

कारीक मित्र रूपन पढ़ि इण्टर पास केलक मुदा कोनो नोकरी नइ भेने कलियुगक राह पकड़ने अछि। लुच्चा-लफंगा बनि ठक-फुसिक काज करए लगल। सभ दिन एक-दूटा उपराग रूपनक माए-बापकेँ भेटैत रहए।

रूपनक पिता अबध गामक प्रतिष्ठित लोक छैथ। रूपनक बेवहार आ चालि-चलैनसँ उबि बिआह कऽ देलैन। मुदा रूपनकेँ घरक काजमे मन नै लगैत रहए। ओ गामक किछु नवयुवकक संगे बैसार केलक आ एकटा नाचक कम्पनी ठाढ़ केलक। नाचक सभ सरमजानक ओरियान कऽ ओइ पछारी पड़ि गेल। आइ ऐ गाम तँ काल्हि ओइ गाममे नाचक काजसँ बेहाल रहए लगल। अपने रूपन नाचक कम्पनियो छी आ नाचक पाटो नीके खेलैए। परोपट्टामे रूपन नीक नचनियाँ-गबैया-बजबैया। मुदा ओकर बेवहारसँ कियो खुश नहि। जइ कारणेँ रूपनक पत्नी खुशी नहि, दुखी रहैए। दुनू परानीमे सभ दिन खटपट होइते रहैए। तीनटा सन्तान रहितो रूपन घरसँ फरारे रहैए। तीन-चारि बरख धरि तँ नाचक पार्टी चलल मुदा बादमे छिटफुट भऽ बन्न भऽ गेल। रूपनकेँ दोसर काजमे मन नै लगै छल। ओ नीक गबैया-बजबैया छीहे। गामे-गामे भजन-कीर्तन करैए आ नीक-नहाँति भोजन-भात करैए। ऐ तरहेँ ओ केश दाढ़ी बढ़ा आडम्बरी बबाजी बनि गेल। बबाजी भयंकर, काज छुतहर। भजन कम आ छौड़ी-मौगी

सभकेँ पटियाबैमे बेहाल। कोखिया गुहारि, ओझ-टोन आ तंत्र-मंत्रक धंधा बेसी। केतौ-केतौ जशो कमाइए आ केतौ-केतौ मारियो खाइए।

सभ पायासँ हारि रूपन अपन घर पकैड़ लेलक। हारल नटुआ आ बिगड़ल बबाजी, तँए गाममे कोनो मोजरे नहि। किछु दिन घरमे मन मारि रहल। पत्नियोँ करवनो जी नइ लगबै छेली। जखन कहा-सुनी होइ तँ पत्नी परचट्टा, तीमनचट्टा, थूकचट्टा इत्यादि सभ किछु कहि दइ। तैयो रूपन घबहा कुकुर जकाँ घरेमे मुँह छिपा रहैए। किछु दिनक पछाइत, जखन मनमे असथिरता नइ आएल तखन रूपनकेँ अपन लंगोटिया संगी- कारी मन पड़ल। सोचए लगल- जँ आनठाम आन दरबारमे जाएब तँ मानहानी हएत, मुदा दोसक घर जा भेँट करब तँ दोसक मनमे जिज्ञासा बढ़त, दोस्तीमे प्रेम बढ़त आ आदर-मान सेहो हएत।

एक दिन रूपन भोरे अन्हरोखे कारीक घर दिस विदा भेल। जाड़क समय, ओस-कुहेस लगल रहए। रस्ता निहारि-निहारि आगू बढ़ैत कारीक दरबज्जापर रूपन अनभुआर जकाँ पहुँचल। कारी गोहालमे घूर लगा आगियो तपै छल आ कंकर भरि चीलममे आगि बोझि सुनगाबैत रहए। पैरक धमक सुनि कारी अकानए लगल। तैबीच रूपन 'दोस' कहि अवाज देलक। अवाज सुनि कारी चिन्ह तँ नहि सकल मुदा मुड़ी निकालि देखलक तँ रूपन दोसकेँ देख, खुशी मनसँ बजौलक आ एकमुट्ठी पुआर आनि घूरे लग बैसौलक। हाथक कंकर भरल चीलममे सोंट मारि दोसक हाथमे दैत बाजल-

"जाड़ बड़ छइ। जड़ाएल एलौं हेन, कंकर पीबू। बहुत दिनक बाद एलौं हेन। ताबे हम अँगनासँ एक लोटा पानि आ चाह नेने अबै छी।"

अँगना जा पत्नीकेँ कारी कहलक-

“बहुत दिनपर हमर लंगोटिया आएल हेन। कनी चट-दे नीक चहटगर चाह बनेने आउ। ताबे हम पानि दइ छी।”

कारीक पत्नी- मंगली धिया-पुताकेँ सुतले छोड़ि, उठि झट-दे चाह बना दूटा गिलासमे लऽ दरबज्जापर एली। एक गिलास चाह दोसकेँ आ दोसर गिलास पतिक हाथमे दऽ चलि गेली।

दुनू दोस गपो-सप्प करए आ चाहो पीबए। मंगली अँगने चाह पीब घर-आँगनक काज करए लगली। बरतन-बासन आ घरक काज कऽ भानस-भात करैक ओरियानमे लगि गेली। किए तँ आइये कारीकेँ कमाइ खातिर बाहरो जेबाक अछि। तँए, भानसक पछाइत बट-खर्चो बनाएब छइ।

कारी-रूपनक दोस्तीमे अगाघ प्रेम अछि। दुनू दोस्तक बीच गप-सप्प चलैत रहल। तखने भानस भऽ गेल। मंगली दू लोटा पानि नेने दरबज्जापर आबि खेनाइ-खाइले आग्रह केली।

दुनू गोरे हाथ-मुँह धोइ अँगना जा भोजन करए लगल। मंगलीक चहल-पहल देख रूपन बाजल-

“दोस, आइ केतौ जेबाक प्लान बनल अछि की? बेसी सरनजामक ओरियान देखै छी!”

कारी बाजल-

“दोस, अहाँसँ छाम की करब। सभ दिन तँ जिनगी गरीबीएमे बीतैए। माए-बापक कर्जासँ लऽ कऽ अपनो कर्जा-बर्जा माथपर लादले अछि। परिवारो बढ़ि गेल। तीनटा धिया-पुता आ दुनू परानी मिला पाँच गोरे भेलौं। काम-धाम गाममे नहियेँक बरबैर अछि। हाथ जोड़ि केतेक दिन धरि बैसल रहब। रहैले घराड़ीए-टा बँचल अछि। जँ ओहो कर्जे तरे बीकि जाएत तँ धिया-पुता सभ बिलैट जाएत। तँए, मन बनेलौं हेन कि घरसँ बाहर जा कमाएब। किछु बँचा कऽ कर्जो

चुकाएब आ घरो-परिवारक खर्च चलत। अही खातिर आइ ओरियानमे लगल छी। कलकतामे हमर मसियौत भाए सभ बहुत दिनसँ काज करैत अछि, वएह सभ कहलैन जे अहीठाम आउ, नीक कमैनी हएत। ओतइ जाइक प्लान केने छी। भने आइ अहूँ समयपर आबि गेलौं। भेँटो-घाँट भइये गेल आ हालो-चाल जानि लेलौं। हम बाहर जाइ छी, जाबे हम घुमि घर आएब तैबीच अहाँ हमरो बाल-बच्चाकेँ देखैत रहब।"

रूपनक मनमे खोंट अछिए ओ कारीसँ मजाक करैत बाजल-

"दोस, सिरिफ बाले-बच्चाक देख-रेख करब कि दोस्तिनियोकेँ?"

कारी सोझमतिया, हँसैत रूपनसँ बाजल-

"ई की कहै छी, जखन हम नै रहब तँ अहीं ने सभकेँ देखबै।"

रूपन अपन दाव लगबैत बाजल-

"अहाँ अपन पत्नीकेँ बजा हमरा सोझहेमे कहि दियौ, जँ मानि लेती तँ हमरा कोनो हर्ज नहि। जँ नइ मानती तखन हम की करब।"

पत्नीकेँ बजा कारी रूपनकेँ सोझहामे बाजल-

"जाबे हम घर घुमि नै आएब, ताबे अपन दोस- रूपन अपना घरकेँ देखत। कोनो खगता-बेगरता हएत तँ दोस पूरा करता।"

कारी अपन झोरा-झण्टी लऽ विदा भेल।

कारी अपन उदेसमे कलकत्ता पहुँच गेल। दू दिन धरि कलकत्ता घुमि-घुमि देखबो करै छल आ काजो खोजै छल। मुदा काज ओहन भेटै जइमे गुलाम बनि करए पड़ैत आ दरमहो कम्मे। जखन कि कारीक मनमे रहै जे काज ओहन हुअए जे स्वतंत्र होइ। जखन मन हएत करब, नइ मन मानत तँ नहि करब। सोच-विचार करैत कारी अपन रिक्सा चलबैक निर्णय केलक। जखन मन हएत चलाएब वा नइ

मन हएत तँ नइ चलाएब। दिनमे रिक्सा कम्मे चलत मुदा रौतुका समयमे बढ़ियाँ आमदनी हएत।

कहियो कम आमद होइ आ कहियो एतेक भऽ जाइ जे सभ दिनक उनाड़ी भऽ जाइ। कारीकेँ रूपैआ कमबैक भूत सवार भऽ गेल। मनमे रहै कर्जा सठेबाक अछि। कारी सोचलक- समय जे लगत मुदा एतेक जरूर कमा लेब जइसँ कर्जा चुका लेब आ अपना परिवार-ले रूपैआ रहत तँ गामेमे कारोबार सेहो ठाढ़ करब। परिवारक भरण-पोषण नीक जकाँ हएत आ धियो-पुतो-ले नीकसँ सोचब। ताधैर घर-खर्चा लेल बीच-बीचमे रूपैआ पठबैत रहब।

एमहर रूपन बबाजी एक तँ नौतल दोसर राकस। चरित्रहीन आ छिहत्तरा तँ पहिनहिसँ रहबे करए, दोसर कारीक बनाएल घर-परिवारक देख-भाल करैक पावरनामा सेहो भेटल रहइ।

रूपन अपन डेरा कारीक घरपर खसा लेलक। आ मंगलीकेँ फुसिया मनकेँ मोहि रूपन अपन शारीरिक सम्बन्ध बनबैक उदेससँ कहियो साड़ी तँ कहियो तेल-साबुन-सिनुर आ रंग-बिरंगक खाइ-पीबैक चीज-वौस दिअ लगल। हलाँकि मंगली रूपनक बेवहार आ विचारसँ सहमत नइ रहै छेली। ने कोनो समान लइ छेली आ खुशे रहै छेली। समान लइसँ सेहो इनकार करै छेली। मुदा रूपन बबाजी बड़ खेलाड़। अपन माया-जालमे किनको फँसबैमे माहिर छथिए। तैयो मंगली अपन चरित्र-कर्तव्यसँ नहि चुकली। तखन रूपन बबाजी मंगलीसँ बाजल-

“सुनू, जखन हमर दोस घरसँ बाहर जाए लगल तखने अहाँकेँ बजा हमरा सामनेमे कहने रहए, जाधैर हम घर घुमि नै आएब ताधैर हमर घर परिवारकेँ देख-भाल करब। मुदा कोन दुबिधा रहि गेल, घर-खर्चो तँ हमहीं चलेबे करै छी। तखन हमरा अहाँक बीच दूरी किए

रहत।”

मंगली मने-मन सोचए लगली जे बात तँ ठीके हमर पति कहि देने रहैथ। सोझमतिया मंगली रूपनक जालमे फँसि गेली।

गाममे जेनए जाउ, सगरे धिया-पुतासँ लऽ कऽ कनियाँ-बहुरिया आ बुढ़-बुढ़ानुस धरि रूपन बबाजी आ मंगलीक किरदानीक चर्च करैत रहए। मुदा सामनेमे बाजत के। झगरा-झंझटमे के पड़त। केकर खेत केकर गाए आ कोन पापी रोमए जाएत। जेकरा जे मनमे अबै से बजैत रहए। मुदा परोछमे। एमहर रूपन बबाजी आ मंगलीक खेल-बेल बढ़ैत गेल। पाँच बर्खमे एकटा-कैँ के कहए जे दूटा बेटा मंगलीकेँ आरो भऽ गेल। तीनटा संतान पहिने कारीक जनमल जइमे दूटा बेटी आ एकटा बेटा रहए, पछाइत दूटा आरो भेल।

परिवार नमहर भेने रूपन बबाजीकेँ मुसिबत बढ़ि गेल। मंगली आ रूपनमे टनाटनी हुअ लगल। रूपन बाबजीक मन बदैल गेल। मंगलीक देख-भाल करब छोड़ि चलि गेल।

मंगलीकेँ पाँचटा धिया-पुताक संग अपन जिनगी बिताएब पहाड़ बनि गेल।

रूपन तँ बबाजी छी। गामे-गामे घुमि-घुमि भजन-कीर्तन करए आ दिन काटए। मुदा मंगलीक जिनगी पहाड़ बनि गेल। कँकोंरबा बिआन कँकोंरबे खाए सन मंगलीक जिनगी बनि गेल। मंगली मने-मन सोचए लगली जे जहरो पीब जँ मरि जाएब तँ बाल-बच्चा सभ अनाथ भऽ जाएत।

मंगलीमे जे मातृत्व गुण अछि ओ मरैसँ बँचबए लगल। ओहुना नारीमे दुख सहैक बेसी शक्ति रहिते अछि। मुदा मंगलीक जिनगी बीच धारमे फँसल। ऐपार कि ओइ पार, दुखे-दुख...।

मंगलीकेँ एक तरफ धिया-पुताकेँ पोसनाइ आ दोसर तरफ

पतिक डर आ तेसर बीच मजधार अछि समाज। मंगली समाजमे मुँह केना देखाएत।

पाँच बर्खक पछाइत, जखन कारी कलकत्तासँ घुमि घर अबैत रहए। रस्तेमे सोचए जे घर जाइते पहिने कर्जा चुकाएब। पछाइत रहैले एकटा नीक घर बनाएब आ ओही घरमे दोकान सेहो करब। रूपैआ पोख्ता अछिए, पाँच-दस कट्टा भीठ जमीन सेहो खरीद लेब, जइमे एकटा चापाकल गड़ा तरकारीक खेती सेहो करब। मंगली आ धिया-पुता सभ सेहो बाड़ी-झाड़ीक देख-रेख करत आ काजो करत। जँ आमदनी हएत तँ बेरा-बेरी बेटियोक बिआह करब आ बेटोकेँ पढ़ाएब।

कारी घर पहुँचैबला रहए कि मंगली घरक पछुआरेसँ अबैत देखली। पतिकेँ अबिते मंगली हाँइ-हाँइ काज सम्हारए लगली। घरमे जोगेलहा रूख-सुख किछु खेनाइ ओरियाबए लगली। बच्चा-बेदरूकेँ कहि देलक जे 'बौआ-बुच्ची देखहीन, रस्ता धेने बाबू आबि रहल छौ।'

ढेरबा बड़की बेटी माइक बात सुनिते दौड़ल बापक माथक समान आनए। पाछू-पाछू लेधुरियो सभ हल्ला करैत आगू-पाछू पहुँच गेल। कारी बहुत दिनपर गाम आएल। अपनो धिया-पुताकेँ ठीकसँ नहि चिन्हैत रहए। बड़की बेटीसँ कारी पुछलक-

"दाइ, ई दुनू छोटाक लेधुरिया के छी?"

बेटी बाजल-

"सभ हमरे भाए छी। अहाँ समाने हम एक भाए आ दू बहिन रही। आ अहाँ गेला पछाइत माएकेँ दूटा बौआ आरो भेल।"

गप-सप्प समाप्तो ने भेल कि घरक दरबज्जापर सभ पहुँच गेल।

पतिक आगमन होइते मंगली एक लोटा पानि आगूमे राखि दुनू हाथे आँचरक खूट पकैड़ पतिक पएर छुबि गोड़ लगली। आ समानक मोटा-झोरा ठेकान लगा राखि छिपलीमे पनिपियाइक चीज-वौस लऽ

एली। तैबीच बड़की बेटी बापकेँ बैसैक ओरियान ओसारापर एकटा सोनौटा बोड़ा बिछा देलक।

कारी हाथ-पएर धोइ बिछाएल बोड़ापर बैसल आ एकटा छोटका झोरा खोलि कलकत्ताक बनल बिस्कुट, लेमनचुस निकालि बच्चा सभकेँ देलक। आ मोटासँ निकालि तीनू बच्चाकेँ कपड़ा देलक। मुदा दूटा लेधुरिया लेल तँ कोनो कपड़ा नहि अनने रहए। दुनू लेधुरिया कारीक मुँह दिस ताकि टुकुर-टुकुर निहारए लगल।

कारीक आगू पनिपियाइक छिपलीमे सभ कियो संगे खाए लगल। दू-चारि कौर खा कारी उठि गेल। लेधुरिया सभ खाइते रहल। मंगली भानस-भातक ओरियान करए आ दू-चुल्हियापर अधनो चढ़ेने रहए।

कारी मंगलीक बेवहारसँ खुश तँ रहए मुदा बेटी जे रस्तेमे कहने रहै, जे अहाँक गेलापर माएकेँ दूटा बौआ आरो भेल, से देख कारीक देह जेना करिया नाग जकाँ कारी भऽ गेल। कारीक आँखि लाल-पियर हुअ लगलै। तमसाइत कारी बाजल-

"ई दुनू बच्चा केकर छी?"

मंगली कनसुखुए मने बजली-

"अपने छी।"

कारी-

"जखन हम गाममे नै छेलौं तँ..?"

मंगली-

"हम तँ अहींक वचन ने निभेलौं। कहि गेल छेलौं किने जे जाबे हम गाममे नहि रहब ताबे बालो-बच्चा आ अहूँक देख-रेख हमर दोस करत। हमरा तँ अहाँ माल-जाल जकाँ पोसियाँ लगा गेलौं। जे पोस-

पालन केलक ओ इंसान नहि, जानवर रहए। एकरे फलाफली ई सभ भेल। अहीं कहू जे जे इज्जत-आबरू हमर चलि गेल ओ आब फेर घुमि औत। एकर जिम्मेदार के? के हमर इंसाफ करत। जँ इंसाफ करबो करब तँ अहीं ने।"

पत्निक बात सुनिते कारी दुनू हाथ माथपर लऽ ठामहि खसि पड़ल। खसिते मुहसँ अवाज निकलल-

"हौ दैब, ई केकर दोख..!"

❑

शब्द संख्या : 1978



राम विलास साहु

जन्मभूमि : लक्ष्मीनियाँ

जन्म तिथि : 01 जनवरी 1957

पिताक नाओं : स्व. नशीव लाल साहु

माताक नाओं : कैली देवी

मातृक : हिरपट्टी (बनगामा) मधुबनी

पता : ग्राम- लक्ष्मीनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी, पिन कोड- 847108

शिक्षा : स्नातक

जीविकोपार्जन : कृषि एवं निजी अध्यापन कार्य

रूचि : साहित्य पढ़ब-लिखब।

सम्पर्क : 9955802522, 8863058834, Email : rambilaskavi2011@gmail.com

साहित्य लेखन : 2008 ईस्वीसँ।

सम्मान/पुरस्कार : नरेन्द्र सम्मान- 2018, लेखकीय सम्मान- 2018

प्रकाशित कृति :

(१) रथक चक्का उलैट चलए बाट (पद्य संग्रह) : 2013

(२) अंकुर (कथा संग्रह) : 2016

(३) कोसीक कछेर (काव्य संग्रह) : 2017

(४) दूधबेचनी (कथा संग्रह) : 2018

अप्रकाशित कृति :

(१) मनक मैल (टनका/हैकू/शैर्न्यू संग्रह)

(२) आगिये आगि (कविता संग्रह)

(३) नेत्रदान (खण्ड काव्य संग्रह)

(४) अंशुमान (कथा संग्रह)

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरु मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

ISBN : 978-93-87675-71-1

₹ 150